

**वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के प्रचार व प्रसार में
प्रतिष्ठित कलाकारों का योगदान**

**CONTRIBUTION OF EMINENT ARTISTS IN THE
PROMOTION OF SITAR INSTRUMENT GLOBALLY**

Thesis Submitted for the Award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

Performing Arts

By

Ritu

Registration Number: 42000128

Supervised By

Dr. Pratibha Sharma (25754)

Head of Department (Theatre & Music)

Associate Professor in Performing Arts

Lovely Professional University



LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, PUNJAB

2025

DECLARATION

I, hereby declared that the presented work in the thesis entitled “**Contribution of Eminent Artists in the promotion of Sitar Instrument globally**” fulfilment of degree of **Doctor of Philosophy (Ph.D.)** is outcome of research work carried out by me under the supervision of Dr. Pratibha Sharma working as Associate Professor in the **Department of Theater and Music** of Lovely Professional University, Punjab, India. In keeping with general practice of reporting scientific observations, due acknowledgements have been made whenever work described here has been based on findings of other investigator. This work has not been submitted in part or full to any other University or Institute for the award of any degree.

(Signature of Scholar)

Name of the scholar: Ritu Bhardwaj

Registration No.: 42000128

Department/School: Department of Theater and Music

Lovely Professional University,

Punjab, India

CERTIFICATE

This is to certify that the work reported in the Ph.D. thesis entitled “**Contribution of Eminent Artists in the promotion of Sitar Instrument globally** ” submitted in fulfillment of the requirement for the award of degree of **Doctor of Philosophy (Ph.D.)** in the Department of Theater and Music, is a research work carried out by Ritu Bhardwaj, (Registration No.) 42000128 is a bonafide record of his/ her original work carried out under my supervision and that no part of thesis has been submitted for any other degree, diploma or equivalent course.

(Signature of Supervisor)

Name of supervisor: Dr. Pratibha Sharma

Designation: Associate Professor in Performing Arts

Department/School: Department of Theater and Music

Lovely Professional University,

Punjab, India

कृतज्ञता ज्ञापन

- सर्वप्रथम परमपिता परमात्मा के प्रति नतमस्तक हूँ जिनके आशीर्वाद और अपार अनुकम्पा से मैं प्रस्तुत शोध प्रबंध का गठन कर पाई।
- मैं उन सभी कलाकारों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय मुझे प्रदान कर समय – समय पर शोध प्रबंध से सम्बंधित जानकारी उपलब्ध कराने में मेरी सहायता की व मुझे उत्तम शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। पद्म श्री उ.शाहिद परवेज़, उ.शुजात खां, उ. निशात खां, पं. हरविंदर शर्मा, पं.नयन घोष, पं.कुशल दास, डॉ. प्रो. रवि शर्मा, उ.सैय्यद खां, पं. राम कुमार मिश्र, पं. नरेंद्र मिश्रा के साथ शोध कार्य के दौरान दूरभाष के माध्यम से भी मेरे संशय का निवारण करने में मेरी सहायता की।
- मेरा सौभाग्य है कि मेरा शोध कार्य डॉ. प्रतिभा शर्मा (गोल्ड मेडलिस्ट), हैड ऑफ डिपार्टमेंट (थिएटर एंड म्यूज़िक)के अत्यंत कुशल व सुयोग्य दिशा निर्देशन में रहा है। मेरे शोध प्रबंध के चयन से लेकर शोध कार्य के अंतिम चरण तक मुझे प्रोत्साहित करती रहीं। उनके परामर्शों, कुशल व्यवहार, प्रेरणाशील व प्रगतिशील विचारों का ही प्रतिफलन यह शोध प्रबंध है। शोध कार्य में सर्वेक्षण के दौरान आने वाली चुनौतियों, कठिनाइयों, समस्याओं और बाधाओं का समाधान करने में हर क्षण तत्पर रहीं और मेरा कुशल मार्गदर्शन कर लक्ष्य तक पहुंचने में सक्रिय भूमिका निभाई जिससे मैं सफलता की ओर बढ़ी। मैं सदैव आपकी आभारी रहूंगी।
- मैं हृदय से आभारी हूँ प्राचार्य महोदय कन्या महाविद्यालय, जालंधर, डॉ. प्रो. अतिमा शर्मा द्विवेदी जी की जिन्होंने हमेशा आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया और प्रेरणादायी शब्दों द्वारा मेरा हौसला बढ़ाया।
- मैं नतमस्तक हूँ अपने गुरु स्वर्गीय पं. ओम प्रकाश थापर जी की जिनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से मैं शोध कार्य कर पाई। मैं आभारी हूँ श्री संगत राम जी की जिन्होंने इस

शोध कार्य में समय समय पर सहयोग दिया। मैं कृतज्ञ हूँ श्री अश्वनी कुमार जी की जिन्होंने समय -समय पर मुझे प्रोत्साहित किया। मैं डॉ. मोनू के द्वारा दिये गये सहयोग की भी धन्यवादी हूँ।

- मैं आभारी हूँ विभागाध्यक्ष डॉ. अनुपम सूद, ए.पी.जे कालेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालंधर की जिन्होंने मुझे सहयोग दिया। कन्या महाविद्यालय के पुस्तकालय विभाग का जिन्होंने समय समय पर सामग्री उपलब्ध करवाई।
- मैं अपने दादा जी वायलिन वादक स्वर्गीय श्री बैजनाथ पुरी और नाना – नानी के आशीर्वाद और अपने माता श्रीमती मैत्री पुरी और पिता वायलिन वादक श्री प्रदीप कुमार पुरी की सदैव ऋणी रहूँगी जिनके प्रेम और विश्वास से मैं शोध कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हुई।
- मैं आभारी हूँ अपने पति श्री सुनील भारद्वाज की जिन्होंने मुझे शोध कार्य में विशेष सहयोग प्रदान किया। मेरे भाई अरुणदीप पुरी और तरुणदीप पुरी ने शोध कार्य दौरान मेरा मनोबल बढ़ाया। मैं हार्दिक आभारी हूँ अपने दोनों पुत्रों – नीलमणि और सोहम् जिनका कीमती समय चुराकर मैं शोध कार्य संपन्न करने में सक्षम हो पाई।
- प्रस्तुत शोध कार्य का टंकन कार्य वर्मा कम्प्यूटर और हज़ूरिया कम्प्यूटर द्वारा किया गया। शोध कार्य को मूर्त रूप प्रदान किया, जिनके सहयोग के लिये मैं सदैव इनकी ऋणी रहूँगी।
- कलाकार की कलात्मकता सीमाओं से परे होती है, इसे किसी भी लेखनकार्य से नहीं किया जा सकता। मेरी ओर से जो कोई भी त्रुटियां हुई हैं उस के लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

ऋतु भारद्वाज

प्राक्कथन

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत आज केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व भर में लोकप्रिय है। विश्व के हर कोने में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सुनने को मिलता है। संगीत की तीनों ही धारायें गायन, वादन और नृत्य आज प्रचलित है। वादन के क्षेत्र की बात करें तो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग किये जाने वाले वाद्ययंत्रों सितार, संतूर, वीणा, बाँसुरी आदि वाद्य आज विदेशों में बजाए जाते हैं, परन्तु सितार आज विश्वस्तर पर बजाये जाने वाला सबसे अधिक प्रचलित व प्रमुख वाद्य है। सितार वाद्य को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाने में पं. रविशंकर जी का अहम योगदान रहा है। 1960 के दौर में भारत रत्न पं. रविशंकर जी ने सितार वादन का प्रदर्शन विदेशों में करना शुरू किया जहां से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार का प्रचार हुआ। आज विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देने के लिये हमारे ही उच्चकोटि के कलाकारों ने संगीत विद्यालयों का निर्माण किया। आज हम सोशल मीडिया पर विदेशियों को सितार वादन करते देखते और सुनते हैं।

हिंदुस्तानी संगीत पर पश्चिमी संगीत का सबसे उल्लेखनीय प्रभाव विभिन्न संगीत शैलियों का संलयन (Fusion) रहा है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, जो पारंपरिक रूप से रागों और तालों पर आधारित है, इसे और रोमांचित बनाने के लिए पश्चिमी, शास्त्रीय और अन्य लोकप्रिय सांगीतिक विधाओं के साथ मिश्रित किया गया है। इस संलयन ने न केवल नई ध्वनियों का निर्माण किया है, बल्कि भारतीय संगीत को व्यापक दर्शकों तक विस्तारित करने में भी मदद की है। भारतीय संगीत के गैर-भारतीय कलाकारों की उपस्थिति ही इस परंपरा के वैश्विक प्रभाव की पुष्टि करती है। यहां तक कि उच्च प्रदर्शन स्तर तक पहुंचने वाले गैर-भारतीयों की छोटी संख्या ने भी भारत और विदेशों दोनों में संगीत समुदायों को एक महत्वपूर्ण आयाम दिया है।

मैं एक सितार वादिका और अध्यापिका हूँ। मेरी परवरिश संगीतज्ञ परिवार में हुई है। मेरे दादा जी वायलिन वादक थे और वह ऑल इंडिया रेडियो जालंधर में स्टाफ कलाकार के रूप में कार्यरत थे। मेरे पिता जी भी वायलिन वादक हैं और ऑल इंडिया

रेडियो जालंधर के कलाकार रहे हैं पर मेरी रूचि सितार में रही। मैं समय-समय पर होने वाले संगीत समारोहों और कार्यक्रमों में भाग लेती रही हूँ। श्री बाबा हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन, जालंधर में प्रति वर्ष यहाँ आने वाले कलाकारों को नियमित रूप से सुनना मेरा बचपन से ही सौभाग्य रहा है, (राग दरबार श्री दुर्गीयना मन्दिर अमृतसर, श्री भैणी साहिब में आयोजित होने वाले संगीत समारोहों) के अतिरिक्त Internet और YouTube के माध्यम से सितार वादकों को सुनती रहती हूँ। मैंने यह अनुभव किया कि विदेशियों का रुझान दिन प्रतिदिन सितार वादन की ओर बढ़ता जा रहा है, और इसका श्रेय हमारे प्रतिभाशाली कलाकारों को ही जाता है जो समय-समय पर विदेशों में अपनी कला का प्रदर्शन करते रहते हैं। मेरे अन्दर ही यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्यों ना उन कलाकारों और संगीतज्ञों के बारे में अध्ययन किया जाये जिन्होंने विश्व भर में सितारवादन को लोकप्रिय बनाया। यही कारण है कि मैंने इस विषय का चयन किया। हमारे सुप्रसिद्ध और विख्यात कलाकारों द्वारा दिये गये योगदान को शोध प्रबंध के माध्यम से संकलित करने का प्रयास किया गया है। मैंने अपने शोध कार्य के संकलन को पाँच अध्यायों में रेखांकित किया है। चारों अध्यायों को चार – चार खण्डों में बांटा है, जिनका विवरण इस प्रकार है:

प्रथम अध्याय –

इस अध्याय में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के उद्भव और विकास के बारे में बताया गया है कि कैसे मानव जीवन के प्रारंभ के साथ ही संगीत का उद्भव हुआ और जैसे मानव का विकास हुआ संगीत भी विकसित होता गया। प्राचीन काल में गायन के साथ वादन का प्रयोग अनिवार्य हुआ करता था। गायन वादन एवं नृत्य संगीत के आधार स्तंभ है। संगीत का मूल स्वर और लय है। संगीत भावों की उत्पत्ति का साधन माना जाता है। स्वर भावों की उत्पत्ति का माध्यम है। प्राचीन विद्वानों ने मानवीय कण्ठ को 'शारिरी' वीणा का नाम दिया और कहा जाता है कि इसी को आधार मान कर काष्ठ वीणा का निर्माण किया गया। प्राचीन काल से ही वाद्ययंत्रों का निर्माण गायन के अनुकूल होता आ रहा है। कई प्रकार के तंत्री वाद्यों जैसे, वीणा, रुद्र वीणा, कचपी वीणा, त्रितांत्रि वीणा आदि का उद्भव हुआ। फिर सितार वाद्य का उद्भव हुआ। सितार वाद्य को अपने मूल रूप में आने के लिये कई पड़ाव

पार करने पड़े। तब जाकर सितार वाद्य अपने मूल रूप में आया और जहां यह वाद्य संगतकारी के लिये प्रयोग में लाया जाता था वही आज सबसे प्रसिद्ध एकल और स्वतंत्र वादन के तौर पर बजाया जाता है।

द्वितीय अध्याय –

इस अध्याय में साहित्यिक समीक्षा दी गई है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर किये गये शोध कार्यों को देखा गया है। शोध प्रबंध को सम्पन्न करने के लिये मैंने सम्पादकीय लेखों और किताबों का अध्ययन किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के अन्तर राष्ट्रीयकरण के विषय पर तो बहुत अनुसंधान हो चुका है। सितार के इतिहास, तकनीक, घराने, वादन शैलियों, विभिन्न बाज और उन के प्रचलन, भारतीय शास्त्रीय संगीत को सितार वादकों के द्वारा दिये गये योगदान पर तो शोधकर्ताओं द्वारा बहुत शोध किये जा चुके हैं, परन्तु विदेशों में हमारे उच्चस्तरीय कलाकारों के दिये योगदान, सितार के प्रचार –प्रसार में किये कार्यों का वर्णन अत्यधिक नहीं मिलता जिसको उजागर करने की कोशिश इस शोध कार्य में की गयी है।

तृतीया अध्याय –

इस अध्याय में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घराना के उदय और संगीत के विकास की चर्चा की गई है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सबसे विलक्षण और वैचित्र्य विशेषता घराना व्यवस्था है। संगीत शिक्षा की मार्गदर्शक ये घराना परंपरा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी विकास कर रही है। ये गुरु शिष्य परंपरा है। गुरु शिष्य परंपरा भारतवर्ष में अनादि काल से चली आ रही है। पहले प्राचीन समय में गुरुकुल हुआ करते थे। उसी व्यवस्था जैसे ही ये संगीत घराना परंपरा है। सितार वादन के घरानों का विकास और घरानागत वादन शैलियों का निर्माण हुआ। वादन संगीत में वादन क्रिया को, शैली को या ढंग को 'बाज' का नाम दिया जाता है। भिन्न - भिन्न सितार वादन की शैलियों को भिन्न - भिन्न बाजों के नाम से वर्णित किया जाता है जैसे- सेनिया बाज, पूर्वी बाज, पश्चिमी बाज (रजाखानी व मसीत खानी), फिरोज़ खानी, आमिर खानी बाज, सितारखानी बाज, जाफरखानी बाज आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। शिक्षण संस्थानों में संगीत शिक्षा की व्यवस्था की गई है।

चतुर्थ अध्याय -

इस अध्याय में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वैश्वीकरण और संगीत के विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित करने के बारे में जानकारी दी गई है। विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार व प्रसार का कार्य कर चुके और कर रहे कलाकारों और संगीतज्ञों का ब्यौरा दिया गया है। विदेशों में होने वाले संगीत कार्यक्रमों और सम्मेलनों का उल्लेख किया गया है। संस्थाएं, सभाएं और संगठनों द्वारा किये जा रहे कार्यों का ब्यौरा उपलब्ध करने की कोशिश की है और उन सब का संकलन किया गया है। विश्व भर में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सम्मेलन और समारोह होते हैं। विदेशी धरा पर अपना संगीत कौशल और सितार वादन कर चुके कलाकारों के साक्षात्कार का विवरण दिया गया है उनके अनुभवों और विचारों को रेखांकित किया गया है।

पंचम अध्याय -

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य की शिक्षा प्रदान कर रहे संगीत विद्यालयों और संस्थाओं की सूची तैयार की गई है। विदेश में सितार केवल शास्त्रीय संगीत का वाद्य ही नहीं रह गया अपितु सुफी, पॉप, रॉक, लोक संगीत के साथ भी बजाया जा रहा है। भारतीय मूल के इस वाद्य यंत्र को विदेशों में भी सराहा गया, पसंद किया गया और अपनाया गया है। विदेशों में सितार वाद्य की शिक्षा ले रहे शिष्यों की जानकारी दी गई है। विदेशों में जो लोग हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ले रहे हैं। उनका समर्पण भाव इस बात से पता चलता है कि उन्होंने संगीत की विधिवत शिक्षा के लिये हिंदी भाषा भी सीखी है। संगीत सम्मेलन और समारोहों में विदेशी कलाकार सितार वादन करते हैं, रेखांकित किया गया है। ICCR, स्पिक मैके जैसी संस्थाएँ विदेशों में हिंदुस्तानी संगीत का प्रचार – प्रसार कर रही का विवरण दिया गया है। सितार वाद्य के उन्नयन को लेकर कलाकारों के विचारों का उल्लेख किया गया है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपनी स्थापना से लेकर वर्तमान तक विभिन्न स्तरों और परिवर्तनों के विभिन्न चरणों से गुजरा है। वैश्वीकरण की दुनिया में आर्थिक लचीलेपन और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, समाज परिवर्तन के एक दृश्य चरणों से गुजरा है। पश्चिमी

आज सितार वाद्य हिंदुस्तानी शास्त्रीय का प्रतीक माना जाता है और दुनियां भर में होने वाले प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में मुख्य आकर्षण होता है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य के वैश्वीकरण से नवीनता के साथ- साथ भारत की सभ्यता और संस्कृति का प्रचार हुआ। भारत की अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ा, विदेशों में संगीत सम्मेलनों से कलाकारों को धनार्जन होता है। वाद्ययंत्रों के निर्यात से रोज़गार को बढ़ावा मिलता है जिससे अर्थ व्यवस्था में भी सुधार होता है। सितार वाद्य ने पूर्व और पश्चिम के बीच एक कलात्मक सेतु का काम किया है।

अनुक्रमणिका

Declaration	i
Certificate	ii
कृतज्ञता ज्ञापन	iii
प्राक्कथन	v
अनुक्रमणिका	x

	अनुक्रमणिका	पृष्ठ नं.
1.	अध्याय -1: हिन्दुस्तानी संगीत में सितार वाद्य की परम्परा 1.1 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का उद्भव एवं विकास 1.2 प्राचीन काल से गायन के साथ वादन की परम्परा। 1.3 तंत्री वाद्यों का विकास व उपयोगिता 1.4 सितार वाद्य की परम्परा।	1 - 26
2.	अध्याय -2 : सम्बन्धित साहित्य पुनरावृष्टि, शोध एवं अध्ययन प्रविधि की पृष्ठभूमि 2.1 सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 2.2 विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत किये गये पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध 2.3 प्रस्तुत शोध की प्रासंगिकता 2.4 अनुसंधान प्रविधि	27 - 36
1.	अध्याय – 3 : सितार वाद्य के घराने व कलाकार 3.1 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विकास के साथ घरानों का उदय 3.2 घरानों का क्रमिक विकास 3.3 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सितार वादन की शैलियां 3.4 शैक्षणिक संस्थानों में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा	37 - 63

2.	अध्याय – 4 : वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य को लोकप्रिय बनाने वाले कलाकारों का योगदान एवं विश्लेषण 4.1 वैश्विक स्तर पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं सितार 4.2 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सितार वाद्य की लोकप्रियता बढ़ाने वाले कलाकारों का योगदान एवं विश्लेषण 4.3 विदेशों में शास्त्रीय संगीत सम्मेलन 4.4 विदेशों में सितार वादन की प्रस्तुति देने वाले कलाकारों का अनुभव एवं विचार	64 – 226
3.	अध्याय - 5 : वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के कलाकारों की प्रस्तुति प्रचार व प्रसार के माध्यम 5.1 विदेशो मे सांगीतिक शिक्षण संस्थाएँ 5.2 वैश्विक स्तर पर सितार वादन की शिक्षा व लोकप्रियता में भारतीय संस्थाओं का योगदान 5.3 विदेशों में सितार वादन की शिक्षा ले रहे शिष्य व उनका अनुभव 5.4 वैश्विक स्तर पर सितार वादन के अध्ययन के विषय में अनुभवी कलाकारों के सुझाव	227 -330
6	निष्कर्ष	331 – 336
	सन्दर्भ ग्रंथ सूची	337 – 358
	परिशिष्ट	i - xxxiv

अध्याय -1

हिन्दुस्तानी संगीत में सितार वाद्य की परम्परा

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तंत्री वाद्य यंत्रों में सितार आज किसी भी परिचय का मोहताज नहीं हैं। अपनी मधुर ध्वनि और वादन शैली के कारण आज इसको विश्व मंच पर अग्रणी श्रेणी में स्थापित किया गया है, सितार को विश्व के किसी भी कोने में देखा और सुना जा सकता है। सितार वाद्य की परंपरा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में संगतकारी के साथ प्रारंभ हुई थी। समय के परिवर्तन के साथ सितार वाद्य को एकल वाद्य के रूप में स्वीकार किया गया। सितार पर बजायी जाने वाली विशेष वादन शैली भी अस्तित्व में आई। परिवर्तन प्रकृति का नियम व स्वभाव है, आज से कई सौ दशकों पहले सितार का स्वरूप यह नहीं रहा होगा। मध्यकाल से लेकर आधुनिक युग तक सितार वाद्य अपने स्वरूप और वादन क्रिया के साथ विकासशील और प्रगतिशील रहा है। जिसको यहां तक लाने में बहुत से विद्वानों, कलाकारों और संगीतकारों के परिश्रम, लगन एवं कुशाग्र बुद्धिमत्ता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हर किसी लेखक ने सितार के इतिहास और प्रचलन की चर्चा किसी ना किसी अन्य मत के आधार को माध्यम बना कर ही की है। श्री देशपांडे लिखते हैं "प्राचीन तंत्री वीणा को ही मुसलमान फ़ारसी के समानार्थी शब्द 'सेहतार' के नाम से पुकारने लगे थे"।¹ सितार में सर्वप्रथम तीन तार होने के कारण उसे फारसी नाम 'सेहतार' का दिया गया। सितार के ढाँचे में नये-नये प्रयोग कर परिवर्तन किये गये। सितार पर सबसे पहले ध्रुपद अंग का वादन किया जाता था। ध्रुपद की चारों वाणीयों का अनुकरण किया गया। फिर वीणा अंग का वादन सितार पर होने लगा। आधुनिक समय में सितार वादन तंत्रकारी और खयाल गायन शैली का अनुकरण करते हुये किया जाता है।

सितार की उत्पत्ति और क्रमिक विकास को कई लेखकों ने कलमबद्ध कर रेखांकित किया है, परंतु जो भी प्रमाण मिलते हैं उनमें मतभेद पाये जाते हैं। हर किसी का विचार दूसरे से अलग मिलता है। इतिहास के पन्नों में चाहे कुछ भी हो परंतु आज सितार

¹ संगीत के वाद्यों का चुनाव - लेख संगीत कला विहार, जुलाई 1985, पृ.156।

पूर्ण और विस्तृत रूप में मिलता है, जिस का श्रेय संगीतज्ञों और विद्वानों को ही जाता है। यही कारण है कि आज किसी भी अन्य वाद्य की अपेक्षा सितार वाद्य अधिक प्रचलन में है।

1.1 हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का उद्भव एवं विकास

गीतेन प्रीयते देवः सर्वज्ञः पार्वतीपतिः।

गोपीपतिरन्तोऽपि वंश-ध्वनि-वंशगतः।

संगीत रत्नाकर के स्वर गीता अध्याय के प्रथम अध्याय में आचार्य शारंगदेव ने संगीत की महत्ता की व्याख्या करते हुये लिखा है। इस जगत में देवी देवता भी संगीत के वशीभूत हैं। फिर चाहे वो के पार्वती पति भगवान शिव हो, या फिर वंशी की ध्वनि में गोपी पति श्री कृष्ण हो। संगीत की महिमा का गुणगान भारतीय विद्वानों ने ही नहीं बल्कि विदेशी विद्वानों ने भी की है।

प्लेटो का कहना की 'संसार में समस्त विज्ञान का मूल संगीत ही है, और इसका निर्माण स्वयं ईश्वर द्वारा किया गया है।

संगीत प्रकृति द्वारा दिया गया एक अनमोल रत्न है, जो कुदरत ने मानव को दिया है। मानव जीवन के आरंभ से संगीत मनुष्य के साथ जुड़ा हुआ है। संगीत मानव की आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है। इतिहास पर नजर डाले तो हमें पता चलता है, कि संगीत मानव के मनोभावों का सुनहरा चित्रण है। मानवीय मन का दर्पण है। जो सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ निरंतर बढ़ता गया। संगीत हमारी परंपराओं में समाहित है जिसने सामाजिक व्यवस्था को अपने साथ जोड़ा हुआ है। संगीत मानव जाति की धरोहर है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में हमारे भारत वर्ष की आत्मा झलकती है। डॉ. जोगिंदर सिंह बावरा के अनुसार "संगीत उतना ही अनादि है जितनी मानव जाति। संस्कृति के उद्गम तथा विकास के साथ ही संगीत का उद्गम तथा विकास क्रम देखा जा सकता है। कण्ठ मानव के लिए प्रकृति की सहज तथा महान देन है। सभी मानव जातियों ने संगीत कला को एक विशेष स्थान पर रखा है।" ²

² भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा, पृष्ठ -1

संगीत कला इतनी ही प्राचीन है। जितनी मानव जाति क्योंकि मानव ने अपने जन्म के साथ ही संगीत को जीवन में धारण कर लिया। संगीत मानव के जन्म से लेकर मरन तक साथ रहा है। मनुष्य को भाषा के ज्ञान के साथ ही संगीत का ज्ञान होना आरंभ हो गया था। भाषा का बोध होने से पहले वह पशु, पक्षियों आदि की नकल करता था। मानव ने अपने भावों की अभिव्यक्ति भाषा द्वारा की। और फिर संगीत अस्तित्व में आया। श्री भगवत शरण शर्मा का कहना है कि मानव जीवन का कोई भी पहलू कंठ संगीत से अछूता नहीं है क्योंकि मनुष्य ने जन्म के साथ ही संगीत सुना समझा और अपनी अंतिम जीवन- यात्रा को भी संगीत सुनते हुये ही पूरी करता है।³

संगीत का इतिहास एक ऐसा इतिहास है। जिसमें मानव का संपूर्ण रूप प्रतिबिंबित होता है मानव जीवन में संगीत का क्या स्थान है यह हमारी वेदों और पुराणों से पता चलता है। आध्यात्मिक और भौतिक दृष्टि से संगीत को देखें तो संगीत मानव के हर एक क्षण में साथ रहता है। संगीत कला और संस्कृति का अद्भुत संगम है। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति संगीत के द्वारा झलकती है। कहा जाता है अगर किसी भी राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त करनी है, तो उसकी कलाओं को देखना चाहिए जितनी उसकी कलाएं विकसित होंगी, सभ्यता और संस्कृति उतनी ही विशाल और अद्भुत होगी। संगीत जहाँ मानव के मनोरंजन का साधन है। वही वह आध्यात्मिकता का भी बोध करवाता है। भक्त को ईश्वर के साथ संगीत द्वारा जोड़ा जा सकता है। संगीत को ईश्वरीय वाणी भी कहा जाता है।

भारतीय संगीत का मूलभूत तत्व नाद है। नाद ब्रह्म कहा जाता है। नाद को सर्वव्यापी ठीक ही कहा गया है, क्योंकि पूरा ब्रह्मांड नादमय है। नाद से शब्द बना, शब्द से वाक्य बना फिर भाषा का अवतरण हुआ है। यह पूरी सृष्टि नाद के ही अधीन मानी जाती है। नाद को संगीत का **प्राणधार** कहा गया है।

डॉ. अरुण मिश्रा कंठ संगीत और वाद्य संगीत में नाद की परिभाषा देते हुये लिखते हैं कि भारतीय ऋषियों-मुनियों ने सृष्टि की उत्पत्ति नाद- ब्रह्म तत्व से मानी है। उनके अनुसार सृष्टि का आधार भूत तत्व नाद है, जो कि ओमकार वाचक है। संपूर्ण ब्रह्मांड की

³ भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ 31

प्रत्येक चल और अचल वस्तु में नाद विद्यमान है। संगीत- दर्पण के रचयिता 'दामोदर पंडित' ने नाद की व्यवस्था इस प्रकार की है-⁴

“नादेन व्यंज्यते वर्णः पदं वर्णात् पदाद् चः ।

वचसो व्यवहारोऽयं नादाधीनमतो जगत् ॥

अर्थात् “नाद के साथ से वर्ण का उच्चार होता है और वर्ण द्वारा शब्दों की सिद्धि होती है। शब्द से भाषा का जन्म होती है और भाषा के प्रयोग से जगत के साथ व्यवहार चलते हैं।

संगीत का जन्म कब कैसे हुआ इसके बारे में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। सुप्रसिद्ध विद्वान श्री दामोदर पंडित ने कहा है कि, संगीत उत्पत्ति पक्षियों के विभिन्न स्वरों द्वारा हुई है। उन्होंने संगीत के सात स्वरों का आविर्भाव इस प्रकार बतलाया है- मोर से षडज, चातक से रिषभ, बकरे से गंधार, कौआ से मध्यम, कोयल से पंचम, मेढ़क से धैवत, और हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति हुई।”⁵

धार्मिक दृष्टिकोण

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत धार्मिकता और भक्ति रस से सराबोर है। संगीत और कलाओं की देवी वीणा वादिनी माँ सरस्वती के हाथों में वीणा देखी जाती है। श्री हरि विष्णु के हाथों में शंख, भगवान श्री कृष्ण के हाथों में वंशी और भोलेनाथ के हाथों में डमरू देखा जाता है। गजानन गणपति को मृदंग वादन करते देखा जाता है। इस तरह हर किसी देवी देवता को कोई ना कोई वाद्ययंत्र के साथ देखा जाता है। जिस कारण संगीत के साथ हमारी धार्मिक भावनाएं जुड़ी हुई हैं।

डॉ. जोगिंदर सिंह बावरा के अनुसार “संगीत की रचना ब्रह्मा जी ने की है। उन्होंने संगीत विद्या भगवान शिव को प्रदान की और उन्होंने आगे संगीत की देवी मां सरस्वती को दी। इसलिए मां सरस्वती को वीणा वादिनी कहा जाता है। नारद मुनि ने वीणा धरिणी मां

⁴ कंठ संगीत और वाद्य संगीत, पृष्ठ 1

⁵ भारतीय संगीत का इतिहास, उमेश जोशी पृष्ठ- 5

सरस्वती से संगीत विद्या ग्रहण कर गंधर्वों, किन्नरों और स्वर्ग की अप्सरओं को प्रदान की। फिर संगीत कला ऋषि मुनियों द्वारा धरती पर भु-लोक वासियों को प्रदान की गई।”⁶

एक और मत अनुसार संगीत की विद्या भगवान शिव ने नारद मुनि की तपस्या से प्रसन्न हो कर उन को प्रदान की थी और नारद मुनि ने मानव जाति के उद्धार के लिये ईश्वर की उपासन के लिये भु-लोक वासियों को प्रदान की।

डॉ. जोगिंदर सिंह बावरा के अनुसार “एक कथा के अनुसार पैगम्बर मूसा एक बार नाव में सैर कर रहे थे। तो उन को वहां पर एक आकर्षक पत्थर दिखा। उसी समय वहां एक फरिश्ता आया और उसने वह पत्थर उनको अपने पास रखने को कहा। फिर कुछ समय उपरांत वह जंगलों में से गुजर रहे थे और उनको प्यास लगी, पर उनके आस-पास कहीं भी पानी की व्यवस्था नहीं थी। उन्होंने खुदा से दुआ की और कुछ ही समय बाद तेज बारिश आ गई। पानी की धारा उस पत्थर पर गिरने से उस पत्थर के सात टुकड़े हो गये। और उन्हीं सात पत्थर के टुकड़ों से सात पानी की धाराएँ बहने लगीं। उन सात पानी की धाराओं से अलग-अलग ध्वनियों का निकास हो रहा था, जिसको हजरत मूसा ने आत्मसात किया और सात स्वरों की रचना हुई।”⁷

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

संगीत की उत्पत्ति का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी कुछ लेखकों ने उजागर किया है। विद्वानों का मानना है कि कुछ विशेष प्रकार की ध्वनियाँ मानवीय चेतना और शारीरिक संवेदनाओं को प्रभावित करती हैं। ध्वनि तरंगों का प्रभाव मानव मस्तिष्क पर प्रतिकूल रूप से पड़ता है। संगीत प्रकृति का दिया अनुपम उपहार है, जो मानव को धरती के साथ जोड़ें रखता है। मानव के भाव संवेदना, अनुभूति, कल्पनाशीलता, मनोवैज्ञानिक गुण हैं, जो संगीत के साथ जोड़ते हैं। इसी कारण आदिम युग में मानव प्राकृतिक ध्वनियों की ओर आकर्षित हुआ और उस ने वाद्य यंत्रों का निर्माण करना आरंभ किया।

⁶ भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ- 4

⁷ भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ- 4

संगीत कला का विकास कुछ वर्षों या फिर एक मनुष्य के द्वारा नहीं किया गया। बल्कि यह परंपरा निरंतर प्रगति के साथ इस मुकाम तक पहुंची है। जिसको कई आयामों से गुजरना पड़ा।

प्रोगैतिहासिक काल

प्रोगैतिहासिक काल से अभिप्राय उस काल खंड से है जिसकी प्रमाणित इतिहासिक सामग्री की जानकारी उपलब्ध नहीं है। हड़प्पा की खुदाई में मिली नर्तकी की मूर्ति से यह ज्ञात होता है, कि उस समय लोग संगीत को मनोरंजन का साधन मानते थे। हमारी प्राचीन सभ्यताएं हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में मिले सिक्के और मुहरें इस बात का प्रमाण है कि उस समय कुछ वाद्य यंत्र बजाए जाते थे परंतु किसी तंत्री वाद्य का प्रमाण प्राप्त नहीं है। परंतु समकालीन सभ्यताओं में वीणा जैसे वाद्य के प्रमाण मिलते हैं। डॉ. परांजपे भी इस का समर्थन करते हैं "प्रोगैतिहासिक काल में संगीत का अस्तित्व उपलब्ध होता है। हड़प्पा के उत्खननों में नृत्य करते पुरुष की खंडित मूर्ति उपलब्ध हुई है। ऐसी मूर्ति का निर्माण संगीत प्रिय सभ्यता के अंतर्गत ही हो सकता है"।⁸

इस तरह खुदाई में मिली एक नर्तकी की मूर्ति इस ओर इशारा करती है, कि उस समय लोगों का मनोरंजन का साधन एक मात्र संगीत ही था।

वैदिक काल

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से उत्पन्न हुई मानी जाती है। वेदों की रचना स्वयं ब्राह्म जी के मुखार्विंद से हुई है। (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) ये चारों वेद ही संगीत का आधारभूत स्तंभ हैं। हमारे चारों वेदों में से सामवेद को सांगीतिक दृष्टि से देखा जाता है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का जन्म वैदिक काल में हुआ है। सांगीतिक दृष्टि से सबसे प्राचीन युग रहा है। ऋचाओ का गान ऋषि मुन्त्रियों द्वारा साम गान के रूप में किया जाता था। यज्ञ और धार्मिक अवसरों पर छंदोबद्ध साम गायन किया जाता था। इसमें

⁸ संगीत बोध, पृष्ठ. 15

नियम्बधता, उच्चारण में शुद्धता और रंजकता का बड़ी ही कठोरता से ध्यान रखा जाता था। ऐसा माना जाता था अगर नियमपूर्वक व श्रद्धा के साथ किसी देवी देवता की उपासना की जाये तो उमुक देवी देवता जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं। साम गान के समय हिंकर, प्रस्ताव, उद्वगीथ, प्रतिहार, निधन ये पांच लयात्मक भाग होते थे। इन में वर्ण, पद और कुछ वाक्य होते थे। जिन्हे ‘स्तोभ’ कह जाता था। साम गान में दैवी शक्तियों का प्रतीक माना जाता था। ऋग्वेद में ‘गाथा गायन’ का उल्लेख मिलता है। जिस का गायन ब्राह्मणों और क्षत्रियों द्वारा किया जाता था। इसको साम गायन के अंतर्गत नहीं रखा जाता था। डॉ. परांजपे भी कहते हैं की अवशमेघ यज्ञ जब किये जाते थे तो उसमें साम गान के साथ गाथागान किया जाता था। यह साम गान उस काल खंड की महिलाओं के गायन और वीणा वादन की कुशलता का प्रतिक है।⁹

हमारे प्राचीन आधारिक ग्रंथ ऋग्वेद में गायन, वादन व नृत्य तीनों संगीत की धाराओं का वर्णन देखने को मिलता है। जिससे पता चलता है कि उस काल में संगीत कला का कितना प्रभाव था। ऋग्वेद में गीत शब्द के लिए गातु, गाथा, गीति आदि शब्द प्रयोग किए गए हैं। इस युग का प्रमुख व लोकप्रिय वाद्य वीणा ही थी, जिसका प्रयोग साम गायन के साथ किया जाता था। यजुर्वेद में भी यंत्र – तंत्र का वर्णन मिलता है। ब्राह्मण साहित्य, आरण्यक साहित्य, उपनिषद आदि में वीणा का वर्णन मिलता है।

प्राचीन काल में रामायण और महाभारत जो की हमारे धार्मिक ग्रंथ हैं। रामायण जो की पूर्णता सांगीतिक रचना है। इस में भी अलग – अलग कांड रचना में संगीत को महत्व दिया है। संगीत का प्रचार उच्चतम श्रेणी का था। विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों और वीणा वादन की जानकारी **“बाल्मीकि रामायण”** में मिलती है। । लव व कुश द्वारा गंधर्व गान का उल्लेख बालकांड में मिलता है जो की मार्गी गायन शैली के अनुरूप था।

महाभारत के समय संगीत कला शिखर पर थी। श्री कृष्ण के समान बांसुरी वादक आज तक कोई नहीं हुआ। महाभारत में कितने ही अध्यायों में संगीत की रोचक जानकारी मिलती है जैसे इंद्र कि सभा में अर्जुन का गायन, अप्सरओं का नृत्य, गंधर्वों का वीणा वादन आदि। जनसाधारण भी संगीत की शिक्षा ग्रहण कर सकता था।

⁹ संगीत बोध, पृ- 39

जैन और बौद्ध काल में संगीत कला के विकास के प्रमाण मिलते हैं। उस काल के राज महाराजा संगीत प्रेमी और संरक्षक थे। विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग भी किया जाता था। मौर्य काल और गुप्त काल में संगीत और साहित्य का उच्चतम विकास हुआ। सांगीतिक ग्रंथों की रचना भी इस काल खंड में हुई।

प्राचीन ग्रंथों में संगीत के दो भेद बताये गये हैं देशी और मार्गी। संगीत के सभी ग्रंथों में इन का वर्णन विस्तार से मिलता है। मार्गी संगीत शास्त्रीयता पर आधारित होता है और देशी संगीत जन रुचि की भवानुभूति होती है। प्राचीन समय में संगीत कठोर शास्त्रीय नियमों से बंधा हुआ था। मार्गी संगीत देवी – देवताओं से संबंधित था और देशी संगीत लोक रंजन और लोक व्यवहार के साथ सम्बंध रखता था।

मध्य काल

इस काल में भारत में मुस्लिम संप्रदाय का आगमन हो चुका था। उत्तर भारत क्योंकि भौगोलिक सीमाओं के निकट है इसलिये उत्तर भारत के सांगीतिक प्रणाली पर मुस्लिम प्रभाव पड़ा इसके विपरीत कर्नाटकी संगीत मुस्लिम प्रभाव से अछूता रहा। इस काल में कई नवीन रागों की रचना की गई। कई नवीन वाद्ययंत्रों का निर्माण हुआ, और अनेक सांगीतिक ग्रंथों की रचना की गई। उच्चकोटि के संगीतकार और विद्वान कलाकारों का आगमन इसी काल खंड में हुआ जैसे- स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू बावरा, गोपाल नायक, हुसैन शर्की, आमिर खुसरो, राजा मान सिंह तोमर, नायक बख्श, सदारंग, अदारंग इत्यादि। भक्त कवियों की वाणियां भी मध्य काल में ही मिलती हैं।

प्राचीन संगीत व्यवस्था में देशी और मार्गी संगीत गाया बजाया जाता था। फिर बाद में उस को निबद्ध और अनिबद्ध संगीत भी कहा गया है। लय और ताल के साथ नियम से बंधा हुआ संगीत निबद्ध संगीत और नियम से मुक्त संगीत को अनिबद्ध संगीत की परिभाषा से इंगित किया गया। वैदिक काल से ही संगीत की दो धाराएँ प्राचलित हो गई थीं। पहली शास्त्रीय संगीत और दूसरी लोक संगीत। इस काल में संगीत का सम्मान हर परिवार द्वारा किया जाता था। इस तरह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत आदिम काल से ही चला आ रहा है। जहां पहले साम गान किया जाता था। वही ऋचा गान, गाथा गान, ध्रुवा गान,

जाति गायन, प्रबन्ध गायन गाया जाता था। वही स्थान फिर ध्रुपद, धामर जैसी शास्त्रीय गायन शैलीयों ने ले लिया। आधुनिक काल में ख्याल गायन शैली, ठुमरी, टप्पा इत्यादि गाया जाता है।

1.2 प्राचीन काल से गायन के साथ वादन की परम्परा

जैसे कि हम सभी जानते हैं कि प्राचीन काल में वैदिक काल के दौरान गायन के साथ वादन की परंपरा थीं। बिना वाद्ययंत्र के गायन प्रभावशाली व उत्तम नहीं माना जाता था। शब्द व्यंजनों का प्रयोग साम गायन में किया जाता था और यह मंत्रोच्चारण के रूप में होता था। जिसको साम गान कहा गया। जिसके साथ वीणा वादन का प्रयोग किया जाता था।

आदिम युग में सर्वप्रथम आदि मानव ने कुछ प्राकृतिक वाद्ययंत्रों को अपनाया जैसे ध्वनि उत्पादन के लिए फूँक मार कर ध्वनि की उत्पत्ति की। किसी वस्तु पर आघात किये जाने से नाद की उत्पत्ति हुई। पूर्व पाषाण काल में संगीत का प्रयोग आमोद – प्रमोद के लिये किया जाता था। पत्थर के दो टुकड़ों को मंजीरा के सामान प्रयोग किया जाता था। डॉ. अरुण मिश्रा लिखते हैं कि आदि मानव ने प्रारम्भिक अवस्था में ध्वनि उत्पादन करने के लिये विभिन्न विधियाँ अपनाईं। किसी वस्तु पर आघात करने से फूँक भरने या खींचने आदि से इन सब क्रियाओं के द्वारा ही मनुष्य द्वारा अनगिनत वर्षों के पश्चात पूर्ण वाद्यों को अस्तित्व में लाया गया।¹⁰

उस समय हर्ष और उल्लास को प्रकट करने के लिए हाथों से लय दी जाती थी। साम गान के समय काल से लेकर आज आधुनिक समय में ताल देने के लिए हाथों पर ताली लगाई जाती है। दक्षिणी भारतीय संगीत में यह प्रथा आज भी पाई जाती है। अरुण कुमार सेन लिखते हैं कि ताल देने के लिये हाथों से ताली बजाने की क्रिया को जातकों में 'पाणि' स्वर कहा है। हमारे प्रसिद्ध पुराणों रामायण, महाभारत और हरिवंश पुराण में पाणि वादक का उल्लेख है। हाथों से ताली बजाकर राजाओं और महाराजाओं का स्तुति- गान,

¹⁰ भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, पृ. 10

सुत, मागध, बंदीगण आदि द्वारा किया जाता था। हाथ से ताली बजाकर लय का निर्वाह व पालन करते हुए गायन वैदिक काल से ही प्रचालित रहा है। स्त्रियों द्वारा ताली बजाकर नृत्य करने का उल्लेख सामगान में वर्णित है।¹¹

इस प्रकार वाद्ययंत्रों के चारों वर्गों तत् वाद्य, सुषिर वाद्य, ताल वाद्य और घन वाद्य सभी मानव जाति के उत्थान से ही विचरण कर रहे हैं। मनुष्य ने आरंभ से ही गायन के साथ किसी न किसी वाद्ययंत्र का प्रयोग किया है।

जमीन में गढ़ा खोद कर उस पर खाल लगाकर भू-दुंदुभि बनाई जाती थी। सुषिर वाद्यों में बांस में फूँक मार कर ध्वनि प्रवाह किया जाता था। घन वाद्ययंत्रों में सर्वप्रथम झुंन-झुंन रहा होगा क्योंकि किसी सूखे हुये फल या फिर सब्जी को हिलाने से उसके बीच जो बीज़ होते हैं वह आवाज करते हैं। यह प्राकृतिक रूप से दिया गया एक वाद्ययंत्र है। तत् वाद्य में सर्वप्रथम वीणा का ही उल्लेख मिलता है।

प्राचीन काल में गायन के साथ वीणा वादन अनिवार्य माना जाता था। क्योंकि तन्तु वाद्य मानव कंठ से मिलती जुलती ध्वनि संचालन करते हैं। ताल देने के लिये भी वाद्य प्रयोग किये जाते थे। जिन में दुंदुभि, भु- दुंदुभि सर्वाधिक प्रचालित थे। इन वाद्यों के ऊपर चमड़ा मढ़ा जाता था। इन के अतिरिक्त भेरी, वेणु, नाली, पणव और वंशी का प्रयोग भी किया जाता था। जिस तरह वीणा वादकों का समुह होता था ठीक वैसा ही वंशी वादकों का वर्ग होता था। सूत्र साहित्य में वाद्यों के चार वर्गों का उल्लेख मिलता है।

किसी भी गीत को गाने के लिए शब्दों का होना अनिवार्य है। किसी भी शब्द रचना के बिना किया गया संगीत प्रदर्शन गीत नहीं कहा जा सकता। गायन के लिए शब्द व्यंजन का होना स्वाभाविक है। सभी वाद्यों को वर्गीकृत करने पर केवल तन्तु वाद्य ही ऐसे हैं जो गायन का सही मायनों में अनुकरण करते हैं, अन्य वाद्यों में केवल ताल और लय का ही कार्य करते हैं। गायन को स्थिर रखना, उसको स्वर से कहीं भी छूटने ना देना और गायक को सुरीला बना रहने में तंत्री वादन ही सहायक होता है। तंत्री वाद्य स्वरित को स्थिर रखने का मूल कार्य करता है। "डॉ. परांजपे कहते हैं कि कंठ संगीत व वाद्य संगीत का इतिहास मानव सभ्यता के विकास पर आधारित रहा है। जब इसका सम्बंध व संयोग मानव मन से

¹¹ भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, पृष्ठ-18

हुआ, तो उसी समय से सांगीतिक भाव व भावनाओं का जन्म हुआ। कंठ मानव की सहज एवं स्वाभाविक देन है और यहीं उसके गीत तथा वाद्य के निर्माण एवं उसके स्वर क्षेत्र को निर्धारित करता है।”¹²

मानवीय सभ्यता के विकास के साथ वाद्यों का विकास होना भी सम्भव था। भारत वर्ष में हर एक के साथ धार्मिक भावनाये संबंधित रही है। हर एक परिस्थिति में लोग अपने- अपने इष्टदेव को नमन करते हैं। हमारे ग्रंथों में हर एक देवी देवता को वाद्ययंत्रों के साथ ही दर्शाया गया है। कृष्ण की बंशी, सरस्वती की वीणा, विष्णु का शंख, नारद की वीणा आदि हमारी धार्मिकता का प्रमाण देती है।

डॉ. प्रेमलता शर्मा कहती है कि सभी गीत वाद्य को प्रभावित करते हैं। गीत में संगति कैसे की जाती है, का विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। जो गीत गाया जा रहा है उसके साथ बिल्कुल वैसा ही वादन किया जाए उसे ‘तत्वम’ कहा जाता है, और जो गीत की संगत ले उसके पीछे चलता है उसे ‘अनुगत’ कहा जाता है और जो वाद्य गायन की संगत के साथ की बढ़ - चढ़ कर बोलता है उसे ‘ओघ’ कहते हैं।

स्वर और लय संगीत का आधार है जो गायन और वादन के परस्पर सहयोग से ही प्राप्त होता है। यह संगीत की आत्मा है। यदि काव्य रचनाएँ संगीत की श्रेणी में आगमन करती हैं तो वह स्वर और लय के माध्यम से ही करती हैं। इसलिये संगीत की आत्मा स्वर और लय है, बिना इस के सब कुछ निष्फल है। डॉ. प्रकाश महाडिक का कहना है कि “पुरातन समय में गुणीजनों को यह कहते सुना जाता था, कि तंत्री वाद्य के वादन का ज्ञान गायक को सुरीला बना देता है। वर्तमान में अनेक प्रसिद्ध गायक अच्छे वादक भी रहे हैं। कंठ को सुरीला बनाने के लिए ही तो गायक तानपुरा का सहारा लेते हुये अभ्यास करता है, इस उदाहरण से यह प्रमाणित हो जाता है कि गायकों के रियाज़ व सुरीलापन को विकसित करने के लिए तन्तु वाद्यों का विशेष सहयोग और स्थान रहा है।”¹³

इस प्रकार यह मान्य है की एक अच्छा गायक अच्छा वादक बन सकता है। क्योंकि वादन के दौरान वादक के मस्तिष्क में गायन ही चल रहा होता है जिसको वह अपनी भिन्न

¹² डॉ. परांजपे, संगीतबोध, पृष्ठ- 01

¹³ डॉ. प्रकाश महाडिक, तंत्री वाद्यों की महता, पृष्ठ- 09

– भिन्न कलाकारीयों और अलंकारों से अलंकृत करता है। गायन और वादन दोनों ही अभिव्यक्ति का माध्यम है। जैसे कि मानव ने सर्वप्रथम गायन के साथ ही नाता जोड़ा। गायन को सहारा देने के लिये वादन की व्यवस्था की गई। जिसके परिणामस्वरूप वाद्य यंत्र अस्तित्व में आये। तत् वाद्यों को कंठ के अति समीप माना जाता है। तानपुरा आधुनिक युग का मुख्य आधार है। गायन और वादन दोनों एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं।

1.3 तंत्री वाद्यों का विकास व उपयोगिता

भारत वर्ष में आदि काल से ही संगीत परम्परा चली आ रही हैं। हमारे देवी-देवताओं की मूर्तियों के हाथों में भिन्न - भिन्न वाद्ययंत्र देखे जाते हैं। वाद्यों के बिना संगीत अधुरा है। गायन और नृत्य का अस्तित्व वाद्यों के साथ ही है। गायन का आधार तानपुरा भी तंत्री वाद्य की ही श्रेणी में आता है।

भरत मुनि ने “नाट्यशास्त्र” के 34वें अध्याय में (कुतप) में भी वाद्यवृंद की चर्चा की है। जिससे वाद्यों की उपयोगिता और महत्ता का आभास होता है। किसी भी सांगीतिक क्रिया के लिये वाद्यों का होना अनिवार्य था। सभी वादन यंत्रों में वीणा का स्थान प्रमुख रहा है। इतिहास पर दृष्टि डालें तो विविध प्रकार की वीणाओं के बारे में पता चलता है। इन में एक तार वाली एकतंत्री वीणा से लेकर सौ तारों वाली शततंत्री वीणा तक का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है की वीणा का आविष्कार धनुष की टाँकर से हुआ होगा। प्रारंभ में वीणा का रूप और आकार धनुष की आकृति का होता था।

कुछ प्रचलित वीणाओं के नाम - वाण, कर्करी वीणा, गर्गरी वीणा, कांड वीणा, अपघात्तिला वीणा, गोधावीणा, अपघतलिका वीणा, पिच्छोला वीणा, स्तम्बल वीणा, तालुक वीणा, अलाबु वीणा, दुंदुभि वीणा, बल्लकी वीणा, वक्री वीणा, तुम्बी वीणा, नारदी वीणा, एकतंत्री वीणा, विपंची वीणा, मत्कोकिला वीणा, ब्रह्म वीणा, घोषावती वीणा, घोषा वीणा, महाघोषा वीणा, सुघोषा वीणा, चित्रा वीणा, परिवादनी वीणा, कच्छपी वीणा, कुब्जिका वीणा, वहंती वीणा, महती वीणा, जया वीणा, नकुली वीणा, वैष्णवी वीणा, रौद्री वीणा, कुर्मि वीणा, दारवी वीणा, रावणी वीणा, किन्नरी वीणा, सरस्वती वीणा, दण्ड वीणा, सैरेंद्री वीणा, कलावती वीणा, शील वीणा, घोषका वीणा, गांधर्वी वीणा, अलापनी वीणा, पिनाकी वीणा,

शततंत्री वीणा, पिच्छोरा वीणा, घातरि वीणा, हस्तिका वीणा, रुद्र वीणा, सप्तंत्री वीणा आदि। डॉ. लालमणि मिश्र कहते हैं "तत् वाद्यों की कितनी विशाल और समृद्ध परम्परा भारत में आदि काल से चली आ रही थी। इसी से स्पष्ट है की लगभग वीणाओं के 40 प्रकारों का उल्लेख ग्रन्थों मिलता है।"¹⁴

तंत्री वाद्य का अर्थ - तंत्री + वाद्य को मिलकर बना है। तंत्री, तंत्र शब्द से बना है, संगीत की परिभाषा में तंत्र उस उपकरण को कहा जात है। जिस पर धातु की तंत्रियाँ हो और जिस पर प्रहार करने पर स्वर की उत्पत्ति हो, उसे तंत्री कहते हैं। इन वाद्यों को तत्, तंतु या तंत्री कहा जाता है। ठाकुर जयदेव सिंह कहते हैं " तंत्री तत् तंतु इत्यादि शब्द तन धातु से बने हैं, जिस का अर्थ होता है फैलाना, तानना। जिस वाद्य पर काठ इत्यादि पर तार फैलाकर रखे या बाँधे जाते थे, वे सब तत् वाद्य कहलाते थे। ये आवश्यक नहीं की उस वाद्य की तंत्रियाँ फिर चाहे तार लोहे, पीतल अथवा ताँबे की चाहे प्रयोग में लाये गये हो। पहले मुंज अथवा कुश को भी बाँटकर तार बनते थे। अंत तार वाले सभी वाद्य तत् कहलाते थे, चाहे वो तार किसी भी द्रव्य आदि की बनी हो।"¹⁵

नाट्यशास्त्र में तत् को 'तंत्रीकृत' की संज्ञा दी गई है। वीणा, सितार, सरोद, तानपुरा, दिलरूबा, बेला, सारंगी, संतूर सभी वाद्य तंत्री वाद्य की ही श्रेणी में आते हैं।

वाद्य शब्द का अर्थ है 'वादनीय'। वह यंत्र जो बजाया जा सके, जिसमें से ध्वनि अवतरित हो, स्वर की उत्पत्ति हो, उसे वाद्य कह जाता है।

वैदिक काल में तंत्री वाद्य – वैदिक काल को संगीतिक दृष्टि देखा जाए तो यह संगीत का सबसे प्राचीन युग माना जाता है। डॉ. लालमणि मिश्र लिखते हैं वैदिक काल में संगीत वाद्यों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध नहीं होता फिर भी जो सामग्री प्राप्त है। उससे हम उस काल में वाद्यों के विकास की स्थिति का ज्ञान भली प्रकार कर सकते हैं।¹⁶

इस प्रकार हमें यह ज्ञात होता है की वैदिक काल में वाद्यों की जानकारी प्राप्त नहीं होती, परन्तु जितनी भी जानकारी उपलब्ध है उस में विभिन्न – विभिन्न प्रकार के वाद्यों का

¹⁴ भारतीय संगीत वाद्य, पृ - 23.

¹⁵ भारतीय संगीत का इतिहास – प 27

¹⁶ भारतीय संगीत का इतिहास- पृ. 27

वर्णन मिलता है, वाद्यों को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया - तत्, सुषिर, अवनद्, धन वाद्य। तत् वाद्य के अंतर्गत ही तंत्री वाद्य को रखा गया था।

वैदिक काल में रचित चारों वेदों – ऋग्वेद, साम वेद, अथर्व वेद, यजुर्वेद में वीणाओं का उल्लेख किया गया है जिस से पता चलता है, की उस समय गायन के साथ वीणा का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता था। इस काल में विभिन्न प्रकार की वीणाओं का प्रचलन था। उस समय एक तंत्री वीणा का उपयोग होता था। वीणा के रूप, आकार और वादन विधि में शनैः शनैः परिवर्तन आता गया और क्रमिक विकास होता गया।

सामवेद संगीत पर आधारित था। प्राचीन स्वर उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के साथ साम गान का गायन होता था। फिर धीरे- धीरे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद्र, कुष्ट, अतिस्वर का विकास हुआ। सप्तक पूर्ण विकसित हो गया। साम गान पूर्ण सप्तक पर गाया जाने लगा। साम गान वीणा के साथ ही किया जाता था। गायन की संगति में तंत्री वाद्यों को अनिवार्य समझा जाता था। वीणा के बिना गायन को 'उपवीणा' कहा जाता था। साम गान के साथ शील वीणा और अलाबु वीणा का प्रयोग होता था। जिस को 'नखी' के साथ बजाया जाता था। ठाकुर जयदेव सिंह लिखते हैं – " वीणा के बिना गाया गया 'गान' 'अपवीण' कहा जाता था। अपवीण का अर्थ खराब वीणा और वीणा राहित दोनों हैं। " ¹⁷

हमारे ऋषि मुनियों ने वीणा की तुलना मानवीय कंठ से की है। मानव कंठ को 'गात्र वीणा', 'शारीरी वीणा', 'कंठ तंत्री' से सम्बोधित किया है। इस 'गात्र वीणा' के आधार पर ही तंत्र वीणा का निर्माण हुआ। वीणा को 'वाण' या 'वेणु' कहा जाता था। ऋग्वेद में इस का उल्लेख मिलता है। डॉ. परांजपे का कहना है कि "ऋग्वेद कालीन "वाण" का रूपांतर सम्भवतः वीणा में हुआ। वीणा तत् वाद्यों के लिये सामान्य संज्ञा थीं। " ¹⁸

'वाण' ही पहला वाद्य यंत्र होगा जो मानव ने निर्मित किया होगा। वीणा ही "वाण" का रूपंतरित रूप है। लकड़ी का ढाँचा बनाकर उस पर बैल की खाल लगा दी गई। फिर उस में छेद किये गये और तारों को बाँधा गया, कुल 10 छिद्रों में 10 – 10 तारों का निकास

¹⁷ भारतीय संगीत का इतिहास, ठाकुर जयदेव सिंह, पृ – 229

¹⁸ संगीत बोध, पृ -132

किया गया। जिनसे ध्वनि उत्पन्न होती थी। सभी तंत्री वाद्य वीणा के अन्तर्गत रखे जाते थे। वाद्यों का निर्माण करने के लिये मूँज और दूर्वा का प्रयोग किया जाता था, दारू नामक एक विशेष प्रकार की लकड़ी का उपयोग किया जाता था इसलिये वीणा को 'दारवी' भी कहा जाता था। समय के साथ इस में जानवरों की खाल और बाल तथा रेशम का प्रयोग किया जाने लगा। फिर अलग अलग प्रकार की धातुओं का प्रयोग तंत्री वाद्यों के लिये होने लगा। गायन के साथ संगत कर रहे वाद्यों को 'तुर्य' की संज्ञा दी जाती थी। वीणा को बजाने के लिये ऊँगलियों या फिर बाँस से बनीं शलाका का प्रयोग किया जाता था। डॉ. लालमणि मिश्र का कहना है कि "सर्वप्रथम ऋग्वेद में "वाण" शब्द का उल्लेख तंत्री वाद्य के रूप में किया गया तथा समस्त तंत्रीवाद्यों को 'आघाटि' शब्द के अन्तर्गत माना गया। "ऋग्वेद में इन सभी वाद्यों को आघाटि कहा गया है। " ¹⁹

प्रचीन काल में वीणा – प्रचीन काल में वीणा में एक से अधिक तीन तारों का प्रयोग होने लगा। जिस को त्रितंत्री वीणा कहा जाता था। डॉ. सुरेशचंद्र राय कहते हैं कि " प्राचीन काल में स्वर प्रधान सभी वाद्यों को वीणा कहा जाता था चाहे वो मिज़राब अथवा कोण से बजाये जाये अथवा गज़ से। यही नहीं तूण व सुर्यादी, पुंगी, नागस्वरम, वेणु जैसे सुषिर वाद्यों को, मुख से फूंककर बजाये जाने के कारण 'मुखवीणा' कहा जाता था। " ²⁰

इस प्रकार ये देखा जा सकता है की उस काल में हर एक वाद्ययंत्र को वीणा की संज्ञा दी जाती थी। फिर चाहे सुषिर वाद्य हो उनको वीणा ही कहा जाता था। गंधर्व गान का गायन रामायण और महाभारत काल में वीणा वादन के साथ किया जाता था। विपंची वीणा का उल्लेख रामायण पुराण में मिलता है। महाभारत काल में भी विभिन्न प्रकार की वीणाओं की जानकारी मिलती है जैसे- अलापनी, अलाबु, आडंबरी आदि। महाभारत में अनेक स्थानों पर नारद और गंधर्वों द्वारा वीणा वादन के साथ गायन, नाट्य और नृत्य का वर्णन मिलता है। अतिथि आगमन पर भी रामायण और महाभारत काल में वीणा वादन होता था।

संस्कृत नाटकों में वीणा वादन का उल्लेख मिलता है। डॉ. प्रकाश महाडिक का कहना है कि वैदिक साहित्य, रामायण और महाभारत ग्रन्थों के अतिरिक्त संस्कृत नाटकों

¹⁹ भारतीय संगीत वाद्य, पृ - 20

²⁰ क्लासिकल म्यूजिक डॉ. कासली वाला, पृ - 112

में भी संगीत से सम्बंधित विषयों का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है, विशेषकर महाकवि कालिदास एवं महाकवि भास के नाटकों में।²¹

मेघदूत में नायिका को विरह में वीणा का वादन करते हुये दर्शाया गया है। नायिका के आँखों से बहते आँसूओं से वीणा के तारे भीग जाती और वह बार – बार तारों को सुर करती दिखाई दी है। इस के अतिरिक्त 'रघुवंश', ऋतु – संहार, स्वप्रवासवदत्त में वीणा का अति कुशल चित्रण किया गया है।

पुराणों में भी वीणा के महत्व को स्वीकार किया गया है। वायु पुराण, मार्कंडेय पुराण, स्कंद पुराण, हरिवंश पुराण में सांगीतिक सामग्री मिलती है। वीणा को मंगल वाद्य कहा जाता था। हर शुभ कार्य और हर्ष उल्लास के अवसर पर वीणा वादन की ध्वनि से वातावरण को मंगलमय बनाया जाता था।

आज के युग में जिस प्रकार राग गायन की व्यवस्था है उस समय जाति गायन का प्रचार था। जाति गायन के साथ सात तारों वाली 'गात्र वीणा' और 'दारवी वीणा' का वादन होता था। डॉ. शरतचंद्र श्रीधर परांजपे का कहना है कि "तंत्रियों की संख्या वाद्य की बनावट, आकृति तथा आकार प्रकार के मापदंड से वीणा के अनेक प्रकार विकसित हो चुके थे।"²²

संगीत की जानकारी वेदों के पश्चात भरत मुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' से मिलती है। विद्वानों व इतिहासकारों के अनुसार 'नाट्यशास्त्र' जो की पूर्ण रूप से नाटक पर आधारित ग्रंथ है। परंतु इस में गायन, वादन व नृत्य का भी उल्लेख मिलता है। यही प्रथम एकमात्र ग्रंथ है जिस में संगीत की जानकारी प्राप्त होती है। नाट्यशास्त्र से पूर्व किसी भी ग्रंथ में तथ्यों का विवेचन नहीं मिलता। विपंची, एकतंत्री, कच्छपी, घोषवती, चित्रा वीणाओं का उल्लेख भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में किया है। डॉ. लालमणि मिश्र ने कहा है "प्राचीन वाद्यों की स्थिति पर सामान्य प्रकाश डाला जा सका है किंतु इस में संगीत का कोई ग्रंथ न होने के कारण वाद्यों के रूप तथा उनकी वादन विधि सम्बंधी किसी महत्वपूर्ण बात का पता

²¹ भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य, पृ. 4

²² संगीत बोध, पृ - 136

नहीं चल पाता। वाद्यों के रूप तथा वादन- विधि की जानकारी हमें सर्वप्रथम “भरत-नाट्यशास्त्र” से प्राप्त होती है।”²³

भरत मुनि ने वाद्यों की विशेषता को स्वीकार किया है। नाटक का मंचन करते विभिन्न परिस्थितियों को दृश्य मान करने और भावाभिव्यक्ति के लिये वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, उस के लिये वाद्य अहम भूमिका निभाते हैं। तंत्री वाद्यों के संदर्भ में कहा जाता है की स्वर सौंदर्य का प्रबल प्रवाह तंत्री वाद्यों के माध्यम से ही संभव है। हिंदुस्तानी संगीत ‘सत्यम शिवम सुंदरम्’ के मूल सिद्धांत पर आधारित है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये समय – समय पर वाद्यों में परिवर्तन किये जाते रहे हैं। पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने बताया है कि “समस्त उपलब्ध संगीत ग्रंथ भरत के बाद के हैं और समस्त ग्रंथकारों का आधार ग्रंथ “ साम्भ्यो गीतमेवच” ऐसा स्वीकार किया है। इससे अधिक प्रमाण और दूसरा क्या होगा।”²⁴

एकतंत्री वीणा में एक तार लगी होती थी, फिर धीरे – धीरे परिवर्तन के फलस्वरूप तारों की संख्या में वृद्धि होने लगी। महती, मत्ताकोकिला वीणा में 21 तारों को बँधा गया। ये वीणा सारिका विहीन होती थी।

मध्य काल में तंत्री वाद्य –मध्य काल पूर्णता विकास का काल रहा। वैदिक काल और भरत काल को वीणा का प्रारंभिक काल कहा जा सकता है जो कि छठी शताब्दी तक रहा, सातवीं सदी में वीणा में परिवर्तन के दौर का आरंभ हुआ। मध्य काल के प्रारंभ में वीणा का स्वतंत्र वादन आरंभ नहीं हुआ था। गायन के साथ वादन अभिन्न अंग था। सम्राट विक्रमादित्य भी एक कुशल वीणा वादक थे। सम्राट समुद्रगुप्त ने अपने शासन काल में मोहरों पर वीणा का चित्र अंकित करवाया हुआ था।

बौद्ध साहित्य में भी संगीत की तीनों विधाओं का वर्णन मिलता है। सप्तंत्री वीणा, परिवादनी वीणा, विपंची, नकुली आदि वीणाओं की चर्चा की गई है। मौर्य काल में रचित ‘अर्थशास्त्र’ में कौत्तिल्य ने भी यंत्र-तंत्र के बारे में लिखा है। जबकि यह ग्रंथ पूर्ण रूप से

²³ भारतीय संगीत वाद्य, पृ - 24

²⁴ संगीत पत्रिका हाथरस कार्यालय, अंक-1947 पृ - 45.

राजनीति शास्त्र पर आधारित है। आमिर ख़ुसरो ने 'सेहतार' नामक एक पर्शियन वाद्य का निर्माण किया जिस पर तीन तारें लगाई गई थीं। सितार को ही सेहतार का ही परिवर्तित रूप माना जाता है।

मुगल काल को संगीत का 'स्वर्णिम काल' कहा जाता था। सभी मुगल शासक संगीत कला के प्रेमी थे। उस काल में प्रयोग में लये जाने वाले तंत्री वाद्यों में बरबत, वीणा, गिजक, रबाब, कानून, अमर्ती, स्वर मंडल, सारंगी, किंगरी, शुद्ध मेला, मध्य मेला, सुर सिंगार, जलतरंग, सुनादी, चुंग, तम्बुर आदि वाद्य यंत्र वर्णित हैं। मुहम्मद शाह रंगीले को संगीत से विशेष लगाव था। उनके दरबारी संगीतज्ञ ख़ुसरो खां को ही सितार का आविष्कारक माना जाता है।

पं. शारंग देव रचित संगीत के आधार भूत ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' में वाद्याध्याय में विभिन्न प्रकार की वीणा के वादन विधि और शैली से अवगत करवाया है।

दत्तिल मुनि ने अपने ग्रंथ दत्तिलम में वीणा को महत्व दिया है। वीणा को 'याल' शब्द से सम्बोधित किया है। वीणा को गायन के संगत के लिये तो प्रयोग में लाया जाता था, परन्तु कहीं – कहीं वीणा के स्वतंत्र वादन की भी जानकारी मिलती है। वीणा के तारों को राग में लगने वाले स्वरों पर मिलाया जाता था।

संगीत रत्नाकर में पंडित शारंगदेव ने छठे अध्याय में 26 प्रकार की वीणा की जानकारी देते हुये वीणा वादन की तकनीक की चर्चा की है। डॉ. लालमणि मिश्र ने बताया है कि "एक युग के बाद दूसरे युग की वीणाओं के सुश्रम अध्ययन करने पर यह मालूम होता है कि वीणा के प्रत्येक नये परिवर्तन के बीज उसके पुराने रूप में उपस्थित हैं।" ²⁵

'संगीत पारिजात' में पंडित अहोबल ने 'दण्डी' नामक वीणा का उल्लेख किया है। उस के आकार का वर्णन भी किया गया है। त्रितंत्री वीणा को जंतर वीणा कहा जाने लगा। सोमनाथ कृत ग्रंथ 'राग विवोध' में वीणा का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ में शुद्ध मेला तथा मध्या मेला वीणा का वर्णन किया गया है। जिस में तीनों सप्तको तक वादन किया जा

²⁵ भारतीय संगीत वाद्य, पृ -63।

सकता था। राग विवोध के द्वितीय अध्याय में वीणा वादन के संदर्भ में जानकारी मिलती है। 12वीं शताब्दी से पूर्व वीणा पर पर्दे या सारीकाएँ नहीं होती थी।

किन्नरी वीणा पर सर्वप्रथम सारिकाएँ लगाई गई। मतंग मुनि ने अपने ग्रंथ 'बृहद्देशी' में किन्नरी वीणा की विस्तार से जानकारी दी है। कहा जाता है की मतंग मुनि ही किन्नरी वीणा के आविष्कारक थे। मतंग मुनि चित्रा वीणा बजाने में माहिर थे। धीरे- धीरे इस में कुछ विशेष परिवर्तन भी किये गये जैसे – तुम्बा, ब्रिज, श्लाका और वादन के लिये गज का उपयोग होने लगा और तारों की संख्या भी बढ़ती गई। आचार्य बृहस्पति का कहना है – 'प्रो. राम कृष्ण कवि ने मतंग को किन्नरी वीणा का आविष्कारक माना है। मतंग से पूर्व वीणा पर पर्दे या सारिका नहीं होते थे। इन्होंने सर्वप्रथम वीणा पर सारिकाओं की योजना की। भारतीय संगीत को मतंग की यह बहुत बड़ी देन है।'²⁶

इस के उपरांत 14 तारों वाली किन्नरी वीणा का निर्माण हुआ जिस पर पर्दे लगाए गये। किन्नरी वीणा को सारिकायुक्त वीणा की जननी माना जाता है। संगीत रत्नाकर में पंडित शांरग देव ने लोहे की तीन तारों युक्त किन्नरी वीणा का उल्लेख किया है। 15वीं शताब्दी में रचित ग्रंथ 'स्वर मेल कलानिधि' में 'रामामात्य' ने 'वीणा प्रकरण' में अचल सारिका युक्त वीणा का वर्णन किया है। इसी कल खण्ड में 'स्वरामेला' नामक वीणा का उल्लेख मिलता है, जिस पर तीनों सप्तको की अचल सारिकाएँ बाँधी गई थी। श्री लक्ष्मी गर्ग का कहना है की वाद्य यंत्र की उत्पत्ति को देखते हुये दो बातें समझ में आती है एक तो यह की समय के साथ यह परिवर्तित होते गये जिस के परिणामस्वरूप नवीन वाद्य बने और दूसरा यह रहा कि किसी वाद्य को अधिक समय तक बजाने से उस में कुछ कमियाँ दिखाई देती है। उन कमियाँ को संशोधन एवं सुधारने के लिये नवीन वाद्य बनाए। मानव की मनः स्थिति गतिशील है और उसी के अपेक्षित नवीन वाद्यों की उत्पत्ति और निर्माण होता गया।'²⁷

वीणा वादन के संक्षिप्त इतिहास की चर्चा के बिना तंत्री वादन के विकास और उपयोगिता को दर्शाया नहीं जा सकता क्योंकि तंत्री वाद्यों की जननी वीणा ही है। आज तंत्री

²⁶ संगीत चिंतामणि, आचार्य बृहस्पति, पृ- 34

²⁷ श्री लक्ष्मी गर्ग, निबंध संगीत- पृ. 161

वाद्य यंत्रों के रूप, बनावट, वादन क्रिया, तारों की संख्या, सारिकाएँ इत्यादि समय के साथ परिवर्तित होते गये। आधुनिक युग में तंत्री वाद्य दो भागों में विभाजित है- तत् वाद्य और वितत् वाद्य। एक को आघात द्वारा और दूसरा घर्षण के द्वारा प्रयोग किया जाता है। तत् वाद्य मिजराब, नख, कोण आदि से बजाये जाते हैं। वितत् वाद्यों को गज़ व कमानी से बजाया जाता है। तंत्री वाद्य पूर्णता मानव द्वारा निर्मित वाद्य है। आज तंत्री वाद्य अपने भिन्न-भिन्न स्वरूप और आकार में प्रचलित है। प्रो. ललित किशोर का कहना है की 'वाद्ययंत्र के आविष्कार ने संगीत को मूर्तिमान कर दिया, जिससे मनुष्य संगीत का विश्लेषण कर इसकी शारिरिक रचना पर विचार विमर्श कर सका। केवल स्मृति के बल पर विचार विमर्श सम्भव नहीं होता। स्मृति अंतर दृष्टि के सामने बहुत छोटे श्रेत्र का चित्र रख सकती है इसलिये वाद्य यंत्र भी एक नया साधन प्राप्त हुआ, जिसने मस्तिष्क के सामने संगीत का पूर्ण व स्थायी रूप खड़ा कर दिया। इसके बाद ही व्याकरण की तरह संगीत शास्त्र का निर्माण हुआ।²⁸

1.4 सितार वाद्य की परम्परा

आधुनिक समय में सितार वाद्य अपनी विचित्र वादन शैली और मधुर ध्वनि के साथ देश में ही नहीं विदेश में भी लोकप्रिय वाद्य बन चुका है। प्राचीन समय से लेकर 18वीं सदी तक जो स्थान वीणा का था वह अब सितार वाद्य का हो गया है। वीणा, रबाब, सुर सिंगार, सुर बहार, कानून, दिलरूबा, इसराज, सरोद, सारंगी, बेला आदि जैसे वाद्य और उनको बजाने वाले कुशल कलाकार थे पर सितार वाद्य अपनी सरल और अनूठी वादन क्रिया के कारण लोकप्रिय है। आज अगर भारतीय शास्त्रीय संगीत विदेश में प्रसिद्ध हैं तो उस का अधिकतर श्रेय सितार वादकों ही जाता है। सितार वाद्य की उत्पत्ति कैसे हुई इसके बारे में विभिन्न विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत सामने आते हैं। अगर आज से मध्य युग के इतिहास को टटोला जाए तो उसमें सितार एक रहस्य बना हुआ है। इसकी उत्पत्ति पर बहुत सारे विद्वानों के अलग-अलग मत व उल्लेख प्राप्त होते हैं।

श्री उमेश जोशी, पं. ओमकार नाथ ठाकुर, डॉ. शरतचंद परांजपे, राणा कुम्भा, डॉ. लालमणि मिश्र, सवाई प्रताप सिंह, उ. अब्दुल हलीम जाफ़र, जितेंद्र मोहन सेन गुप्ता, विमल

²⁸ ध्वनि और संगीत – पृ- 135

कांत चौधरी, कृष्णस्वामी, आचार्य बृहस्पति, सुदर्शनाचार्य शास्त्री, हामिद हुसैन, रमा वल्लभ मिश्र, दरगाह कुली खां, आदि विद्वानों ने अपने अलग - अलग मत दिए हैं। कुछ का मानना है कि सितार का आविष्कार हजरत निजामुद्दीन द्वारा किया गया। कुछ विद्वानों का मत है कि प्राचीन वीणाओं के आधार पर जैसे एक तंत्री वीणा, त्रितंत्री वीणा, चित्रा वीणा, परिवादिनी वीणा इत्यादि का ये विस्तृत रूप है।

प्राचीन वीणा के आधार पर ही सितार वाद्ययंत्र का निर्माण हुआ। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह वाद्य विदेश से आया है। अरब और पर्शियन का वाद्य यन्त्र सेहतार है और वही से ये भारत आया। पर्शियन भाषा के 'सेह', शब्द जिसका अर्थ है 'तीन' अर्थात्, तीन तारों वाला यन्त्र। इसके पीछे का अर्थ ये है की सितार पर पहले तीन तारें लगाई जाती थी और फिर समय परिवर्तन के साथ इसमें तारों की संख्या बढ़ती गई और यह सेहतार से सितार में परिवर्तित हो गया। 'द हिस्टरी ऑफ म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट' में डॉ. कर्ट सेक का कहना है कि पर्शियन लोग वाद्य को 'तार' नाम से संबोधित करते हैं। इसके साथ में तारों की संख्या जो वाद्य में प्रयोग की जाती है, को जोड़ देते हैं, जैसे दो तार, सितार में तीन तार, करतार में चार तार, पंस तार में पांच तारा। इस प्रकार पर्शिया में तारों की संख्या के आधार पर वाद्ययंत्र का नाम निश्चित किया जाता।²⁹

कुछ विद्वानों का मत है कि अमीर खुसरो ने इसका आविष्कार किया है अगर उस समय के ग्रंथों में लिखी सामग्री में से देखा जाए तो ऐसा कहीं पर भी नहीं मिलता कि अमीर खुसरो ने सितार का आविष्कार किया हो। बहुत से साहित्यकार ये मानते हैं कि सितार के आविष्कार का श्रेय अमीर खुसरो हो जाता है। श्री एस एस टैगोर ने बताया कि "प्राचीन काल में जब पारसी लोगों ने भारतीय लोगों के साथ व्यापार व्यवसाय स्थापित किया। उस समय पारसी लोग ने भारत से कच्छपी वीणा को अपने देश ले जाकर उसे सितार नाम प्रदान किया बाद में यही यंत्र अरब देशों में जाकर गिटार, सौर, किमोर, तम्बूरी वीणा के नाम पर प्रसिद्ध हुआ।"³⁰

²⁹ द हिस्टरी ऑफ म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट पृष्ठ संख्या 256- 257

³⁰ यंत्र कोष पृष्ठ 17

हमारे उच्चकोटि के कलाकार उ. अब्दुल हलीम जाफर खां साहब ने भी सितार के आविष्कार का श्रेय अमीर खुसरो को दिया। बात का अनुकरण बहुत से विद्वानों ने किया। डॉ. प्रकाश महाडिक अपनी पुस्तक में लिखते हैं, उस्ताद विलायत खां से जब मैंने पूछा तब उन्होंने भी इसका श्रेय आमिर खुसरो को देते हुए कहा अमीर खुसरो के जरिए सितार कव्वाली के साथ संगत करने के लिए बनाया गया था। और वह उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खां से भी इसकी उत्पत्ति के संबंध में चर्चा के बारे में लिखते हैं कि उन्होंने सितार के विस्तार का श्रेय अमीर खुसरो को दिया। परन्तु समकालीन इतिहास में कहीं पर भी सितार के आविष्कार की जानकारी अमीर खुसरो द्वारा की गई है, नहीं मिलती।

डॉ. लालमणि मिश्र ने बहुत ही उचित तर्क के साथ इस बात को रखा कि अमीर खुसरो की मजार पर प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले आयोजन में कव्वालियां गाई जाती हैं। तानसेन की कब्र पर आज भी ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि गाया जाता है। वही अगर अमीर खुसरो ने सितार का आविष्कार किया होता तो उनकी मजार पर प्रतिवर्ष परंपरा के अनुसार सितार वादन किया जाता इसलिए सितार के निर्माण का श्रेय अमीर खुसरो को नहीं दिया जा सकता और ना ही इसका कोई ठोस प्रमाण प्राप्त होता है।

एक और मत के अनुसार मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक नेमत खां के भाई खुसरो खां ने सितार वाद्य का आविष्कार किया। सितार के आविष्कार के बारे में श्री रमा बल्लभ मिश्र कहते हैं कि "नवाब दरगाह कुली खां की लिखी पोथी मिराते दिल्ली में उन्होंने स्वयं शब्दों में लिखा है नेमत खा, सदारंग का भाई खुसरो खां संगीत का उच्चकोटि का विद्वान है। उसने एक तीन तार वाला नया बाजा सहतार बनाया है। जिस पर नई-नई राग- रागिनियां बड़ी कुशलता के साथ बजाता है।"³¹ एक और मत के अनुसार तम्बूर नामक वाद्ययंत्र के आधार पर सितार वाद्य का आविष्कार हुआ। अरब और ईरान में इस वाद्ययंत्र का प्रयोग किया जाता था। आचार्य ब्रह्मस्पति लिखते हैं कि अकबर के दरबारी कलाकारों की सूची में तम्बूरा वादको का उल्लेख मिलता है।³²

³¹ सितार के आविष्कार का इतिहास और विकास के चरण श्री रमा बल्लभ मिश्र पृष्ठ संख्या 19

³² मुसलमान और भारतीय संगीत, पृष्ठ- 61

“तम्बूरा की परिभाषा देते हुये श्री हरिहर निवास कहते हैं कि एक और बाजा है, जिसे तम्बूरा कहते है। एक तुम्बा होता है और वीणा की जैसे ही दो धातु के तार तथा दो तंत के तार होते हैं, कुछ लोग उसमें लोहे और तांबे के तार लगाते है।”³³

तम्बूरा वाद्य तानपुरा से भिन्न होगा तभी उसका वर्णन हमारे ग्रंथों में मिलता है और यह संगीत के एकल वादन में या फिर संगतकारी में उपयोग लाया जाता था। बहुत से विद्वानजनों ने इसकी अलग-अलग प्रकार की उदाहरण दी है। “इतिहासकार अबुल फजल ने अपनी पुस्तक आईने अकबरी में जो की 1590 में रची गई थी 11 तारों वाली तंत्री वाद्ययंत्र का वर्णन किया है।”³⁴

प्राचीन काल में अनगिनत प्रकार की वीणाए प्रचलित थी। सितार कि उत्पत्ति त्रितंत्री वीणा से मानी जाती है त्रितंत्री वीणा सारिकायुक्त वीणा थी। अधिकतर विद्वानों ने वीणा को सितार की उत्पत्ति हुई। डॉ. लाल मणि मिश्र, डॉ. विमल मुखर्जी, डॉ. परांजपे त्रितंत्री वीणा से सितार की उत्पत्ति मानते है।

डॉ. लालमणि मिश्र का कहना है कि जो वीणा शारंगदेव के समय तक त्रितंत्री वीणा थी उसी का विकसित रूप सितार है। आप का कहना है की त्रितंत्री वीणा ही सितार और तानपुरे का परिवर्तित रूप है। त्रितंत्री वीणा का नाम सितार केवल दो सौ दशक पुरातन है। इससे पहले इसको त्रितंत्री वीणा और निबंध तानपुरा कहा जाता था।

प्रचीन त्रितंत्री वीणा को ही मुसलमान सेहतार कहते थे। क्योंकि फारसी में सेह का अर्थ तीन से लिया जाता है। इसलिये सेहतार का अर्थ हुआ तीन तारो वाला वाद्य। रमा वल्लभ मिश्र का कहना है कि त्रितंत्री वीणा के तीन तुम्बे और तीन ही तारे थी। खुसरो खां ने इस ही वीणा को परिवर्तित कर सेहतार का नाम दे दिया।³⁵

डॉ. रजनी भटनागर लिखती है कि सबसे पहले फारसी की मीराते दिल्ली और नादिरातशाही में सितार शब्द का प्रयोग किया गया। जिसका रचनाकाल 1798 का माना

³³ मानसिंह और मानकुतूहल पृष्ठ 102.

³⁴ आईने अकबरी पृष्ठ- 268 – 269

³⁵ सितार के आविष्कार का इतिहास व विकास के चरण – संगीत पत्रिका जुन 78- प 33

गाया है। उस समय कहा जाता था की तीन तारों वाला वाद्य अद्भुत और विचित्र है। इसे लोग विचित्र वस्तु के नाम से जानते थे।³⁶

सभी तथ्यों से अवगत होने के उपरांत यह कहा जा सकता है मध्यकाल में किसी भी फारसी ग्रंथ में सितार की जानकारी नहीं मिलती। सितार वाद्य का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पदार्पण 18 वीं शताब्दी में हुआ। 1747 में मीराते दिल्ली के लेखक कुली खाँ ने तीन तारों वाले वाद्य सेहतार का उल्लेख किया था। रेखा निगम लिखती है की शाह आलम स्वयं संगीतज्ञ और शायर थे। उन्होंने 'नादिराति शाही' नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व इस लिये अधिक है कि सर्वप्रथम इसी ग्रंथ में 'सितार वाद्य' पर स्वतंत्र वाद्य के रूप में प्रकाश डाला गया है। यद्यपि मोहम्मद शाह रंगीले के समय में खुसरो खाँ नामक सितार वादक एवं आविष्कारक का नाम अवश्य प्राप्त होता है।³⁷

सितार में प्रारंभ में तीन तार होते थे जो स, प, सं से मिलाये जाते थे। सितार में तीन तूम्बे लगे होते थे। कुछ पुस्तकों में इसके चित्र भी अंकित हैं। सितार पर 14, 15, 16, 17, और 18 तक सारिकाये होती थी। सितार पर 'दा और रा' के ही बोल बजाये जाते थे।

सितार के स्वरूप व इतिहास व स्वतंत्र वादन की चर्चा करें तो ज्ञात होता है की इस के परिवर्तन और रूप रेखा में कई उस्तादों और कलाकारों का योगदान रहा है जो आज सितार अपने इस रूप में है। और इस का प्रथम श्रेय तानसेन के वंशज अमृत सेन, रहीम सेन, निहाल सेन को दिया जाता है। उन्होंने इस को परिवर्तित करके तीन तारों से पाँच तारे लगाई जो म, स, प, सं के क्रमानुसार मिलाई जाती थी। डॉ. लालमणि मिश्र का कहना है कि सितार ही त्रितंत्री वीणा का विकसित रूप है। 18वीं शताब्दी में इस वाद्य को वादन उपयोगी बनाने और लोकप्रिय करने में तानसेन के वंशजों का महत्वपूर्ण योगदान है।³⁸

सितार में समय के साथ- साथ परिवर्तन और वादन तकनीक में और भी अन्तर आया है। खुसरो खाँ के पोत्र, फिरोज़ खाँ के सुपुत्र, मसीत खाँ ने सितार पर तारों की संख्या को बढ़ा दी गई। तीन तारों के साथ, चार तारों को और जोड़ दिया। तथा पदों की संख्या भी

³⁶ सितार वादन की शैलियाँ – पृ 53

³⁷ सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन – प 13

³⁸ भारतीय संगीत वाद्य- 59

23 कर दी। गत वादन शैली का मूल विकास आप ने ही किया। मिज़राब के विशेष बोलों के साथ गत की रचना की। जिस में केवल स्थायी (गत) और अन्तरा (तोड़ा) ही बजाया जाता था। डॉ. रजनी भटनागर कहती है कि आरम्भ सितार का वादन संगीत वाद्य के रूप में होता था। गायन के साथ संगत करने वाला कलाकार केवल रिक्त स्थान की पूर्ति करता था। सितार वादन में दाये हाथ का प्रयोग जोर से किया जाता था। बाये हाथ को धीमी गति के साथ प्रयोग किया जाता था। सितार की वादन क्रिया में परिवर्तन आते गये इस पर वीणा अंग का आलाप लिया जाने लगा। वीणा की वादन सामग्री सितार पर कुछ जम नहीं रही थी तो सितार वादन की नई शैली गत का निर्माण हुआ।³⁹

रहीम सेन ने जो की एक प्रसिद्ध वीणा वादक और ध्रुपद गायक थे, ने सितार वादन दुल्हे खाँ से सीखना आरम्भ किया। आप ने सितार के पर्दों की संख्या 23 से 19 कर दी। गत वादन शैली में तोड़ो और बीन अंग का आलाप, जोड़ आलाप और मींड का काम आप ने ही प्रारम्भ किया। रहीम सेन के पुत्र अमृत सेन ने नवीन गते बनाई, राग की बढ़त के लिये ध्रुपद अंग की गायन शैली और वीणा अंग का आलाप व जोड़ का क्रम बनाया। वादन का क्रम निर्धारित किया – गत, तोड़ा, द्रुत गत की तानें गायकी अंग से।

सितार पर एक नये बाज़ रज़ाखानी गत का निर्माण किया गया। जिसको मोहम्मद रज़ा खाँ ने बनाया था। इस गत को अधिक प्रचार में उनके सुपुत्र गुलाम रज़ा खाँ द्वारा लाया गया। अभी तक सितार पर केवल मसीतखनी गत का ही वादन होता था। इस नये बाज़ से एक और वादन शैली मिल गई। मिज़राब के बोलों के साथ वादन गति भी बढ़ गई। सितार की बनावट, तकनीक, वादन प्रणाली में निरंतर प्रागति होती गई। सितार पर 22 पर्दे होते थे जो अचल थे हिलते नहीं थे वही दूसरी और 16 पर्दों वाली चल सितार का भी चलन हो गया। सितार को स्वतंत्र वादन आरम्भ हो चुका था। सितार के तुम्बे के साथ उसकी ज्वारी और तारों की संख्या में भी बढ़त की गई। स्वर की गुंज बढ़ने के लिये सितार पर तरब की तारे लगाई गई। जहां पहले दो स्वरों की मींड ली जाती थी अब चार से पांच स्वरों तक की मींड ली जाती है, कृतन, जमजमा, ठोंक, सपाट तानें, झाला आदि का प्रयोग होने लगा। पं रवि

³⁹ सितार वादन की शैलियाँ – पृ. 54

शंकर अपनी पुस्तक में लिखते हैं की हमारे संगीत की शैलियों और परंपराओं में ख्याल धीरे – धीरे प्रमुखता में आ गया और ध्रुपद का स्थान ले लिया, उत्तर में वीणा का स्थान सितार ने ले लिया और यह हिंदुस्तानी संगीत के सबसे लोकप्रिय तार वाले वाद्य यंत्रों में से एक बना हुआ है।⁴⁰

निष्कर्ष

सितार, जो विश्व का सबसे प्रसिद्ध वाद्य बन चुका है। जिसे एकल और वृंद वादन में खूब बजाया जाता है। सितार में समय के साथ- साथ परिवर्तन और वादन तकनीक में और भी अन्तर आया है। आलाप, जोड़ आलाप, विलम्बित गत, तोड़े, लयकारिया, मध्य लय की गत, द्रुत गत, तोड़े, झाला, लोकप्रिय धुनों को ठुमरी अंग से बजाने, के अतिरिक्त बाज़ की तार के इलावा जोड़ी के तार, पंचम और षड्ज के तार पर भी वादन होने से कई सप्तको तक जाया जा सकता है। युवा कलाकारों ने नीलाद्री कुमार ने सितार को अलग मुकाम तक पहुंचा दिया है।

⁴⁰ मय म्यूजिक मय लिइफ – पृ. 30

अध्याय - 2

सम्बन्धित साहित्य पुनरावृष्टि, शोध एवं अध्ययन प्रविधि की पृष्ठभूमि

किसी भी विषय विशेष का जब चयन किया जाता है तो उससे जुड़े हुये तथ्यों का समालोचन युक्त अध्ययन किया जाता है। यह शोधार्थी का प्रथम दायित्व है कि वह अपने चयन किये गये विषय पर पूर्व समय में हो चुके शोध कार्यों पर पुनरावलोकन करें और इसके लिये उसको बहुत सारी कठिनाईयों से भी गुजरना पड़ता है। जिससे उसके द्वारा चयनित शोध प्रविधि को वह तथ्यों के साथ उजागर करता है। इस प्रक्रिया से शोधार्थी अपने शोध कार्य और अनुसंधान को अगामी शोधार्थियों के लिये सरल व ज्ञानवर्धक करने में सक्षम हो जाता है।

2.1 सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1.1 इंटरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, “सितार के प्रस्तुतीकरण में नवाचार का इतिहास”, (इटावा तथा मैहर धराने के विशेष संदर्भ में), प्रो. हर्षवर्धन ठाकुर (सहा प्रा: वाद्य संगीत), शास महारानी लक्ष्मीबाई स्थान कन्या महा किला भवन, इन्दौर। प्रो. रूपत्री दुबे (सहा प्रा: वाद्य संगीत) माता जीजा बाई शास. कन्या महामौती तबेला, इन्दौर

इस शोध प्रपत्र में शोधार्थी द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रचीन समय से लेकर घराना प्रथा तक की चर्चा की गई है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रथा वैदिक समय से ही चली आ रही गायन की संगति के लिये पृथक-पृथक वाद्य होते थे। फिर यही रिवाज आगे चलता गया और फिर विभिन्न प्रकार की शैलियां बन गईं जिनको बाज का नाम दिया गया। सितार वादन के आस्तित्व में आने से विभिन्न प्रकार के वर्ग सम्प्रदाय बन गये तो बाद में घराना प्रथा में परिवर्तित हो गये। सितार वादन के प्रसिद्ध व प्रमुख घराने

सेनिया घराना, जयपुर सेनिया घराना, इटावा घराना, मैहर घराना जिन्होंने सितार वादन की विभिन्न और अभूतपूर्व प्रस्तुतियों से सितार वादन का स्तर बहुत ऊपर उठा दिया। जयपुर सेनिया घराने के उ. अमीर खां, बहादुर खां, हुसैन खां, निहाल सेन, बरकत डल्ला खां, आशिक अली खां, उ. मुश्ताक अली खां, पं. देबू चौधरी जैसे कलाकारों का नाम उल्लेखनीय है।

इटावा घराने से उ. इमदाद खां, उ. इनाइत खां, उ. इमरात खां, उ. वाहिद खां, उ. विलायत खां, उ. शाहिद परवेज खां, उ. शुजात खां, उ. निशात खां जैसे नामवर कलाकार आते हैं। मैहर घराने के उ. अल्लाउद्दीन खां, पं. रवि शंकर, उ. अली अकबर खां, श्रीमती सुरबहार अन्नपूर्णा देवी, जैसे कलाकारों ने विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

2.1.2 “सितार पर स्वतंत्र वादन शैली के विकास का प्रारम्भिक युग (18वीं शताब्दी के संदर्भ में)”, डॉ. शिल्पी नाहर (पोस्ट डाक्टरोल फेलो संगीत, वसंत नायक, शासकीय कला एवं समाज शास्त्र विज्ञान, संस्था, जयपुर।

प्रपत्र में सितार के इतिहास की चर्चा की गई है। प्राचीन में सभी तार वाद्य यंत्रों के केवल वीणा ही कहा जाता था। विभिन्न प्रकार की वीणाओं का उल्लेख किया गया है। गायन के साथ वीणा वादन की चर्चा के साथ उसके विकास का समय भी प्रकाशित किया गया है कैसे उसमें विभिन्न बोलों का निर्माण हुआ विभिन्न बाज आस्तित्व में आये फिर एकल वादन और स्वतंत्र वादन के लिए सितार वादन को प्रमुख वाद्य समझा जाने लगा। आलाप, जोड़, झाला, गतकारी, तानों, लयकारीयों की समाविष्ट हुई। सितार के ढांचे में परिवर्तन और पूर्वी, बाज और जिसकों रज़ा खां वे मसीत खां (मसीत खानी बाज) ने बनाया ता की जानकारी मिलती है।

2.1.3 संगीत गलैक्सी Vol-9, Issue-2, July, “सितार की उत्पत्ति एवं विकास: एक विश्लेषण”, डॉ. मनोज कुमार शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन पं. बंगाल।

इस प्रपत्र में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य की महत्ता की चर्चा करते हुए उसके इतिहास का वर्णन किया गया है। संगति करने के साथ-साथ कब सितार वादन एकल वादन की प्रस्तुतिकरण के लिए प्रमुख वाद्य की क्षेणी में आ गया। अत्र और तंत्र की जानकारी दी गई है। आविष्कार की चर्चा के साथ सितार पर कई नये-नये परिवर्तन और शोध का उल्लेख मिलता है। विभिन्न काल खण्डों में, विभिन्न रूपों तथा नामों से वर्तमान समय तक सितार वाद्य की विकासशीलता व विशेषता की जानकारी प्राप्त होती है। सितार पर विभिन्न काल खंडों के दौरान हुए परिवर्तनों और विद्वानों द्वारा किये गये सुधारों का उल्लेख मिलता है।

2.1.4 Musical Instrument & Indian Film Industry ISBN 978-81-947902-6-6, “सितार की उत्पत्ति, विकास एवं हिन्दी फिल्म संगीत में भूमिका”, वनीता, असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब।

भारतीय संगीत संस्कृति और सभ्यता में संगीत की विशेष महत्ता को दर्शाया गया है। वाद्यों का वर्गीकरण करने के साथ-साथ तंत्री वाद्यों पर विशेष प्रकाश डाला गया है। तंत्री वाद्यों का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में क्या स्थान और उपयोगिता है उसकी जानकारी दी गई है। सितार वाद्य की विशेष चर्चा के साथ उसके इतिहास की भी जानकारी उपलब्ध करवाई है। सितार वाद्य में समय-समय पर कब क्या परिवर्तन हुए उस पर दृष्टि डाली गई है। फिल्म संगीत में सितार वादन की भूमिका पर विशेष अध्ययन किया है। शास्त्रीय धुनों पर आधारित संगीत व वाद्य यंत्रों की जानकारी दी गई है। फिल्मों के नामों का ब्यौरा दिया गया है जिनमें सितार वादन किया गया है। पं.रवि शंकर, उ. रईस खां, उ. अब्दुल हलिम जाफर खां, उ. विलायत खां, पं. कार्तिक कुमार आदि वरिष्ठ

कलाकारों ने फिल्मों में सितार वादन किया है। हिन्दी फिल्म जगत में सितार वादन की भूमिका को दर्शाया गया है।

2.1.5 “वैश्वीकरण एवं भारतीय संगीत कला”, डॉ. अनीता रानी, असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत विभाग, वी.डी. जैन गर्ल्स पी.जी. कालेज, आगरा।

संसार में विचरण कर रही सभी कलाओं को दृष्टिगोचर करते हुए। संगीत के विकास और प्रचार प्रसार की चर्चा की है। संगीत चाहे किसी भी जगह का हो या किसी भी सभ्यता संस्कृति का उसका मुख्य कार्य तो मानव मन का रंजन करना ही है। संगीत ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभ्यता और संस्कृति के प्रसार हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैश्विक स्तर पर संगीत को चाहे तो भारतीय हो या फिर पाश्चात्य वसुदेव कटुम्बकम की भावना से ही प्रेरित है। आज कल देश-विदेश में विद्यालयों और विश्व विद्यालयों में हिन्दुस्तानी संगीत के विभाग बन रहे हैं। हमारे कलाकार कई दशकों से विदेशों में प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों ने भी संगीत के वैश्वीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संगीत दिन व दिन लोकप्रियता के शिखर पर जा रहा है।

2.1.6 “वैश्वीकरण के सन्दर्भ में भारतीय संगीत का अवलोकन”, JMRD 2020: 6(10) 63-64/ International Journal Peer Reviewed Journal Impact Patiala, MJ/F 4.25 E-ISSN-2454-6615

अनुराधा सिंह: शोध छात्रा महात्मा गाँधी चित्रकूट, ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)। आज के दौर में वैश्वीकरण एक व्यापक विषय है। इस पर विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मतों पर चर्चा की गई है। वैश्वीकरण का मुख्य लक्षण आदान-प्रदान ही है। पहले जहाँ व्यापार होता था आज कल संगीत का आदान-प्रदान हो रहा है। हमारी सभ्यता का एक अटूट अंग हमारा संगीत है जो विश्व के कोने-कोने में गाया बजाया जा रहा है। भारत की इस धरोहर को आज विश्व स्तर पर पहचान मिल चुकी है। इस पर कई प्रकार के नये-नये आविष्कार और अध्ययन हो रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने आज विश्व को एक सूत्र में

पिरो दिया है। जिससे कलाकारों की कृतियों को संरक्षित किया जाता है और उसे कभी भी देखा सुना जा सकता है। यह संगीत के वैश्वीकरण के साथ ही संभव हुआ है।

2.1.7 इंटरनैशनल जनरल रिसर्च, ग्रंथालय “वैश्वीकरण के युग में संचार साधनों के माध्यमों से संगीत की बढ़ती लोकप्रियता”, प्रो. विनिता शर्मा (विभागाध्यक्ष, वाद्य संगीत) म.ल.बा.शा.क.सना.मह, इन्दौर।

आधुनिक युग में सम्पूर्ण विश्व एक ही गाँव के सामान है क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकरण और वैश्वीकरण ने सारी दुनिया को सिमट कर रख दिया है। पहले संगीत कार्यक्रम मंचों पर किये जाते थे, लोक सुनने जाते थे। परन्तु आजकल सोशल मीडिया पर कुछ ही पलों में अब पुरानी से पुरानी कलाकार की प्रस्तुति को देख सुन सकते हैं और यह कभी भी कहीं नहीं जा सकती। भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालें तो भारतीय संगीत की लोकप्रियता देश-विदेश में हमेशा से ही रही है। हमारे बहुत से कलाकार भी विदेशों में पलायन कर चुके हैं। जहाँ पर वह अपनी कला का जौहर दिखा रहे हैं। कुछ लोग संचार माध्यम से कलाकारों से संगीत की शिक्षा भी ग्रहण कर रहे हैं। संचार साधन और सूचना प्रौद्योगिकरण ने संगीत को ही नहीं अन्य कलाकारों को भी प्रभावित किया है।

2.1.8 International Journal of Multimedia Trends, “आधुनिक समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत के विस्तार में मीडिया का योगदान”, डॉ. रजना ग्रोवर।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संगीत कला में प्रचार-प्रसार पर चर्चा की गई है कि संगीत का क्षेत्र बहुत विशाल हो गया है। आज कल हर कोई संगीत की विद्या सीखना, समझना चाहता है। मीडिया और उनके विभिन्न साधनों द्वारा संगीत सीखना सरल हो गया है। मीडिया द्वारा आप कहीं पर भी संगीत सुन सकते हैं, देख सकते हैं। बहुत सारे उपकरण आ गये हैं जो छात्रों की मदद करते हैं संगीत सीखने में और समझने में भी। इस प्रपत्र में आकाशवाणी, टैलिविजन, दूरदर्शन, फिल्म संगीत, ऑडियो वीडियो रिकार्ड्स आदि सुन सकते हैं।

2.1.9 शोध मंथन, Vol. XIV No. 1, Jun-May 2023, ISSN(P) 0976-5255(e) 2454-339X “ग्लोबलाईजेशन और भारतीय संगीत कला”, डॉ. अनीता रानी, प्रोफेसर वरिष्ठ प्रवक्ता, संगीत सितार विभाग, बी.डी. जैन गर्ल्स कालेज आगरा।

संसार की सभी कलाएं सभ्यता और संस्कृति का आईना होती हैं संगीत कला सभी कलाओं में से अधिक प्रफुल्लित और विस्तृत है। इस प्रपत्र में संगीत कला का मानव मन पर क्या प्रभाव डालती है का वर्णन मिलता है। हमारे संगीत को विश्व स्तर पर पहचान मिली हुई है। संगीत को विश्वयापी बनाने में सूचना प्रौद्योगिकी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2.1.10 Sangeet Galaxy ISSN-2319-9695, “Indian Classical Music in a Globalized World”, Samidha Vedabala, Asstt. Prof. Dept. of Music Sikkim Central University, Sikkim

भारतीय संगीत को शुरूआत से लेकर आज तक कई परिवर्तनों से गुजरना पड़ा और कई बदलावों के दौर से गुजरा। परन्तु यह नवीनता के साथ-साथ प्राचीनता को भी लेकर चल रहा है। वैश्वीकरण ने दुनिया को बदल दिया है। वैश्वीकृत दुनिया में भारतीय संगीत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय संगीत के संदर्भ में वैश्वीकरण को समझना है।

2.2 विश्वविद्यालयों में प्रस्तुत किये गये पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध

2.2.1 अजुलं मित्तल, “सितार के वादन शिल्प पर अन्य वाद्यों का प्रभाव-एक अध्ययन”, 2012-13, निर्देशिका प्रो. (श्रीमती) सुभद्र कुमारी सतसंगी, दयाल बाग ऐजुकेशनल इंस्टीच्यूट (डीन, यूनीवर्सिटी, आगरा)

प्रस्तुत शोध कार्य को सात अध्यायों में लिखा गया है जिनमें सितार की वादन क्रियाओं के अतिरिक्त इतिहास पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रथम अध्याय में संगीत में वाद्य संगीत का महत्व एवं संदर्भ साहित्य की चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्यायो में वाद्यों के वर्गीकरण का उल्लेख मिलता है। तृतीय अध्याय में सितार की बनावट व वादन शिल्प की चर्चा मिलती है। चतुर्थी अध्याय में वीणा के विभिन्न प्रकारों सितार वाद्य के वादन शिल्प को कैसे प्रभावित करते हैं का उल्लेख है पंचम अध्याय में संगीत रत्नाकर में वीणा प्रकारों पर चर्चा मिलती है। षष्ठम अध्याय में तत वाद्यों का तुलनात्मक अध्ययन है और सप्तम अध्याय में निष्कर्ष प्राप्त होता है।

2.2.2 सुमित सिंह, “पद्म विभूषण पं. देबु चौधरी की संगीतात्मकता का परिशीलन”, निर्देशिका डॉ. गुरप्रीत कौर डीन विभागाध्यक्ष, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर 2020

प्रस्तुत शोध में पद्मविभूषण पं. देबु चौधरी की जीवनवृत्त और संगीत में उनके द्वारा दिये गये योगदान को समर्पित है प्रथम अध्याय में साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है। द्वितीय अध्याय में उनके जीवन को प्रकाशित किया गया है। तृतीय अध्याय पं. देबु चौधरी एक कलाकार के रूप में उनके द्वारा दिये गये योगदान उनकी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिये गये प्रस्तुतीकरण पर आधारित है। चतुर्थी अध्याय में उनके शिक्षक रूप को उजागर किया गया है उनके शोध निर्देशन को समर्पित है। पंचम अध्याय में उनको कर्मठ प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में प्रकाशित किया गया है। छठे अध्याय में उनके द्वारा रचित पुस्तकों की चर्चा है। सप्तम अध्याय में उनके द्वारा रचित रागों की जानकारी मिलती है। इस प्रकार उपरोक्त शोध कार्य में पद्म विभूषण पं. देबु चौधरी के हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में दिये योगदान की चर्चा की गई है।

2.2.3 यादव सुमन, “मैहर घराने की संगीत परम्परा एवं भारत रत्न पं. रवि शंकर जी की सितार वादन शैली का एक विवेचनात्मक अध्ययन”, निर्देशक डॉ. प्रेम कुमार मलिक, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, 2021।

प्रस्तुत शोध कार्य में पं. रवि शंकर जी के प्रारम्भिक जीवन और उनकी वादन शैली के साथ मैहर घराने की परम्परा पर भी चर्चा की गई है। प्रथम अध्याय पं. रवि शंकर जी के जीवन और सितार वादन के क्रमिक विकास की जानकारी मिलती है। द्वितीय अध्याय में

मैहर घराने के बारे में लिखा गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में पं. रवि शंकर जी के योगदान की चर्चा है। चतुर्थ अध्याय में पं. जी के शिष्य परम्परा का संकलन किया गया है। इस प्रकार पं. रवि शंकर जी द्वारा संगीत क्षेत्र में योगदान को प्रभावित किया गया।

2.2.4 मा अमृत दिशा, “पंडित उमाशंकर मित्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन”, निर्देशिका प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास, संगीत विभाग, दिल्ली यूनिवर्सिटी, 2021।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पं. उमा शंकर मित्र जी के जीवन पर आधारित है। मधुबनी परम्परा में संगीत की विशेषताएँ बताई गई हैं। प्रथम अध्याय में सितार वादन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और वादन शैलियाँ की चर्चा है। द्वितीय अध्याय में पं. उमा शंकर जी के बारे में और उनकी वादन शैली की जानकारी मिलती है। तृतीय अध्याय में आपके देश-विदेश यात्राएँ और पुरस्कारों का विवरण है। चतुर्थ अध्याय में विशिष्ट वादन शैली प्रकाशित है। पंचम अध्याय में आपके द्वारा सृजानत्मकता का वर्णन किया गया है। रागों और बंदिशों जो द्वारा निमित्त की चर्चा की गई है।

2.2.5 सोनम सिंह, ‘सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खां साहिब की वादन शैली के क्षेत्र में योगदान’, निर्देशिका नीतु गुप्ता, दयालबाग यूनिवर्सिटी, आगरा, 2015।

प्रस्तुत शोध में उ. विलायत खां जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम अध्याय में सम्बन्धित शोध पर सर्वेक्षण किया गया है। द्वितीय अध्याय में उ. विलायत खां के जीवन शैली की और उनके जीवनयापन की चर्चा मिलती है। तृतीय अध्याय में घरानों की जानकारी के साथ-साथ ईटावा घराना की विशेष चर्चा है। चतुर्थ अध्याय में उ. जी द्वारा संगीत जगत को दिये गये योगदान और गायकी अंग की सितार वादन की चर्चा है। पंचम अध्याय में शास्त्रीय उपशास्त्रीय वादन शैली की और विभिन्न बन्दिशों और गतों की लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है। षष्ठम अध्याय में बीसवीं सदी के प्रमुख सितार वादक

उ. विलायत खां, पं. रवि शंकर, उ. अब्दुल हलीम जाफर, पं. निखिल बैनर्जी के वादन शैली की चर्चा मिलती है।

2.3 प्रस्तुत शोध की प्रासंगिकता

मैंने सम्पादकीय लेखों और किताबों में अध्ययन किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के अन्तर राष्ट्रीयकरण के विषय पर तो बहुत अनुसंधान हो चुका है। सितार के इतिहास, तकनीक, घराने, वादन शैलियों, विभिन्न बाज और उन के प्रचलन, भारतीय शास्त्रीय संगीत को सितार वादकों के द्वारा दिये गये योगदान पर तो शोधकर्ताओं द्वारा बहुत शोध किये जा चुके हैं, परन्तु विदेशों में हमारे उच्चस्तरीय कलाकारों के दिये योगदान, सितार के प्रचार – प्रसार में किये कार्यों का वर्णन अत्यधिक नहीं मिलता जिसको उजागर करना चाहिये।

2.4 अनुसंधान प्रविधि

कोई भी शोध कार्य तभी मान्यता रखता जब उसकी कार्य प्रणाली तथ्यों पर आधारित हो। तथ्यों का संकलन करने के लिये विषय विशेष से संबंधित सामग्री एकत्रित करने के लिये निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

प्राथमिक स्तोत्र – कलाकारों संस्थाओं द्वारा रचित पुस्तकों का अध्ययन करना।

- इनके अतिरिक्त विषय की प्रामाणिकता के लिये शोधपत्र- पत्रिकाओं का अध्ययन।
- कलाकारों के साक्षात्कार के माध्यम से।
- कलाकारों से टेलीफोन के माध्यम से जुड़ कर।
- कलाकारों के शिष्यों के साथ साक्षात्कार कर के उनके बारे में जानकारी एकत्रित करना।
- अपनी विषय की प्रामाणिकता के लिये संगीत क्षेत्र से जुड़ी हुई संस्थाओं और संगठनों से सम्पर्क करना।
- क्रियात्मक अनुसंधान कार्य, हेतु प्रश्नावली का गठन करना जिससे जानकारी उपलब्ध हो सके।

- कलाकारों के विभिन्न देशों में हुये कार्यक्रमों की सूची तैयार करने के लिये संस्थाओं और संगठनों से ब्यौरा प्राप्त करना।
- अपने विषय का अध्ययन करने के लिये और उसकी प्रामाणिकता के लिये व क्रियात्मक अनुसंधान के लिये YouTube links का भी उपयोग करने की कोशिश की जायेगी। ताकि जो कार्यक्रम हो चुके हैं उनका ब्यौरा एकत्रित किया जाए।

माध्यमिक स्तोत्र-कार्यक्रमों के Pamphlets (पर्चे) एकत्र कर जानकारी प्राप्त करना।

- संगीत के भिन्न- भिन्न जरनल व आर्टिकल्स का अध्ययन करना।

सितार वाद्य के घराने व कलाकार

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सबसे विलक्षण और वैचित्र्य विशेषता घराना व्यवस्था है। संगीत शिक्षा के मार्गदर्शक ये घराना परंपरा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी विकास कर रही है। ये गुरु शिष्य परंपरा है। गुरु शिष्य परंपरा भारतवर्ष अनादि काल से चली आ रही है पहले गुरुकुल होते थे। जहाँ पर गुरु द्वारा छात्रों को चारों वेदों की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घराना प्रथा मध्य काल से अस्तित्व में आई। आज हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अगर तंत्र वादन शैली सुरक्षित है तो उसका कारण घराना परंपरा ही है। घराने संगीत में एक पथ प्रदर्शक के रूप में कार्यरत हैं। संगीत शिक्षा के मार्गदर्शक ये घराना परंपरा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी विकास कर रही है। ये गुरु शिष्य परंपरा है। गुरु शिष्य परंपरा भारतवर्ष में अनादि काल से चली आ रही है। वैदिक काल में भी वीणा वादन की शिक्षा दीक्षा गुरु के पास जा कर ही प्राप्त की जाती थी। उसी व्यवस्था जैसे ही यह गुरु शिष्य - परंपरा संगीत में घराना परंपरा है।

घराना का अर्थ- सम्प्रदाय, परिवार, कुटुंब, परंपरा आदि से लिया जाता है। शाब्दिक रूप में घराना का अर्थ वंश व घर से लिया जाता है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में किसी कलाकार अथवा संगीतज्ञ के द्वारा अपनी प्रतिभा और लगन के आधार पर किसी नई प्रकार की पद्धति का निर्माण करना और उसी पद्धति को उनके शिष्यों का निष्ठापूर्ण निर्वह व प्रचार- प्रसार में लाना घराना परंपरा कहलाती है।

कमलेश सक्सेना के अनुसार, "अनेक वर्षों की अखंड परंपरा उच्च कोटि के गुरु और कई पीढ़ियों की गुरु शिष्य परंपरा से मिलकर ही घराना बनता है।"⁴¹

ओ गोस्वामी का कहना है कि "घराना ऐसा सम्प्रदाय एवं वर्ग है जिसके संस्थापकों ने अपनी लगन, मेहनत व परिश्रम से संगीत साधना करके अपने कला कौशल के बल पर

⁴¹ संगीत अंक घराना -पृष्ठ संख्या 10

प्रसिद्धि प्राप्त की, इन्होंने शास्त्रों पर आधारित संगीत में क्रियात्मक रूप से कुछ विशेष प्रयोग कर के उसे अपने मनोवृत्ति के अनुसार मधुर व आकर्षक बनाया और अपने शिष्यों को सिखाया जो अनेक पीढ़ियों की परंपरा से विशिष्ट घरानों के रूप में जानी जाने लगी।⁴²

घराना परंपरा वह परंपरा है जिसमें शिष्य अपने गुरु द्वारा दी गई शिक्षा को उचित व्यवस्था, आचरण, रीति रिवाज, अनुशासन का कानून और कायदे से निर्वाह करते हुए ग्रहण करते हैं। ये गुरु शिष्य परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला सिलसिला है। जो वर्षों तक चलती है और एक घराने का उत्थान होता है। हर घराने की अपनी विलक्षण व अनूठी विशेषता होती है। उत्पादन का ढंग, अंग, शैली, तानो व लयकारियों के प्रकार, अलापचारी का ढंग, मिज़राब के बोलो का निकास, राग प्रस्तुतिकरण का ढंग सब कुछ भिन्न होता है जिससे किसी घराने की विशेष छवि व छाप नजर आती है। संगीत अलंकृत क्रियाएं जैसे मींड़, गमक, खटका, जमजमा, कृतन, घसीट, कण इन सभी क्रियाओं को विशेष ढंग से बजाना। डॉ. जोगिंदर सिंह बावरा का मानना है कि जब कोई भी सुयोग्य कलाकार अपने प्रतिभा तथा कठोर साधना से किसी एक विशेष शैली का निर्माण करता है, तो उसके शिष्य द्वारा प्रचारित होती है वही शैली एक घराने को जन्म देती है।⁴³

3.1 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विकास के साथ घरानों का उदय

घराना परंपरा गुरु शिष्य परंपरा है या इसे वंश परंपरा भी कहा जा सकता है। क्योंकि इसके अंतर्गत गुरु अपने शिष्यों को शिक्षा देता है वही गुरु एक पिता भी होता है जो अपने पुत्रों को भी शिक्षित करते हैं। इस प्रकार यह वंश परंपरा भी हुई। जिसमें गुरु द्वारा अपने साधना, ज्ञान, सिद्धांतों का संग्रहण किया जाता है।

घराना परंपरा का आविष्कार कैसे हुआ या यह कैसे प्रचलन में आई इसके बारे में श्री भगवत शरण शर्मा लिखते हैं कि भारतीय संगीत कला के अपने संगीत ज्ञान को छिपा कर रखते थे कि वे किसी अन्य जाति वालों को तो क्या अपने ही जाति वालों को बताने में संकोच करते थे। यह संकीर्णता यहाँ तक बढ़ गयी कि वे संगीत के ग्रंथ भी नहीं लिखते थे।

⁴² दी स्टोरी ऑफ़ इंडियन म्यूजिक पृष्ठ संख्या 260

⁴³ भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ. जोगिन्द्र बावरा, पृ. 12

उनका संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी चला करता था। यदि वे निःसंतान होते तो उसका संगीत भी उन्हीं के साथ से समाप्त हो जाता था। इस संकीर्ण मनोविकार वृत्ति के फलस्वरूप संगीत के क्षेत्र में घरानों की नींव पड़ गई।⁴⁴

इसी बात को डॉ. सुमति मुटाटकर के अनुसार मध्यकाल की समाप्ति होते ही जो दरबारी संगीतकार थे वे भिन्न - भिन्न रियासतों में नियुक्त होते थे जैसे कि ग्वालियर, रामपुर , उदयपुर, लखनऊ, बड़ौदा। ये कलाकार अपने शिष्यों को भी अपनी कला स्वयं तक की सीमित रखने का आदेश दिया करते थे। इस प्रकार संगीतज्ञों के शिष्यों व प्रशिष्यों के विभिन्न घराने स्थापित हो गए।⁴⁵

घराना में व्यवस्था 19वीं शताब्दी की देन हैं। यद्यपि घराना परंपरा तदनंतर से लेकर के आज तक प्रचलित है। हर स्थान का अपना अलग वातावरण, परिवेश, गतिविधियों, जीवनयापन परिस्थितियां इत्यादि के अनुकूलतावश ही संगीत का विकास हुआ है। प्राचीन काल में जाति गायन, प्रबंध गायन, ध्रुवा गायन, फिर ध्रुपद गायन, धामर गायन और आज आधुनिक काल में ख्याल गायन शैली का विकास हो रहा है जिसमें कलाकार अपने क्षमता और कल्पना शक्ति के आधार पर भावों का प्रदर्शन करते हैं।

घराना परंपरा का आविष्कार कैसे हुआ या यह कैसे प्रचलन में आई। इस की जानकारी देते हुये। श्री रमन लाल मेहता कहते हैं की, कलाओं में जब परिपक्व हो जाती है तो वह एक विशिष्ट शैली को जनम देती है। भारतीय संगीत की ऐसी ही शैलियों ने घराना परंपरा का रूप लिया है।⁴⁶

वादन संगीत में वादन क्रिया को यह शैली को या ढंग को 'बाज' का नाम दिया जाता है। भिन्न - भिन्न सितार वादन की शैलियों को भिन्न - भिन्न बाजों के नाम से वर्णित किया जाता है जैसे- सेनिया बाज, पूर्वी बाज, पश्चिमी बाज (रजाखानी व मसीत खानी), फिरोज़ खानी, आमिर खानी बाज, सितारखानी बाज जिसको लखनवी बाज भी कहा जाता

⁴⁴ भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ संख्या 115,

⁴⁵ द इवैल्यूएशन ऑफ़ इंडियन म्यूजिक, संगीत जून अंक 1956, पृष्ठ संख्या

⁴⁶ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड घराना ट्रेडिशन, पृ. 17

है, जाफरखानी बाज आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में सेनिया बाज़ को प्रमुख बाज माना जाता है। कहा जाता है कि ये तानसेन के वंशज द्वारा स्थापित किया गया घराना है। यहां से सितार वाद्य पर कई परिवर्तन किए गए। गायन शैलियों ध्रुवपद व धमार के पश्चात् मियाँ तानसेन के वंशजों ने तंत्री वाद्य पर बजायी जाने वाली मसीतखानी और रजाखनी गतो का निर्माण किया। जिस को पूर्वी बाज और पश्चिमी बाज भी कहा गया, जो कि पूर्ण रूप से तंत्रकारी अंग की वादन शैली मानी गई। सितार वादकों के घराने जैसे जयपुर, ग्वालियर, सहारनपुर, कालपी, इटावा, मैहर, बनारस, लखनऊ, दरभंगा, ढाका, मथुरा, बड़ौदा, सतारा, बॉम्बे, उजैन, इंदौर, बनारस, नेपाल, जयपुर सेनिया, इमदाद खानी, मधुवनी, विष्णुपुर, में थे। डॉ. अरुण मिश्रा लिखते हैं नवीन गायन और वादन शैली के अंतर्गत सम्प्रदाय, मत, वाणी, बानी आदि शब्द का प्रयोग न करके नवीन घराना शब्द का प्रयोग प्रचलन में हो गया। इसका एक कारण यह भी रहा होगा कि उन शब्दों में प्राचीनता की महक आती है तथा कथित सदी का आरंभ उस काल में हुआ जब भारत में छोटी- छोटी रियासतें थीं। बादशाह, राजाओं, महाराजा का राज्य था। उनके वंश, क्रम, से राज्य करते थे। उनके वंश के लिए राजघराने के नाम से जाना जाता थे। उस समय संगीत राजा महाराजाओं के आश्रय लिये हुये इसलिए उसके लिए भी घराना शब्द उपयुक्त था। इस शब्द में तत्कालीन आधुनिकता या नवीनता प्रकट होती तथा घराना शब्द प्रचलन में आ गया जो आज सर्वमान्य हो गया।⁴⁷

जैसे गायन में गायन शैली को गायकी के नाम से इंगित किया जाता है वैसे ही वादन में 'बाज' की संज्ञा दी जाती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में सेनिया बाज़ को प्रमुख बाज माना जाता है। कहा जाता है कि ये तानसेन के वंशज द्वारा स्थापित किया गया घराना है। विमल कांत राय चौधरी जी के कथानुसार उसकी मियां तानसेन के वंशज सेनिया के नाम से जाने जाते हैं। डॉ. सुशील कुमार चौबे भी लिखते हैं कि "अबुल फजल जो की आइने अकबरी के रचयिता है उनका कहना है की सम्पूर्ण भारतवर्ष उससे पहले एक हजार वर्ष तक कोई भी अच्छा गायक नहीं हुआ।"⁴⁸

⁴⁷ कंठ संगीत एवं वाद्य संगीत पृष्ठ संख्या 124

⁴⁸ भारतीय संगीत कोष पृष्ठ संख्या 154- 155

तानसेन की प्रतिभा से संतुष्ट होकर अकबर ने उन्हें कंठाभरण वाणी विलास की उपाधि से सम्मानित किया था।⁴⁹

तानसेन वंश परंपरा का शिष्य परंपरा बहुत समृद्ध है जिसमें गायन व वादन के घराने जुड़ते गए। इनके ही वंशज बीनकर कहलाए। रामपुर के उमराव खां खंडारे व उनके पुत्र रहीम खां और आमिर खां उच्चकोटि के बीनकार थे और उनके ही पुत्र दबीर खां बीनकारों में सबसे उत्तम माने जाते थे। श्री भगवत शरण शर्मा जी का कहना है की "तानसेन के घराने से संबंधित अन्य लोग सेनिया कहलाए लखनऊ के जाफर खां, प्यार खां प्रसिद्ध रबाब वादक थे। मसीत खां सितार वादक थे। इन्हीं की शैली को मसीत खानी बाज कहते हैं। जयपुर के अमृत हुसैन और ग्वालियर महाराज माधव राव सिंधिया के गुरु आमिर खां इस घराने के उत्तम सितार वादक थे।"⁵⁰

इस प्रकार धीरे- धीरे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घरानों का अस्तित्व आया। जब तक वादन केवल गायन के अंतर्गत रहता था तब तक तो केवल गायन के ही घराने प्रचलित हुआ करते थे। परन्तु जब सितार एकल वादन में अधिक प्रचलित हुआ तब से सितार घरानों का भी विकास होना आरंभ हो गया। घराना परंपरा नवीनता के साथ इस युग की गतिशील प्रणाली है।

वाजिद अली शाह की समय काल में अवध को संगीत का केंद्र माना जाता था। वाजिद अली शाह एक संगीत प्रेमी और संगीत सरक्षक थे। उन्होंने अपने दरबार में बहादुर हुसैन खां, उमराव खां, आमिर खां, हसन खां इत्यादि संगीतज्ञों को दरबार में संरक्षण दिया था। इसी काल खंड के दौरान मसीत खानी और रज़ाखानी गत शैली का निर्माण हुआ। उस समय जैसे-जैसे कोई कलाकार किसी रियासत में या क्षेत्र विशेष में रहता था। उसको उसी क्षेत्र विशेषता के आधार पर 'घराना' कहा जाने लगा। इस समय के दौरान कुछ प्रमुख घराने और सितार वादकों के नाम मिलते हैं जैसे-सज्जाद हुसैन खां, बांदा के गुलाम मोहम्मद, इलाहाबाद के बाबू ईश्वरी प्रसाद, फ़र्रुखाबाद के बरकत अली, काशी की पंनालाल वाजपेयी, अवध के नवाब अली, पंजाब के नबी बख्श, बरेली के कुतुब अली,

⁴⁹ मुगलकालीन भारत पृष्ठ संख्या 277

⁵⁰ भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ संख्या 113

बनारस के गुलाम रजा खां जिसके नाम सितार वादन में प्रसिद्ध थे। उपरोक्त कलाकारों ने अपने घराने की बन्दिशों और गतकारी का खूब प्रचार किया। उस समय कलाकारों को वादन के साथ गायन की शिक्षा भी आवश्यक लेनी होती थी। जिसके फलस्वरूप वह सांगीतिक सौंदर्य अलंकारों को जैसे कण, मींड, गमक, खटका, कृतन, जमजमा आदि को भली प्रकार से समझकर उसका अनुकरण अपने वादन में किया।

3.2 घरानों का क्रमिक विकास

घराना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विचित्र विशिष्ट परंपरा है कलांतर में ये क्षेत्र व भाषा गत शैली के रूप में विस्तृत थी। प्रत्येक गुरु अपने स्वभाव के अनुरूप ही अपने शिष्यों को संगीत की तालीम देते थे। घराना किसी क्षेत्र की विशेषता व व्यक्तित्व की पहचान बन गया। संगीतकारों की सोच ऐसी हो गई कि अगर हम अपनी कला को दूसरों से छिपाकर रखेंगे तो उसकी सम्मान व प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। इस संकुचित मनोवृत्ति के कारण है संगीत घरानों में बँट गया। घरानेदार इतने कठोर हो गए की वह न तो बाहर के कलात्मक ज्ञान को लेते वह ना ही अपनी खूबियों को किसी को देते। घराना प्रणाली में प्रथम और अग्रणी श्रेणी में अगर किसी घराने का नाम आए तो वह तानसेन व उनके वंशजों का होगा।

3.2.1 तानसेन का घराना

तानसेन संगीत सम्राट की उपाधि से सुशोभित हो। तानसेन अकबर के दरबार में नवरत्नों में शामिल थे। आईने अकबरी में अबुल फजल लिखते हैं की हजारों वर्षों में देखा जाए तो उनके जैसा संगीतज्ञ व गायक पैदा नहीं हुआ होगा। तानसेन के पुत्र वंश में गायको और पुत्री वंश वादकों के घरानों में परिवर्तित हुआ। तानसेन के विषय में चर्चा करते हुए डॉ. सुशील कुमार चौबे कहते हैं कि, “तानसेन का संगीत उनसे पहले की संगीत व्यवस्था और भविष्य के संगीत के बीच की अनोखी कड़ी थी और इसके साथ ही परंपरागत संगीत का जन्म हुआ। तानसेन एकमात्र ऐसे व्यक्तिगत प्रतिभावान संगीतज्ञ थे जिन्होंने संगीत में नव रस व जीवन संचालित किया। संगीत को नई स्फूर्ति प्रदान की। उनकी गुरु शिष्य परंपरा तानसेन के सेनिया घराने का मूल आधार बनी। आज तक जितने भी तंत्री वाद्य के

घराने है उन सब का मूल घराना सेनिया घराना ही है। आप ही सेनिया घराने के आदि पुरूष है।”⁵¹

3.2.2 सेनिया घराना

तानसेन की शिष्य परंपरा बहुत विशाल थी गायन संगीत के साथ साथ वादन संगीत की शिक्षा दी जाती थी। शिष्य अपनी योग्यता व रुचि के अनुरूप ही गायन या वादन संगीत को चुनते थे। श्री भगवत शरण शर्मा का कथन है कि तानसेन के घराने से संबंध रखने वाले शिष्य ही लोग सेनिया कहलाए। जाफर खां व प्यार खां जो कि लखनऊ के प्रसिद्ध रबाब वादक थे, मजीद खां जिन्होंने प्रसिद्ध मसीतखानी गत शैली का निर्माण किया। अमृत हुसैन खां जयपुर और ग्वालियर के महाराजा माधवराव सिंधिया के गुरु आमिर खां भी सेनिया घराने की उत्कृष्ट सितारिए थे।⁵²

तानसेन के वंशजों में उनके पुत्र तान तरंग, बिलास खां, सुरति सेन, सोहेल सेन, सुधीन सेन, सूरज सेन, दयाल सेन, खुशाल सेन, अद्भुत सेन, निहाल सेन, मुराद सेन, रहीम सेन, अमृत सेन का नाम प्रमुख हैं। तानसेन के वंशजों और शिष्यों की सूची इतनी विशाल है कि उसका उल्लेख नहीं किया जा सकता।

तानसेन की पुत्री वंश परंपरा में बीनकार उमराव खां खंडारे, रहीम खां, आमिर खां, और वजीर खां का नाम उल्लेखनीय हैं, जो उत्तम श्रेणी के बीनकार थे। इनके ही पौत्र दबीर खा भी एक उच्चकोटी के बीनकार माने गए हैं। इनके अतिरिक्त, बहादुर सेन, अली मोहम्मद, शादिक अली, दूलहे खां, कासिम अली खां, नवाब कल्बे अली, हैदर अली भी उत्कृष्ट कलाकार थे। जो रबाब, सुर सिंगार, सुरबहार, वीणा और गायन के महारथी थे। सितार वादकों में बरकतुल्ला खाँ और इमदाद खाँ का नाम उल्लेखनीय है। जो की उस्ताद आमिर खां के शागिर्द थे। इन दोनों कलाकारों ने दो अलग शाखाएँ का विमोचन किया। एक शाखा में इमदाद खाँ के पुत्र व शागिर्द इनायत खाँ, विलायत खां, धुव्वारा जोशी, विमल कांत चौधरी थे। और दूसरी शाखा बरकतुल्ला खाँ के शिष्य आशिक अली खां, व आगे

⁵¹ संगीत के घरानों की चर्चा - पृष्ठ संख्या 30 – 31

⁵² भारतीय इतिहास में संगीत- पृ. 113

उनके शागिर्द उ. मुश्ताक अली खां, पं. देबु चौधरी और इनके पुत्र प्रतीक चौधरी का नाम उल्लेखनीय है।

3.2.3 दिल्ली घराना

दिल्ली भारत की राजधानी होने के साथ साथ सांस्कृतिक केंद्र भी माना जाता रहा है। दिल्ली मोहम्मद शाह रंगीले के समय से ही ख्याल गायन शैली का गढ़ रहा है। मियां अचपल दिल्ली घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। श्री अमल कुमार शर्मा लिखते हैं कि मीर अल्ला बक्श व अमीर उमरा बक्श गुणी गायक और कलाकार थे। अल्लाह बक्श के वंशज तथा मीर मोहम्मद बक्श के पुत्र अली गोनी खां जो की संगी खां या सोगी खां के नाम से भी विख्यात थे। वह बल्लभगढ़ के राज दरबार के प्रसिद्ध सारंगी वादक थे। इस वंश के कलाकारों में उत्तम कलाकार होने के साथ - साथ उच्चकोटि के रचनाकार भी थे। इसी घराने की प्रसिद्ध गायक कुतुबबक्श को तानरस खां के नाम से भी जाना जाता था। उनके शिष्यों में अब्दुल्ला खां, फतेह अली, जहूर खां, मेहबूब खां, इनायत खां, सरदार खां, अब्दुल अज़ीज़ खां आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उस्ताद संगी खां के पुत्र मम्मन खां, चांद खां, उस्मान खां, जफर अहमद नामी कलाकार थे। जफर अहमद के पुत्र सैय्यद और शाहिद सितार वादक थे। दिल्ली घराना सारंगी वादकों का घराना रहा है। डॉ. सुशील चौबे कहते हैं की इस घराने की अपनी अलग गायकी है। सारंगी वादकों का घराना होने के नाते विलंबित लय की गत में सूत, गमक, लय और मींड का काम विशेष व उत्तम होता है।⁵³

3.2.4 मैहर घराना

मैहर घराने के संस्थापक सरोद वादक बाबा अलाउद्दीन खां थे। आपने जयपुर सेनिया घराने से उस्ताद अहमद अली और उस्ताद वजीर खां से संगीत की तालीम ली। आपने कई बड़े-बड़े कलाकारों व उस्तादों से संगीत की बरीकियां सीखी। वीणा, सरोद, वॉयलिन के अतिरिक्त आपने 18 वाद्ययंत्रों की तकनीकी शिक्षा ग्रहण की और उनकी बारीकियों को सीखा। आप ने कृतन व ज़मज़मा और विशिष्ट मिज़राब व जबा के बोलों के साथ विशिष्ट वादन शैली का निर्माण किया। भारत रत्न पंडित रविशंकर आप ही के शिष्य

⁵³ संगीत के घरानों की चर्चा, पृ. 117

थे। जिन्होंने सितार पर विशिष्ट तंत्रकारी अंग स्थापित किया। मैहर घराने की वादन शैली ध्रुपद और बीन अंग का गम्भीर वादन का मिश्रण लिये हुये है। सरोद अंग स्पष्ट झलकता था। इस घराने के शिष्यों में उस्ताद अली अकबर खां, सुरबहार वादिका अन्नपूर्णा देवी, पं. निखिल बैनर्जी जी, पं. पन्नालाल घोष, ज्योतिन भट्टाचार्य व शरण रानी आदि बड़े बड़े कलाकारों के नाम है।

3.2.5 जयपुर घराना

तानसेन की पुत्री वंश से वीणा वादन की परंपरा का नया अध्याय शुरू हुआ। रहीम सेन व उनके पुत्र अमृत सेन प्रसिद्ध सितार वादक हुए। वीणा और ध्रुपद अंग के आलाप का अद्वितीय मिश्रण के साथ आपने सितार वादन को नया रूप दिया। मिर्ज़ाब के अद्भुत बोल, गत के विभिन्न बोलों को भिन्न-भिन्न स्वरों से सम पर लाना इत्यादि। मसीत खां व रज़ा खां इसी घराने के ही उत्कृष्ट कलाकार हुए। मसीत खां ने मसीत खानी गत और रज़ा खां ने रज़ा खानी गत का आविष्कार किया। बहादुर खां, नन्हे खां, गुलाब खां, निहाल खां, आशिक अली खां, उ. मुश्ताक अली खां, पं. देबू चौधरी, उनके पुत्र पं. प्रतीक चौधरी इसी घराने के प्रसिद्ध संगीतकार हैं।

3.2.6 इटावा घराना

इटावा घराने को गौरीपुर घराने के नाम से भी जाना जाता है। सरोजन सिंह को इस घराने के प्रवर्तक माना गया है। सरोजन सिंह मुगल दरबार के गायक थे। तरफ खां और तरफ खां के पुत्र साहिब दाद खां थे। इमदाद खां के पिता साहिब दाद खां थे। उस उस्ताद इमदाद खां के ही लगन मेहनत और परिश्रम की बदौलत ही इमदाद खानी बाज अस्तित्व में आया। इमरान खां के पुत्र उस्ताद इनायत खां और वजीर खां हुए।

उस्ताद इनायत खां के पुत्र उस्ताद विलायत खां जिन्होंने सितार वादन में अमूल्य योगदान दिया। गायकी अंग का सितार वादन आप ही की देन हैं। वहीद खां के पुत्र अज़ीज़ खां व उनके पुत्र शाहिद परवेज़ हैं, जो कि विश्व भर में अपने सितार वादन के लिए प्रसिद्ध हैं। इटावा घराने को ईमदादखानी घराना भी कहा जाता है।

3.2.7 ग्वालियर घराना

इस घराने की उत्पत्ति जयपुर सेनिया घराने से हुई है। अमृत सेन के भतीजे आमिर खां को इस घराने का संस्थापक माना जाता है। क्योंकि वह ग्वालियर के राजा के दरबार में दरबारी संगीतज्ञ थे। इसी कारण इस घराने का नाम ग्वालियर घराना पड़ा। इस घराने के शिष्यों में बरकत उल्ला खां, फजल हुसैन, आशिक अली खां, फिदा हुसैन आदि हैं। इस घराने में सितार व सुरबहार की सामग्री का अनुपम मिश्रण मिलता है।

3.2.8 इंदौर घराना

उस्ताद बंदे अली खां इस घराने के संरक्षक थे। आप तानसेन के पुत्र वंशावली के निर्मल शाह के शिष्य थे। मुराद खां, बाबू खां, लतीफ़, जाफ़र खां, मोहम्मद खां, रईस खां, हुसैन अली, मुराद खां, उ. अब्दुल हलिम जाफर खां इंदौर घराने की प्रसिद्ध कलाकार हुए हैं। इस घराने में वादन आलाप से किया जाता है। विलंबित, द्रुत, गत के बाद ठोंक झाला बजाया जाता है।

3.2.9 लखनऊ घराना

लखनऊ नवाबों की नगरी होने के कारण कलाओं का केंद्र रहा है। गुलाम रज़ा ने लखनवी घराने में सितार वादन की अद्भुत वादन शैली का निर्माण किया। ठुमरी अंग पर आधारित रज़ा खानी गत और ध्रुपद अंग का बाज उपयोग किया जाता है। ध्रुपद अंग का आलाप, ठुमरी पर आधारित भाव प्रधान गतें, अद्भुत झाले का वादन प्रस्तुत किया जाता था।

3.2.10 विष्णुपुर घराना

सेनिया घराने के ध्रुपद गायक बहादुर खां ने इस घराने की नींव रखी। गोपेश्वर बंधोपाध्याय, सुरेन्द्र नाथ, पं. राम प्रसन्ना बैनजी, पं. गोकुल नाग इस घराने की प्रसिद्ध कलाकार हैं। पंडित मणिलाल नाग और इनकी पुत्री मीता नाग विष्णुपुर घराने प्रसिद्ध कलाकार हैं। इस घराने की वादन शैली में ध्रुपद अंग झलकता है।

3.2.11 दरभंगा घराना

पं. बलराम पाठक इस घराने के प्रसिद्ध सितार वादक थे। आपके चाचा रामेश्वर इस घराने के प्रवर्तक हैं और वह दरभंगा दरबार में संगीतकार थे। दरभंगा ध्रुवपद गायकों का घराना कहलाया जाता था। राम कुमार पाठक, अपुच्छ पाठक, सितार व सुरबहार वादक हुये। रामेश्वर पाठक और राम गोविंद पाठक भी सितार वाद्य व सुरबहार की महारत लिये हुये थे। इस घराने में ध्रुवपद अंग का वादन किया जाता है। मींड, गमक, झाला, बीनकर अंग का काम किया जाता है। अशोक पाठक इस घरानों को आगे बढ़ा रहे हैं।

3.2.12 मधुबनी घराना

बनारस घराने से मधुबनी अस्तित्व में आया। पंडित उमाशंकर मिश्र इस घराने के प्रसिद्ध विस्तार वादक थे। इस घराने को मधुबनी चित्रकला के नाम से भी मिलता कहा जाता है क्योंकि मधुबन की धरती से ही दोनों कलाओं का सृजन हुआ है। यह सितार और सुरबहार का घराना है। यह घराना लगातार छः पीढ़ियों से सितार और सुरबहार का वादन कर रहा है। यह घराना भी मियां तानसेन के वंशजों से ही सम्बन्धित है। 'डॉ. सुप्रिया शाह के अनुसार "रागों की शुद्धता और कर्ण प्रियता इस घराने की वादन शैली की विलक्षणता है। सितार वादन में ध्रुपद अंग की विशेषता रहती है। पखावज का प्रयोग किया जाता है। तानों को भी पखावज की परन के अनुसार ही रखा जाता है।"⁵⁴ मधुबनी घराने में स्वर मधुर्य का बहुत ध्यान रखा जाता है। सितार वादन भी ध्रुपद गायन के अनुसार ही चार भाग में ही होता है।

आधुनिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की जानकारी प्राप्त करने से पहले घरानों का ज्ञान आवश्यक है। क्योंकि एक मननशील शिष्य व विद्यार्थी के लिये यह ज्ञान अनिवार्य है। तभी तो वह कलाकारों को जान पाएगा और संगीत कला का ज्ञान अर्जित कर सकेगा।

⁵⁴ साक्षात्कार डॉ सुप्रिया शाह, मई 2023

3.3 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सितार वादन की शैलियां

सितार वाद्य के अविष्कार को लेकर कभी भी संगीतज्ञ और विद्वान् एक मत नहीं हुए हैं। सितार का विकास का क्रम 18वीं शताब्दी से होना शुरू हो गया था। एक तंत्री वीणा, किन्नरी वीणा, त्रितंत्री वीणा इत्यादि वीणाओं की चर्चा भिन्न-भिन्न इतिहासकारों ने की है। ऐतिहासिक तथ्यों से यह पता चलता है की त्रितंत्री वीणा से ही सितार का अविष्कार हुआ है। सितार को 'सेहतार' के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ तीन तारों वाले वाद्य से ही लिया जाता है। "सितार का अर्थ सितार को पर्शियन भाषा में ही तीन तार कहा जाता है कि सितार तीन शब्दों के जोड़ से बना हुआ है। जगदीश नारायण कहते हैं कि सित + आ + र। जिसका अर्थ है- बन्धनैः समन्तात् रंजयति इति सितार।"⁵⁵

"इसका भाव यह है की बंधनों के द्वारा जो सब तरफ से आनंदित करे वह वाद्य सितार है। इस प्रकार यह अपने नाम से ही अपने नाम के अर्थ को सार्थक करता है। सितार तारों के बन्धन पर्दों, मिजराब व गतों के बंधन में बँधी हो कर भी सब को आनंदित करती है। इस प्रकार सितार एक बंधनमय वाद्य है।"⁵⁶

सितार के प्रथम चरण में उनकी तीन तारें होती थीं, उसकी पहली तार लोहे की होती थी जिस को 'स' से मिलाया जाता था। दूसरा तार पंचम का होता था और तीसरा तार 'सं' से मिलाया जाता था।

डॉ. गौरी के कथानुसार "विद्वानों और गुणीजनों की लिखी गई पुस्तकों से यह प्रमाण मिलता है कि सितार मूल रूप से लकड़ी का बना वाद्य था। जबकि अन्य तंत्री वाद्यों कि बनावट अलग होती थी जिसमें तुम्बे लगाए जाते थे। उसमें 8 पर्दे के साथ तीन तारें लगाई जाती थीं।"⁵⁷

सितार को अपने इस वास्तविक रूप में लाने के लिए प्रथम चरण में तानसेन के वंशज अमृत सेन व निहाल सेन का सबसे अधिक योगदान रहा है। उन्होंने सितार में दो

⁵⁵ सितार सिद्धांत भाग-1 पृ. 8

⁵⁶ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तंत्र वादन शैलियां, पृ. 84

⁵⁷ तंत्री वाद्य सितार एवं कदनीय बंदिशें, पृ. 26

तार और जोड़ दिए जिससे तारों की संख्या पाँच हो गई। इस प्रकार तारों का क्रम मिलाया जाता था।

तारें	स्वर
1	म
2	स
3	प
4	स (खरज)
5	स (एक सप्तक ऊँचा)

इस तरह तारों का मिलान होता था और सितार में तारों की गूँज को बढ़ाने के लिए एक और तुम्बा लगा दिया गया। इस काल खंड में सितार स्वतंत्र वादन के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा।

सितार की लोकप्रियता बढ़ाने में मसीत खां और गुलाम रजा खां का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने सितार वादन को एक नई तकनीक और वादन शैली के साथ नवाजा। सितार की बनावट में भी परिवर्तन किया। उन्होंने दूसरा तुम्बा हटा कर सितार के पर्दे की संख्या को बढ़ा दिया। सितार पर अब 23 अचल सारिकएँ लगा दी गईं। सितार में दो और तारें लगा दी गईं जिससे सितार में 7 तारें हो गईं जो क्रमशः म- स- स - प - प- स – सं स्वरों के साथ मिलाई जाती थी।

इसके उपरान्त उ. इमदाद खां ने एक नवीन गत शैली का विकास किया जिसमें राग के प्रस्तुतीकरण में मीँड का भरपूर प्रयोग किया जाता था। उ. इमदाद खां ने सितार पर पर्दों की संख्या 23 से घटा कर 19 कर दी और चल थाट की सितार का निर्माण किया। सितार के विकास का क्रम यही नहीं रुका बल्कि सितार में गूँज उत्पन्न करने के लिए इसमें 11 तरब की तारों को जोड़ा गया। जिस से सितार में स्वर की गूँज और ध्वनी अधिक समय तक कायम रखने में सहायक हुई।

पहले सितार पर दो प्रकार के तुबें लगाएँ जाते थे | एक गोलाकार में और दूसरा चपटा तुंबा होता था | जिसको क्रमशः गोल तुम्बी और कछुआ सितार के नाम से जाना जाता था | परंतु तदान्तर में केवल गोलाकार तुंबे वाला सितार प्रयोग होने लगा इसके बाद उ. इमदाद खां के पुत्र इनायत खां ने सितार पर फिर से दूसरा तुंबा लगा कर विकास क्रम को आगे बढ़ाया।

3.3.1 सितार में मिज़राब के बोले का समावेश

सितार वाद्य पर पहले पहल वीणा पर प्रयोग किए जाने वाले ङा, डिङ, ङाङ आदि बोल बजाये जाते थे जो क्रमशः : दा, रा, दिर, दार होते थे | जब तक वीणा का प्रयोग गायन के साथ होता था तब तक इसके बोलों में योजना बंदी नहीं की गई थी | परंतु जब इसका स्वतंत्र वादन शुरू हुआ तब इसके बोल संगठित किए गए | पखावज के बोलों पर वीणा के बोल बजाए गए, फिर सितार के अस्तित्व में आने पर वीणा के ही बोल सितार की स्वतंत्रता वादन शैली में प्रयुक्त होने लगे।

सितार वाद्य के मुख्य रूप से दो बोल हैं – दा और रा

इन्हीं दा और रा बोलों को संयुक्त कर के हस्तक्रिया द्वारा अन्य बोलों का निर्माण हुआ। डॉ. रेखा निगम कहती है कि “सितार के दो बोल ही माने गए थे और इन्हीं बोलों को भिन्न-भिन्न क्रियाओं द्वारा मिज़राब के आघात के द्वारा उत्पन्न हुए जैसे दिर, दा, दिर, रद, दार, द्रा इत्यादि बोल के प्रयोग से वादकों के विभिन्न छंदों का निर्माण किया।”⁵⁸

इन दोनों के आधार पर ही सितार के अलग-अलग बाजों का निर्माण किया गया।

3.3.2 18 वीं शताब्दी में सितार की वादन शैली (बाज)

वादन शैली को बाज भी कहा जाता है सितार वाद्य में जैसे परिवर्तन हुए वैसे-वैसे ही इसमें भिन्न-भिन्न वादन शैलियों अथवा बाज की रचना हुई | 18वीं शताब्दी में सेनीया बाज, जयपुर बाज, दिल्ली बाज, पूर्व बाज जिसको रजाखानी और मसीत खानी गत के नाम

⁵⁸ सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन, पृ. 89

से जाना जाता है। विमल कांत राय चौधरी के कथनानुसार "अगर ऐतिहासिकता के आधार पर देखा जाए तो सेनीया बाज को ही सितार का प्रथम बाज माना जाए और सितार के बाज का विकास जयपुर से होना प्रारंभ हुआ है।"⁵⁹ इस प्रकार सेनीया घराना और जयपुर सेनीया घराने का सितार की वादन शैली में अद्वितिया योगदान है। 18वीं शताब्दी में सितार वीणा का अनुकरण करते हुए बजाया जाता था। इस समय सितार पर आलापचारी का काम विकसित नहीं था। छोटी-छोटी मींड ली जाती थी। प्रसिद्ध सितार वादक पंडित मणिलाल नाग के मतानुसार "उस समय मींड और गमक का काम नहीं होता था बल्कि बोल-बाँट पर अधिक काम किया जाता था।"⁶⁰

वीणा वादक के सामान ही 12 प्रकार की वादक क्रियाएं जैसे आलाप, मींड, झाला, ढोक झाला, गत, तोड़ा, लड़ी, गुथाव, लड़ लपेट, क्रियाएँ और तार परन वीणा वादन की क्रियाएँ ही सितार में समाविष्ट की गई थी।

सितार में आलापचारी तथा गतकारी का विस्तार ध्रुवपद की चारों वाणियों के अंतरगत भी किया जाता था। गत वादन ध्रुवपद शैली में होता था। गत वादन में ध्रुवपद का अनुकरण सौंदर्य तत्वों के साथ किया जाता था। नवाब अशफाक अली खां अपनी रचना "नगमातुलहिन्द" में लिखते हैं की मोहम्मद शाह रंगीला के दरबारी संगीतज्ञ शाह सदारंग (नेमत खां) थे। जिन्होंने सर्वप्रथम सितार पर बजाने वाली गत की रचना की। फिर उसके बाद खुसरो खां के पुत्र के दामाद फिरोज खां ने गत वादन में एक नई क्रांति लाई। इनके द्वारा रचित शैली को फिरोजखानी गत कहा जाता था जो सितार पर बजाई जाती। फिर उनके उपरांत मसीत खां ने मसीतखानी गत का आविष्कार किया। मिज़राब के निश्चित बोलों को बाँधकर, बोलों को निश्चित क्रम में बजाने के विधान को कायम किया। यह तीन ताल की विलंबित लय में बजाई जाती थी।

इस तरह मिज़राब के विभिन्न बोलों को मसीतखानी गत में बजाने की नई प्रथा का जन्म हुआ। इस गत की लय और गत का भराव मिज़राब द्वारा किया जाता था।

⁵⁹ भारतीय संगीत कोष, पृ. 79

⁶⁰ सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज का विकास क्रम, पृ. 91

मसीत खां के उपरांत मिया रहीम सेन ने आलाप जोड़ के बाद उसी राग में गत की वादन शैली का विधान शुरू किया। गत के बोलों का विभिन्न स्थानों से उठकर सम पर लाया जाता था। इसको विस्तार या बढ़त कहा जाता था। गत की भिन्न-भिन्न लयों में बजाने की परंपरा थी। इस प्रकार मसीत खानी बाज के निर्माण के बाद ही गतवादन शैली में आशातीत परिवर्तन आए।

मसीत खानी गत के उपरांत पूर्वी वाज जिसको रजाखानी बाज कहा जाता है का निर्माण गुलाम रजा खां ने किया जो की मियां मसीत खां के ही शिष्य थे। रेखा निगम लिखती हैं कि "मआदनुलमौसीकी में कहा गया है कि मसीतखानी वाज ध्रुवपद तथा बीन की नियमानुसार था तथा रज़ाखानी बाज ठुमरी, तराना तथा ख्याल के अनुसार था। रज़ाखानी गत द्रुत लय में तीनताल में संगठित होती है। मसीतखानी गत के वादन में माहिर कलाकार बहादुर खां, उ. दुल्ले खां, गुलाम हुसैन और पान खां थे। रज़ाखानी के प्रसिद्ध कलाकारों में रज़ा खां, पन्ना लाल वाजपेयी, बरकत अली, गुलाम मोहमद, ईश्वरी प्रसाद थे।"⁶¹

इस प्रकार 18वीं सदी में सितार वाद्य की वादन शैली तंत्रकारी अंग के अधीन आनी आरंभ हो गई। सितार वादन ध्रुवपद और वीणा का अनुकरण करता हुआ अपनी विशिष्ट गतवादन शैली की और अग्रसर हुआ। इस समय वादन शैली विलम्बित तथा मध्य लय की प्रधानता लिये हुए थी। जहां दिल्ली, जयपुर, उत्तर प्रदेश में मसीतखानी गत का वादन किया जाता था वहीं लखनऊ, काशी, इटावा, जौनपुर में रज़ाखानीगत का वादन अधिक होता था। इस काल खंड में गत के बाद तोड़े को नहीं बजाया जाता था बल्कि ध्रुवपद के सामान लयकारियां प्रस्तुत की जाती थी।

3.3.3 19वीं शताब्दी में सितार की वादन शैली

सितार के इतिहास की चर्चा करते हुए सितार की वादन शैली में 19वीं शताब्दी को स्वर्ण काल का नाम दिया जाता है। क्यों कि इसी कालखंड में सितार वाद्य अधिक प्रगति

⁶¹ रेखा निगम पृ. 95, सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज विकल्प क्रम

पर रहा। प्राचीन वादन शैली (18वीं शताब्दी) में तो सितार वीणा व ध्रुवपद का अनुकरण करते हुऐ आगे बढ़ी। इस काल में सितार कि वादन शैली पर ख्याल अंग का प्रवेश हो चुका था।

इस काल खंड में वादकों के १२ वाद्य अंगों – विलम्बित, मध्य, द्रुत, झाला लड़ी, लड़, गुथाव, लड़लपेट, ठोंक, तार परन, साध, धुरिया तथा माठा क्रियाओं को अपने वादन में सुसज्जित किया। श्री विमलकांत राय चौधरी के अनुसार वादन में आलाप के बारह अंगों को सितार वादन में शामिल करने का श्रेय उ. इमदाद खां को जाता है।⁶²

इस शताब्दी में सितार वादकों ने आलाप जोड़ के बाद गतकारी की प्रस्तुतिकरण में विशेषतौर पर ध्यान दिया। सितार वादन में एक नया आलाप जोड़ने का श्रेय मियां अमृत सेन, उ. इनायत खां, मुराद खां, बरकतउल्ला खां, रामेश्वर पाठक आदि वादकों को जाता है। इस समय दाहिने हाथ का काम अधिक हो गया था। मिज़राब के बोलों को अधिक बजाना वादन शैली की विशेषता थी। उ. इनायत खां अपनी दोनों हस्त क्रियाओं को एक सामान चलते थे। डॉ. रेखा निगम जी श्री सुदर्शनचार्य के साथ हुऐ साक्षात्कार के आधार पर लिखती हैं कि “इस समय गत में भराव के लिए मुखड़े से पहले छोटे – छोटे फ़िक्रों का प्रयोग किया जाता था और उन फ़िक्रों का वादन मियां अमृत सेन द्वारा प्रारंभ किया गया था।”⁶³

गत के मुखड़ों को विभिन्न प्रकार से लयकारी करते हुऐ सम पर आया जाता था। जिसको आड़ी, सीधी कहा जाता है। इस तरह लयकारीयों प्रस्तुत की जाती थी। मसीतखानी गत में ग्यारह मात्रों का फ़िक्रा लेकर 12वीं से गत का उठान किया जाता था। इसी समय मसीतखानी गत के साथ तोड़े बजाने की प्रथा आरंभ हुई। मसीतखानी गत के बाद झाला बजाया जाता था। उ. इमदाद खां ने दोनों वादन शैलियां मसीतखानी और रजाखानी गत को एक ही वादक द्वारा एक समय काल में ही प्रस्तुत करने की नई प्रणाली की शुरूआत की। उ. आशिक अली खां ने भी इसी का अनुकरण किया। तानों और तोड़ों के साथ तबला व पखावज के छंदों की तिहाईयां को भी सम्मिलित कर दिया गया।

⁶² भारतीय संगीत कोष, पृ. 91

⁶³ रेखा निगम पृ. 139, सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज विकल्प क्रम

इस प्रकार 19वीं शताब्दी में सितार की वादन शैली में बहुत अधिक परिवर्तन आये। आलाप, जोड़, मसीतखानी गत, रजाखानी गत के वादन के साथ वादन फ़िके और विभिन्न लयकारियों में तोड़े व तिहाइयां और अंत में झाले की प्रस्तुति की जाती। प्रस्तुतिकरण के इस क्रम ने सितार वाद्य को हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत का लोकप्रिय वाद्य बना दिया।

इस समय दिल्ली, जयपुर, ग्वालियर, रीवा, बड़ौदा, अलवर, जौनपुर, लखनऊ, रामपुर सितार वादन के गत घराने बन चुके थे।

3.3.4 वर्तमान काल में सितार वादन शैली

19वीं शताब्दी के आरंभ में कुछ सितार वादक मसीतखानी गत बजाते थे तो कुछ सितार वादक रजाखानी गत बजाते थे। फिर धीरे-धीरे लोक रूचि में परिवर्तन आया और कलाकारों ने मसीतखानी, रजाखानी गतों का एक साथ वादन की शुरुआत की व कई नवीन वादन सामग्रीयों को सम्मिलित किया गया। सितार में नवीन प्रयोगों के साथ नवीन वादन अलंकारों को भी सम्मिलित किया गया जैसे मींड, गमक, खटका, कण, कृतन, मुर्की, घसीट आदि के कई प्रकार आधुनिक समय की वादन शैली में दिखाई देते हैं। इस काल में खयाल अंग का सितार वादन में सुनने को मिलता है। विभिन्न प्रकार की तानें व तिहाइयां बजाई जाने लगीं। मसीतखानी गत में भी लम्बी-लम्बी तानें बजाई जाती हैं।

आधुनिक समय के कुछ प्रसिद्ध कलाकार पं. रविशंकर, उ. शुजात खां, उ.शाहिद परवेज़, उ. निशात खां, उ.इरशाद खां, पं. बुद्धादित्य मुखर्जी का मानना है की सितार वादन में जो भी परिवर्तन हुऐ है वह जन रूचि पर ही हुऐ है। खयाल अंग का वादन होने से मींड व गमक का अधिक प्रयोग होता है। सितार वादन की मुख्य वादन शैलियां (बाज़) निम्नलिखित हैं -

- i. मसीतखानी
- ii. रजाखानीखानी
- iii. फ़िरोज़खानी

- i) मसीतखानी बाज :-

ii) रजाखानी गत

इसमें मिज़राव के निश्चित बोल है। गत में स्थायी और अन्तरा बजाने के बाद दुगुण कि लय में तोड़े बजाये जाते है। इसमें मींड गमक, जमजमा. सपाट, खटका अदि क्रियाएं दिखाई जाती है।

iii) फ़िरोजखानी गत

55

बजाया जाता है। फ़िरोज खां के नाम पर ही इसे फ़िरोजखानी गत कहा जाता है। यह मध्य लय में बजायी जाती है। इसमें मींड और गमक की प्रधानता रहती है।

iv) अमीरखानी गत

इस वादन शैली का निर्माण अमीर खां ने किया जो सेनी घराने से संबंधित रखते थे। अमीरखानी गत के बोल दिड द डि द, डा दा दा डा, दिड डा दिड द, डा दा दा डा। यह 16 मिज़राब के बोल तीनताल में प्रयोग किये जाते हैं। इसमें बराबर की लय में तोड़े प्रस्तुत किये जाते हैं।

v) जाफ़रखानी गत

उ. अब्दुल हालिम जाफ़र खां ने जाफ़रखानी बाज का निर्माण किया था। आप बीनकारों के घराने से सम्बन्धित थे। इस गत में मिज़राब के सीधे-सीधे बोल प्रयोग होते हैं। इसमें केवल स्थाई और अंतरा होता है।

vi) सितारखानी गत

सितारखानी गत लखनऊ की ठुमरी अंग से प्रभावित गत है। यह द्रुत गत में बजाई जाती है। इसमें ठुमरी के सामान ही ठेका लगाया जाता है। जिसको पंजाबी ठेका या फिर सितारखानी ठेका कहा जाता है। सितारखानी गतें अधिकतर भैरवी, पीलू, खमाज, झिंझोटी रागों पर बजाई जाती है। इसमें छोटी-छोटी तानें व ठुमरी अंग का वादन होता है।

vii) मिश्रखानी गत

तीनताल के अतिरिक्त सितार पर बजाई जाने वाली गत जो रूपक या झपताल में निबंधित होती है। मिज़राब के बोल ताल के अनुरूप ही प्रयोग किये जाते हैं। यह झुमरा एकताल, रूपक झपताल आदि में विशिष्ट खुले मिज़राब के बोलों के साथ कर्णप्रिय लगती है।

3.3.5 आधुनिक समय की तंत्रकारी अंग और गायकी अंग की वादन शैली

डॉ अरुण मिश्रा लिखते हैं कि "गायकी अंग की विशेषताओं को ग्रहण करते हुए कालान्तर में मुख्यतः तन्त्री-वाद्यों ने अपनी वादन-विधि में कुछ विशेष विशिष्टताओं को सम्मिलित कर अपनी विधा को एक नया रूप दिया, जिसको तन्त्रकारी अंग कहा जाने लगा। जिससे प्रत्यक्ष रूप में वादन-शैली में गायकी अंग कुछ गौण हो गया, परन्तु यह गौणता कुछ अंशों में ही समाहित है। क्योंकि तन्त्रकारी अंग की वादन-शैली 'बीन' अंग से प्रभावित है और बीन अंग ध्रुवपद से।"⁶⁴

तंत्रकारी अंग की वादन शैली

मैहर घराने से उ. अलाऊद्दीन खां के शिष्य भारतरत्न पं. रवि शंकर तंत्रकारी अंग की सितार बजाते थे। आपके बजाने में क्रिंतन और गमक का काम अधिक होता था। आप अपने वादन में ध्रुवपद व खयाल दोनों का ही समावेश रखते थे। आप ध्रुवपद के अनुकरण से आलाप व जोड़ आलाप का वादन करते थे। गतकारी खयाल अंग के साथ सम्पन्न करते थे।

तंत्रकारी अंग में आप कृतन, जमजामा, सपाट, मुर्की, ठोंक का अधिक प्रयोग करते हुये विचित्रता लेते हुये तानों का विस्तार करते थे। आपने सेनिया बाज में ही नवीन प्रयोगों के द्वारा उसको एक नया रूप दिया। जो आज विश्व भर में बहुत प्रचलित है। पं. निखिल बनर्जी, पं. उमाशंकर मिश्रा, पं. कार्तिक कुमार, पं. गोपाल कृष्ण और आजकल के समय में सितार वदिका अनुष्का शंकर, पं. पूर्बयन चटर्जी, पं. नीलाद्री कुमार प्रसिद्ध कलाकार हैं।

3.3.6 गायकी अंग की वादन शैली

सितार का प्रयोग कलांतर में गायन के साथ किया जाता है। क्योंकि सितार वाद्य कंठ के बहुत समीप है। वर्तमान समय में गायकी अंग की वादन शैली सितार वाद्य में बजाई जाती है। जिसका श्रेय उ. विलायत खां को दिया जाता है। धर्म युग नामक एक पत्रिका में साक्षात्कार के दौरान उ. विलायत खां ने कहा कि मैंने सितार वादन को एक नयी

⁶⁴ भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत पृष्ठ 81

दिशा दी है वह है गायकी अंग। गायकी अंग में आलाप, जोड़, गतकारी वादन सामग्री को वादन में लाया जाता है। इसमें कलाकार कि कल्पना का और भावाभिव्यक्ति को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसमें मींड का काम अधिक मिलता है। वादक जितना उत्तम गायक होगा वह उतना ही उत्कृष्ट सितार वादक होगा। उ. विलायत खां, उ. रईस खां, उ. शाहिद परवेज़, उ. शुजात खां, उ. निशात खां गायकी अंग की सितार बाजते हैं।

सितार के प्रसिद्ध घराने व उनकी वादन शैलियां जो हिन्दुस्तान में प्रचलित हैं।

घराना वादनशैली

ईटावा घराना - ईमदाद खानी शैली

मैहर घराना - रामपुर घराना बाबा अलाउद्दीन खां की वादनशैली

विष्णुपुर घराना - मिश्र वादन शैली

जयपुर घराना - तानसेन का सेनिया बाज

इंदौर घराना - मिश्रित वादन शैली

ग्वालियर घराना - सरोद वादन शैली

3.4 शैक्षणिक संस्थानों में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा

भारत में वैदिक काल से ही संगीत की शिक्षा गुरु के द्वारा दी जाती रही है। शिष्य गुरुकुल में रहकर गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत नियमितता से कठोर अनुशासित बंधनों में रहकर संगीत की शिक्षा ग्रहण करते थे उसे समय में शिक्षा व्यवस्था पर किसी सरकार का शासन ना होने पर वह पूर्णता स्वतंत्रता के साथ सुचारू रूप से चल रही थी। इस प्राचीन परंपराओं पर ही 19वीं शताब्दी में घराना परंपरा का प्रचलन हुआ।

संगीत गुरुकुलो से निकल कर घरानों में प्रवेश कर गया परंतु संगीत सीखने व सिखाने की परंपराएं व शिक्षण प्रणाली वैसी ही थी। गुरु शिष्यों को मौखिक रूप में शिक्षा

देते थे उसका कोई भी लिखित कार्य नहीं होता था। केवल गुरुमुख से सुनकर, समझकर ही अध्ययन किया जाता था। उस काल खंड के गुण व आदर्श 19वीं शताब्दी में घराना व्यवस्था में दिखाई दिये। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घराना प्रणाली इतनी प्रभावशाली हो गई की घरानेदार संगीतज्ञों की संख्या बढ़ती जा रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि संगीत केवल घरानेदारी की ही धरोहर है।

जैसे-जैसे प्राचीनता में नवीनता का प्रवेश हुआ संगीतज्ञों को सुनने का अवसर मिला। क्योंकि हर घराने में कलाकार का गायन व वादन की शैली उसके प्रदर्शन का अपना एक अलग ढंग है। डॉ. रजनी भटनागर का कहना है कि भारत के स्वतंत्र होते ही छोटी-छोटी रियासतों का अंत हो गया। जिससे सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन होना स्वाभाविक ही था। उसका प्रभाव सभी ललित कलाओं पर पड़ा संगीत कला पर भी उसका व्यापक प्रभाव पड़ा।⁶⁵

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भी इन रियासतों के साथ मुक्त हो गया। अब एक घराने से कोई अच्छी खांदानी चीज, किसी दूसरे घराने में सुनाने को मिलने लगी। घरानों में पनपी कुछ गलत प्रवृत्ति भी इसका कारण बनी। यँ तो घरानागत शिक्षण व्यवस्था में विविधताओं के गुण शुमार थे परंतु कुछ घरानेदारों के प्रतिकूल प्रवृत्तियां इस प्रथा के लिए लाभप्रद नहीं रही। घरानों की उपयोगिता संगीतिक दृष्टि से संगीत के संरक्षण में उसके प्रवाह के उपायुक्त रही। डॉ. नरेश कुमार लिखते हैं की अंग्रेजी शासन के दौरान में संगीत शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही क्रांतिकारी परिवर्तन आए। संगीत शिक्षा जो कि घराना प्रथा के अंतर्गत होती थी वह अब संस्थागत शिक्षक प्रणाली के अंतर्गत प्रारंभ हो गई। विद्यालयों, महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों और संस्थानों में प्रवेश कर गया।⁶⁶

3.4.1 आधुनिक समय में संगीत शिक्षण व्यवस्था

संगीत के संस्थागत शिक्षण व्यवस्था से संगीत शिक्षा अन्य सर्वजन सुलभ हो गई। प्राचीन भारतीय इतिहास पर दृष्टि डाले तो महाराजा विक्रमादित्य के शासन काल में भी संगीत की शिक्षा तक्षशिला तथा नालंदा विश्वविद्यालय में दी जाती थी। उन विश्व विद्यालयों में

⁶⁵ सितार वादन की शैलियाँ-208

⁶⁶ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, पृ. 261

संगीत विभाग भी अलग से विद्यमान रहते थे। ग्वालियर के महाराजा मान सिंह तोमर ध्रुवपद गायन सिखाने के लिए जाया करते थे। वहीं शिक्षा व्यवस्था पुनः अपने रूप में आ गई।

समय के कुछ काल में संगीत को हेय दृष्टि से देखा जाता था। उसे समय पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगंबर पुलस्कर ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को पुनः अपना स्थान दिलवाया था। बदलते दौर के साथ संगीत विश्व को शिक्षण संस्थाओं में स्थान मिल गया। पं. विजय शंकर मिश्र के कथनानुसार आज से सौ वर्ष पूर्व संगीत संस्थाओं में पं. नारायण राय व्यास, पं. ओंकार नाथ ठाकुर, पं. विनायक राय पटवर्धन जैसे कलाकार संगीत की शिक्षा दिया करते थे।

3.4.2 शिक्षण संस्थाओं का विकास

संगीत शिक्षा के एक नए अध्याय का सूत्रपात पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगंबर पुलस्कर ने किया। पं. विष्णु दिगंबर पुलस्कर ने मिरज में अपनी संगीत शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत 1901 में लाहौर और 1908 में मुंबई में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की जहां पर संगीत का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ कई संगीतिक ग्रंथों की रचना की जैसे संगीत शिक्षा, बालप्रकाश आदि।

पं. विष्णु नारायण भातखंडे ने लखनऊ में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना की। उन्होंने क्रमिक प्रस्तुत मलिका, भातखंडे संगीत पद्धति जैसे संगीत ग्रंथ लिखे। उन्होंने संगीत को स्वरलिपि भी प्रदान की जो की भातखंडे स्वरलिपी और दिगंबर स्वरलिपी के नाम से प्रसिद्ध है।

इनके उपरांत बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत शिक्षण को ग्रेजुएट के पाठ्यक्रम में शामिल किया। कुछ विश्वविद्यालय की स्थापना केवल संगीत की शिक्षा दीक्षा के लिए ही की गई जैसे विश्व भारती विश्वविद्यालय (बंगाल) और इंदिरा कला संगीत विद्यालय (खैरागढ़)। इस प्रकार संगीत विषय का शिक्षण विद्यालयों में विश्वविद्यालय में होने लगा।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षण प्रणाली दो प्रकार से चलने लगी- व्यक्तिगत और संस्थागत

व्यक्तिगत- शिक्षण प्रणाली में गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत संगीत शिक्षा ग्रहण की जाती है।

संस्थागत- संस्थागत प्रणाली में संगीत की शैक्षणिक संस्थाओं के अधीन संगीत शिक्षा प्राप्त की जाती है।

3.4.3 संगीत नाटक अकादमी, दूरदर्शन तथा ऑल इंडिया रेडियो

संगीत नाटक अकादमी, आकाशवाणी और दूरदर्शन में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन संस्थाओं द्वारा संगीत कार्यक्रम, संगीत सम्मेलन व संगीत गोष्ठियां आयोजित की जाती है। संगीत के उद्यमी छात्र / छात्राओं को छात्रवृत्तियां भी प्रदान की जाती है। आकाशवाणी केंद्रों में संगीत के कार्यक्रम जैसे संगीत का अखिल भारतीय संगीत कार्यक्रम, आकाशवाणी संगीत सम्मेलन, आकाशवाणी संगीत प्रतियोगिता, संगीत पाठ कार्यक्रम आदि करवाए जाते हैं।

संगीत नाटक अकादमी द्वारा उच्चकोटि के कुशल संगीतकारों को संगीत नाटक अकादमी द्वारा सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया जाता है।

3.4.4 संगीत निरीक्षण का पाठ्यक्रम व्यवस्था

गुरु शिष्य परंपरा का घराना प्रणाली में संगीत शिक्षा मौखिक होती थी। संगीत के संस्थागत होने पर उसे इनका पाठ्यक्रम निर्धारित कर दिया गया। कभी-कभी गुरु कई-कई वर्षों तक अपने शिष्यों की कुछ नहीं सिखाते थे। परंतु इस नवीन शिक्षण व्यवस्था में क्रियात्मक रूप से कार्य को संगठित कर पाठ्यक्रम का रूप दिया और शिष्यों को स्वरंकन पद्धति द्वारा शिक्षा दी। गुरुजनों द्वारा मौखिक शिक्षा का सबसे बड़ा अवगुण यह होता था कि शिष्य को सब कुछ स्मरण रखना पड़ता था। अगर कहीं वह उसे भूल जाता था तो पुनः सीखने से वंचित रह जाता था। संगीत संस्थागत होने से बंदिशों और वादन सामग्री को लिखा जा सकता था। वह सामग्री हमेशा उनके पास सुरक्षित रहती थी।

3.4.5 क्रियात्मकता के साथ शास्त्र पक्ष का ज्ञान

संस्थागत शिक्षक प्रणाली में छात्र-छात्राओं को क्रियात्मक संगीत के साथ-साथ शास्त्र संगीत की भी शिक्षा दी जाने लगी। जो घराना प्रथा में अनभिज्ञ थी इसीलिए शिष्य शास्त्र पक्ष की अल्प जानकारी रखते थे। इस प्रकार क्रियात्मक पक्ष के साथ शास्त्र पक्ष भी मजबूत होने लगा।

3.4.6 सामूहिक शिक्षा

संगीत पत्रिका अंक में कहा गया है कि "शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता थी जिसमें सामूहिक रूप से शिक्षा दी जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु बुद्धिजीवी वर्ग ने प्रयास कर के शुरू किया। पं. राम शंकर महाचार्य के शिष्य मोहन गोस्वामी ने संगीत विद्यालय कलकत्ता में 1871 में खोला। जिसमें सामूहिक रूप से शिक्षा दी जाती थी। इसके विपरीत गुरु-शिष्य प्रथा में एक शिष्य को एक बार में ही सिखाया जाता था पर इस प्रणाली के अंतर्गत संगीत शिक्षा सामूहिक रूप से दी जाने लगी।"⁶⁷

निष्कर्ष

इस प्रकार हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में संगीत व्यवस्था घराना प्रणाली से निकल कर संस्थाओं में आ गई। घराना परम्परा आज भी प्रचलित है। आज भी कलाकारों को उनके घरानों के नाम से ही जाना जाता है। कोई भी संगीत का साधक विद्यार्थी संस्थागत संगीत शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत किसी ना किसी घराने से अवश्य जुड़ता है। जहाँ पर उसे गायन व वादन की बारीकियाँ बताई जाती है। संगीत कला में बहुत सारी ऐसी चीजें होती हैं जो पाठ्यक्रम में कभी-कभी नहीं होती। उनकी शिक्षा हेतु संगीत के साधक विद्यार्थी गुरु के पास जाते हैं।

यथापि वर्तमान समय में संगीत शिक्षण व्यवस्था का विकास हुआ है परंतु इसमें अनेक समस्याएं भी हैं। डॉ. अशोक कुमार यमन के अनुसार कि यदि आप पाठ्यक्रम का अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि इसमें बहुत सी अनियमितताएँ हैं। स्वतंत्र वादन और

⁶⁷ (संगीत अंक जनवरी-फरवरी 1989)

गायन पाठ्यक्रम शिक्षण संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है। वह समस्याओं का कारण है जैसे राग और ताल की गिनती पर बोल देना, उनको पर्याप्त समय न देना और छात्र/छात्राओं की क्षमता अनुसार शिक्षण करना।⁶⁸

इस प्रकार अगर हम देखते हैं कि संगीत शिक्षा को जीवित रखने और उसमें विकास करने में गुरु शिष्य परंपरा का बहुमूल्य योगदान रहा है। जो भी संगीत आज गायन व वादन में उपयोग किया जा रहा है वह घराना प्रणाली के द्वारा ही सुरक्षित रखा गया है। संगीत शिक्षा आरंभिक समय में विद्यालयों में विद्वान कलाकारों द्वारा दी जाती थी। सुव्यवस्थित शास्त्र अनुसार, नियम अनुसार और पाठ्यक्रम अनुसार संगीत शिक्षा का प्रयोग संस्थागत व्यवस्था में करना क्रांतिकारी कदम था।

⁶⁸ संगीत रत्नावली पृ. 518

वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य को लोकप्रिय बनाने वाले कलाकारों का योगदान एवं विश्लेषण

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले तंत्री वाद्ययंत्रों में सितार विश्व विख्यात वाद्य है। सितार का अविष्कार त्रितंत्री वीणा से हुआ था जिसको फारसी में 'सेहतार' के नाम से जाना जाता था। सितार वाद्य में परम्परागत हिन्दुस्तानी वाद्यों में पाई जाने वाली सभी विशेषताएँ उपलब्ध है जैसे- तुम्बा, धुरच, जवारी, पर्दे इत्यादि। सितार 18वीं शताब्दी में अस्तित्व में आया और इसकी अद्भुत और अनोखी वादन शैली के कारण इसको विश्व में सबसे अधिक बजाया जाने वाला भारतीय वाद्ययंत्र बना दिया।

वैश्वीकरण के इस युग में अगर साहित्यिक, धार्मिक, आर्थिक व्यापार, राजनैतिक व सामाजिक सम्बन्ध फल फूल रहे हैं तो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत कैसे पीछे रह सकता था। कला, साहित्य, संस्कृति आदि का आदान-प्रदान तो आदि काल से चल रहा है। भारतीय प्राचीन विश्वविद्यालय तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों में उस काल खंड में भी विदेशी छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और योग विश्व में भारत की अलग पहचान कायम करने में सफल हुये हैं। राष्ट्रो का आपसी मेल मिलाप, सामाजिक, संस्कृतिक सम्बन्ध, राजनैतिक सम्बन्ध सैकड़ों वर्ष से चले आ रहे हैं। संगीत उनमें मैत्रीभाव उत्पन्न करने का श्रेष्ठ माध्यम है। पं. जवाहर लाल नेहरू भी इस बात से सहमति रखते हैं कि "वास्तविकता में शान्ति व एकता का वातावरण अन्तराष्ट्रीयता से ही मिल सकती है। संगीत सद्भावना को बढ़ाने और शान्ति स्थापित करने का सबसे अच्छा माध्यम है।" ⁶⁹

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत इतना समृद्ध है यह वो विशाल सागर है जिसमें जितना डुबोगे वो उतना ही गहरा होता जाएगा। उसी सागर में बहुत सारे वाद्यों का निर्माण किया गया। विभिन्न वादन शैलियाँ और गायन शैलियाँ अद्भुत वैचित्रता लेते हुए उत्पन्न की गईं।

⁶⁹ आधुनिक भारत, पृ. 128

गायन, वादन और नृत्य इन तीनों के समावेश को संगीत कहा जाता है। वादन आदिकाल से गायन के अधीन रहा है। परन्तु 18वीं शताब्दी में सितार वाद्य चमत्कारी रूप से संगीत जगत में क्रान्ति ले आया। इसका एकांकी वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। एकांकी वादन शैलियों की रचना की गई। जो सितार पर बजाई जाती थे जैसे फिरोज़खानी, मसीतखानी, रज़ाखानी, सितारखानी, इमदादखानी, जाफ़रखानी इत्यादि गत वादन शैली (बाजों) का निर्माण हुआ।

1950 से 1960 के दशक में सितार वाद्य को विश्व स्तर पर भारतरत्न पं. रवि शंकर ने प्रसिद्ध किया और विस्तार वाद्य को विश्व में पहचान मिलनी आरंभ हुई। उ. विलायत खां, पं. देबु चौधरी, उ. अब्दुल हलीम जाफर, पं. निखिल बनर्जी, पं. मणिलाल नाग, पं. बुधादित्य मुखर्जी, श्रीमति अन्नपूर्णा देवी, उ. रईस खां, उ. शुजात खां, उ. शाहिद परवेज़, उ. निशात खां, पं. हरविन्द्र शर्मा, पं. नीलाद्रि कुमार, सुश्री अनुष्का शंकर, पं. पूर्बयन चटर्जी ने इसको आगे बढ़ाया। प्रसिद्ध और विश्वविख्यात वादकों ने देश में ही नहीं विदेश में भी ख्याति प्राप्त की। डॉ. आकांशी का कथन है कि नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. अमर्त्यसेन कहते हैं कि वैश्वीकरण को अवधारण नई नहीं है और ना ही यह पश्चिमी है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान, राजनैतिक और पर्यटन ज्ञान प्राप्ति के माध्यम से यह हजारों वर्षों से विकासशील है।⁷⁰

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वैश्वीकरण पर विभिन्न विद्वान व लोकप्रिय सितार वादकों के भिन्न भिन्न विचार हैं। उ. निशात खां जी के अनुसार कि यह बहुत अच्छी बात है कि हमारा संगीत विदेशों में प्रसिद्ध हो रहा है। भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रचार हो रहा है।⁷¹

उ. शाहिद परवेज़ जी का मानना है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का वैश्वीकरण हमारे लिये और हमारे संगीत के लिये बहुत अच्छी बात है। हमारा संगीत विदेशों में सुना जा रहा है।⁷²

पं. नयन घोष का मानना है कि संगीत के वैश्वीकरण से विदेशों में अपनी कला के संस्कृति के प्रचार का अवसर मिला।⁷³

⁷⁰ भारतीय संगीत और वैश्वीकरण पृ. 27

⁷¹ निशात खां जी के साथ साक्षात्कार, दिसम्बर, 2023

⁷² उ. शाहिद परवेज़ जी के साथ साक्षात्कार, नवंबर, 2021

युवा कलाकार अदनान खां का मानना है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विशेषकर सितार को प्रसिद्ध करने में पं. रवि शंकर जी का योगदान है जिसके परिणाम स्वरूप शास्त्रीय संगीत विश्व प्रसिद्ध हुआ।⁷⁴

4.1 वैश्विक स्तर पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं सितार

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विश्व भर में प्रचलित सबसे प्राचीन व महान परम्परा में से है। जिसका प्रचार-प्रसार सैकड़ों वर्षों से विश्वभर में हो रहा है। हिन्दुस्तानी संगीत में इतना आकर्षण है जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ है। विश्व के इतिहास में जितनी भी जीवंत ललित कलाएं हैं उनमें से संगीत कला ही एक ऐसी कला है जो मनुष्य के मन पर तुरन्त ही प्रभाव डालने में सक्षम है। शब्दों को महत्व को जाने और समझे बिना भी संगीत की भाषा को समझना अत्यंत सरल है। संगीत में वह शक्ति निहित है जो इस चरा-चर जगत को प्रभावित करती है। शास्त्रीय संगीत वैश्विक स्तर पर उच्चस्तरीय मुकाम पर है। अगर आज भी सोशल मीडिया पर दृष्टि डाले तो विश्व के किसी ना किसी कोने में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम हो रहा होगा।

4.1.1 वसुधैव कुटुम्बकम्

हमारे संस्कृत के महा उपनिषद में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' लिखा हुआ पाया जाता है। जिसका अर्थ है कि यह सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। यह श्लोक भारतीय समाज को नैतिकता की शिक्षा देता है। आज 21वीं शताब्दी में जब विश्व भौगोलिक सीमाओं से परे विज्ञान के माध्यम द्वारा समीप आ गई है। यह श्लोक सार्थक हो गया प्रतीत होता है। सही मायनों में हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत ने ही इसे सार्थकता का जामा पहनाया है। वैश्वीकरण 20वीं शताब्दी में लाया गया एक नया शब्द है। वैश्विक का अर्थ-विश्वव्यापी, विश्व सम्बन्धी। वैश्विक स्तर पर हिन्दोस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार पर डॉ. नीलम बाला महेन्द्र का कथन है कि हिन्दोस्तानी संगीत विश्व में बहुत्व मैत्रीभाव और मानव कल्याण के लिए

⁷³पं. नयन घोष जी के साथ साक्षात्कार, दिसम्बर, 2023

⁷⁴ साक्षात्कार अदनान खान , दिसम्बर, 2023

एक मजबूत तथा प्रभावशाली माध्यम है। एक कवि के कविता के मुकाबले एक गायक या वादक अपने स्वरों की भाषा में बात करें तो वह अति उत्तम है।⁷⁵

डॉ. रेणुका गंभीर के अनुसार संगीत को सर्वभौमिक भाषा कहा जाता है। आप किसी भी राष्ट्र का संगीत सुन ले चाहे वो अमेरिका का ओपेरा और भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग की बन्दिश उसमें आपको अन्तर नहीं दिखेगा क्योंकि संगीत भाषा से ऊपर स्थित रहता है। संगीत कला ने आज वैश्विक स्तर पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को महत्वपूर्ण स्थान दिलवाने में कामयाब रही है। विभिन्न राष्ट्रों में सामूहिक संगीत सम्मेलनों और प्रस्तुतियों से विश्व में मैत्रीभाव व बंधुत्व की भावना का विकास हुआ है। विश्व स्तर पर सुना हुआ और देखा हुआ संगीत वैश्विक संगीत की श्रेणी में आता है फिर चाहे वो संगीत भारतीय हो या पश्चिमी स्वरों के मंच पर एकसार होकर ही वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को प्रेरित करती है। विश्व स्तर पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की बहुत मान्यता है। लोग हमारा संगीत बहुत खुशी से सुनते हैं।⁷⁶

वैश्वीकरण होने से आज दुरियाँ नज़दीकियों में तबदील हो गई है। सम्पूर्ण विश्व संकुचित होकर वैश्विक ग्राम में बदल चुका है। हमारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, वादन, कंठ या फिर नृत्य भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। जिसकी माँग आजकल विश्व के बाज़ार में बहुत बढ़ गई है। संगीत का विकास सदीयों से समाज की बदलती हुई वास्तविकता के साथ हुआ है। समय और परिस्थितियों के बदलते स्वरूप के साथ इसमें परिवर्तन आया है। विकास की प्रक्रिया का क्रम धार्मिक संगीत से लेकर दरबार तक, दरबारी संगीत से लेकर जनता तक, यह प्रक्रिया निरन्तर विकास की ओर अग्रसर हो रही है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत स्थापना से लेकर वर्तमान तक परिवर्तनशीलता के दौर से गुजर कर पुरातन परंपरा के साथ पूर्ण संतुलन स्थापित किये हुए है। यह इसकी विशेषता है।

हिन्दुस्तान जब गुलामी की जंजीरों में लगभग दो शताब्दियों तक कैद था, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत तब भी विश्व का केन्द्र बना हुआ था। अंग्रेजी आधिपत्य में रहते

⁷⁵ आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, पृ. 10

⁷⁶ साक्षात्कार डॉ. रेणुका गंभीर एसोसिएट प्रोफ़ेसर, दिसंबर 2023

हुए भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की महक व सानिध्य कभी कम नहीं हुआ। अंग्रेजों ने भी हिन्दुस्तानी संस्कृति को इस महान धरोहर की विभिन्न क्षेत्रों में अपने अध्ययन का केन्द्र बनाया। फाक्स स्ट्रेबावेंज, पोपले, जॉनब हैगिन, मैक्स मुलर, ऐनी बिलासन जैसे विद्वानों द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की जटिल व दुर्लभ जानकारी मिलती है। हिन्दुस्तानी संगीत का अर्थ जब केवल गायक या वादक को सुनना, श्रोताओं के मध्य बैठ कर सिर हिलाना, आनंदित होना, मध्य लय का स्वर विस्तार और हाव-भाव के साथ प्रदर्शन तब के समय काल में इन विद्वानों ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर पुस्तकें रची।⁷⁷

इसका मूल रूप से तत्पर्य केवल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से विश्व को परिचित करवाना था। आधुनिक काल में भारत को विश्व स्तर पर पहचान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के द्वारा ही मिली है।

संगीत चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, भाषा उसमें कभी भी बाधित नहीं होती क्योंकि विशिष्ट ध्वनि तरंगों व अन्तराल, विविध स्वरावलियां व बन्दिशें श्रोताओं को आनंदित करती है। आज के इस भौतिकवादी युग में मनुष्य अपने लिए आत्म शान्ति और आत्मतुष्टि का मार्ग खोजता है। और वो शान्ति और संतुष्टि उसे केवल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से ही मिलती है। इसी कारण हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हुआ।

4.1.2 वाद्य संगीत

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में वाद्य संगीत का प्रचार-प्रसार वैश्विक स्तर पर अधिक हुआ है क्योंकि गायन संगीत में भाषा बाधा डालती है। वही वाद्य संगीत में वाद्य यंत्र को बजाना, सीखना, गायन संगीत की अपेक्षा सरल है क्योंकि उसमें भाषा बाधित नहीं होती।

वाद्य यंत्रों में भी तत् वाद्य या वंत्री वाद्य यंत्र विदेशों में अधिक प्रचलित हुए हैं जिनमें से सितार, सरोद, वीणा, वायलिन, संतूर इत्यादि।

तंत्री वाद्यों का प्रचार शायद इस कारण भी अधिक हुआ क्योंकि विश्व में गिटार वाद्य अधिक प्रचलित है जो कि एक तंत्री वाद्य है। जिसके फलस्वरूप विदेशियों को तंत्रों वाद्यों

⁷⁷संगीत पत्रिका, जुलाई 1962, पृ. 39

पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखना और समझना सरल रहा होगा। तभी तंत्री वाद्य यंत्र विदेश में लोग अधिक रूचि के साथ सीख रहे हैं और बजा रहे हैं। तभी तो पं. रवि शंकर जी जब 19वें के दशक में जब विदेश गए तो लोगों ने उनके हाथ में एक अद्भुत वाद्य देखा जिसकी वादन शैली उनके परम्परागत वाद्य से ज्यादा भिन्न नहीं थी वो तो लोग उस वाद्य की ओर आकर्षित हुए। वो वाद्य सितार ही था। उ. किरणपाल सिंह (संतुर वादक, इंग्लैंड) का कहना है कि तंत्रों वाद्यों में सितार वाद्य सबसे अधिक प्रचलित हुआ। उसका कारण पं. रवि शंकर रहे। सितार के अतिरिक्त अन्य तंत्रों वाद्य इतने प्रचलित नहीं हुये।⁷⁸ पं. रवि शंकर जी ने जहाँ तंत्री वादन शैली का प्रचार किया वहीं उ. विलायत खां ने ख्याल वादन शैली का प्रचार किया। दोनों ही कलाकार सितार वादन करते थे और दोनों की ही शैली भिन्न थी जिसको विदेशियों ने बहुत प्यार किया और अपनाया। विदेशियों को रागदारी की समझ नहीं आती थी पर वो वादन शैली का पूरा आनंद लेते थे।

पंडित नरेन्द्र मिश्रा का कहना है कि “हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वैश्वीकरण का कारण रियासतों का पतन भी था क्योंकि जो संगीतज्ञ और कलाकार दरबारी गायक या वादक होते थे। वहां से उनको जीवन यापन के लिये भरपूर पूँजी मिलती थी, पर रियासतों के अंत से कलाकारों के पास कोई विकल्प नहीं था। उनके पास गुरु शिष्य परंपरा को कायम रखने के लिये भी उपयुक्त धन नहीं था। इसलिये भी संगीतकारों और कलाकारों ने विदेश का रूख किया। भारत में तो ठीक है परन्तु विदेशों में आजकल भारतीय संगीत का अधिक प्रचार हो रहा है। कोई कलाकार, यूरोप कोई अमेरिका निकल गया है। इसके पीछे कारण है कि वहाँ के लोग यहाँ के संगीत को पसंद करते हैं।”⁷⁹ जहाँ पर उनको गायन या वादन करने के ढेरों डॉलर और पाँऊड मिलते थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है अगर ये कहा जाये की अब संगीतकार, कलाकार भौतिकवादी विचारधारा के हो गए थे। संगीत पर चरित्र या पहचान के तौर पर नहीं बल्कि एक पेशा बन गया है। भारत में कलाकारों को इतने पैसे नहीं दिये जाते थे। गुरु-शिष्य परंपरा में भी गढ़ाबंध संगीत शिक्षण व्यवस्था चल रही थी, जहाँ पर विद्यार्थियों द्वारा गुरु को कुछ नहीं दिया जाता था। इसीलिए उनको अपनी आर्थिक स्थिति और रोजी रोटी के लिये विदेशों की ओर रूख किया। उ. धर्मवीर सिंह

⁷⁸साक्षात्कार, उ. किरणपाल सिंह, अप्रैल, 2022

⁷⁹साक्षात्कार, पं. नरेन्द्र मिश्रा, बनारस, सितंबर, 2024

(सितार वादक, इंग्लैंड) का कहना है कि “कलाकार रोजी-रोटी की तलाश में विदेश गये।”⁸⁰ जहाँ पर उनको, दौलत, शोहरत, मान, सम्मान सब कुछ प्राप्त हुआ।

4.1.3 सूचना प्रौद्योगिकीकरण

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध होने का एक मुख्य बड़ा कारण सूचना प्रौद्योगिकीकरण भी रहा है। सोशल मीडिया पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों को कहीं भी कभी देख-सुन सकते हैं। बहुत सारे ऐप्स और सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म हैं जहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत देखने और सुनने को मिलता है। उ. शाहिद परवेज़ जी का कहना है आजकल आनलाईन शिक्षा भी दी जा रही है। हमारे यहाँ भी एसपीके अकादमी में आनलाईन शिक्षा दी जाती है।⁸¹ टेलीविजन, आकाशवाणी और लाइव कार्यक्रम की ऑडियो, विडियो आज उपलब्ध है।

4.1.4 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वैश्वीकरण स्तर पर प्रचार-प्रसार में ICCR सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं की भूमिका

पं. नरेन्द्र मिश्रा का मानना है कि संगीत के प्रचार-प्रसार में सोसाइटियों और संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विदेशों में संस्थाएँ अधिक सक्रियता से काम करती हैं।⁸²

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में ICCR का बहुमूल्य योगदान रहा है। ICCR द्वारा भारतीय कलाओं को प्रफुल्लित करने के लिये विदेशों में भी संस्थाएँ खोली गईं। 37 के करीब ICCR के केन्द्र हैं जहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है। संस्कृतिक कार्यक्रम करवाये जाते हैं। छात्रों को छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान की जाती हैं। उ. शाहिद परवेज़ जी के अनुसार स्पिक मैके अच्छा काम कर रहा है।⁸³ इसके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के साथ-साथ भारतीय सभ्यता संस्कृति का भी प्रसार हो रहा है।

⁸⁰साक्षात्कार, उ. धर्मवीर सिंह, नवंबर, 2022

⁸¹साक्षात्कार, उ. शाहिद परवेज़, अक्टूबर, 2024

⁸²साक्षात्कार, पं. नरेन्द्र मिश्रा, दिसम्बर, 2023

⁸³ साक्षात्कार, उ. शाहिद परवेज़, अक्टूबर, 2024

- संगीत नाटक अकादमी
- स्पिक मैके
- आईटीसी रिसर्च केन्द्र-कोलकाता,
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार में इन संस्थाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन संस्थानों ने कलाकारों के साथ संपर्क स्थापित करके उन्होंने अपने साथ जोड़ा। देश-विदेश में सांस्कृतिक आदान-प्रदान स्थापित किये, जिससे एक दूसरे देश में कलाकार आकर अपनी कला का जौहर दिखा सके। यह संस्थाएं और संगठन हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में बहुमूल्य योगदान दे रही है।

पं. हरविंदर शर्मा के अनुसार “संस्थाओं के द्वारा दिये गये योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता अगर यह संस्थाएं और संगठन काम नहीं करते तो शायद आज संगीत इतना लोकप्रिय ना होता।”⁸⁴

4.1.5 विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

आजकल विदेशी धरा पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत बहुत विकसित हो चुका है। इसका मुख्य कारण सांस्कृतिक रूचियां है। पूरे विश्व में भारतीय सभ्यता और संस्कृति अपने विशाल रूप में बहुत ही सम्मानित दृष्टि से देखी जाती है। इसलिए विदेशी लोग हमारे व्यवहार, मूल्यों, गुणों और संस्कृति को समझना चाहते हैं। जिसका सबसे उत्तम साधन केवल और केवल संगीत ही है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपने स्वर्णिम इतिहास, विभिन्न शैलियों, सप्तकों और मैलोडी के लिये प्रसिद्ध है और अगर हिन्दुस्तानी सभ्यता, संस्कृति को समझना है तो संगीत से उत्तम कुछ नहीं है।

4.1.6 धार्मिक और दर्शनिक सम्बन्ध

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गहरी जड़ें जो कि भारतीय सभ्यता की धार्मिक प्रवृत्तियां और दर्शन ने पकड़ी हुई है जिसमें भावों की अभिव्यक्ति, ध्यान और योग,

⁸⁴साक्षात्कार, उ. हरिवंदर शर्मा, फरवरी, 2021

आध्यात्मिकता की रोशनी सब कुछ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में है। विदेशी लोग इस तरह के भावों और इस अवस्था को महसूस करना चाहते हैं।

व्यवसायिक तौर कुछ लोग अपने संगीत कौशल को बढ़ाने के लिये भी अलग-अलग तरह की संगीत शैलियों और गायन वादन के ढंग सीख रहे हैं ताकि वो व्यावहारिक और पेशेवर तौर पर आगे बढ़ सकें। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपनी अनूठी और अद्भुत परम्परा में बंधा हुआ है। इसलिये लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रूचि लेते हैं ताकि वो अपनी कला कौशल को बढ़ा कर अच्छी भौतिकवादी जिंदगी जी सकें। इसलिये विदेशी लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ओर झुक रहे हैं।

संक्षेप में कारण चाहिए कुछ भी हो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विश्व स्तर पर किसी और संगीत से अधिक लोकप्रिय है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अनुशासन, धैर्य और सृजनात्मक का गुण है जो संगीत साधना के द्वारा ही मिलते हैं जो कि व्यक्तिगत रूप में हर मनुष्य में होने चाहिए। जिस कारण हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध और लोकप्रिय है।

4.2 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सितार वाद्य की लोकप्रियता बढ़ाने वाले कलाकारों का योगदान एवं विश्लेषण

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत आज अगर विश्व के कोने-कोने तक प्रसिद्ध हुआ है जो उसके पीछे हमारे कलाकारों और संगीतज्ञों के कड़े संघर्ष व लगन का परिणाम है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ही विश्व के मानचित्र में अपनी एक अलग जगह और पहचान बनाने में सफल हुआ। दक्षिण एशिया में संगीत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के नाम से जाना जाता है वही सम्पूर्ण विश्व में केवल शास्त्रीय संगीत के नाम से विख्यात हुआ।

पं. राम कुमार मिश्र (तबला वादक) के कथनानुसार “सितार एक ऐसा वाद्य है जब भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के किसी वाद्य का नाम आता है तो पहले सितार का नाम लिया जाता है। यह वाद्य गायन के बहुत करीब है। हिन्दुस्तान के बाहर इसकी लोकप्रियता बहुत

अलग और बहुत ज्यादा है।”⁸⁵ संगीत एक मंच प्रदर्शन की कला है इसलिए श्रोतागुण उसकी और अत्याधिक आकर्षित होते हैं। भारतीय कलाकार जब पश्चिम की ओर गये तो उनकी छोटी सी मंच प्रदर्शनी ने श्रोताओं को अपनी ओर खींचा जिसका परिणाम आज हम सब के सामने हैं। भारत रत्न और ग्रैमी अवार्ड से सम्मानित पं. रवि शंकर जी 1930 में विदेश गये। उसके बाद यह सिलसिला शुरू हुआ। उनके अथक परिश्रम और संघर्ष ने ही हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की छटा विदेशी सर जमीं पर फैलाई। उनके बाद उ. विलायत खां, पं. निखिल बनर्जी, पद्म श्री व पद्म भूषण उ. अब्दुल हालिफ जाफर खां, पद्म श्री व पद्म भूषण पं. देबु चौधरी, पद्म भूषण पं. बुद्धादित्य मुखर्जी, पद्म श्री पं. मणि लाल नाग, पं. उमां शंकर मिश्र, उं. रईस खां, पद्म श्री उ. शाहिद परवेज़ जैसे सर्वश्रेष्ठ तथा उच्चकोटि के सितार वादकों ने अपनी कला के जौहर दिखाये और अधिकतम प्रस्तुतियां दी।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की यह परम्परा विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित और प्रभावित करने में पूर्णतः सफल रही। संगीत कला के साथ-साथ, धर्म, दर्शन योग ने भी विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित किया। क्योंकि यह सब कुछ संगीत कला के साथ ही जुड़ा हुआ है। इनके साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति भी विदेशियों में देखने को मिलती है। 1933 में पं. ओंकारनाथ ठाकुर ने फ्लोरेंस में सर्वप्रथम संगीत प्रस्तुती दी थी। पं. रवि शंकर जी के भाई पं. उदय शंकर नृत्य प्रस्तुतिकरण के लिये विदेश दौरे पर गये। उ. बाबा अलाउद्दीन खां भी इसी दल में संगीत प्रस्तुतिकरण के लिये गये थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद विदेशों में कलाकारों का बड़ी संख्या में जाना शुरू हुआ। विदेश में जाने का आगाज़ उ. अलाउद्दीन खां जी ने किया।

4.2.1 उस्ताद अलाउद्दीन खां (सेनीया मैहर घराना)



⁸⁵साक्षात्कार, पं. राम कुमार मिश्र, दिसंबर, 2023

उ. अलाउद्दीन खां हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के महान कलाकार थे । आप एक उत्तम सरोद वादक होने के साथ – साथ अन्य वाद्ययंत्रों को बाजने में पारंगत थे । आप अद्भुत संगीतकार और महान शिक्षक माने गये है। आप ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को बड़े – बड़े कलाकार दिये जिन्होंने शास्त्रीय संगीत को एक नई दिशा प्रदान की।

जन्म और संगीत शिक्षा - आप का जन्म 8 अक्टूबर 1862 को बंगाली मुस्लिम किसान परिवार में हुआ था। आप के पिता सब्दर हुसैन एक संगीतकार थे । आप ने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने भाई आफताबुद्दीन खां से ली। आपने 10 वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया और एक जात्रा नामक पार्टी में शामिल होकर विभिन्न प्रकार की लोक संगीत शैलियाँ सीखी । आपने कलकत्ता के गोपाल कृष्ण भट्टाचार्य से संगीत की शिक्षा ग्रहण की । फिर आप ने संगीत निर्देशक अमृतलाल दत्त से संगीत की बारीकियां सीखी । आप ने संगीत के गुरु सेनिया बीनकार घराने के विख्यात उ. वजीर खां से भी प्राप्त की । आप मैहर दरबार के दरबारी संगीतकार रहे है।

आपकी शिष्य परम्परा को मैहर घराने के नाम से जाना गया। आप ने आपने जीवन काल में कई रागों की रचना की हेमंत', 'दुर्गेश्वरी', 'मेघबहार', 'प्रभातकेली', 'हेम-बेहाग', 'मदन-मावजरी', 'मोहम्मद', 'मंझ खामज', 'धबलाश्री', 'सरस्वती', 'धनकोश', 'शोभावती', राजेश्री, 'चंडिका' जैसे कई राग बनाए। 'दीपिका', मलाया, 'केदार मंझ', 'भुवनेश्वरी' आदि। जिन में से प्रचलित राग मंज खमाज़ है । आपकी कई रागों की रिकॉर्ड आल इंडिया रेडियो पर उपलब्ध है।

विदेश यात्रा - आप ने ही सर्वप्रथम पूर्व और पश्चिम का मिलन करवाया था। आप 1935 में पं. उदय शंकर जी के साथ उनकी नृत्य मण्डली का हिस्सा थे। आपने नृत्य मण्डली के साथ बहुत सारे देशों का भ्रमण किया। आप 18 के करीब वाद्य यंत्र बजाने में सिद्धहस्त थे। आपने अपनी कला का प्रदर्शन (सरोद वादन) विदेशों में किया। पं. ज्योतिन भट्टाचार्य जी आपके शिष्य एक पत्रिका में एक खत का जिक्र करते है जो आपने पैरिस से कृष्णा किशोरदास को लिखा था। जिसमें कहा गया था कि यूरोप के, वियाना, ग्रीस, बुडापेस्ट , स्विजरलैंड में कार्यक्रम देने उपरांत जर्मनी से पैरिस पहुँचे हैं और उसके बाद वैल्जियम,

लंदन और अमेरिका में भी कार्यक्रम होंगे। आपके द्वारा पत्र में लिखा गया कि पश्चिम के लोग पं. उदय शंकर के नृत्य के लिये दीवाने हैं। स्थानीय अखबार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बारे में क्षेत्रिय भाषाओं में संगीत की सराहना कर रहे हैं।⁸⁶ इस प्रकार यह ज्ञात होता है कि पश्चिम की धरती पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बीजरोपण हो चुके थे।

सम्मान और उपाधियाँ – आप को ब्रिटिश सरकार द्वारा 'खान साहब' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

- आप को 1952 में सांगीत नाटक अकादमी की और से आप को फेलो बनाया गया।
- 1958 में आप को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।
- टैगोर विश्वविद्यालय और विश्व भारती ने आप को डॉक्टरेट की मानद उपाधि दी।
- 1971 में आप को पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

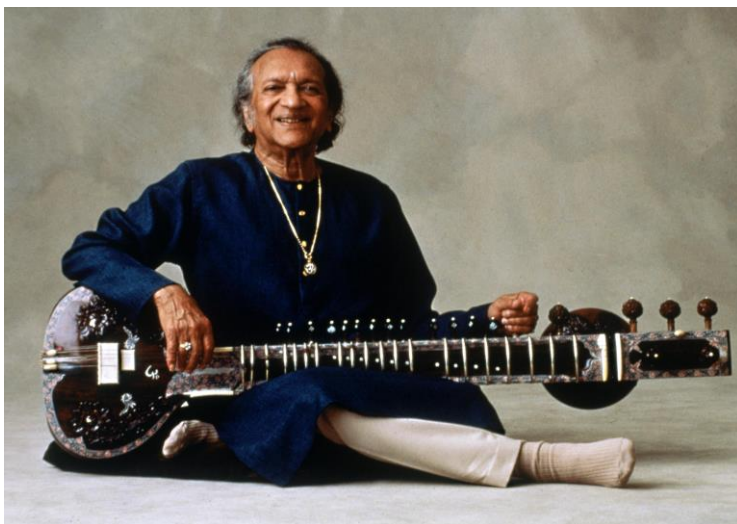
शिष्य परंपरा - उनके शिष्यों में उस्ताद अली अकबर खां, पंडित रविशंकर, खादेम हुसैन खां, उस्ताद मीर कासिम खां, रोशन आरा बेगम, अन्नपूर्णा, उस्ताद फुलझुरी खां, उस्ताद खुर्शीद खां, उस्ताद आशीष खां, उस्ताद ध्यानेश खां, पंडित जोतिन भट्टाचार्य, पंडित निखिल बनर्जी, पन्नालाल घोष, इंद्रनील भट्टाचार्य, शरण रानी हैं। उन्होंने स्वदेशी संगीत वाद्ययंत्रों के साथ एक ऑर्केस्ट्रा मंडली बनाई और इसका नाम 'मैहर स्ट्रिंग बैंड' रखा।

मृत्यु – आप 6 सितंबर 1972 को 110 वर्ष की आयु में इस दुनिया से रुखसत हो गये। अपने अपने जीवनकाल में जो कुछ किया है, वह कई अन्य लोग तीन सौ साल जीने पर भी नहीं कर सकते। बाबा को सभी लोग सम्मान देते हैं और सबसे रूढ़िवादी हिंदू ब्राह्मणों सहित, एक ऋषि के रूप में मानते हैं, जो परंपराओं की रक्षा करने, संगीत की कला को विकसित करने, सिखाने और शिष्यों को अपनी कला सौंपने के लिए जिम्मेदार हैं। उस्ताद अलाउद्दीन खां ऐसे स्कूल से ताल्लुक रखते थे जो हमारे आधुनिक औद्योगिक

⁸⁶ Ustad Alludhin Khan and his Muisic by Jatin Bhattachary, Page 64

युग से बहुत दूर लगता था, और फिर भी हर तरह से वह अपने समय से आगे रहे हैं, आप ने भारतीय वाद्य संगीत में एक नया महत्व और जीवन डाला है।

4.2.2 भारत रत्न पंडित रवि शंकर (मैहर घराना)



हिन्दुस्तानी सभ्यता, संस्कृति और शास्त्रीय संगीत को विदेशों में प्रचलित करने वाले महान सितार वादक पं. रवि शंकर जी का योगदान अतुल्य रहा है। विदेशी सभ्यता, संस्कृति भारत के बिल्कुल विपरित है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साधना, गुरु के प्रति आदर व सम्मान के भाव इत्यादि पं. जी ने विदेशियों को सिखाया लगभग दशकों तक लम्बे परिश्रम, साधना के साथ वैश्विक स्तर पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रोत्साहित व प्रगति करने के लिये आप का नाम गिनिज बुक में भी रिकार्ड हुआ है। आप चार बार ग्रैमी अवार्ड के विजेता रहे हैं। पं. रवि शंकर जी के वर्षों की तपस्या से यह संभव हो सका।

पं. मदन ओक के अनुसार (संतूर वादक) सितार का जो इतना प्रचार-प्रसार हुआ है। उसके लिये एक ही नाम पहले आना चाहिये वो है भारत रत्न पं. रवि शंकर जी का उनका योगदान कमाल का है। मैं खुद अमेरिका में रहता हूँ। I know the effects of his work in America more than India. भारत की कला को विदेश तक पहुँचाया। उनके कारण ही बाकी के कलाकार विदेशों में अपनी कला व संस्कृति का प्रदर्शन कर पाये।⁸⁷

⁸⁷साक्षात्कार, पं. मदन ओक, दिसंबर 2023

जन्म और संगीत शिक्षा - पंडित रवि शंकर का जन्म 7 अप्रैल 1920 को बनारस में एक बंगाली परिवार में हुआ। आप अपने माता – पिता कई सातवें पुत्र थे। आप का मूल नाम रविन्द्र शंकर चौधरी था। आप 1930 में 10 वर्ष की आयु में अपने बड़े भाई उदय शंकर की नृत्य मण्डली के साथ विदेश गये। आपने पेरिस में एक फ्रेंच कैथोलिक स्कूल में शिक्षा ग्रहण की इस दो वर्ष के अंतराल में आपने हिन्दुस्तानी और पश्चिमी संगीत के ध्वनियां का ही मूल्यांकन किया। आपने इसी नृत्य मण्डली में उ. अलाउद्दीन खां से संगीत विद्या लेनी आरंभ की। पं. जी को यही पर ही सितार, सरोद, दिलरूबा जैसे वाद्यों को बजाने का मौका मिला। अपने नाम को सार्थक करते हुये पूरे विश्व में संगीत की रोशनी फैला दी।

वादन शैली- पंडित रवि शंकर की सितार वादन शैली भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट और प्रभावशाली शैली थी, जिसे शंकर शैली या तंत्रकारी अंग के नाम से जाना जाता है। आप की वादन शैली में परंपरा और नवीनता का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। आप ने उस्ताद अलाउद्दीन खां से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी, जिसका प्रभाव उनकी वादन शैली में स्पष्ट रूप से दिखता है। मैहर घराने की पसंद और रागदारी को अपने वादन में शामिल किया। पंडित रवि शंकर लय और ताल के प्रति बहुत सजग थे। उनकी प्रस्तुतियों में जटिल ताल रचनाएँ और लयकारी के सुन्दर प्रयोग मिलते हैं। उन्होंने कर्नाटक संगीत की लयकारी को भी अपने वादन में शामिल किया। वे रागों के पारंपरिक स्वरूप को बनाए रखते हुए भी उनमें अपनी मौलिकता और कल्पनाशीलता का समावेश करते थे। आप के आलाप और जोड़ बहुत विस्तृत और राग की भावना को गहराई से व्यक्त करने वाले थे। उनके सितार वादन में गहनता और सौन्दर्य का दर्शन था। पंडित रवि शंकर ने पश्चिमी संगीतकारों के साथ कई लोगों का सहयोग लिया और उन्होंने पश्चिमी संगीत के संगीतकारों को भी अपने वादन में शामिल किया। उन्होंने ऑर्केस्ट्रा के लिए सितार के साथ कई संगीत रचनाएँ कीं। वे सितार के अलग-अलग प्रकार की ट्यूनिंग और प्रयोग में भी कुछ नयापन लाते थे। उनके सितार में सात मुख्य तार होते हैं, जो एक समृद्ध और गुंजायमान ध्वनि उत्पन्न करते थे।

संगीत निर्देशन - 1948 से 1956 तक आप ने नई दिल्ली में AIR पर संगीत निर्देशक की नौकरी करते हुए वाद्यवृंद का निर्माण किया। इसी तरह भारत और विदेश में कार्यक्रम के कई अवसर प्राप्त हुये।

विदेशों के दौरे - 1956 में आप अमेरिका और यूरोप गये। इस दौरे के दौरान आपने इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मन में कई कार्यक्रम किये। दिव्यन्दु घोष कहते है कि "विदेशी लोग जब युवास्था में नशे की लत में लग जाते हैं उनको संगीत के मोहपास में बांधकर आध्यात्मिकता की ओर लेकर जाना और उनमें आध्यात्मिक चेतना जागरूक करने का काम आपने किया।" ⁸⁸ युवावर्ग को इन व्याधियों से बचाने के लिये हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत ने बहुत योगदान दिया। इसी कारण अमेरिका में इसकी धूम मची। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की पवित्र परम्परा विदेशियों को प्रभावित करे लगी। आपने 1963 में इंग्लैण्ड में ईडन बुगह फैस्टिवल, 1961 में कॉमन वैल्थ आपसे फैस्टिवल में प्रस्तुति दी। 1964 में ईस्ट एवं वेस्ट म्यूजिक में देश-विदेश से आये दर्जनों कलाकारों के साथ हिस्सा लिया। संगीत कला बिहार में बताया गया है कि रायल फैस्टीवल हाल में आपके द्वारा दिया गया प्रस्तुतीकरण इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धि है जिसने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्धि व सम्मान दिलवाया। ⁸⁹

विदेशी कलाकारों से मुलाकात -1954 में सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिये रूस गये। याहुदी मेनूहिन के साथ सितार और वायलिन की जुगलबन्दी की। यहूदी मेनूहिन पं. जी से प्रभावित हो गये और उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। पं. हरविंदर शर्मा जी बताते है जब पं. रवि शंकर जी के साथ अंग्रेजी कलाकार जुड़ने लगे जैसे वायलिन वादक यहूदी मेनूहिन और बीटल्स ग्रुप के जार्ज हैरिस तब विदेशी लोग भी आकर्षित हुये।

दिव्यन्दु घोष के कथानुसार "1965 में बीटल्स के संपर्क में आने पर पं. रवि शंकर की ख्याति ओर बढ़ गई। बीटल्स ग्रुप के जार्ज हैरिसन जो कि अमेरिका के बीटल्स सिगिंग ग्रुप का हिस्सा थे उन्होंने पं. जी को अपना गुरु मान कर उनसे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

⁸⁸दि ग्रेट शंकारस, -उदय एंड रवि, पृ. 148

⁸⁹Recent Trends in Hindustani Music page No. 1 Jan, March 1970, Page No. 149

की शिक्षा लेनी प्रारम्भ की।⁹⁰ वह एक गिटार वादक थे उन्होंने सितार सीख कर आरंभ किया। 1967 में न्यूयार्क के सिटी कालेज में ग्रेस्ट लैक्चर के रूप में नियुक्त हुए और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का पाठ्यक्रम तैयार किया।

पं. किन्नर सीन जी के कथानुसार वुडस्टाक फैस्टीवल अमेरिका में आयोजित होने वाला बहुत बड़ा फैस्टीवल है। जिसमें अमेरिका के सभी कलाकारों का गायन, वादन सुना जाता है। लाखों की संख्या में श्रोतागण शामिल होते हैं। इस फैस्टीवल में पं. रवि शंकर जी ने सितार वादन किया। इस कार्यक्रम के दौरान पं. जी ने ऐसा दमदार सितार वादन किया। उस 10 मिनट के प्रस्तुतीकरण ने पं. जी को अमेरिका में तो क्या विश्व में प्रचलित कर दिया।⁹¹

यूरोप के सभी देशों, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, हॉलैंड और कनाडा में फिल्म संगीत और वैले संगीत वादन किया। आपने याहुदी मैनुहिन के साथ बहुत सी रिकार्डिंग की और कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

पं. रवि शंकर जी ने BBC के एक साक्षात्कार में बताया कि “विदेश में आना और यहाँ पर आकर अपने संगीत को प्रसिद्ध करना कोई सरल काम नहीं रहा है। बहुत मुश्किलों का सामना किया है।”⁹²

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विदेशी धरती पर प्रफुल्लित करना पं. रवि शंकर के लिये आसान नहीं था। पं. जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि यह अवसर केवल मैनुहिन के द्वारा ही प्राप्त हो सके। पहले पहल पश्चिमी लोगों ने इस और ध्यान नहीं दिया। यहां के लोग सितार को बिल्ली के रोने की आवाज कहते थे। जब बीटल्स के जार्ज हैरीसन ने सितार सीखना आरंभ किया तो पश्चिम के लोग सितार सीखने के दीवाने हुये।⁹³

किन्नरा स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना - पं. जी बताते हैं कि हिप्पी लोग नशा करने के लिये हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सहारा लेते थे। यह बात उनकी अच्छी नहीं लगती

⁹⁰दि ग्रेट शंकरस, -उदय एंड रवि, पृ. 56

⁹¹साक्षात्कार पं. किन्नर सीन, मार्च 2022

⁹²साक्षात्कार, BBC चैनल पर

⁹³मॉय म्यूजिक मॉय लाईफ, पं रवि शंकर पृ. 150

थी। तो उन्होंने अमेरिका में किन्नारा स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना 1967 में की। पं. जी ने रूस, पेरिस, यूरोप, इंग्लैण्ड, अमेरिका के सितार वादन की प्रस्तुति दी। प्रो. डॉ. नरेन्द्र नरूला का कहना है कि विदेशों में आज भी सितार वाद्य यंत्र को देखकर लोग पं. रवि शंकर जी का नाम लेते हैं।⁹⁴

विदेशों में कार्यक्रम

- 1954 में अपने याहुदी मेनुहिन के साथ सोवियत संघ में सांस्कृतिक आदान प्रदान समारोह में सितार वादन किया।
- 1955 में आपने फार्ड फाउंडेशन के द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम न्यूयार्क में करवाया गया । जिसमें सितार वादन किया।
- 1956 में आप ने अमेरिका और यूरोप का दौरा किया।
- 1957 में नीदरलैण्ड के एम्सटर्डम में सितार पर राग तिलक श्याम का वादन किया जिसका रिकॉर्ड डच – इंडिया एयरवेक्स ने किया।
- 1961 में कॉमन वैल्थ फैस्टिवल में सितार वादन किया।
- 1963 में इंग्लैण्ड में ईडन बुगह फैस्टिवल, में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 1964 में ईस्ट एंड वेस्ट म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 1966 में फ़िनलैण्ड में सितार पर यमन कल्याण राग का वादन किया।
- 1967 में न्यूयार्क के सिटी कावेड में ग्रेस्ट लैक्चर के रूप में नियुक्त हुए और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का पाठ्यक्रम तैयार किया।
- 1967 मोंटेरे पॉप फेस्टिवल कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका में सितार पर राग पंचम सेघेरा में धुन का वादन किया ।
- 1968 में अपने फेस्टिवल फ्रॉम इंडिया ऑर्किस्ट्रा के साथ अमेरिका का दौरा किया था। इस दौरे में पं शिवकुमार शर्मा , जितेंद्र अभिषेक और उ.अली अकबर खां, पालघाट रघु जैसे संगीतकार शामिल थे ।

⁹⁴साक्षात्कार प्रो. डॉ. नरेन्द्र नरूला, मार्च 2022

- 1969 वुडस्टॉक महोत्सव, बेथेल, न्यूयॉर्क में सितार पर यमन राग का वादन प्रस्तुत किया।
- 1970 में सितार और पाश्चात्य वाद्ययंत्रों के साथ ऑर्केस्ट्रा का वादन किया, जिसका प्रीमियर 1971 में एंड्रे प्रेविन द्वारा संचालित लंदन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के साथ हुआ।
- 1970 में कनाडा में वंकौवेर बी सी में सितार वादन किया।
- 1971 मैडिसन स्क्वायर गार्डन, न्यूयॉर्क में बांग्लादेश के शरणार्थियों के लिए जागरूकता और धन जुटाने के लिए संगीत कार्यक्रम करवाया गया। जिसमें पं रवि शंकर, जॉर्ज हैरिसन और अन्य संगीतकारों ने एक ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। इस लाइव एल्बम ने उन्हें ग्रैमी पुरस्कार दिलाया।
- 1971 में अमेरिका में राग विभास, राग परमेश्वरी का प्रदर्शन किया।
- 1972 में कॉन्सर्ट में पं रवि शंकर और उ. अली अकबर खां के साथ सितार और सरोद के बीच जुगलबंदी का प्रदर्शन किया गया। जिसको डार्क हाऊस रिकॉर्ड्स ने रिकॉर्ड किया।
- 1973 में न्यूयॉर्क में कार्यक्रम में राग अहीर भैरव का वादन किया।
- 1973 में हैरिसन द्वारा निर्मित शंकर फैमिली एंड फ्रेंड्स रिकॉर्ड की गई एक क्रॉस-कल्चरल परियोजना थी। शंकर संगीतकार के बजाय संगीतकार और कंडक्टर के रूप में काम करेंगे और लाइव प्रदर्शनों के दौरान केवल अपने प्रसिद्ध रागों पर सितार बजाएंगे। म्यूज़िक फ़ेस्टिवल की प्रस्तुति हैरिसन द्वारा उनके मटेरियल वर्ल्ड चैरिटेबल फ़ाउंडेशन के तत्वावधान में की गई, जिसका एक उद्देश्य "कलात्मक अभिव्यक्ति के विविध रूपों को प्रायोजित करना और वैकल्पिक जीवन विचारों और दर्शन की खोज को प्रोत्साहित करना था।
- 1973 में चिल्ली में सितार वादन का प्रदर्शन किया।

- 1974 सितंबर को रॉयल अल्बर्ट हॉल में संगीत समारोह प्रदर्शन किया गया ।, जिसके बाद पेरिस, ब्रुसेल्स, फ्रैंकफर्ट, म्यूनिख और कोपेनहेगन में चला गया। रॉयल अल्बर्ट हॉल कॉन्सर्ट को स्टुअर्ट कूपर ने फिल्माया था।
- 1974 में पश्चिमी संगीत समारोह के दर्शकों के लिए सितार वादक और संगीतकार रविशंकर द्वारा संचालित एक भारतीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था। इसकी प्रस्तुति मैटेरियल वर्ल्ड चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा शुरू की गई जॉर्ज हैरिसन द्वारा स्थापित किया गया था। जो लंबे समय तक भारतीय संगीत के समर्थक रहे हैरिसन ने म्यूज़िक फ़ेस्टिवल ऑर्किस्ट्रा द्वारा एक नामांकित स्टूडियो एल्बम भी बनाया, जिसे 1976 में उनके डार्क हॉर्स रिकॉर्ड लेबल पर रिलीज़ किया गया था।
- पंडित रवि शंकर और हैरिसन ने संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के दौरे किये। यह वैकूवर के पैसिफिक कोलिज़ियम से शुरू हुआ। चार दिन बाद, यह दौरा सैन फ्रांसिस्को में पहुंचा, जहां कुछ भारतीय संगीतकारों को स्टोन हाउस, मैरिन काउंटी के फेयरफैक्स में एक ऐतिहासिक इमारत में प्रदर्शन करने के लिए भी आमंत्रित किया गया था ।
- 1980 में वैस्टर्न इंडी पॉप में सितार वादन किया।
- 1984 में सन् फ्रंसिस्को में सितार पर राग झिंझोटी का वादन किया।
- 1989 में रूस में ऑर्किस्ट्रा का वादन किया।
- 1989 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में राग हेमंत प्रस्तुत किया।
- 80 के दशक में पेरिस में राग मारु बिहाग का वादन किया।
- 1983 में राग माला का प्रदर्शन किया।
- 90 के दशक में लंदन में राग हंसध्वनी का वादन किया।
- 1991 में रागा को होम वीडियो पर रिलीज़ किया गया था, जिसे मिस्टिक फ़ायर वीडियो द्वारा वितरित किया गया था। ईस्ट मीट्स वेस्ट म्यूज़िक (ईएमडब्ल्यूम्यूज़िक)

ने फिल्म को रीमास्टर किया और अक्टूबर 2010 में इसे नए शीर्षक रागा: ए फिल्म जर्नी इनटू द सोल ऑफ़ इंडिया के साथ डीवीडी पर रिलीज़ किया

- 2010 को, फिल्म को एशिया सोसाइटी के न्यूयॉर्क मुख्यालय में प्रदर्शित किया गया था ,
- 2010 में दरबार फेस्टिवल, एक प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय संगीत समारोह है, जो लंदन के साउथबैंक सेंटर में आयोजित किया जाता है। अनुष्का शंकर ने रॉयल फेस्टिवल हॉल, साउथबैंक सेंटर में अपने पिता रविशंकर के साथ प्रदर्शन किया, जिसे रविशंकर द्वारा पहली सिम्फनी कहा गया।
- 2010 में सिडनी ऑपेरा हाउस में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 4 नवंबर 2012 को टैरेस थिएटर , कल्लिफोर्निया में आप की अंतिम प्रस्तुति थी।

पं. रवि शंकर जी के विचार- दूरदर्शन इंटरव्यू मे 1981 पं. रवि शंकर जी एक साक्षात्कार में बताया कि यह सफर 1956-57 बहुत मुश्किल था। कुछ चंद गिन चुने लोग ही आते थे। फिर जैसे-जैसे 30 बरस से लगातार विदेशों में आता गया। हर बार श्रोताओं की संख्या बढ़ती गई। 1959 तक, रायल फैस्टीवल, कान फैस्टीवल पैरिस में श्रोताओं से हाल भरते गये। मुझे जो सम्मान मिला वो यहां के विख्यात संगीतकारों यहुदी मैनूहिन , डैविड के बराबर ही मिला। सितार वादन के अतिरिक्त, सभाषण भी दिये जिसका मुख्य कारण हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देना था। जार्ज हैरिसन के सितार सीखने और गुरु धारण करने पर ऐसा भयंकर सैलाब आया जिसका मुझे कोई अनुमान नहीं था। सभी लोग फिर मुझे सुपरस्टार समझने लगे। बच्चे मेरा जलसा देखने जाते थे। केवल अमेरिका ही नहीं, इंग्लैण्ड जापान, फ्रांस, यूरोप हर जगह सितार और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आकर्षण बढ़ गया। पहले कभी-कभी माहौल अच्छा नहीं होता था, कई बार सितार लेकर वापिस भी गया हूँ। परन्तु अब ऐसा नहीं है वह लोग पूरी श्रद्धा और दिल से संगीत सुनते है। आपका मानना था कि राग की प्रस्तुतिकरण के लिये 1 या 2 घंटे ही नहीं केवल 3 या 4 मिनट ही काफी होते हैं। उ. हरविंदर सिंह (सितार वादक) का कहना है कि

विदेशियों की एक आदत है अगर वो किसी चीज को पकड़ते हैं तो उसमें घुस जाते हैं जब तक आत्मसात ना करले नहीं छोड़ते।⁹⁵

सम्मान व उपलब्धियां-

- आपको 1967 में पद्म भूषण, 1981 में पद्म विभूषण और 1999 में भारत सरकार का सर्वोच्च भारत रत्न सम्मान से सम्मानित किय गया।
- 1962 में संगीत नाटक अकादमी, 1971 में संगीत नाटक अकादमी की फैलोशिप, 1987 में कालिदास सम्मान, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किया गया।
- 1992 रोमन मगसंथसेय सम्मान, फ्रांस द्वारा कमानडर आफ लेगन ऑफ आनर सन 2000, नाईट कमांडर ऑफ द आडर आफ दा ब्रिटिश अम्पायर 2001 में, आनरी डॉक्टरेट का सम्मान अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों द्वारा दिया गया।
- आपको 1967, 1973, 2002, 2013 में ग्रैमी अवार्ड मिला और 55th में ग्रैमी अवार्ड में आपको Life Time Achievement Award से सम्मानित किया गया।

मृत्यु – 12 दिसंबर 2012 को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के महान संगीतकार और सदी के सितार वादक पं रवि शंकर ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

4.2.3 अफताब-ए-सितार उस्ताद विलायत खां (ईमदादाखानी घराना)



⁹⁵साक्षात्कार उ. हरविंदर सिंह, अक्टूबर, 2022

अफताब-ए-सितार उ. विलायत खां ईमदादखानी (ईटावा) घराने से सम्बन्ध रखते थे। आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के महान सितार वादकों में से हैं। जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन और तपस्या से सितार वाद्य में एक नवीन तकनीक दी जिसको गायकी अंग कहा गया है और गायकी अंग की सितार वादन शैली को प्रारंभ किया।

जन्म और संगीत शिक्षा- आप का जन्म 28 अगस्त 1928 को गौरीपुर में हुआ। आपके पिता उ. इनायत खां प्रसिद्ध सितार वादक थे। आप 10 वर्ष के थे जब आपके पिता जी चल बसे। आपने अपनी संगीत शिक्षा व सितार वादन अपने चाचा प्रसिद्ध सितार और सुरबहार वादक वाहिद खां से ली और गायन की शिक्षा अपने नाना उ. बन्दे हसन खां से ली।

वादन शैली- उस्ताद विलायत खां की सितार वादन शैली को "गायकी अंग" के नाम से जाना जाता है। इस शैली में सितार वादन ऐसा महसूस होता है कि सितार गा रहा है। यह उनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसमें वे अपनी वादन शैली से गायन का अनुभव निर्मित करते थे। वे एक स्वर को लंबे समय तक खींचते थे और धीरे-धीरे दूसरे स्वर पर जाते थे, जिससे राग की गहराई दिखाई जाती थी। आपकी लय पर अद्भुत पकड़ थी और वे जटिल लयकारी को सहजता से प्रस्तुत करते थे। आपके बाएँ हाथ की आवाज़ का नियंत्रण पर इतना प्रभाव था कि बोल व ताल के अक्षर बहुत स्पष्ट रूप से दिए गए थे। वादन में गहरी भावनाएँ और धार्मिक विशेषताएँ थीं। आपने तारों की संख्या और उनकी ट्यूनिंग में भी बदलाव किया, जिससे उन्हें अपनी विशेष शैली विकसित करने में मदद मिली। उन्होंने एक जोड़ी तार और एक पंचम तार को छह तारों का सितार बजाया। तानें गायकी से प्रेरित होती थीं और उनमें विभिन्न घरों के गायकों की शैली का प्रभाव दिखता था। उस्ताद विलायत खां ने न केवल अपनी वादन शैली से सितार वादन को एक नई दिशा दी, बल्कि उन्होंने कई रागों को पुनर्व्याख्यायित किया और कुछ नए रागों की भी रचना की, जैसे कि एनायतखानी कानड़ा, सांझ सरावली, कलावती और मांड भैरव।

उ. जी के अनुसार "जब 14-15 वर्ष के आयु में उनके नाना और मामा गायन का रियाज करते थे। मैं सितार में उनके साथ बैठता था तब मैंने यह महसूस किया कि गायकी अंग की चीजें उनके हाथ से निकल रही हैं।"⁹⁶ तंत्रकारी से गायकी अंग की और आना एक

⁹⁶ साक्षात्कार ऐशिया टी.वी. नवम्बर - 1993

बिल्कुल ही विचित्र बात थी। जो आगे चल कर एक शैली बन गई। जिस को गायकी अंग की वादन शैली या फिर विलायत खां वादन शैली कहा जाने लगा।

सांगीतिक सफ़र – आपने 40 के दशक में सितार वादन के कई कार्यक्रम दिये। आपने वाद्य यंत्र के ध्वनि निकास और सितार को विकसित करने का काम कनाई लाल व हिरेन राय के साथ मिलकर किया। आपको गायन के साथ बेहद लगाव था। इसलिए आपने सितार पर गायकी अंग का वादन शुरू किया। जिसमें मींड, गमक, का काम अधिक किया जाता था। यह एक बहुत बड़ा आविष्कार किया। आपने देश में ही नहीं विदेशों में भी खूब सितार वादन किया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित करने के लिये भारत सरकार ने आपको पद्म श्री व पद्म भूषण से नवाजा। जिसको बाद में किसी कारणवश आपने वापिस कर दिया। भारत के राष्ट्रपति द्वारा आपको आफताब-ए-सितार का खिताब दिया गया।

विदेशों में सितार वादन - उ. शाहिद परवेज जी कहते हैं कि यूरोप में सर्वप्रथम सितार वाद्य को उ. विलायत खां ले गये। यूरोप में सितार वाद्य की सबसे अधिक प्रस्तुतियाँ उ. विलायत खां जी ने ही दी है। आप पहले कलाकार थे जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति उपरांत इंग्लैंड में प्रस्तुति दी। आप विदेश में ही रहने लगे थे। अमेरिका में प्रिंसटन (न्यूजर्सी) में आपका अपना घर था।

- 1951 में लंदन में स्थित रॉयल फैस्टीवल हॉल में उसकी स्थापना दिवस पर सर्वप्रथम सितार वादन किया था।
- 1966 में राग झिंझोटी का प्रस्तुत किया।
- 1968 में लंदन में सितार वादन के साथ समभाषण भी दिया।
- 1968 में अमेरिका में राग देस का वादन किया।
- 1971 में जर्मनी में राग बागेश्वरी प्रस्तुत किया।
- 1973 में इटली में सितार वादन किया।

- 1981 में क्वीन एलिजाबेथ हॉल में सितार वादन किया, जो कि अकादमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स एंड म्यूजिक द्वारा करवाया गया था।
- 1987 में इंग्लैंड में वेम्बलेय कॉन्फ्रेंस सेंटर द्वारा सितार वादन करवाया गया।
- 1987 में कोलंबस में सितार पर राग गावती का वादन किया ।
- 1987 में अमेरिका में राग शुद्ध खमाज़ का वादन किया।
- 1990 में आपने न्यूयार्क में अमविशयश सिरिज की सीडी रिकार्ड की जो कि इण्डियन अरकाव में प्रस्थापित है। आपने विश्वभर में सितार वादन किया।
- 1993 में इंग्लैंड के रॉयल फेस्टिवल हॉल में सितार पर राग हमीर का वादन किया।
- 1994 में बारबीकन सेंटर में सितार वादन किया जो 1995 में इबादत के नाम से रिलीज किया गया।
- 90 के दशक में साऊथ एशिया, चीन, अफ्रीका, यूरोप, रूस आदि स्थानों पर सितार वादन प्रस्तुत किया। आपने अमेरिका और कनाडा में भी बहुत दौरे लगाये।
- 2002 में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2002 में रॉयल फेस्टिवल हॉल में सितार वादन किया।
- 2003 में Avery Fisher Hall और Zankal Hall में सितार वादन किया।

फिल्म संगीत- आपने फिल्मों संगीत भी दिया, जलसा घर, 1958 द. गुरु 1969 जैसी फिल्मों में संगीत दिया। केन हान्ट⁹⁷ ने अपने आर्टिकल में उ. विलायत खां के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अपने लंदन में बारबीकन सेंटर में सितार वादन किया जो 1995 में इबादत के नाम से रिलीज किया गया। जॉन पॉलस लिखते हैं कि आपने अपनी युवावस्था में ही सितार वादन के कानसर्ट करने शुरू कर दिये थे। 1944 का समय रहा

⁹⁷(Ken Hunt) 2004 The Guardian Journal

होगा जब आपने भारत और विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रारंभ कर दिया। आप को सोवियत संघ द्वारा (जलसाघर) के लिये सिलवर मैडल मिला।⁹⁸

विदेश में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर आप के विचार- एन. आर. आई टी.वी. चैनल के साथ साक्षात्कार में आपने बताया कि 1949 में विदेश जाना शुरू हो गये थे। आपके अनुसार विदेशी श्रोताओं को और हिन्दुस्तानी श्रोताओं में एक जो फर्क है वो यह है कि हिन्दुस्तानी श्रोता देखते और समझते हैं जबकि जो विदेशी है वो देखते भी नहीं है और समझते भी नहीं है वो बस सुनने आते हैं। अपनी प्रस्तुतीकरण में आपका कहना था कि जब भी कोई भी कार्यक्रम होता है वो हर बार हमारा इम्तिहान होता है और मुझे पहले से अधिक अच्छे अंक लाने हैं। आपका कहना था कि जब मंच पर जाता हूँ तो मुझे नहीं पता होता कि क्या बजाना है, श्रोताओं को क्या समझ लगेगा। विदेशी श्रोताओं पर आपका विचार था कि ये लोग कहते हैं कि हमें समझ कुछ नहीं या परन्तु हम कहीं और किसी और दुनिया में थे।⁹⁹

उ. जी का कहना था कि जब मंच पर बैठते हैं तो केवल यह पता होता है कि अपनी ईबादत, अपनी प्रार्थना और अपने जनून के रूप में निष्ठा, संकल्प और आत्मबल के रूप में गाना बजाना खुद के लिये करें और कुछ समय बाद हम खुद को खुद से निकल कर श्रोतागणों में बैठ महसूस करते हैं। हम अपने शरीर और रूह में डूब जाते हैं।¹⁰⁰

आप कहते थे कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को मत बिगाड़ो तुम्हे इसमें से क्या मिलेगा। यह ना सोचा तुम्हे क्या देना है, इसमें रह कर वो देखो, उसमें नया करने का कुछ नहीं है, जो है उसी को छानो, करो, सब कुछ इसमें है।

उ. विलायत खां 1989 में अमेरिका में बस गये। आपका कहना कि मैं अपने मुल्क से आज भी इतना प्यार करता हूँ कि अगर भारतीय शिष्य सितार सीख रहे हैं अंग्रेज और अंग्रेजों के बच्चे भी सीख रहे हैं। विदेश में अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि कभी-कभी टीन की छत के नीचे चाहे वो गर्मी हो, बारिश हो या बर्फबारी का मौसम

⁹⁸ जॉन पॉलस 15 मार्च 2004 Vilayat Khan, 76, Musician who Redefined Sitar Player)

⁹⁹ साक्षात्कार एन.आर.आई टी.वी. चैनल न्यूयॉर्क, 2000

¹⁰⁰ साक्षात्कार B.B.C. Hindi Network, 25-11-1993

हो में बैठ कर रियाज करना। फिर भी खुश रहना और यही सोचना कि हम नया क्या दे सकते हैं बस रियाज ही रियाज करना।

आपने एक साक्षात्कार में बताया कि कैसे 1950-60 के दशक में जब विदेश में सितार वादन होता था या हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कोई कार्यक्रम रखा जाता था तो आमंत्रण पत्र बांटे जाते थे और 30-40 लोगों को लाने को कहा जाता था और मुश्किल से 40 से 50 जन ही एकत्रित हो पाते थे पर आज हालात अलग हैं मैं धन्यवादी हूँ उन लोगों का जिन्होंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को इस मुकाम तक पहुँचाया कि कार्यक्रम होने से 6-6 महीने पहले ही हालफुल हो जाते हैं और प्रबन्धकों द्वारा कहा जाता है कि कोई टिकट नहीं बेची। आपके कथानुसार संगीत में इतनी शक्ति है कि ये ना कभी मरा है ना कभी मरेगा।¹⁰¹

उपाधियाँ और सम्मान - हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित करने के लिये भारत सरकार ने आपको पद्म श्री व पद्म भूषण से नवाजा। जिसको बाद में किसी कारणवश आपने वापिस कर दिया। भारत के राष्ट्रपति द्वारा आपको आफताब-ए-सितार का खिताब दिया गया। आफताब-ए-सितार की उपाधि आपको भारत के राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने दी। उ. विलायत खां जी को गायकी अंग की सितार वादन का अविष्कारक माना जाता है और आफताब- ए सितार की उपाधि पर आपके विचार थे कि आफताब-ए-सितार मतलब सितार का सूरज। यह बहुत ही बड़ी बात है और यह सम्मान दोबारा किसी को नहीं दिया गया। पं. नरेन्द्र मिश्रा ने बताया कि आप कभी भी अपने शिष्यों से पैसे नहीं लेते थे। उन्होंने अपने शिष्यों को बहुत ही शिद्दत के साथ संगीत की शिक्षा दी। प्रो. नरेन्द्र नरूला और पं. नरेन्द्र मिश्रा जी बताते थे कि आपके सिखाने का ढंग बहुत अच्छा था। एक-2 चीज को बहुत ही कुशलता से समझाते थे।

मृत्यु – उ. जी कैंसर की लाइलाज बीमारी से पीड़ित थे और 13 मार्च 2004 को आप ने मुंबई के अस्पताल में आखरी साँस ली।

¹⁰¹ साक्षात्कार लंदन 1993 Asia TV

4.2.4 पंडित निखिल बैनर्जी (मैहर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित पं. निखिल बैनर्जी मैहर घराने के सुप्रसिद्ध सितार वादक थे। आप का जन्म 14 अक्टूबर 1931 कलकत्ता में हुआ। आपने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा उ. अलाउद्दीन खां और उ. अली अकबर खां से प्राप्त की। आपकी वादन शैली में एक अलग झलक मिलती थी क्योंकि उ. अलाउद्दीन खां जी से पहले आपने सितार वादन अपने पिता जितेन्द्रनाथ बैनर्जी से और उ. मुश्ताक अली से सीखा था।

वादन शैली- पं. निखिल बैनर्जी की सितार वादन शैली को भारतीय शास्त्रीय संगीत में अत्यंत गरिमामयी और गहनता भरी माना जाती है। पं. निखिल बैनर्जी मैहर घराना से प्रमुख उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के शागिर्द थे। आप का इस घराने की गहराई, अत्यंत गंभीरता, ध्यानपूर्ण और आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ था। आलाप, जोड़ और झाला विशेष रूप से राग की आत्मा प्रकट होती थी। आप राग में भावों की अभिव्यक्ति पर बहुत ध्यान देते थे। आपके वादन में राग का विकास बहुत ही सौम्य रूप में होता था। तानों में गति और लयकारियों का प्रयोग अत्यंत होता था। लयकारी और ताल पक्ष में भी दक्ष थे वे मात्रा में चंचलता के बजाय स्वर और भाव में भिन्नता को प्राथमिकता देते थे। पं. निखिल बैनर्जी ने कभी भी अधिक साज-सजावट या तेज प्रदर्शन व आकर्षक वादन नहीं किया, बल्कि साधना और आत्मानुभूति पर आधारित वादन प्रस्तुत किया।

सांगीतिक सफ़र - आप ने 9 वर्ष की आयु में अखिल बंगाल सितार प्रतियोगिता जीती थी। आप ने आल इंडिया रेडियो पर भी काम किया। आप की वादन शैली पं रवि शांकर से बिल्कुल भिन्न थी। आपके वादन में सहजता, गती और प्रवीणता का अनोखा मिश्रण था।

विदेशों में सितार वादन - आपने देश और विदेश दोनों स्थानों पर सितार वादन किया। आपके द्वारा दिये गये सितार वादन के कार्यक्रमों कि वीडियो सोशल मीडिया पर मिलती है। आपकी अनोखी वादन शैली, भावनात्मक व आध्यात्मिक पर आधारित थी। आपके बहुत सारे रिकार्ड पड़े हैं जिनमें दोपहर के राग 1970 और 1992 में दो बार रिलीज हुये। इसके अतिरिक्त आपके कई सारे रागों की रिकार्डिंग कार्यक्रम की लाईव रिकार्डिंग्स भी उपलब्ध है। आपने दो रागों की रचना की, मनुमंजारी और चंद्रकौशकी।

- 1955 में भारत सरकार द्वारा आपको चीन, रूस और पोलैंड में एक सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडल के रूप में भेजा।
- नेपाल, बंगलादेश, अफगानिस्तान, यूरोप, अमेरिका आदि जगहों पर नियमित प्रस्तुतीकरण के लिये जाते रहे।
- 1967 में आपने अमेरिका के कैलीफोर्निया में अली अकबर संगीत विद्यालय में रहना शुरू किया। फिर आपके निरन्तर भारत व विदेशों में आना जाना लगा रहा।
- 1968 में बर्कले, यूएसए में उनके प्रदर्शनों की रिकॉर्डिंग मौजूद हैं। वे बर्कले में बॉब ब्राउन की अमेरिकन सोसाइटी ऑफ़ ईस्टर्न आर्ट्स से जुड़े थे।
- 1970 में रोट्टरडैम, नीदरलैंड में भी प्रदर्शन किया।
- 1972 में कोलोन, जर्मनी में उस्ताद फैयाज खां के साथ एक संगीत कार्यक्रम भी किया था
- 1972 में एम्स्टर्डम में सितार वादन का लाइव प्रदर्शन किया था।
- 1972 में आयरलैंड संगीत संघ द्वारा सितार वादन का कार्यक्रम करवाया गया।

- 1978 में मॉन्ट्रियल, कनाडा में प्रदर्शन किया।
- 1980 में म्यूनिख, जर्मनी में प्रदर्शन किया ,तबले पर अनिंदो चटर्जी के साथ वादन किया।
- 1983 में आप विदेशी दौरे पर गये और क्वीन एलिजाबेथ हॉल में सितार वादन किया।
- 1984 में एम्स्टर्डम में एक और लाइव प्रदर्शन किया था जिसकी रिकॉर्डिंग उपलब्ध है।
- 1984 में शिकागो विश्वविद्यालय में उनके प्रदर्शन का भी दस्तावेजीकरण किया गया है।
- 1985 में यूरोपीय संगीत दिवस पर डबलिन में , लंदन और बाथ में सितार वादन किया।
- 1985 में में कार्नेगी हॉल न्यूयॉर्क में सितार वादन किया।

सम्मान व उपाधियाँ - आपको 1968 में पद्म श्री व 1974 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। 1987 में आपको पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। आप केवल सितार ही नहीं सरोद, सुरबहार और रूद्र वीणा के सिद्ध हस्त थे। 1980 के दशक में आप लगातार विदेश यात्राओं पर हैं।

पं. निखिल बैनर्जी के विचार – आपने ने एक साक्षात्कार में कहा है कि संगीत के दो पहलु हैं एक संगीत मनोरंजन के लिये प्रयोग किया जाता है और दूसरा संगीत हमारी रूह की पहचान और अध्यात्मिकता के लिये जो भारत में होता है। संगीत शिक्षा के समय नियम और अनुशासन अवश्य है। गुरु-शिष्य परम्परा में गुरु के पास ही रहना होता है कि आपका पालन-पोषण करता है। आप का कहना है कि पहले अपने वाद्य से प्यार करो क्योंकि वो ही आपकी क्षमता व भावना को उजागर करता है उसका सम्मान करो। संगीत के रॉक, पॉप या जार्ज आदि तरह के संगीत होने उनको कोई फर्क नहीं पड़ता। बहुत सारे

अच्छे पश्चिमी संगीतकारों को मैं जानता हूँ। पर जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत है वो आध्यात्मिकता का केन्द्र है। जितना भी संगीत है वह हृदय से निकलता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सुनने का आंकड़ा कम है पर आजकल पश्चिम के लोग इसे समझ रहे हैं। मैंने जितना बजाया है यहाँ मैं इससे संतुष्ट हूँ।

मृत्यु -1986 में आप इस दुनिया से विदा ले गये। आपका संगीत के प्रति योगदान और तपस्या को आज भी याद किया जाता है। सितार वादन के आकाश में चमकाने वाले सितारों में आपका नाम प्रमुख है।

4.2.5 पद्म श्री उस्ताद अब्दुल हलिम जाफर खां (इन्दौर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा – पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित उ. अब्दुल हालिम जाफर खां का जन्म 18 फरवरी 1927 को हुआ। आप इन्दौर बीनकार घराने से सम्बन्ध रखते थे। आपने सितार वादन की शिक्षा अपने पिता जी जाफर खां से ली। जाफर खां के घर इंदौर के निकट ग्राम जावरा में 15 फरवरी, 1929 को अब्दुल हलीम जाफर खां का जन्म हुआ था। इंदौर के बंदे अली बीनकार घराने के संगीतज्ञ जाफर खां ने बेटे अब्दुल हलीम को तभी अपने संग ले लिया, जब उन्होंने चलना भर सीखा था। महज पांच वर्ष की उम्र में उनके नन्हे हाथों में सितार थमा दिया। बीनकार उस्ताद बाबू खां ने अब्दुल हलीम को सितार पर उंगलियां थिरकाना सिखाया, तो बंदे अली के शिष्य उस्ताद महबूब खां ने सितार की स्वर-लहरियां। संगीत के ज्यादातर घराने तानसेन के सेनिया स्कूल से निकले हैं,

लेकिन उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खां का कहना था, 'मेरी शैली किसी भी घराने की कठोर निष्ठा को सहन नहीं करती, सेनिया की भी नहीं।

वादन शैली- उ.अब्दुल हलीम के जीवन की शुरुआत अच्छी थी। उनका कंठ इतना मधुर और स्वरों में इतनी मिठास थी कि महज नौ साल की उम्र में आकाशवाणी पर उनकी गजल गूंजने लगी। चौदह साल की आयु में ही आप को सितार वादन मे महारत हो गई थी। उनकी पहचान अलग आकाशवाणी कलाकार के रूप में बन गई। उन्होंने अन्य नवाचारों के बीच रागिनियों के साथ प्रयोग करते हुए सितार वादन की एक अनूठी शैली ईजाद की, जो मसीतखानी और रजाखानी शैलियों के मध्य एक अद्भुत कलात्मक संतुलन थी। 'जाफ़रखानी बाज' नामक इस शैली में मिज़राब का काम कम और बाएं हाथ का काम ज्यादा होता है। कण, मुर्की, खटका आदि का काम भी अधिक रहता है और राग के प्रस्तुतीकरण में बीन और सरोद-अंग का आभास होता है। इस शैली में उस्ताद का चमत्कारिक सितार वादन संगीत से अनभिज्ञ श्रोताओं को भी आनन्दित करने लगा और अब्दुल हलीम जाफर खां 'सितार के जादूगर' बन गए। उनकी सहज शैली में हर राग ताजगी से भरा लगता था, फिर चाहे वह जयजयवंती, किरवानी, श्याम कल्याण में गायकी अंग की कोई बंदिश हो या पीलू या पहाड़ी में कोई धुन। प्रसिद्ध सितार वादक पंडित नयन घोष का कहना है, 'खां साहब की शैली अनोखी थी, जिसकी नकल करना किसी अन्य घराने के लिए संभव नहीं था। वास्तव में, वह श्रोताओं को अपने सितार वादन के जरिए हंसा भी सकते थे।'

सांगीतिक सफ़र - आप 1940 के दशक में आकाशवाणी में कलाकार रहे। आपने अपनी वादन शैली जाफरखानी बाज का निर्माण किया। 1946 के दशक में आपने फिल्मों में सितार वादन करना आरंभ किया। परवाना, मुगले आजम, गुंज उठी शहनाई, कोहीनूर जैसी फिल्मों में संगीत दिया। पं. रवि शंकर, उ. विलायत खां और पं. निखिल बैनर्जी के सामान ही आपको सितार का स्तम्भ माना जाता था। आपने कर्नाटकी पद्धति में बजाये जाने वाले राग, किरवानी लतांगी, खरहरप्रिया, रूप मंजरी आदि को सितार वादन में लाये। आप भारतीय सांस्कृतिक दल के साथ 1955 में चीन गये। आपने वहाँ पर 50 के करीब कार्यक्रम किया।

विदेशों में सितार वादन -आपने देश और विदेशों में सितार वादन की कई यादगार प्रस्तुतियां दी।¹⁰²

- 1955 में आप भारतीय सांस्कृतिक दल के साथ चीन गये। आपने वहाँ पर 50 के करीब कार्यक्रम किया।
- 1958 में अमेरिका के पियानो वादक जैज ब्रूबेक ने आपके साथ प्रदर्शन किया था। जैज ब्रूबेक भारतीय राजदूत निवास में रहते थे। यह कार्यक्रम विदेशी विभाग ने करवाया था। आपने पाश्चात्य संगीत में प्रदर्शन किया।
- 1963 में जूलियन ब्रीम जो कि एक गिटार वादक थे कि जिनके साथ मिलकर सितार वादन किया।
- 1964 में अपने आफगानिस्तान में सितार वादन किया।
- 1972 में भारत के के राष्ट्रपति की काबुल सद्भावना यात्रा के दौरान वहाँ प्रस्तुति दी।
- 1972 में आप जर्मनी, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया और रोमानिया गये। आप विदेशी धरती पर नियमित तौर पर प्रदर्शन करते रहे।
- पंडित राम नारायण (सारंगी) और पंडित राधिका मोहन मैत्रा (सरोद) इन भारतीय शास्त्रीय संगीत दिग्गजों के साथ चीन में एक यादगार त्रिमूर्ति संगीत समारोह में प्रदर्शन किया।
- 1983 में आपने अमेरिका और कनाडा में सितार वादन के कार्यक्रम दिये और वहाँ के विश्वविद्यालयों में व्याख्यान भी दिया। आपके द्वारा विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सैमीनार भी लगाये गये।
- आप श्रीलंका, अफ्रीका, नेपाल, मारीशस में भी सितार वादन करने और शिक्षा देने जाते थे। 1952 से 1976 तक आपने यहाँ पर सितार वादन की शिक्षा दी। आपने नया बाज (वादन शैली) देकर सितार वादन के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया। पुराने रागों को बजाना शुरू किया। आप एक विचारशील संगीतकार थे। संगीत,

¹⁰² <https://www.jallerkhanibaag.com>

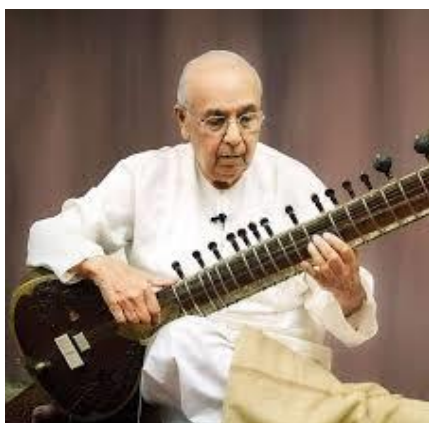
साहित्य और भक्ति की पावन परम्पराओं से जुड़े हुये थे। आपकी किताब जाफरखानी बाज महार्षि रमण को समर्पित है।¹⁰³

सम्मान व उपाधियाँ -आपको हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अद्वितिया योगदान देने के लिये कह विद्यालय विश्वविद्यालयों और सोसाईटीओं द्वारा बहुत सारे सम्मान दिये गये।

- 1970 भारत सरकार द्वारा 1970 में पद्म श्री सम्मान दिया गया।
- 1987 में संगीत में सुर्वोच्च संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार है।
- 2006 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

मृत्यु - 4 जनवरी 2017 का आपने इस दुनिया को अलविदा कर दिया । आप एक ऐसे संगीतकार थे जो संगीत को धर्म से ऊपर मानते थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी संगीतकार ने देश में ही नहीं विदेश में भी अपनी कला का प्रदर्शन बखूभी किया है। आपके बहुत सारे रिकार्डिंग और लाईव रिकार्डिंग उपलब्ध है। 1976 में आपने बम्बई में हालिम अकादमी आफ सितार की स्थापना की। जिसको आपके पुत्र, जुनैन खां आगे बढ़ा रहे है।

4.2.6 पद्म विभूषण पंडित अरविंद पारिख (इमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - आप का जन्म अहमदाबाद में एक गुजराती व्यापारिक परिवार में हुआ । आपके पिता नटवर लाल एक व्यवसायी थे और मां चंद्र कला बेन एक चित्रकार थीं। आपकी प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा एक राष्ट्रवादी स्कूल हुई । 1944 में, 17 वर्ष

¹⁰³The Hindu Newspaper Kamala Garah 12-01-2017

की आयु में, वे मुंबई चले गए और सितार वादक उ. विलायत खां से सीखना शुरू कर दिया। खां सहिब की इच्छा के अनुसार आपने संगीत की शिक्षा के साथ बॉम्बे विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। आप ने बॉम्बे के एल्फिंस्टन कॉलेज में प्रवेश लिया। उ. सुजात खाँ के कई अनुसार एक गुरु और शिष्य का रिश्ता कैसा होना चाहिये वह अरविन्द पारिख से सीखना चाहिये।¹⁰⁴ आपकी संगीत शिक्षा आपके प्रदर्शन करियर के दौरान 60 वर्षों तक 1944 से 2004 तक, खां साहिब की मृत्यु तक जारी रही। आप का विवाह शीर्ष शास्त्रीय गायिका किशोरी पारिख से हुआ था। किशोरी पारिख किराना घराने के दिग्गज गायक नियाज़ अहमद और फैयाज़ अहमद की शिष्या थी।

संगीतिक सफ़र – आप छह दशकों से अधिक समय से सितार वादन का प्रदर्शन कर रहे हैं। पेशे से आप एक बहुत बड़ी कंपनी कई मालिक हैं। आप ने अन्य संगीतकारों के साथ जुड़कर अपने शोध कार्य किये। इन संगीतकारों में बी.आर. देवधर, लताफत हुसैन खां, अमीर खां, नियाज अहमद-फ़ैय्याज अहमद खां, डी.टी. जोशी और राधिका मोहन मैत्रा शामिल हैं। आपने भारत और यूरोप में संगीत समारोहों में प्रदर्शन किया है, और पश्चिम एशिया, सुदूर पूर्व और ऑस्ट्रेलिया के कई हिस्सों में संगीत कार्यक्रम किए हैं। आप ऑल इंडिया रेडियो पर एक नियमित कलाकार हैं। आप ने "सितार गुरु" और "बंदिश परम्परा" में रचनाएँ और राग संकलित किए हैं जिन्हें नवरस रिकॉर्ड्स यूके द्वारा प्रकाशित किया गया है। अरविंद पारिख गायकों और वादकों को शामिल करते हुए शीर्ष शास्त्रीय संगीतकारों के साथ बैठकें आयोजित करते रहे हैं। बैठकों का एक अनूठा प्रारूप और शैली है, जहाँ शास्त्रीय संगीत के पहलुओं जैसे घराना, शिक्षण की पद्धति, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वर्तमान संदर्भ को उजागर करने के लिए कलाकार के साथ खुली लेकिन केंद्रित बातचीत होती है।

- आप संगीत की समृद्ध विरासत को संग्रहित कर रहे हैं। आप ने एक ऐसा मंच स्थापित करने की कल्पना की, जहाँ संगीत जगत के सभी वर्ग मिल कर चर्चा कर सकें। मुंबई, चेन्नई, कोलकाता और दिल्ली में संगीत मंच स्थापित किए गए हैं। आपने अखिल भारतीय संगीतकार समूह (एआईएमजी) नामक 12 शास्त्रीय संगीतकारों के

¹⁰⁴ साक्षात्कार उ. सुजात खाँ, जनवरी 2025

एक संघ का नेतृत्व भी किया , जो कर्नाटक और हिंदुस्तानी परंपराओं के कलाकरो उ. ज़ाकिर हुसैन, पं. हरि प्रसाद चौरसिया, पं. शिव कुमार शर्मा, पं. रवि किरण और पं. राजन-साजन मिश्रा जैसे दिग्गज कलाकार आते थे , ताकि भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए सरकार, उद्योग और मीडिया में अधिक से अधिक समर्थन बनाया जा सके।¹⁰⁵

विदेशों में सितार वादन- आप 1994-97 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय संगीत परिषद (यूनेस्को) के उपाध्यक्ष थे और वर्तमान में भारतीय उपमहाद्वीप के समन्वयक हैं। वे भारतीय संगीत विज्ञान सोसायटी के अध्यक्ष हैं, आईटीसी संगीत अनुसंधान अकादमी के पश्चिमी भारत अध्याय के अध्यक्ष हैं।

सम्मान और उपाधियाँ – आप को सर्वोच्च उपाधियाँ द्वारा सम्मानित किया गया।

- 1997-98 में गुजरात राज्य संगीत नाटक अकादमी द्वारा आप को गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है
- 2003 में सितार वादन के लिए संगीत नाटक अकादमी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।
- 2018 में भारत का तीसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, पद्म विभूषण दिया गया।¹⁰⁶

4.2.7 पद्म भूषण पंडित देबु चौधरी (जयपुर सेनिया घराना)



¹⁰⁵ <https://panditarvindparikh.org>

¹⁰⁶ <https://panditarvindparikh.org>

जन्म और संगीत शिक्षा -जयपुर सेनिया घराने के पद्म श्री और पद्म भूषण जैसे पुरस्कारों के साथ अलंकृत पं. देबू चौधरी जी का जन्म 30 मई 1935 में हुआ। आप सेनिया उस्ताद के प्रमुख उ. मुश्ताक अली खां जी के शिष्य थे।

वादन शैली – पंडित देबू चौधरी की सितार वादन शैली जयपुर सेनिया घराने की विशेषताएं और परंपरा पर आधारित था, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में संतुलन और विकास के लिए जाना जाता है। वे राग की पारंपरिक पहचान और भाव को अक्षुण्ण रखते थे। राग का विस्तार धीरे-धीरे किया जाता था, जिससे उसकी आत्मा स्पष्ट हो जाती थी। रागों की मधुरता और राग शुद्धता पर ध्यान दिया जाता था। उनके वादन में ध्रुपद शैली का प्रभाव स्पष्ट था। 'आलाप', 'जोड़', और 'झाला' को बिना तानों के, शांत और गंभीर रूप से प्रस्तुत करते थे। वादन में मधुरता और क्रमबद्धता की प्रधानता रहती थी। हर चरण (आलाप से तान तक) में ज्ञानता और जागरूकता दिखाई दी। उनकी शैली में मुर्की, खटका जैसे भारी अलंकरण नहीं होते थे। संगीत की गरिमा बनाए रखने के लिए सरलता और सादगी पर बल दिया गया। एक-एक स्वर को स्पष्टता और भावना के साथ प्रस्तुत करते थे। आप ने पारंपरिक 17 पर्दों वाली सितार का उपयोग किया, जो सेनिया परंपरा की पहचान है। वादन में विशिष्ट स्वर और गरिमा थी। पंडित देबू चौधरी की सितार वादन शैली में परंपरा, तत्त्विकता और ध्वनि विस्तार का सुंदर समन्वय था। उनके वादन संगीत में ध्यान, शांति और राग की आत्मा का समावेश था।

सांगीतिक सफ़र – आप ने आपने एक संगीतकार और दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत विभाग के मुखी के रूप में अपने कर्तव्य का पूर्ण निर्वाह किया। आप व्यक्तित्व के जितने धनी थे, उतने ही आप अपनी कला में प्रवीण थे। आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कई रचनाएँ की और 8 नये रागों का निर्माण किया। आपने 7 पुस्तकों की रचना की। आपकी अपनी अदभुत वादन शैली थी। आप 17 पर्दों वाली सितार का उपयोग किया करते थे। आप ऑल इण्डिया रेडियो के ए ग्रेड कलाकार रहे। आपने 40 वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएँ दी। आपने 40 डॉ.क्टरेट शोधार्थी दिये।

वैश्विक स्तर पर आपके द्वारा दिये गये योगदान पर जॉन शेफर्ड लिखते हैं बीसवीं शताब्दी में सितार वादन के सबसे प्राचीन सेनिया घराने और उ. मुश्ताक अली खां के शिष्य पं. देबु चौधरी जी के द्वारा किये गये कार्य को और संगीत में दिये योगदान की सराहना अवश्य बनती है। राग की शुद्धता, आलापचारी का ढंग तानों की तैयारी एक अलग अंदाज बयान करती है और आपका सितार सबसे प्राचीन शैली 17 पर्दों का रहता है।¹⁰⁷

विदेशों में दौरे व सितार वादन- आपने अपने साक्षात्कार में बताया कि आप 50 दफा विदेश के दौरे पर गये। भारतीय संस्कृतिक आदान-प्रदान के सम्बन्ध में आपने कितनी ही विदेशियों को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ जोड़ा। आप का कहना था कि लोग मेरा वादन सुनकर मेरी आत्मा को पहचान जाते हैं। आपका मानना था कि संगीत एक समुद्र है अगर किनारे पर रहोगे तो कुछ नहीं मिलेगा, उसकी गहराई में डूबना पड़ेगा।

- 1960 में संगीत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन जो कि इंग्लैंड में हुआ था मैं सितार वादन किया।
- 1973 में पर्थ आस्ट्रेलिया में यूनेसको द्वारा आयोजित किये गये कार्यक्रम 'सेमिनार' ऑफ ऐजुकेशन में शिरकत की।
- आप मारिशस में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षण हेतु गये थे। जहां पर स्नाकोत्तर के विद्यार्थियों को शिक्षा दी।
- 1982 में स्वीडन में संगीत सैमीनार में शिरकत की।
- अमेरिका के महर्षि महेश गधर्व वेद म्यूजिक में 24 घंटे की अलग-अलग पहरो में सी.डी रिकॉर्ड की थी। आपने बताया कि यह जो 24 घंटे 24 रागों का रिकार्ड बनाया है जो 24 घंटों में 24 बार बजेगा।¹⁰⁸

¹⁰⁷विश्व के लोकप्रिय संगीत का कॉन्टिनम विश्वकोश खंड-11

¹⁰⁸साक्षात्कार शिवेन्द्र कुमार सिंह रावगिरी <https://youtube/tkAoP5P//vw?si-Gud8DsF-d169J-Av>

- पं. जी अमेरिका के फेयर फील्ड विश्वविद्यालय में भी शिक्षण देते थे। इंग्लैण्ड में लैस्टर और बर्मिंघम जैसे शहरों में भी शिक्षण संस्थानों में जा कर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार करने जाते रहे हैं।
- 1988 में सरकार द्वारा आपको स्वीडन भेजा जहाँ पर आपने 67 दिनों में 27 के करीब संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

नीलम बाला लिखती है कि आपने वैश्विक स्तर पर होने वाले संगीत सम्मेलनों जैसे मोरक्को अंतर्राष्ट्रीय मेला, यूनेस्को फैस्टीवल आफ पिथ, त्रिनाथ फैस्टीवल आदि में भारत का प्रतिनिधित्व किया।¹⁰⁹

आप लगभग एशिया, यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका के सभी देशों में सितार वादन प्रस्तुत कर चुके हैं। इंग्लैण्ड, स्वीजलैंड, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, ईटली, ब्राजील, बैल्जियम, आस्ट्रेलिया, मैक्सिको, अमेरिका, नीदरलैण्ड, अफगानिस्तान, ईरान, ग्रीस, मोस्को आदि के अतिरिक्त 130 के करीब विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिन्दुस्तान शास्त्रीय संगीत का प्रचार कर चुके हैं। आपको देश-विदेश में कई सम्मान व उपाधियों से विभूषित किया गया। आपके पुत्र स्वर्गीय पं. प्रतीक चौधरी ने भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन में नये आयाम स्थापित किये। बड़े दुख की बात है कि कोरोना काल में आप के साथ ही आपके पुत्र पं. प्रतीक चौधरी भी इस दुनिया से चल बसे।

मृत्यु - 2021 में कोरोना काल के दौरान आप इस दुनिया से रुखसत हो गये। आपने अपने गुरु के नाम से संस्था खोली उस्ताद मुश्ताक अली खां सेटर फॉर क्लचर। आपके एक साक्षात्कार में बताया कि आपके गुरु कहते थे कि संगीत के साथ कभी गद्दारी नहीं करना। मौसीकी आपको ऊपर ले जाती है, स्वर है ईश्वर, लय है ज्ञान, तन ही पथ है, रूप है ध्यान आपने गुरु के इस दोहे को याद करते कहते हैं कि ईश्वर प्राप्ति कि लिये सच्चा स्वर लगाना चाहिये।¹¹⁰ आप के द्वारा संगीत के क्षेत्र में दिया गया योगदान हमेशा के लिए अमर हो गया।

¹⁰⁹ आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय करण में भारतीय संगीत की भूमिका पृ. 169

¹¹⁰ साक्षात्कार राज्यसभा टी.वी. 2013

4.2.8 पद्म भूषण पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ईमदादखानी घराने के सितार वादक पद्म भूषण पं. बुद्धादित्य मुखर्जी का जन्म 7 दिसंबर 1955 में दुर्ग में हुआ। पं. जी सितार वादक के साथ एक श्रेष्ठ सुरबहार वादक भी है। आपने सितार की शिक्षा अपने पिता श्री बिमलेन्दु मुखर्जी से 5 वर्ष की आयु से ही लेनी प्रारंभ की थी। आपके पिता जी वीणा वादन और सुरबहार के सिद्धहस्त थे। आपने छोटी आयु में ही बहुत सी प्रतियोगिता जीती। आपको सत्यजीत रे द्वारा और वीणा वादक बालचंदर जी द्वारा सदी का सितार कलाकार कहा गया।

वादन शैली – पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी इमदादखानी घराने से हैं, आपके वादन में अलाप में गहरे और बारीक मींड होते हैं, यह तकनीक गायकी या गायन शैली को निष्पादित करने का हिस्सा है, पं. बुद्धादित्य मुखर्जी विशेष रूप से अपनी उच्च गति और स्पष्टता के लिए जाने जाते हैं, जब वे एक अच्छे सितार की तलाश में थे, तो उन्हें संगीतकार के रूप में अपना करियर बनाने के लिए उच्च गति से बजाना पड़ा। पं. बुद्धादित्य मुखर्जी कार्यक्रम में रागों की पूर्ण रूप से प्रस्तुति देते हैं, जो अलाप, जोड़ से शुरू होती है, और फिर तबला संगत के साथ एक रचना प्रस्तुत करते हैं, फिर एक उच्च गति रचना और झाला बजाया जाता है, और एक अलग राग में एक छोटी प्रस्तुति के साथ समाप्त होती है। वह अक्सर ख्याल गायकी अंग में राग विकसित करते हैं। आप एक विशिष्ट कलाकार होने के साथ स्वर के कौशल के भी परखी है। क्योंकि उनको अपनी कल्पना पर आधारित सितार की

ध्वनि चाहिये थी। आपने सितार पर 15 वर्षों तक शोध किया और अपने अनुरूप सितार का ढांचा बनाया। कई संशोधनों के साथ तारों को व्यवस्थित किया और अपनी मनचाही ध्वनि पाई।

सांगीतिक सफ़र – 1970 के दशक में आपने नई दो राष्ट्रीय स्तर की संगीत प्रतियोगिताएं जीतीं। आप छोटी आयु में ही 1975 में आकाशवाणी के ए ग्रेड कलाकारों में शुमार हो गये। 1986 में शीर्ष ग्रेड में पदोन्नति की गई। सितार वादक होने के साथ आप इंजीनियरिंग के विद्यार्थी रहे हैं और प्रथम श्रेणी के स्नातक रहे हैं।¹¹¹ 70 के दशक के दौरान वे टप्पा बजाने वाले पहले सितार वादक बने, जो बार-बार उच्च गति के तानों के साथ मुखर संगीत का एक रूप है और 2018 तक, संभवतः एकमात्र सितार वादक हैं जिन्होंने टप्पा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

विदेशों में सितार वादन - पं. जी ने देश-विदेश में सितार वादन के कई कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। आप विश्व के सभी देशों, जापान, ईटली, फ्रांस, कनाडा, अमेरिका, लंदन आदि में अपनी कला कौशल दिखा चुके हैं। आप ने 26 देशों में प्रस्तुतियां दी जिनमें से 12 अंतराष्ट्रीय समारोह शामिल हैं जिन में आप ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

- आपने 1970 के दशक में अमेरिका, यूनाइटेड अरब अमीरात, आस्ट्रेलिया आदि में सितार वादन कर चुके थे।¹¹² पं. बुद्धादित्य मुखर्जी को भारतीय सीमाओं से परे सम्मान व प्रशंसा मिली।
- 1976 में कनाडा और अमेरिका जाने का मौका मिला। अमेरिका के बारे में आपके विचार हैं कि अमेरिका आकर बहुत खुश हूँ, यहाँ के लोगों से मैं बहुत प्रसन्न हूँ यह लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को समझते हैं और प्यार करते हैं।¹¹³
- 1983 वेनिस के इंस्टिट्यूट ऑफ इंटर कल्चरल डि स्टडी म्यूजिकली और रॉटरडैम कंजर्वेटरी में आप ने संगीत प्रशिक्षण भी दिया है।

¹¹¹साक्षात्कार राग माला टोरंटो 2019

¹¹²साक्षात्कार जश-ऐ-डेकन 2016

¹¹³साक्षात्कार संगीत युग पत्रिका, 12-10-2017 (ईरा लैडगार्ट के साथ साक्षात्कार के दौरान)

- आपने 1990 में लंदन में हाऊस ऑफ कॉमन्स में सितार वादन किया। जो इतिहास रचने जैसा है। ¹¹⁴
- 1995 से लेकर 2005 तक हौलैंड में रोट्टरडैम में सितार के विजिटिंग अध्यापक थे।
- आपने दरबार फैस्टिवल इंग्लैंड में 2017, 2020, 2021, 2022 में सितार वादन की प्रस्तुति दी।
- 2016 कनाडा के आगा खां म्यूजियम में सितार वादन किया।
- 2019 में राग-माला सोसाईटी टोरंटो में भी कई बार सितार वादन किया है।
- आपको ICCR की ओर से भी विदेशों में कई बार भेजा गया।
- नाद फाऊंडेशन ऑफ इंडियन क्लासिक म्यूजिक के साथ साक्षात्कार के दौरान आपने बताया कि नीदरलैंड के लोग हमारे संगीत के साथ बहुत प्यार करते हैं मैं 1987 से यहाँ आ रहा हूँ और मैं यहाँ आ कर बहुत गर्वित और सम्मानित महसूस करता हूँ। आज 2018 में भी मुझे उतना ही प्यार और सम्मान मिलता है जितना तब मिलता था। ¹¹⁵

सम्मान व उपाधियाँ - आपको देश-विदेश में कई सम्मान व उपाधियों से सम्मानित किया गया है। इमदादखानी घराने के प्रसिद्ध सितार और सुरबहार वादक पंडित बुधादित्य मुखर्जी ने अपने विशिष्ट करियर के दौरान कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

- 1994 कुमार गंधर्व सम्मान पुरस्कार दिया गया। यह राष्ट्रीय पुरस्कार मध्य प्रदेश राज्य सरकार द्वारा प्रदान किया गया।
- पद्म भूषण 2019 में पद्म भूषण सम्मान दिया गया।
- 2010 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार दिया गया है। पंडित बुधादित्य मुखर्जी को यह पुरस्कार हिंदुस्तानी वाद्य सितार के लिए दिया गया।

¹¹⁴सौमेन नंदी, बिमहुइस एमस्टडम, 4 नवम्बर 2018, info@bimhuis.nl

¹¹⁵साक्षात्कार नाद फाऊंडेशन एमस्टडम

- 2016 संगीत महा सम्मान पुरस्कार पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा दिया जाने वाला एक प्रतिष्ठित राज्य पुरस्कार है ।
- 2022 में आप को राष्ट्रीय कालिदास सम्मान दिया गया। यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए प्रदान किया जाता है।

4.2.9 पद्म श्री पंडित मणिलाल नाग (विष्णुपुर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - पद्म श्री सम्मान से सम्मानित पं. मणि लाल नाग जी विष्णुपुर घराने से सम्बन्ध रखते हैं। आपका जन्म 16 अगस्त 1939 को बाकुंरा में हुआ। आप के पिता, संगीताचार्य गोकुल नाग, और दादा, गोविंद चंद्र नाग, भी प्रसिद्ध सितार वादक थे। सितार वाद्य की शिक्षा आपने अपने पिता पं. गोकुल नाग से प्राप्त की। पंडित मणिलाल नाग भारतीय शास्त्रीय संगीत के एक प्रतिष्ठित सितार वादक हैं, जो विशेष रूप से विष्णुपुर घराने के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

वादन शैली- आप की सितार वादन शैली में ध्रुपद गायन की गूढ़ता और सितार वादन की लयात्मकता का अद्भुत समागम देखने को मिलता है। आपके नवीनतम राग ललित, राग भैरवी, राग चारुकेशी, और राग मिश्र शिवरंजिनी में रचनाएँ की हैं ।

सांगीतिक सफ़र - मणिलाल नाग ने 5 साल की उम्र में सितार बजाना शुरू किया और 1953 में ऑल इंडिया म्यूजिक कॉन्फ्रेंस में अपना पहला सार्वजनिक प्रदर्शन किया। 1953

में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में प्रथम प्रस्तुति दी। आपने देश में आकाशवाणी और टेलीविजन पर कई कार्यक्रम दिये। आप आल इंडिया रेडियो के ए ग्रेड के कलाकार है। आप प्रसार भारती के केन्द्रीय ऑडिशन बोर्ड नई दिल्ली के सदस्य रहे है।

विदेशों में सितार वादन- आपने अमेरिका, यूके, स्वीजरलैंड, जर्मनी, ईटली, जापान, आस्ट्रेलिया, कनाडा, नेपाल में कई अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सितार वादन प्रस्तुत किया है। आपने कई संगीत सम्मेलनों और समारोहों में हिस्सा लिया है। आपने आज तक 1000 से अधिक छात्रों को शिक्षित किया है। जो विभिन्न संस्थानों में कार्यरत है।

- 1973 में आपको भारत सरकार द्वारा (ICCR) की ओर से यूएसए और यूरोप भेजा गया।
- 70 के दशक में भारत सरकार ने सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल के साथ इंग्लैंड , अमेरिका , कनाडा और अन्य यूरोपियन देशों में भेजा।
- 1979 में आस्ट्रेलिया सरकार के 150 वर्षों की महोत्सव पर वादन के लिये आमंत्रित किया गया।
- 1985 में आप महापुरुष मिश्रा के साथ जापान गये।
- 1994 में आप को अमेरिका में संगीत अनुसंधान अकादमी की ओर से भी आमंत्रित किया गया।
- 1998 में बाथ म्यूज़िक फेस्टिवल की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष पर इंग्लैंड में सितार वादन के लिए आमंत्रित किया गया।

सम्मान व उपाधियाँ - पंडित मणिलाल नाग को उनके योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।

- 2001 में म्यूजिक ड्रामा एकेडमी अवॉर्ड दिया गया।
- 2005 में मिनिस्ट्री से ओल्ड फेलोशिप भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा दिया गया।

- 2008 में एशियाटिक सोसाइटी कोलकता द्वारा गोल्ड मेडल दिया गया।
- 2012 में पश्चिम बंगाल सरकार ने आप को अलाउद्दीन अवॉर्ड और संगीत महासम्मान पुरस्कार दिया।
- 2020 में आप को पद्म श्री सम्मान दिया गया।।

पंडित मणि लाल नाग के विचार- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को लेकर आपके विचार है कि पहले राजा-महाराजाओं के समय में कलाकारों के पास जीवन निर्वाह की कोई समस्या नहीं थी क्योंकि राज दरबार उनका खर्च उठाता था। परन्तु आजकल सब कुछ सरकार के हाथ में है। जीवनयापन के लिये कला के अतिरिक्त और काम भी करने पड़ते हैं तो लोगों के पास रियाज के लिये 10 से 12 घंटे नहीं है लोग 1 साल संगीत सीखते हैं और ऑडिशन के लिये चले जाते हैं। सरकार ने कला के क्षेत्र का विकास करने के लिये हर विद्यालय और विश्वविद्यालयों में संगीत अनिवार्य किया है। दुनिया भर में बहुत सा संगीत रॉक, पॉप चलता है। पर मैं अपने संगीत में खुश हूँ। आपकी बेटी सुश्री मीना नाग एक उत्तम कलाकार और सितार वादिका है। आपने उनके साथ कई बार मंच सांझा किया है।¹¹⁶

4.2.10 पंडित उमाशंकर मिश्र (मधुबनी घराना)



¹¹⁶ <https://www.aimrec.com/The hindu>

जन्म और संगीत शिक्षा - पंडित उमा शंकर मिश्र बिहार के मधुबनी घराने के प्रसिद्ध कलाकार थे। आपका जन्म सन् 1931 में बिहार मधुबनी में हुआ। आप पं. रवि शंकर जी के शिष्य थे। आप रामपुर मैहर घराने से सम्बन्धित थे।

वादन शैली - आपका वादन यंत्र व गायकी का मिश्रण था। उनका वादन में ध्रुवपद अंग और रागदारी अंग का मिश्रण था। मींड, सुत, गमक, तिहाईयों का वादन विलम्बित गत व द्रुत गत का प्रयोग वादन शैली में सुन्दरता लाता था। आप में कल्पनाशीलता और सृजनात्मका का संगम था। जिसने आपको विश्व के चोटी के सितार वादको में शामिल कर दिया। डॉ. सुप्रिया शाह (एसोसिएट प्रोफेसर बनारस विश्वविद्यालय) कहती है कि आपको पं. रवि शंकर जी के सानिध्य में सितार वादन सीखने का मौका मिला। आपको यद्यपि ध्रुवपद शैली से सितार वाद्य में महारत हासिल थी। फिर भी आपने पं. रवि शंकर जी से शिक्षा प्राप्त की। आपको उनके साथ दो बार मंच पर सितार वादन का मौका भी मिला।

सांगीतिक सफ़र - पं. जी छोटी आयु से ही लखनऊ रेडियो से वादन किया करते थे। आपने देश में होने वाले बड़े-बड़े संगीत समारोहों और सम्मेलनों में सितार वादन किया है। पं. जी अपनी शिष्य परम्परा में शिक्षा देते समय अपने घराने मधुबनी की गतों के साथ-साथ पं. रवि शंकर जी के गतों की भी शिक्षा देते थे। आपने अपने वादन में नयापन लाने की हमेशा कोशिश की और अपने शिष्यों को भी यही शिक्षा दी। आपके देश-विदेश में कई शिष्य हैं जो आपका नाम रोशन कर रहे हैं।¹¹⁷

विदेशों में सितार वादन- विदेशों में आपने मारिशस, इंग्लैंड, कनाडा, जर्मनी, सेशेल्स, साऊथ-कोरिया, फ्रांस, हालैंड, बेल्जियम, ईटली, अमेरिका लगभग सम्पूर्ण विश्व में सितार वादन कर चुके हैं।¹¹⁸

- अमेरिका के न्यूयार्क में 1979 में अपना कार्यक्रम दिया और न्यू पाल्ट्स यूनिवर्सिटी में न्यूयार्क में विजिटिंग प्रोफेसर रहे थे। जहाँ पर शिक्षण का प्रशिक्षण देते-देते कई कार्यक्रमों को हिस्सा लिया।

¹¹⁷ साक्षात्कार डॉ. सुप्रिया शाह, अप्रैल 2022

¹¹⁸ <https://madhubanigharana.wordpress>

- आपने अपने ही पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी सितार वादन किया था। नेपाल के राजा वीरेन्द्र ने आपको सितार वादन का निमंत्रण भेजा था। जहाँ पर रॉयल हाल में आपने 3 घंटे तक सितार वादन किया।¹¹⁹
- अमेरिका में आपने कई कार्यक्रम दिये हैं। न्यूयॉर्क के सामुदायिक भवन में सितार वादन किया जहाँ पर सौ डालर की टिकट थी पूरा हॉल भरा हुआ था। आपका कार्यक्रम उतना सफल रहा कि लोगों के कार्यक्रम की समाप्ति पर खड़े होकर तालियों के साथ पं. जी का सम्मान किया।
- आपने बोस्टन यूनिवर्सिटी में भी सितार वादन किया जहाँ पर आपने ठुमरी राग भैरवी में प्रस्तुत की।
- 1973 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा आपको सांस्कृतिक प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेशों में भेजा गया तब आप यूरोपिन देशों और यू.ए.ई. में गये।

पं. जी अपनी शिष्य परम्परा में शिक्षा देते समय अपने घराने मधुबनी की गतों के साथ-साथ पं. रवि शंकर जी के गतों की भी शिक्षा देते थे। आपने अपने वादन में नयापन लाने की हमेशा कोशिश की और अपने शिष्यों को भी यही शिक्षा दी। आपके देश-विदेश में कई शिष्य हैं जो आपका नाम रोशन कर रहे हैं।¹²⁰

सम्मान व उपाधियाँ - आप को साहित्यक कला परिषद , दिल्ली द्वारा परिषद सम्मान दिया गया। 1991 में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार हेतु संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड भी दिया गया।

मृत्यु - 22 सितंबर 2011 में आप इस संसार को अलविदा कह गये। आप एक प्रतिभावान सितार वादक ही नहीं थे बल्कि एक खुले मन के कलाकार थे। आपको पं. निखिल बैनर्जी का सितार वादन बहुत पसंद था। आप सभी कलाकारों को बहुत ही खुले मन से सुनते और उनकी तारीफ भी करते हैं, पं. रवि शंकर, उ. विलायत खां सब का अपना एक अलग अंदाज है सबके अपने सर्वश्रेष्ठ गुणों का सम्मान करते हुए उनको पसंद करते हैं।

¹¹⁹ वर्ल्ड प्रैस कुलदीप कुमार जुलाई, 2013

¹²⁰ साक्षात्कार डॉ. सुप्रिया शाह , अप्रैल 2022

4.2.11 पद्म श्री उस्ताद शाहिद परवेज़ (ईटावा घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - अप का जन्म 14 अक्टूबर 1958 में इटावा घराने के प्रसिध सितार वादक उस्ताद अजीज़ खाँ के घर हुआ। आप को सितार वादन की दीक्षा आपने पिता से ही मिली। आपने अपने चाचा हाफिज़ खां से भी ली संगीत शिक्षा ली और दिल्ली घराने के तबला वादक मुन्नु खां से 10 वर्षों तक तबला वादन सीखा।

वादन शैली - उस्ताद शाहिद परवेज़ खां की सितार वादन शैली भारतीय शास्त्रीय संगीत में इमदादखानी घराने की एक प्रमुख प्रतिनिधि शैली है। यह घराना गायकी अंग और बीनकारी अंग के मेल के लिए जाना जाता है। उस्ताद जी ने इन दोनों अंगों को अपनी वादन शैली में अद्भुत संतुलन के साथ प्रस्तुत किया है। आलाप, जो विस्तृत और भावपूर्ण होता है, खयाल गायकी की तरह लगता है। आप मींड, गमक, और सहज रागदारी का सुंदर प्रयोग करते हैं। बीनकारी अंग का समावेश और तकनीक, मिज़राब के बोल आदि केए बेजोड़ समन्वय है। ताल और लय का अद्भुत प्रसार विशेषकर झाला भाग में उनकी अंगुलियों की गति और ताल का संतुलन दिखाई देता है। आप परंपरा का पालन करते हुए भी अपनी प्रस्तुतियों में नवीनता और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को स्थान देते हैं।

सांगीतिक सफ़र - ईटावा घराने के सुप्रसिद्ध सितार वादक पद्म श्री उ. शाहिद परवेज़ जी ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विश्व में प्रचलित करने में प्रमुख योगदान दिया है। आप ने फिल्मों में भी सितार वादन किया। आपने देश में ही नहीं विदेश की धरती पर भी अपनी कला का जादू बिखेरा है। आपके बहुत सारे शिष्य हैं। उ. शाहिद परवेज़ ने (SPR) के नाम से अमेरिका में अकादमी भी खोली है। वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के प्रचार-प्रसार पर

आपके विचार है कि बहुत अच्छी बात है कि हमारा संगीत आज विदेश में गाया-बजाया और सराहा जा रहा है। विदेशी लोग भारतीय सभ्यता और संस्कृति के साथ जुड़ रहे हैं।¹²¹ आप AIR शीर्ष ग्रेड के कलाकार है।

वैश्विक स्तर सितार वाद्य के पर लोकप्रियता पर आपके विचार – सभी लोगों का मानना और मेरा भी यही मानना है कि सबसे पहले विशेषकर यूएसए में पं. रवि शंकर जी आये थे। उनके साथ चतुर लाल जी तबले पर थे। फिर 1960 में उ. अल्ला खां जी के साथ आये। पहले इतने बड़े कार्यक्रम नहीं होते थे। कोई कालेज में सितार बजाता था तो कोई लाईब्रेरी में सितार बजाता था। पहले इतने बड़े-बड़े मंच नहीं मिलते थे। फिर उनके बाद यूरोप में उ. विलायत खां जी 1960 में गये जहाँ पर उन्होंने पहला सितार वादन किया। इनके बाद सिर्फ सितार वादन ही नहीं हमारे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कलाकारों को और भी रास्ता मिला। पं. रवि शंकर जी के साथ उ. अमजद खां जी ने भी संगीत का बहुत प्रचार किया। 1970 के बाद हमारे प्रसिद्ध कलाकार, पं. शिव कुमार शर्मा, पं. हरि प्रसाद चौरसिया, पं. भीम सेन जोशी, पं. जसराज आदि कलाकारों ने प्रस्तुतियां दी और संगीत का प्रचार हुआ। 1980 में और कलाकार आये। 1984 में आप विदेश गये और उसके बाद विदेशों में लगातार दौरे लगाये।

आपके अनुसार यह बात तो सच है जब देश में हमारा संगीत बजाया जाता है तो हमारी सभ्यता के अनुसार होता है। जैसा जवाब श्रोताओं से हम लोग चाहते हैं वो तो भारत में ही मिलता है क्योंकि भारत के लोग संगीत को समझते हैं। यद्यपि अब विदेशी लोग भी उस तरह से तैयार हो गये हैं। उनकी भी प्रतिक्रिया अब बदल गई है। जो पहली बार संगीत को सुनता है वो इतना नहीं जानता है तो यह चीज यहाँ पर बेहतर है क्योंकि लोग अलग-अलग तरह के संगीत सुनते हैं और उनकी रुचि अलग होती है। संगीत सुनने और समझने में विदेशों में श्रोतागण अधिक अच्छे से सुनते हैं।

विदेशी सितार वादन शौक के लिये या फिर प्रोफेशन के लिये सितार वाद्य बजाते हैं। कोई भी सितार सीखता है उनके अलग-अलग वर्ग हैं। कोई केवल शौकिया तौर पर

¹²¹साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज, नवम्बर, 2021

करता है। दूसरा वर्ग जो सीखने और मंच पर बजाना चाहता है और तीसरा वर्ग वह जो सब कुछ छोड़ कर सिर्फ सितार वादन ही करते हैं।

विदेशी लोग सितार की ध्वनि की और आकर्षित होते हैं या राग प्रथा पर आपके विचार है कि कोई भी संगीत हो उसमें स्वर होता है, ताल होता है, आपके अनुसार दो वाद्य सितार और तबला पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है और ऊपर से हमारा संगीत इतना प्रभावशाली है कि कोई भी आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता।¹²²

कोई यादगार क्षण साँझा करते हुए बताया कि किसी कार्यक्रम के दौरान-जितने भी कलाकार है वह अपना विशेष प्रस्तुत करते हैं ऐसी यादगार क्षण कोई एक नहीं होता बल्कि बहुत सारे होते हैं क्योंकि जब भी हम कहीं प्रस्तुति देते हैं तो उसको पूरे मन से देते हैं। मन से सितार वादन करते हैं श्रोताओं में खुद को बैठा महसूस करते हैं। यादगार रहने की वजह अपने आप का बजाना ही नहीं होता बल्कि कैसे श्रोता है। ये वो पल होता है कि मुझे कौन सुनने आया है। एक बार उ. विलायत खां साहिब के सामने बजाया। पं. रवि शंकर जी कई बार मुझे सुनने आये। पं. भीम सेन जोशी, पं. शिव कुमार जी, पं. अमजद अली खां आदि कलाकार का सुनने के लिये आना मेरे लिये यादगार पल है।

विदेशों में कलाकारों के बस जाने पर आपके विचार-बहुत सारे कारण है कि कोई कलाकार यह सोच कर आये कि हमें अपनी पहचान बनानी है, कोई आर्थिक स्थिति के लिये, कोई यह सोचता है कि हमें वहाँ पर अधिक अच्छे मौके मिल सकते हैं इसीलिये भी विदेश का रुख करते हैं।

संस्थाओं और संगठनों पर आपके विचार सरकार संगीत के विकास के लिये मदद करती है वो और भी होना चाहिए पहले ऐसा नहीं था। स्पिक मैके ने बहुत अच्छा काम किया है हर वर्ग तक अपना संगीत पहुँचाने में बहुत मेहनत की है। 80 प्रतिशत कलाकारों ने इसका समर्थन किया है। इसकी और शाखाएँ भी विश्व में खुल गई है।

¹²²साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज, नवम्बर, 2021

सितार वाद्य के उन्मूलन के लिये आपके विचार स्कूल-कालेजों में इसकी शुरुआत हो। हमारी सभ्यता संस्कृति बहुत अमीर है। हमारी इसी धनी सभ्यता के साथ युवाओं जो जोड़ना चाहिए। हमारी सभ्यता संगीत ने बहुत ही अच्छी तरह से संजों के रखी हुई है। ऐसी संस्थाओं का निर्माण होना चाहिए जो संगीत का विकास करने में सहायक हो।¹²³

संगीत शिविर का आयोजन - हमारा संगीत मौखिक शिक्षा पर आधारित है एक से दूसरे को जाता है। गुरु शिष्य परम्परा पर आधारित है। उसी परम्परा की झलक उस शिविर में दिखाई जाती है कि कैसे उस्ताद और गुरु के साथ सीखा जाता है और शिक्षा के अतिरिक्त कैसे बैठा जाता है, बातचीत की जाती है वह सब 2-3 दिन के शिविर में होता है। यह शिविर साल में 2-3 बार लगाया जाता है ताकि यह परम्परा कायम रहे। भारत में भी इस तरह के शिविर लगाये जाते हैं। 1980 में यह पहली बार लगाया गया था। यूरोप में भी लगाया जाता है। 2-3 बार रियाज सेशन भी होता है। प्रति वर्ष यहाँ पर जिसमें भी गुरु शिष्य परम्परा की झलक होती है। हमारी अकादमी में विदेश लोग भी आते हैं और भारतीय मूल और विदेशी मूल के 50 प्रतिशत लोग हैं।

संगीत के पाठ्यक्रम पर आपके विचार संगीत का पाठ्यक्रम नहीं होता। कोई भी आर्ट फॉर्म हो उसका पाठ्यक्रम लिखा हुआ नहीं है। बस एक सिस्टम है जो हमारे दिमाग में होता है। हर बच्चे का स्तर अलग है। संगीत में यह सबसे अधिक प्रयोग होता है किस को क्या और कैसे करवाना चाहिए। इस बात का ध्यान रखा जाता है।¹²⁴

विदेशों में सितार वादन- उस्ताद शाहिद परवेज़ जी नियमित रूप से विदेशों में सितार वादन करने के लिये जाते रहते थे। आप भारत, यूरोप, अमेरिका, एशिया में मंच प्रदर्शन करते रहते हैं। आप स्पिक मैके के साथ भी जुड़े हुये हैं। आप 90 के दशक में अमेरिका में रहने लगे और वही पर अपना दूसरा घर बना लिया। भारत में आप का निवास स्थान पूणे में है। जहाँ पर आप हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देते हैं। आप ने अमेरिका में Phoenix में S.P.K नं से संगीत अकादमी खोली। जहाँ पर सितार वादन की तालिम दी जाती है। आज के दौर में आप दुनिया के हर कोने में सितार वादन करते हैं।

¹²³साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज़, अक्टूबर, 2024

¹²⁴साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज़, अक्टूबर, 2024

- 1989 में अमेरिका में सितार वादन किया।
- आप ने देश और विदेश में स्पिक मैके के बहुत से कार्यक्रमों में सितार वादन किया।
- 2002 सिडनी में सितार पर राग बागेश्वरी का वादन किया।
- 2007 में इंग्लैंड में दरबार फेस्टिवल में मियां की तोड़ी का वादन किया
- 2012 में फेस्टिवल ऑफ सितार रशिया में राग चरुकेशी का वादन किया।
- 2013 में वर्जिनिया में राग अभोगी का वादन किया।
- 2016 में ओंटारियो , कनाडा में सितार वादन किया।
- 2016 में सर्व अकाल अकादमी , कनाडा में वादन किया।
- 2018 में इंग्लैंड में दरबार समारोह में राग यमन का वादन किया।
- 2019 में इंग्लैंड में दरबार समारोह में राग पीलू का वादन किया।
- 2019 में scintillating sounds of sitar कार्यक्रम मे वादन किया।
- 2021 में कोरोना रिलिफ फंड के दौरान अमेरिकन इंडियन फाउंडेशन द्वारा कार्यक्रम करवाया गया।
- 2021 में वैदिक हेरिटेज द्वारा दिवाली मेला करवाया गया जिस मे सितार वादन किया।
- 2022 में बोस्टन में षड्ज बैठक में सितार पर राग मालकौंस का वादन किया
- 2022 में राग रागिनी दौरे पर Minneapolis गये।
- 2022 में गुरू पूर्णिमा पर संगीत समारोह में सितार वादन किया।

सम्मान व उपाधियाँ-

- 2020 में कलाज्योति लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया।

- 2006 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
- 2012 में पद्म श्री पुरस्कार पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

4.3 विदेशों में शास्त्रीय संगीत सम्मेलन

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विश्व स्तर पर प्रसिद्धी प्राप्त करने में हमारे कर्मठ और प्रतिभाशाली कलाकारों का विशेष योगदान रहा है। पं. रवि शंकर से लेकर आज तक आधुनिक समय के सभी कलाकार विदेशों में सितार वाद्य या अन्य किसी वाद्य की प्रस्तुति देने के लिये जाते रहे हैं और जा रहे हैं। जिसमें सबसे बड़ा योगदान सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिये होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न-विभिन्न प्रकार के समारोहों और सम्मेलनों का रहा है। जैसे भारत में हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन, प्रयागराज, आकाशवाणी की ओर से करवाये जाने वाले सालाना सम्मेलन प्रमुख है। ऐसे अनेकों प्रोग्राम और समारोह हिन्दुस्तान में करवाये जाते हैं। वैसे ही विदेशों भूमि पर भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं जिसमें बड़े-बड़े कलाकारों को हिन्दुस्तान से आमंत्रित किया जाता है। अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, स्वीडन में अधिकतर प्रोग्राम करवाये जाते हैं। उ. विलायत खां का कहना था कि विदेशों में शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते हैं लोग बहुत ही सभ्य होकर सुनते हैं। यहाँ पर सितार वादन करने का अलग मजा है।¹²⁵

वैश्विक स्तर पर शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार पर युवा कलाकार अदनान खां का कहना है कि विदेशों में लोग आजकल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की और अधिक झुकने लगे हैं। भारत में आजकल कार्यक्रम 45 मिनट का होता है वही विदेश में 2 से 3 घंटे का कार्यक्रम रखा जाता है। विदेश में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कोई भी कार्यक्रम हो पूरे हॉल की टिकट बुक हो जाती है। आप को हॉल एक दम लोगों से भरा हुआ मिलेगा।¹²⁶

पं. मनु सीन के अनुसार ICCR की तरफ से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं जहाँ पर हिन्दुस्तानी से कलाकारों को विश्व के कोने-कोने में

¹²⁵साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज, अक्टूबर, 2024

¹²⁶साक्षात्कार अदनान खान- दिसम्बर, 2023

संगीत प्रस्तुतीकरण के लिये भेजा जाता है जो हिन्दु शास्त्रीय संगीत की धरोहर को विश्व विख्यात करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

ICCR के अतिरिक्त प्रवासी भारतीय द्वारा और विदेशियों के द्वारा भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध 1978 क्लीवलैंड त्यागराज उत्सव है जो की पिछले 40 दशकों से चल रहा है। दरबार फैस्टीवल जो लंदन में हर साल होता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विदेशों में होने वाले कुछ समारोहों की चर्चा करेंगे।

4.3.1 क्लीवलैंड त्यागराज फैस्टीवल

यह महोत्सव हिन्दुस्तान से बाहर होने वाला सबसे बड़ा समारोह है जिसमें शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम 12 दिनों तक लगातार चलता है। यह अमेरिका में क्लीवलैंड में करवाया जाता है। 2024 इस महोत्सव का 44वां वर्ष है। यह महोत्सव दुनिया भर में श्रोताओं को आकर्षित करता है। 2012 से इस महोत्सव में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के भी कलाकारों की प्रस्तुति होती है। इससे पहले यहाँ पर कर्नाटकी संगीत के कार्यक्रम होते थे। इस महोत्सव में कलाकारों की प्रस्तुति के साथ-साथ संगीत प्रतियोगिताएँ भी करवाई जाती हैं। इस महोत्सव में कलाकारों की प्रस्तुति के साथ-साथ, संगीत प्रतियोगिताएँ भी करवाई जाती हैं।¹²⁷

4.3.2 तबला महोत्सव

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ताल वाद्यों का यह सबसे बड़ा समागम होता है। यह विश्व भर में प्रसिद्ध है। इस समारोह में नई पीढ़ी के कलाकार चाहे वो गायन, वादन और नृत्य में प्रवीण हो को मंच प्रदान किया जाता है। इसमें वर्कशाप का भी आयोजन किया जाता है। यह महोत्सव अमेरिका के कैलिफोर्निया में 2017 से शुरू हुआ। इस महोत्सव में विश्व के प्रसिद्ध तबला नवाज कार्यक्रम दे चुके हैं।¹²⁸

¹²⁷ <https://en.wikipedia.org>

¹²⁸ festivaloftabla.com

- 19 अगस्त 2017 को पॉल लिविंगस्टोन ने सितार वादन किया था।
- 28- 29 जुलाई 2018 को उस्ताद शाहिद परवेज़ ने सितार वादन किया।
- 5 अगस्त 2019 में पॉल लिविंगस्टोन और जोश फिनबेर्ग ने सितार वादन किया।
- 30 -31 जुलाई 2022 को लीमा वोमंस ने और प्रहलाद चुदासामा ने सितार वादन की प्रस्तुति दी।
- 29 जुलाई 2023 को श्रीमती सीमा गुलाटी द्वारा सितार वादन किया गया।
- 27 – 28 जुलाई 2024 में पॉल लिविंग स्टोन और विषम पाठक द्वारा सितार वादन किया गया।

4.3.3 तिहाई-शप्ततंत्री मीडिया

यह कार्यक्रम कैलिफोर्निया में करवाया जाता है। जिसमें विश्व के प्रसिद्ध कलाकारों का गायन और वादन की प्रस्तुतीकरण होती है यह समारोह 2014 से शुरू किया गया था जो कि पिछले 10 सालों से हो रहा है। सप्ततंत्री मीडिया, संगीत, नृत्य और योगा की अकादमी है। जहाँ पर इन सभी कलाओ का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। जिसका निर्माण 2006 में संतूर वादक पं. श्री मदन ओक द्वारा किया गया। श्री मदन ओक प्रसिद्ध संतूर वादक पद्म विभूषण पं. शिव कुमार शर्मा जी के शार्गिद है।¹²⁹

4.3.4 इंडो अमेरिकन आर्ट कौंसिल

इंडो अमेरिकन आर्ट कौंसिल न्यूयार्क में स्थित है। यहाँ पर कला और साहित्य को बढ़ावा दिया जाता है। समय-समय पर कलात्मक कार्यक्रमों व समारोहों की व्यवस्था की जाती है। यह एक गैर सरकारी संगठन है इसकी स्थापना 1 अगस्त 1998 को की गई थी। यह संस्था फंड एकत्रित करने से लेकर, संगीत की शिक्षा, सरति सम्मेलन, समारोह और स्कूल और कालेजों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार करना, युवाओं को संगीत के प्रति प्रेरित करना और कलाकारों को भारत से बुलाया व कार्यक्रम कराना। यह सब कार्य

¹²⁹ साक्षात्कार मदन ओक , दिसंबर 2023

इसके द्वारा किय जाता है। विश्व विख्यात सरोद वादक उ. अमजद अली खां जैसे कलाकारों ने इसकी शुरुआत 2006 में की थी। जो आज भी बरकरार है हर वर्ष संगीत कार्यक्रम करवाये जाते है। जहाँ पर कलाकारों को बुलाया जाता है।¹³⁰

- 11 जुन 2022 में मेरिकेन हॉल न्यूयॉर्क में मौसिकी कार्यक्रम करवाया गया जिसमें हिदायत खां ने सितार वादन किया।
- 13- 15 अगस्त 2022 को न्यूयार्क के कानेर्गी हॉल में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन किया।

4.3.5 राग माला शिकागो

राग माला शिकागो (अमेरिका) में करवाये जाने वाला कार्यक्रम है जो पूरी रात चलता है। 2013 में शिकागो के सांस्कृतिक विभाग ने इस उत्सव को शुरु किया था। राग-माला रात भर चलने वाला कार्यक्रम है। इसको विश्व संगीत महोत्सव के नाम से भी जाना जाता है जहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम होता है। जिसे सुनने के लिये सैकड़ों संगीत प्रेमी आते है।¹³¹ इस समारोह में कर्नाटकी संगीत का कार्यक्रम भी करवाया जाता है। इस कार्यक्रम को सुनने के लिये बड़ी संख्या में लोग आते है।

- 2019 में सरस्वती रंगानथन द्वारा वीणा वादन किया गया।
- 2021 में गौरव मजूमदार ने सितार वादन किया।
- 2022 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ,पं. इंद्रजीत बैनर्जी, और श्रीमती अनुपमा भागवत ने सितार वादन किया।
- 2023 में गौरव मजूमदार ने सितार वादन किया।
- 2024 में पंडित शुभेंद्र राव ने सितार वादन किया।

¹³⁰ <https://iaac.us>

¹³¹ info@saichicago.org

4.3.6 आसावरी परमोर्मिंग आर्ट्स

यह एक गैर सरकारी संगठन है जिसकी स्थापना 2017 में सैन फ्रांसिस्को (अमेरिका) में की गई थी। इस संस्था का उद्देश्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियों को बढ़ावा देना था। प्रवासी भारतीय और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रेमियों द्वारा इसका निर्माण किया गया और पद्म श्री पं. स्वपन चौधरी (तबला वादक) के कुशल नेतृत्व में यह संस्था कार्यरत है। इस संस्था का मिशन, परंपारिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रदर्शनी और समारोह का प्रबंध करना और युवा वर्ग को संगीत के साथ जोड़ना है। यह कार्यक्रम 3 दिवसीय होता है। इस कार्यक्रम में उ. जाकिर हुसैन, पं. नीलाद्री कुमार, श्रीमति अनुपमा भागवत जैसे उत्कृष्ट कलाकार शिरकत कर चुके हैं।¹³²

- 2019 में अर्जुन वर्मा द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2023 में पं. नीलाद्री कुमार द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2024 में श्रीमति अनुपमा भागवत द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 30 मई 2025 में यह दो दिवसीय कार्यक्रम करवाया जा रहा है।

4.3.7 ICMA द इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एवं आर्ट फाउंडेशन

द इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एवं आर्ट फाउंडेशन अमेरिका में एक संस्था है जिसकी स्थापना 2016 को हुई। जिसको पं. महेश काले जो कि एक विख्यात शास्त्रीय संगीत के गायक है के द्वारा देखा गया सपना था जो कि साकार हुआ। यह एक गैर सरकारी संस्था है जिसके द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं और कलाकारों को समानित किया जाता है। छात्रवृत्तियां भी प्रदान की जाती है, वर्कशाप लगाई जाती है। 23 अप्रैल 2023 को पं. नयन घोष का सितार वादन करवाया गया। (Synereg) प्रोग्राम के माध्यम से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कला व संस्कृति के साथ विदेशियों को अवगत करवाया।¹³³

¹³² ashvariperforming.org

¹³³ info@icmafoundation.org

- 6.5.2018 पंडित पूर्बयन चैटर्जी को मेक्सिकन हेरिटेज प्लाजा में सितार वादन किया।
- 1.8.2020 में ऑनलाइन कार्यक्रम करवाया गया जिसमें जोश फिनबर्ग ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 11.7.2020 में ऑनलाइन कार्यक्रम करवाया गया जिसमें पंडित असीम चौधरी ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2.10.2022 को पंडित पूर्बयन चैटर्जी और राकेश चौरसिया के साथ जुगलबंदी प्रस्तुत की गई।
- 23.4.2023 को पं. नयन घोष का सितार वादन करवाया गया। (Synereg) प्रोग्राम के माध्यम से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कला व संस्कृति के साथ विदेशियों को अवगत करवाया।

4.3.8 इंडियन फाईन आर्ट्स अकादमी सेन डियागो

उत्तरी अमेरिका में इस संस्था द्वारा पिछले 7 वर्षों से सालाना युवा मेला करवाया जाता है। जहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली सभी विद्याओं को प्रस्तुत किया जाता है। गायन, वादन व नृत्य की प्रतियोगिताएँ करवाई जाती हैं। इस वर्ष 30 अगस्त से 1 सितम्बर 2024 को यह कार्यक्रम करवाया जा रहा है।¹³⁴ इस संस्था में संगीत और नृत्य के कार्यक्रम करवाये जाते हैं।

- 13.4.2025 को करवाया गया संगीत कार्यक्रम भारत रत्न स्वर्गीय पं रवि शंकर जी को समर्पित किया गया था। जिसमें विश्व विख्यात सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खां नाई आपने दोनों पुत्रों अमान और आयन के साथ प्रदर्शन किया।

4.3.9 सेंट लुइस इंडियन म्यूजिक फेस्टिवल USA

सूर्या परमोमिंग आर्ट्स के द्वारा यह समारोह करवाया जाता है। पिछली डेढ़ दशकों से यह कार्यक्रम करवाया जा रहा है। जिसमें हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ

¹³⁴ <https://www.indianfinearts.org>

कर्नाटकी संगीत भी प्रस्तुत होता है। इस संस्था द्वारा वर्ष भर में बहुत सारे कार्यक्रम करवाये जाते हैं। इस वर्ष 6 अप्रैल 2024 को 17वां समारोह करवाया गया। नृत्य फैस्टीवल, यंग म्यूजिक शो, यंग डांस शो, संत लुई इंडियन म्यूजिक फैस्टिवल, अमेरिकन नृत्य फैस्टीवल, योगा डे, हॉर्मनी इन म्यूजिक यह कार्यक्रम इस संस्था द्वारा करवाये जाते हैं।¹³⁵

- 2011 में उ. इमारत खां द्वारा इस कार्यक्रम में सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 8.10.2023 को मॅन्चेस्टर में उस्ताद हाफिज़ बाले खां और उस्ताद रईस बाले खां द्वारा सितार वादन किया गया।

4.3.10 छंदयान सेंटर फॉर क्लासिकल म्यूजिक

एक गैर सरकारी संगठन है जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, नृत्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार व संरक्षण का कार्य करता है। 1984 में कलकत्ता में इसका जन्म हुआ। 1998 में अमेरिका में एक गैर सरकारी संगठन है। इसकी मुख्य शाखा न्यूयॉर्क में स्थित है। अमेरिका के अलग-अलग शहरों कनाडा और भारत में भी इसकी शाखाएँ हैं। इस संगठन के द्वारा शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। उ. विलायत खां, उ. शाहिद परवेज़, उ. निशात खां, उ. शुजात खां जैसे धुरंदर कलाकारों ने यहां प्रस्तुतियाँ दी हैं। यह कार्यक्रम पुरी रात चलता है। विशेष त्यौहारों और अवसरों पर संगीत प्रस्तुतियाँ करवाई जाती हैं। यहाँ पर मैहर घराने के प्रसिद्ध कलाकार पार्थ बोस के द्वारा सितार वादन की शिक्षा भी दी जाती है। (न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, मायरलैंड, पैनसिलवेनिया) में इसकी शाखाएँ हैं।¹³⁶

- 6.5.2000 में कृष्णा भट्ट, डेजी पारादीस, केवी महाबाला द्वारा सितार वादन किया गया।
- 28.4.2001 में उस्ताद शुजात खां ने सितार वादन किया।
- 4.5.2001 में उस्ताद शुजात खां ने सितार वादन किया।

¹³⁵ <https://www.souryaperforming.org>

¹³⁶ <https://www.chhandaryan.org>

- 3.5.2003 में उस्ताद विलायत खां ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 8.5.2004 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 14.5.2005 में पं. बुद्धादित्य मुखर्जी ने सितार वादन किया।
- 13.5.2006 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी और प्रतीक हलदर ने सितार वादन किया।
- 12.5.2007 में उस्ताद इमरत खां ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 8.5.2010 में पंडित कुशल दास ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2011 में ऋषभ रिखी राम शर्मा ने सितार वादन किया
- 2012 में उस्ताद शाहिद परवेज़ ने सितार वादन किया
- 2013 में उस्ताद निशात खां ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 6.5 2017 में पंडित कुशल दास ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 11.5.2018 में श्रीमति अनुपमा भागवत द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 12.5.2018 में श्रीमति अनुपमा भागवत ने सितार वादन किया।
- 9.3.19 में ऋषभ रिखी राम शर्मा ने सितार वादन किया
- 18.5 2019 में पंडित शुभेंद्र राव ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 8.5.2021 में श्रीमती मीता नाग ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 19.2.2022 में दीप शंकर भट्टाचार्य ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 10.9.2022 में उस्ताद शाहिद परवेज और उस्ताद हिदायत खां ने सितार वादन की प्रस्तुतियां दी।
- 13.10.2024 में अभिक मुखर्जी ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 26.4.25 को पं. रविंदर नारायण गोस्वामी ने सितार वादन किया
- 26.7.2025 को कल्याणजीत दास द्वारा सितार वादन किया जयेगा।

4.3.11 ब्रुकलिन राग मैसिव फेस्टिवल

इस संगठन का जन्म 2012 में न्यूयॉर्क में हुआ। ब्रुकलिन राग मैसिव फेस्टिवल में विविध संगीतकारों और संगीत प्रेमियों का समुदाय शिरकत करता है। यह एक गैर सरकारी संगठन एवं संस्था है जो कि संगीतकारों द्वारा बनाया गया एक ऐसा सांगीतिक संगठन है जो कि संगीत शैलियों और परम्पराओं को लेकर विकासशील हो रहा है। यह समारोह लिंकन सेंटर, ब्रुच गार्डन फेस्टिवल, पायनियर वर्क्स, द म्यूजिक ऑफ मॉडर्न आर्ट, द कैनेडी सेंटर आदि स्थानों में प्रदर्शित किया जा चुका है। यह अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति सहयोग की वैश्विक स्तर पर परिदृश्यता करता है। इस संगठन द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी दी जाती है। गायन, वादन की शिक्षा के साथ सम्भाषण व वर्कशाप भी लगाई जाती है। सितार वादन की शिक्षा अभिक मुखर्जी द्वारा दी जाती है जो कि इटावा घराने के प्रसिद्ध उ. विलायत खां जी के शिष्य रहे हैं। राग मकाम आरकेस्ट्र भी इस संगठन द्वारा बनाया गया है जिसमें हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वाद्य के साथ पश्चिमी वाद्य भी प्रयोग होते हैं।¹³⁷

- 13.9.2018 के जी वेस्टमैन को नील मुर्गई के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2.3.2019 को नील मुर्गई के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 20.3.2021 रागिनी फेस्टिवल श्रीमती रूपा पनेसेर के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 7.10.2022 को मेघा रावत के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 11 .5.2023 को पं. नयन घोष के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 13 .7.2023 को उ. हिदायत खां के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 30.11.2023 को colours of raga कार्यक्रम करवाया गया जिसमें अभिक मुखर्जी के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 6.3.2024 को रागिनी फेस्टिवल करवाया गया जिसमें श्रीमति सीमा गुलाटी ने सितार वादन प्रस्तुत किया।

¹³⁷ <https://www.brooklynargamarive.org>

- 21.8.24 को नील मुर्गई के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 22.7 24 को रासायात्रा कार्यक्रम करवाया गया और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वाद्ययंत्रों के साथ वृन्दवादन किया गया।
- 8.12.2024 को नील मुर्गई के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 12.6.24 को अभिक मुखर्जी के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 15.3.2025 को नील मुर्गई के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 19.4.25 को अभिक मुखर्जी के द्वारा सितार वादन किया गया।

4.3.12 राग माला टोरंटो

राग माला टोरंटो पिछले 44 वर्षों से संगीत के प्रचार-प्रसार व संरक्षण में कार्यरत है। 1981 में यह संगठन बना था। यह एक गैर सरकारी संगठन है। जो 44 वर्षों से संगीत समारोह और सम्भाषण करवा रहा है। राग माला टोरंटो के नाम से यूट्यूब चैनल भी चल रहा है। सारावारी राय चौधरी फैस्टिवल ऑफ म्यूजिक आप के द्वारा ही आयोजित किया गया। स्वर सम्राट फैस्टीवल 2020-21 में भी करवाया गया। उ. विलायत खां, पं. शिव कुमार शर्मा, उ. विस्मिलाह खां, पं. हरि प्रसाद चौरसिया, उ. जाकिर हुसैन, पं. बुद्धादित्य मुखर्जी, उ. शाहिद परवेज़, उ. हिदायत खां और पश्चिमी सितार वादक जोश फिनबर्ग सितार की प्रस्तुती दे चुके हैं।¹³⁸

- 1982 में उ उस्मान खां ने सितार वादन किया।
- 1983 में उ. इमारत खां ने सितार वादन किया।
- 1984 में पं निखिल बैनर्जी ने सितार वादन किया।
- 1987 में उ. विलायत खां ने सितार वादन किया।
- 1990,1995,2017,2022 में उ. शाहिद परवेज़ ने सितार वादन किया।

¹³⁸ info@raagmala.ca

- 1991, 1992, 1993, 1996, 1998, 2000, 2001, 2003, 2004, 2005, 2006, 2011, 2012, 2014, 2024 में उ. शुजात खां ने सितार वादन किया।
- 1997, 2002, 2016, 2019, 2023 में पं. बुद्धादित्य मुखर्जी ने सितार वादन किया।
- 1998 में पं मणिलाल नाग ने सितार वादन किया।
- 1999 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2007 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2008 में नीरज प्रेम ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2009, 2022 में इरशाद खां ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2013, 2017, 2024 में हिदायत खां ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2015 में पं. नीलाद्री कुमार द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2020 में कल्याणजीत दास द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2023 में इंदरजीत राय चौधरी और श्रीमती मीता नाग द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2025 में श्रीमती रूपा पनेसर द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।

4.3.13 राग माला शिकागो

यह एक वार्षिक, निःशुल्क, पूरी रात चलने वाला भारतीय शास्त्रीय संगीत महोत्सव है जो शिकागो में शहर के विश्व संगीत महोत्सव के एक भाग के रूप में आयोजित किया जाता है। इस महोत्सव में विभिन्न कलाकारों और समूहों द्वारा हिंदुस्तानी (उत्तर भारतीय) और कर्नाटक (दक्षिण भारतीय) शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति दी जाती है। इसमें दिन और रात के विशिष्ट समय पर रागों को सुनने का अवसर मिलता है। यह कार्यक्रम शिकागो सांस्कृतिक केंद्र के प्रेस्टन ब्रैडली हॉल में आयोजित किया जाता है।

- 2007 में पं रवि शंकर और अनुष्का शंकर ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2010 में अनुष्का शंकर ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2012 में पं रवि शंकर ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2021 , 2023 में गौरव मजुमदार ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 में पं पूर्बयन चैटर्जी, श्रीमती अनुपमा भागवत ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2024 में शुभेंद्र राव , पं. पार्थ बोस ने सितार वादन प्रस्तुत किया।

4.3.14 इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सोसाईटी वैनकुवर

2009 में अखिल जोवनपुरा ने इस सोसाईटी का गठन किया। यह एक गैर सरकारी संगठन है। जिसका उद्देश्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और नृत्य का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ संगीत शिक्षण व्यवस्था भी स्थापित करना है। इस संस्था द्वारा बहुत सारे शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। संगीत बैठके, सम्भाषण व वर्कशाप सम्पन्न करवाई जाती है।¹³⁹

- 2016 श्रीमती अनुपमा भगवत ने सितार वादन प्रस्तुत किया गया।

4.3.15 मुसतरी बैगम फैस्टीवल

सितम्बर माह में यह कार्यक्रम करवाया जाता है। बेगम मुसतरी एक बहुत ही प्रसिद्ध गजल गायिका थी जो 1973 में वैनकुवर बीसी में भारत से आई थी। उन्हीं की याद में यह कार्यक्रम करवाया जाता है। इस कार्यक्रम में भारत और कनाडा के विख्यात कलाकारों को बुलाया जाता है। 2012 में यह फैस्टीवल शुरू हुआ था। इस वर्ष 13वां वार्षिक महोत्सव 28 सितम्बर 2024 को करवाया जा रहा है। पं. हरविंदर शर्मा जी और उनके शिष्य शरनजीत सिंह मांड ने सितार पर जुगलबंदी प्रस्तुत की थी।¹⁴⁰

- 2012 में मोहम्मद असानी ने सितार वादन किया।

¹³⁹ www.icmsv.org

¹⁴⁰ <http://mbjfestival.ca>

- 2014, 2015, 2016, 2017 में शरनजीत सिंह मांड ने सितार वादन किया।
- 2018 में पं. हरविंदर शर्मा जी और उनके शिष्य शरनजीत सिंह मांड ने सितार पर जुगलबंदी प्रस्तुत की थी।
- 20.11.24 को पं. नीलाद्रि कुमार ने टोकियो में सितार वादन किया।

4.3.16 स्टॉकहोम संगीत सम्मेलन

स्टॉकहोम संगीत सम्मेलन स्वीडन में होने वाला हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बहुत बड़ा कार्यक्रम है। यह 2007 में संगीत प्रेमियों के द्वारा शुरू किया गया था। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ नृत्य भी प्रस्तुत किया जाता है। के जी वेस्टमैन ने यह सभा शुरू की थी। इसके यह महोत्सव सितम्बर और अक्टूबर माह में करवाया जाता है।¹⁴¹

- 2011, 2013, 2015 में के जी वेस्टमैन ने सितार वादन किया था।
- 2012 संजय गुहा ने सितार वादन किया।
- 2014 में स्टैन ग्रिमस्तद और के जी वेस्टमैन ने सितार वादन किया।
- 2015, 2016 उ. शुजात खां ने सितार वादन किया।
- 2017 में पंडित विश्वमोहन का वादन।
- 2018 ने पं. रवींद्र नारायण गोस्वामी ने सितार वादन किया।
- 2019 ने श्रीमती अनुपमा भागवत ने सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2021 ने अशरफ खां ने सितार वादन किया।
- 2022 ने पंडित नीलाद्री कुमार और उ. जाकिर खां का वादन।
- 2023 ने श्रीमती मीता नाग का सितार वादन।
- 1.1.2024 को बुद्धा मंदिर में संगीत समारोह में सावन जोशी द्वारा सितार वादन किया।

¹⁴¹ www.stockhalsangeet.ae

- 20.8.2024 को मित्सुकोशी थिएटर में संगीत समारोह में सावन जोशी द्वारा सितार वादन किया।
- 2024 में रोहिणी सहज्याल का सितार वादन।

4.3.17 इंग्लैंड में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

इंग्लैंड में भी बड़ी संख्या में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते हैं। जो संस्थाओं या फिर संगठनों द्वारा करवाये जाते हैं। इंग्लैंड में भारतीय मूल के सितार वादक भी रहते हैं और विदेशी सितार वादक भी जो समय – समय पर अपने संगीत कार्यक्रम देते रहते हैं।

- 1968 में उ. विलायत खां ने सितार वादन की प्रस्तुतियां दी।
- 1981 में कुईन एलिजाबेथ हॉल में दी।
- 1987 में उ. विलायत खां Wembley conference centre में सितार वादन किया।
- 1993 में निखिल बैनर्जी ने सितार वादन की प्रस्तुतियां दी थीं।
- 1997 में पं रवि शंकर ने सितार वादन किया।
- 2000 में पं रवि शंकर ने कानेगी हाल में सितार वादन किया।
- 2002 श्रीमती अनुष्का शंकर ने रॉयल अल्बर्ट हॉल में सितार वादन किया।
- 2004 में हिदायत खां ने रॉयल अल्बर्ट हॉल में सितार वादन किया।
- 2005 में उ. शाहिद परवेज़ ने इंग्लैंड के दौरे पर सितार वादन किया। और अनुष्का शंकर द्वारा भी कार्यक्रम दिये जाते थे।
- 2011 में पीपल सेटर लेस्टर में उ. धरमवीर सिंह ने सितार वादन किया।
- 2017 में साउथ एशियन आर्ट्स उ. धरमवीर सिंह ने सितार वादन किया।
- 2019 को निसकाम सेवा संघ उ. धरमवीर सिंह ने सितार वादन किया।
- 2021 में उ. निशात खां ने कुईन एलिजाबेथ हॉल और लंदन जैज़ फेस्टिवल में सितार प्रस्तुति दी।

- 2021 में नज़राना समारोह सेटर लेस्टर में उ. धरमवीर सिंह ने सितार वादन किया।
- 2022 में सितार संगीत सभा उ.धरमवीर सिंह ने सितार वादन किया।
- 2022 में नेहरू सेटर लेस्टर में उ. धरमवीर सिंह ने सितार वादन किया।
- 2023 में सितार म्यूजिक यूनिवर्सिटी ऑफ लेस्टर में मेहबूब नदीम ने सितार वादन किया।
- 2023 में सूर्या परफॉर्मिंग आर्ट्स द्वारा मैचेस्टर में सितार वादन करवाया गया।
- 2023 में जुगलबंदी कार्यक्रम में रूपा पनेसर ने सितार वादन किया।
- 2023 में संजय रिखी राम ने भारती विद्या भवन में सितार वादन किया।
- 2023 में द शेयर वलुड में कालेम अल्फोरड और जोनथन मयेर ने सितार वादन किया।
- 2023 में सुर ताल में आकाश परेकर ने सितार वादन किया।
- 2024 में सितार म्यूजिक सोसाइटी ,रोयल अल्बर्ट हॉल में उ, निशात खां ने वादन किया।

4.3.18 लंदन सिम्पनी आर्केस्ट्रा

यह लंदन स्थित सोसाइटी है जहाँ पर विश्व संगीत को प्रोत्साहित किया जाता है। प्रतिवर्ष यहां पर संगीत कार्यक्रम करवाये जाते हैं इस वर्ष लंदन में सितार वादक श्रीमति रूपा पनेसर 18 सितंबर 2024 को सितार वादन प्रस्तुत कर रही हैं।¹⁴²

4.3.19 दरबार संगीत सम्मेलन

दरबार महोत्सव लंदन, इंग्लैंड में आयोजित होने वाला एक वार्षिक भारतीय शास्त्रीय संगीत महोत्सव है। हिंदुस्तानी (उत्तर भारतीय) और कर्नाटक (दक्षिण भारतीय)

¹⁴² <https://www.iso.co.uk>

शास्त्रीय संगीत दोनों को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित एक महत्वपूर्ण उत्सव है। 2017 में, इसमें भारतीय शास्त्रीय नृत्य भी शामिल किया गया। इसका उद्देश्य स्थापित कलाकारों और उभरती प्रतिभाओं को प्रस्तुत करना है। संगीत समारोहों के अलावा, इस महोत्सव में भारतीय शास्त्रीय कलाओं की समझ और प्रशंसा बढ़ाने के लिए अक्सर कार्यशालाएं, व्याख्यान और चर्चाएं भी शामिल होती हैं।

लाइव संगीत के साथ योग, श्वास क्रिया और ध्वनि स्नान जैसे स्वास्थ्यवर्धक सत्र भी आयोजित करते हैं। दरबार महोत्सव की स्थापना 2005 में लीसेस्टर में हुई थी। इसकी स्थापना संदीप विरदी ने अपने पिता, गुरमीत सिंह विरदी, जो एक सम्मानित तबला और शिक्षक थे, के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में की थी। पिछले कुछ वर्षों में, लीसेस्टर में अपनी शुरुआत से लेकर यह लंदन में एक प्रमुख कार्यक्रम बन गया है। यह महोत्सव मुख्यतः लंदन अक्टूबर और नवंबर में आयोजित होता है। आयोजन स्थलों में बारबिकन सेंटर और साउथबैंक सेंटर जैसे प्रतिष्ठित स्थान शामिल हैं।

वर्ष के अन्य समय में तथा विभिन्न स्थानों, जैसे सेंट मार्टिन इन द फील्ड्स, में छोटे संगीत समारोहों और कार्यक्रमों का भी आयोजन करते हैं। दरबार संगीत सम्मेलन विदेश की धरा पर पिछले 19 वर्षों से हो रहा है। इस में संगीत जगत के प्रसिद्ध व विख्यात कलाकार दरबार संगीत फैस्टीवल में अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं। दरबार फैस्टीवल बहुत ही बड़े स्तर पर करवाया जाता है।¹⁴³

- 2008 में उ. इरशाद खां ने सुरबहार का वादन किया।
- 2009 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन किया।
- 2010 में उ. धर्मवीर सिंह और पं कुशाल दास ने सितार वादन किया।
- 2011 में आकाश परेकर और रुपा पनेसर ने सितार वादन किया।
- 2012 में उ. शुजात खां ने सितार वादन किया।

¹⁴³ www.darban.org

- 2013 में श्रीमती अनुपमा भागवत ने सितार वादन किया।
- 2014 में पंडित नीलाद्री कुमार ,मेहबूब नदीम ने सितार वादन किया।
- 2015 में श्रीमती मीता नाग ने सितार वादन किया।
- 2016 में श्रीमती रूपा पनेसर, पंडित निलाद्री कुमार और संस्कृति वाहने ने सितार वादन किया।
- 2017 में उ. निशात खां और शाहना बनेर्जी ने सितार वादन किया।
- 2018 में उ. शाहिद परवेज़ ने सितार वादन किया।
- 2019 में पं. बुद्धादित्य मुखर्जी ने सितार वादन किया।
- 2020 में उ. शाहिद परवेज़, उ. धर्मवीर सिंह और जसदीप सिंह देगुन ने सितार वादन किया।
- 2021 में श्रीमती रुपा पनेसर ने सितार वादन किया।
- 2022 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ,श्रीमती रुपा पनेसर , संस्कृति वाहने ने सितार वादन किया।
- 2023 में श्रीमती अनुपमा भागवत ने सितार वादन किया।
- 2024 में उ. धर्मवीर सिंह ,उ.शाकिर खां और जसदीप सिंग देगुन ने सितार वादन किया।
- 2025 में उ. शाहिद परवेज़ द्वारा किया जायेगा।

4.3.20 पीटर्सबर्ग में सितार

यह एक वार्षिक गैर-व्यावसायिक संगीत समारोह है जो पहली बार 2008 में एक सितार वादक अलेक्सांद्र कोनांचुक के मार्गदर्शन में संगीतकारों के एक समूह द्वारा और सेंट पीटर्सबर्ग राज्य रोएरिच परिवार संग्रहालय-संस्थान, सेंट के सहयोग से आयोजित किया गया था। पीटर्सबर्ग राज्य रंगमंच और संगीत संग्रहालय, और सेंट पीटर्सबर्ग, रूस में

भारत का महावाणिज्य दूतावास है। 2011 से सेंट पीटर्सबर्ग राज्य रोएरिच परिवार संग्रहालय-संस्थान उत्सव का आयोजक बन गया है। इस उत्सव को सेंट पीटर्सबर्ग की संस्कृति समिति का भी समर्थन प्राप्त है। उत्सव एवं कार्यक्रम में भारतीय और रूसी दोनों कलाकारों की भागीदारी के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य के और संगीत कार्यक्रम, भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों की प्रदर्शनियाँ, विषयगत कला प्रदर्शनियाँ, भारतीय शास्त्रीय संगीत की मूल बातें और सितार वाद्य के लिए समर्पित व्याख्यान और कार्यशालाएँ शामिल हैं। महोत्सव कार्यक्रम पूरे वर्ष उन संगठनों के कॉन्सर्ट हॉल में होते हैं।¹⁴⁴ अलेक्सांद्र कोनानचुक, सेर्गेई गैसानोव, लारिसा रागोसा, सर्गेई डोनचेंको, व्लादिमीर येलिसेयेव, विक्टर खां रूसी सितार वादकों द्वारा सितार वादन किया जाता रहा है।

- 2008 में अलेक्सांद्र कोनानचुक रूसी कलाकार द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2010 में सुभाष प्रेम गिरि ने सितार वादन किया।
- 2011 , 2012, 2013 में अलेक्सांद्र कोनानचुक द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2014 में उ. रफ़ीक़ खां ने सितार वादन किया।
- 2015 में उ. छोटे रहिमत खां द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2016 में पं कुशल दास ने सितार वादन किया।
- 2017 में स्टीफन क्रिस्टानोवा, अलेक्सांद्र कोनानचुक द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2018 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी, अलोकेश चंद्रा द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2019 में समंवय सरकार और सेबेस्टियन द्रेयर द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2022 में अलोकेश चंद्रा द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2023 में रूसी कलाकारों द्वारा प्रदर्शन दिया गया।

¹⁴⁴ indianclassical.net

- 2024 में अलेक्जेंडर कोनचुक ने सितार वादन किया।

4.3.21 क्लासिकल ट्रेडिशनल इंडियन म्यूजिक कोंन्सेर्ट

यह कार्यक्रम योगा केन्द्र (आश्राम द योगा शिवानंदा) द्वारा करवाया जाता है। जिसमें हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। यह केन्द्र फ्रांस सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। 2017 में फ्रांस नागरिक निकोलस डेलेगड जो कि एक सितार वादक है ने इस कार्यक्रम में सितार वादन की प्रस्तुति दी।¹⁴⁵

4.3.22 फ्रांस में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

नमस्ते फ्रांस 2023 - यह कार्यक्रम 2010 में से भारतीय एम्बेसी द्वारा करवाया गया था। यह महोत्सव 15 महीने तक चलाया गया था। इस में नृत्य, संगीत, साहित्य, रंगमंच, सिनेमा, योग आदि भारतीय लोकाचार की विविध झलकियाँ दिखाई गईं। भारत और फ्रांस के 25 वर्ष की साझेदारी के उपलक्ष्य पर जिसको भारतीय सरकार और Ministry of Culture द्वारा यह कार्यक्रम फिर करवाया गया था जिसमें भारतीय कलाओं गायन, वादन, नृत्य, चित्रकला आदि को प्रदर्शित किया गया था।¹⁴⁶ विश्व विख्यात सरोद वादक उ. अमजद अली खां ने मंच प्रदर्शन किया।

- 2010 में उ. शुजात खां ने सितार वादन किया था।
- 31.1.20. में श्रीमती अनुष्का शंकर ने लेयोन के ग्रांड थिएटर में सितार वादन किया।
- 2023 में चार्ल्स जक्कोतिन ने सितार वादन किया था।
- 4.4.2024 को पेरिस में सिटी डे ला मुसिक में श्रीमती अनुष्का शंकर सितार वादन किया।
- 5.4.24 को ओपेर डी डिजान में श्रीमती अनुष्का शंकर सितार वादन किया।

¹⁴⁵ <https://sivananda.org>

¹⁴⁶ www.indmbassytallim.gov.in

4.3.23 जर्मनी में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों को एमबैसी द्वारा निर्देशित किया जाता है। अपनी प्राचीन और ऐतिहासिक धरोहर को विदेशों में संजो कर रखने व प्रचार-प्रसार के लिये सितार वादन के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। जर्मनी के बर्लिन में स्थापित ICCR सेंटर है। जहां पर समय समय पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं।¹⁴⁷

- 1968 पंडित देबू चौधरी ने सितार वादन किया।¹
- 1971 में उ. विलायत खां ने मे जर्मनी में सितार वादन का प्रदर्शन किया।
- 1993 में उ. निशात खां ने जर्मनी में सितार वादन का प्रदर्शन किया।
- 3.8.2015 को असद खां ने सितार वादन किया।
- 5.11. 2013 को सुप्रतीक साई गुप्ता और इंद्रनील मलिक द्वारा सितार वादन किया गया।
- 25.5.2016 को भारतीय दूतावास द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम मे निकोलस डेलेगड ने सितार वादन किया।
- 23.8.2016 को अनफोल्डिंग इवनिंग मेलोडीज़ ऑन सितार" में दर्शक सेनिया घराने के युवा पीढ़ी के सितार वादक डॉ. शुभ्रदीप पाठक ने सितार वादन किया।
- 77.11.2016 बर्लिन में भारतीय दूतावास को तीन प्रसिद्ध कलाकारों, पंडित देबप्रसाद चक्रवर्ती, डॉ. देबोज्योति चक्रवर्ती और आशीष पॉल ने सितार वादन किया।
- 23.5.2019 में कल्याण जीत दास का सितार वादन करवाया गया।
- 27.11.2019 में इंदरजीत रॉय चौधरी ने सितार वादन किया।
- 18.3.2020 में सुप्रतीक गुप्ता ने सितार वादन किया।

¹⁴⁷ <https://www.indianembassybeulin.gov.in>

- 1.1.2021 को शिराज फिलहारमनी श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया।
- 5.11 2021 को श्रीमती अनुष्का शंकर ने हैम्बुर्ग में सितार वादन किया।
- 2021 में हैदेलबर्ग में फिल्म फेस्टिवल श्री अशोक नैयर द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2022 में अकादमी ऑफ मन्हेम में श्री अशोक नैयर द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2022 में म्यूनिख में श्री अशोक नैयर द्वारा सितार वादन किया गया।
- 22.5.2024 को रासा संगीत समारोह में निकोलस डेलेगड ने सितार वादन किया।
- 23.5.25 में कल्याण जीत दास और संदीप बैनर्जी ने सितार वादन प्रस्तुत करेंगे।

4.3.24 इटली में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा भारतीय संगीत समारोह करवाये जाते हैं। संगीत कार्यक्रमों का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय दक्षिण-एशियाई अध्ययन संस्थान (आईएसएस) और आईएसएमईओ, भूमध्य और पूर्व पर अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन संघ द्वारा भारतीय दूतावास के संरक्षण में जाता है। कुछ निजी संगठन भी हैं जो हिन्दुस्तानी सभ्यता और संस्कृति को विदेशी धरा पर प्रफुल्लित कर रहा है। उनमें से Indian Association of Northern Italy Milan संस्था है। इस संस्था द्वारा भारतीय त्यौहार, पर्व, राष्ट्रीय दिवसों को जोर-शोर से मनाया जाता है। सांस्कृतिक प्रोग्रामों के अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत व नृत्य के कार्यक्रम भी करवाये जाते हैं।¹⁴⁸ स्पिक मैके भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार- प्रसार का काम कर रहा है।

- 1973 में उ. विलायत खां ने सितार वादन किया।
- 1994,1996 .1999 मे उ. निशात खां ने सितार वादन किया।
- 19.6.2013 में उ. शाहिद परवेज वेनेज़िया में सितार वादन किया।

¹⁴⁸ Linktree/iani.milan

- 15 जून 2018 को रोम में वैलिसेलियाना लाइब्रेरी के बोरोमिनी सैलून में निकोलस डेलाइग (सितार) और निहार मेथा (तबला) के साथ भारतीय संगीत समारोह 'रासा' करवाया गया।
- 2021 में मिलान मे इमरान खाँ ने सितार वादन किया।

4.3.25 रशिया में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

- स्वरंजलि म्यूजिक ऑफ सोल यह कार्यक्रम भारत और रूस एम्बैसी द्वारा करवाया जाता है। 2016 को यह आरंभ हुआ था। जवाहर लाल नेहरू क्लचरल सेंटर द्वारा यह संचालित किया जाता है। यह हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत व नृत्य का पहला कार्यक्रम था जो दो सभ्यताओं के बीच करवाया जाता है।¹⁴⁹
- 1994 में श्री गणेश पूजा उत्सव में उ. निशात खां द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2016 डॉ. सुधीर माथुर द्वारा रशियन फ़्यूज़न म्यूजिक समारोह में सितार वादन किया गया।
- 2018 में पंडित पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन किया।
- 2021 में अलंकार कार्यक्रम ICCR द्वारा करवाया गया अलोकेश चंद्र ने सितार वादन किया।
- 2023 को पं. पूर्बयन चैटर्जी ने आपने बैण्ड क्लास्सीकूल के साथ सितार वादन किया।
- फेस्टीवल ऑफ इंडिया इन रशिया यह कार्यक्रम रूस द्वारा सितम्बर 2018 में आरंभ किया गया और 31 मार्च 2019 को समाप्त हुआ। यह हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अब तक की सबसे बड़ी वर्कशॉप और समारोह था जिसमें शास्त्रीय, उपशास्त्रीय संगीत शास्त्रीय नृत्य आदि करवाया गया।¹⁵⁰

¹⁴⁹ [Indianembassy.moscow.gov.in](https://indianembassy.moscow.gov.in)

¹⁵⁰ <https://indianembassy.moscow.gov.in>

4.3.26 आस्ट्रेलिया में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

आस्ट्रेलिया में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रोग्राम करवाये जाते हैं। जिनमें कार्तिक फेस्टीवल, यूनिवर्सिटी ऑफ मैलबार्न कान्सर्ट सतगुरू जगजीत सिंह संगीत बैठक, मैलबार्न इंटरनैशनल फेस्टीवल ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक 2014, सितार फेस्टीवल ऑफ इण्डियन आर्ट्स है। स्वर राग फेस्टीवल 2019, संगीत संध्या 2009, म्यूजिक ऑप इण्डिया (2009), Riyaz Session, Sound of String (2011), राग रंग (2013), संगम, डरबीन संगीत सभा (2010) नामक कार्यक्रमों की सूची है जो आस्ट्रेलिया में करवाये जाते हैं और रियाज सेशन नामक वर्कशाप का आयोजन 2014 से हो रहा है। मैलबार्न हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सोसाईटी का प्रोग्राम 24 अगस्त को करवाया जा रहा है। मैलबार्न इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सोसाईटी द्वारा यह संस्था सितार वादकों को हर वर्ष भारत से कार्यक्रम की प्रस्तुति के लिये आमंत्रण देती है।¹⁵¹

- 2019 में मैलबार्न इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सोसाईटी के कार्यक्रम में पं. पूर्बयन चैटर्जी द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2022 में यात्रा सितार बैण्ड द्वारा प्रदर्शन किया गया।
- 2024 में उ. शहीद परवेज़ मैलबार्न समारोह में सितार वादन किया।
- 2024 में उ. शुजात खां ने किस-एफ एम डांस म्यूजिक आस्ट्रेलिया में सितार वादन किया।
- 2024 पं. सुगतो नाग द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2024 में पं सुशांत चौधरी द्वारा स्वरंजलि कार्यक्रम में सितार वादन किया गया।

4.3.27 सिडनी ऑपेरा हाऊस

इसकी स्थापना 1973 में सिडनी आस्ट्रेलिया में की गई थी। अलग-अलग सभ्यता संस्कृति के साथ मेल जोल बढ़ना व कला को प्रोत्साहित करना ही इसका उद्देश्य रहा है।

¹⁵¹ www.mhcms.org

इसी के अन्तर्गत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम भी करवाये जाते हैं। अभी हाल ही में 7 जुलाई 2024 को तबला सम्राट उ. जाकिर हुसैन जी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसको गायन वादन व तबला की त्रिवेणी का नाम दिया गया।¹⁵²

- 2000 में पं रवि शंकर जी के 90 जन्म दिवस के उपलक्ष पर कार्यक्रम करवाया गया जिसमें पं रवि शंकर जी और श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया ।
- 2008 में श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया ।
- 2010 में उ. असद अली खां ने सितार वादन किया।
- 2015 में परम्परा कार्यक्रम प्रदर्शित किया गया।
- 2018 में श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया ।
- 13.1.24 को नेव साउथ वेल्स में श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया ।
- 2024 श्रीमती अनुष्का शंकर और पं हरविंदर शर्मा ने सितार वादन किया।

4.3.28 न्यूजीलैंड में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

हिन्दुस्तानी मूल के प्रवासी भारतीयों ने न्यूजीलैंड में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। न्यूजीलैंड में शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर करवाये जाते हैं। मडाला, वोमड फैस्टीवल (2018), नार्थ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक (2017), आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा द वलिसफुल सडे (2017), रागा संगीत (2016), परम्परा (2015), हाऊस कान्सर्ट, जुगलबंदी (2014) आदि कार्यक्रमों को करवाया जाता है। जहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन व नृत्य की प्रस्तुति होती है। यह कार्यक्रम, आकलैंड, पराऊ, हैमिलटन में करवाये जाते हैं। इन कार्यक्रमों में सितार वादन की प्रस्तुति भी देखने सुनने को मिलती है।¹⁵³

- 2014 में जुगलबंदी कार्यक्रम में शलिना संदरन द्वारा सितार वादन किया गया।

¹⁵² sydneyoperahouse.com

¹⁵³ lcmnz.wikispaces.com

- 2016 में Melodic moments में लेस्टर सिल्वर ने सितार वादन किया।
- 2017 को ब्लैक हाऊस सेंटर में सरगम स्कूल ऑफ इंडियन म्यूजिक के समारोह में पं हरविंद्र शर्मा ने सितार वादन किया।
- 2018 को मडला कार्यक्रम में लेस्टर सिल्वर और अखिल मधुर ने सितार वादन किया।
- 2017 में The Blissfull Sunday कार्यक्रम करवाया गया जिसमें लेस्टर सिल्वर ने सितार वादन किया।
- 2018 में womad festival में अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया।
- 2019 में मडाला, वोमड फैस्टीवल पं हरविंद्र शर्मा ने सितार वादन किया।
- 2024 में नाद म्यूजिक समारोह में श्रीमती अनुपमा भागवत ने सितार वादन किया।
- 2024 में House concert of Indian music में लेस्टर सिल्वर ने सितार वादन किया।

4.3.29 स्विट्ज़रलैंड में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक, क्लासिकल इंडियन आर्टिस्ट इन स्विट्ज़रलैंड, का कार्यक्रम भी करवाया जाता है। संगीत शिक्षा भी प्रदान की जाती है। क्लासिकल इंडियन आर्टिस्ट इन स्वीजरलैंड के नाम से कार्यक्रम करवाया जाता है।¹⁵⁴ स्विटजरलैंड विभिन्न प्रदर्शनों और शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए एक मंच प्रदान करता है। स्थानीय कलाकार और छोटे संगठन भी स्विटजरलैंड में विभिन्न स्थानों पर सितार संगीत कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

- 1997 में सैलोन डे पर डैनियल बैडली ने अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक में सितार वादन किया।

¹⁵⁴ www.aliakhancollege.org

- 8.6.2009 श्रीमती अनुपमा भागवत ने अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 19.6.2011 पं. शुभेंद्र राव ने अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 6.5.2011 को पं. कुशल दास ने अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 20.11.2013 को डैनियल बैड्ली ने अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 27.09 2015 में उ. शुजात खां ने अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 12.12.2022 में पं. शुभेंद्र राव ने इंडिया हाऊस में सितार वादन किया।
- 2022 में बर्न में भारतीय दूतावास ने शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन किया।
- 2023 में बाडेन में पंडित कुशल दास का संगीत कार्यक्रम।
- 2025 में श्रीमती अनुष्का शंकर ने मज्यूरिख में प्रदर्शन किया।
- 4.5.2025 में संदीप चैटर्जी सितार वादक करेंगे।

4.3.30 साऊथ अफ्रीका में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम साऊथ अफ्रीका में भी करवाये जाते हैं। ICCR की तरफ से नेहरू सेंटर खोला गया है। जहाँ पर कलाकारों की अपनी सभ्यता संस्कृति के प्रचार के लिये भेजा जाता है। प्रतिमा संगम मुकाबले करवाये जाते हैं। निनाद स्कूल ऑफ म्यूजिक की ओर भी कार्यक्रम करवाया जाता है। Consulate General of India Johannerbery ने 2020 में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम करवाया था। University of Cape Town में भी कार्यक्रम करवाया जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत से संबंधित कार्यक्रम केप टाउन के द बैक्सटर कॉन्सर्ट हॉल और जोहान्सबर्ग के द लिरिक

थिएटर जैसे स्थानों पर आयोजित किए जाते हैं। Indian Classical म्यूजिक इन कैपटाउन जहाँ पर संगीत कार्यक्रम होते हैं वहाँ पर हिन्दुस्तानी स्कूलों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखाया जाता है।¹⁵⁵

- नरेश चौहान: केप टाउन में रहते हैं, उन्होंने 1970 के दशक में सितार सीखना शुरू किया और बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किया। वे केप टाउन में भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं।
 - 11.10.2009 में सूफी मंदिर में सितार वादन किया।
 - 2.12.2010 को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के समारोह में सितार वादन किया।
 - 14.4.2011 को बैकस्टर समारोह में सितार वादन किया।
 - 14.4.2012 को celebration of sitar कार्यक्रम में सितार वादन किया।
 - 3.6.2012 में सूफी मंदिर में सितार वादन किया।
 - 8.6.2013 को रेगिस्तान के राग समारोह में सितार वादन किया।
 - 14.6.2014 को राग फतासी कार्यक्रम में सितार वादन किया।
- दक्षिण अफ्रीका के एक प्रसिद्ध संगीतकार, गाइ बेत्तेयी जो मुख्य रूप से गिटारवादक हैं वे सितार भी बजाते हैं ।
- 2012 में उस्ताद शुजात खां केपटाउन में प्रस्तुति दी थी।
- 2017 नीलाद्रि कुमार और विजय घाटे जैसे प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय संगीतकारों ने केपटाउन और जोहान्सबर्ग में प्रदर्शन किया।
- नेशनल आर्ट्स फेस्टिवल में पं. शुभेंद्र राव ने सितार वादन किया।
- 2019 में दक्षिण अफ्रीका के एक प्रसिद्ध संगीतकार, गाइ बेत्तेयी जो मुख्य रूप से गिटारवादक हैं वे सितार भी बजाते हैं ने कनाडा नरहरि ने मिल कर सहयोगी एल्बम

¹⁵⁵ JSTOआर्टिकल Indian Music in Indian School in South Africa Vol. 38, 1994

तैयार की जिसका नाम "नदी" रखा जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। उन्होंने कॉन्सर्ट में भी साथ में परफॉर्म किया है।

- 13.4.2025 को Magic of a baithak sitar में राजीव जनार्दन ने सितार वादन किया।

4.3.31. U.A.E .में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम U.A.E. में भी करवाये जाते हैं। मल्हार मंच, मल्हार संगीत विद्यालय की ओर से करवाया जाता है। जिससे संगीत की शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों में मंच प्रदान किया जाता है। मल्हार बैठक का आयोजन भी किया जाता है।¹⁵⁶

- 6.2.2022 को एक्सप्रो 22 में श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया ।
- 2023 मल्हार उत्सव पं. नयन घोष द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2024 मल्हार उत्सव पं. स्वरेंदु मंडल द्वारा सितार वादन किया गया
- 2024 स्वरलय सिम्पनी ऑफ स्ट्रिंग्स मे पं. पूर्वयन चैटर्जी ने सितार वादन किया।
- इंडियन क्लासिक फोरम - दुबई में करवाये जाने वाला यह एक बड़ा संगीत सम्मेलन है। जहाँ पर शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध विश्व विख्यात कलाकारों की आमंत्रित किया जाता है। दुबई कम्युनिटी सेंटर में इसका आयोजन होता है।¹⁵⁷

4.3.32 जापान में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

जापान में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि पिछले कुछ दशकों में बढ़ी है, जापानी संगीतकार और लोग सक्रिय रूप से हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत दोनों सीख रहे हैं और उनका प्रदर्शन कर रहे हैं।

¹⁵⁶ info@malhaan.ac.

¹⁵⁷ www.arunasairam.org

जापान में विभिन्न भारतीय शास्त्रीय संगीत शैलियों में निपुण संगीतकार हैं। जापान में कई संस्थान भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देते हैं। टोक्यो में विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र तबला की कक्षाएं संचालित करता है। निजी शिक्षक भी सितार की शिक्षा देते हैं। जापान में भारतीय शास्त्रीय संगीत के संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें भारतीय और जापानी दोनों कलाकार प्रस्तुति देते हैं। ओसाका में 16 मई 2025 को "रिदम ऑफ इंडिया" संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया जयेगा है।

- 2003 से लेकर 2012 तक डॉ. श्रावणी विश्वास जापान के दौरे पर रही और सितार वादन किया।
- 2006 इंडो जापान सांस्कृतिक समारोह में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2009 हननोको संगीत समारोह में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2011 में संगीत मेला सिग जापान में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2013 , 2019 में श्रीमती अनुष्का शंकर ने टोकियो और ओसाका में संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- 2018 में लिन-जिअन सेन लाइब्रेरी समारोह में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2018 में जिअन-हा इंटरनेशनल ट्रेडिशनल आर्ट फेस्टिवल में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2019 में सोहपी होंग फैशन समारोह में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2020 में दलाई लामा कई जन्मदिवस के उपलक्ष में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 23.12.2023 में टोकियो यूनिवर्सिटी में छात्रों द्वारा सितार वादन किया गया।
- 30.11.2023 इंडो जापानी कोनकलेव में पं शुभेंद्र राव ने सितार वादन किया।

- 2023 में कौप्पमन्न म्यूजिक सेंटर में पं. पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन किया।
- 22.7.2024 को नागानो में सावन जोशी द्वारा सितार वादन किया गया।
- 20.8.24 को मित्सुकोशी थिएटर टोकियो में सावन जोशी द्वारा सितार वादन किया गया।
- 25.9 2024 को Echoes of sitar समारोह में सावन जोशी द्वारा सितार वादन किया गया।
- 1.9.24 को सावन कुमार ने बुद्धा मन्दिर में सितार वादन किया।
- 20.11.24 को पं. नीलाद्रि कुमार ने टोकियो में सितार वादन किया।
- 24.4.2025 को चिए नकयमा ने ओसाका में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत समारोह सितार वादन किया।

4.3.33 सिंगापुर में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

सिंगापुर इंडियन फाईन आर्ट्स अकादमी की तरफ से कार्यक्रम करवाया जाता है। आलापना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत व नृत्य की अकादमी द्वारा सम्मेलन करवाया जाता है। ¹⁵⁸इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सेंटर, सिंगापुर, मलेशिया, भारत और कनाडा में है जिसकी स्थापना 1998 में भारतीय सभ्यता संस्कृति के संरक्षण व प्रचार-प्रसार के लिये की गई थी। इस संस्था के द्वारा भी संगीत समारोह व सम्मेलन करवाये जाते हैं।

- 2008 में एशियन परफॉर्मिंग आर्ट्स फेस्टिवल ऑफ सोल में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2014 में एस्प्लनदे फेस्टिवल में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- परम्परा संगीत समारोह सिंगापुर में करवाया जाता है। परम्परा सोसाईटी संगीत और नृत्य के प्रचार-प्रसार के लिये कार्यरत है।

¹⁵⁸ www.sifas.org

- 2015 से परम्परा संगीत समारोह की शुरुआत की गई थी।
- 2019 में सितार वादक पद्म भूषण पं. बुद्धादित्य मुखर्जी भी प्रस्तुति दे चुके हैं। इसका पहला समारोह सितार वादक उ. मुशताक अली खां को समर्पित किया गया था।¹⁵⁹
- 2021 को पं. पूर्बयन चैटर्जी ने सितार वादन किया।
- 19.11.2022 को एक्स्प्लनेट हॉल में श्रीमती अनुष्का शंकर ने सितार वादन किया।
- 2023 में सुमन भट्टाचार्य ने सितार वादन किया।
- 2023 में संयुक्ता भट्टाचार्य ने सितार वादन किया।
- 2024 में संस्था के छात्रों ने वादन किया।

4.3.34 ताईवान में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

ताईवान में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। हिन्दुस्तानी संगीत द्वारा कला उत्सव मनाया जाता है। यह कार्यक्रम 2015 में शुरू करवाया गया। इसके अतिरिक्त अलग-अलग संगीत बैठके भी करवाई जाती हैं। उ. शुजात खां 2012 में ताईवान गये थे उसके बाद वह हर वर्ष जाने लगे और उ. शुजात खां ने सितार वादन प्रस्तुत कर सबका मन जीत लिया। आपका कहना था कि ताईवान के दर्शन हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को समझते हैं। इसके अतिरिक्त 5वां हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सम्मेलन 2016 से शुरू हुआ है। जिसको रागंजली के नाम से जाना जाता है।

- 2009 सितार वादक अज़र वू ने सियु म्यूज़िक पार्क में प्रस्तुति दी।
- 2012, 2014 में उ. शुजात खां ने ईवनिंग विद शुजात खां में सितार वादन किया।
- 2013 में नेशनल थिएटर ताईवान में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2014 में राष्ट्रीय साहित्य समारोह के आरंभ में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।

¹⁵⁹ Parampara-sg.org

- 2015 में नेशनल म्यूजियम में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2018 में समर फेस्टिवल ताईपे में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2019 में हिंदुस्तानी संगीत समारोह में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2022 में इंडियन म्यूजिक कल्चर फेस्टिवल ताईपे में शिवरात्रि के उपलक्ष पर योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2022 में वेल्लेस्लेय कॉलेज समारोह में जयंत बैनर्जी ने सितार वादन किया।
- 2022 में तओयुएन ट्रेडिशनल फेस्टिवल में योहि कनेमित्सु ने सितार वादन किया।
- 2024 में गेट ऑफ द मून समारोह रॉयल ओपेरा हाऊस में उ. निशात खां ने सितार वादन किया।

4.3.35 मॉरीशस में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

मॉरीशस में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। जिनमें नुपूर नाद, कला उत्सव, ICCR की तरफ से करवाया जाने वाले कार्यक्रम जो कि विभिन्न त्यौहारों, उत्सवों पर होते हैं। इसके अतिरिक्त स्मृति-हिन्दुस्तानी संगीत और नृत्य फेस्टिवल सितारों की महफिल आदि कार्यक्रम होते हैं। जो भारतीय समुदाय द्वारा करवाये जाते हैं। 1960 से यहाँ पर संगीत शिक्षण संस्थाएँ भी स्थापित की गई।

- 2005, 2006, 2007, 2011- डॉ. अनुपम महाजन ने सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2018 में प्रसिद्ध सितार वादिका अनुष्का शंकर ने मॉरीशस में समकालीन फ्यूजन ट्रैक प्रस्तुत किया। सितार सहित भारतीय शास्त्रीय संगीत को अक्सर बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों और उत्सवों में शामिल किया जाता है।
- दिवाली , महाशिवरात्रि और अन्य हिंदू त्योहारों जैसे आयोजनों में अक्सर संगीत और नृत्य प्रदर्शन शामिल होते हैं, जिनमें सितार बजाया जाता है।

- 2024 में "हमसाधवानी" कार्यक्रम में पंडित सुगातो नाग द्वारा सितार वादन और श्री नेरियेन वीरलापिन द्वारा तबले पर प्रस्तुति दी।
- मॉरीशस में प्रतिभाशाली स्थानीय संगीतकार हैं जो सितार बजाते हैं और भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में शामिल हैं। अरविंद सी. भुजुन ऐसे ही एक उल्लेखनीय सितार वादक हैं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय ऑर्किस्ट्रा के साथ प्रदर्शन किया है।
- 2024 को मॉरीशस में प्रदर्शन करने वाला ऑर्किस्ट्रा, फिलहारमोनिया, स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय संगीतकारों के साथ एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया। अरविंद सी. भुजुन और नेरियन वीरलापिन फिलहारमोनिया मंडली में शामिल हुये ।

4.3.36 नार्वे में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम

नार्वे में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सामारोह और सम्मेलन करवाये जाते है। ICCR के अतिरिक्त स्पिक मैके यूरोप भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ओश्ले फैस्टीवल बहुत बड़े स्तर पर किया जाता है।¹⁶⁰ नॉर्वे में सितार वादन के कई सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, जहां भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत किया जाता है। यहां कुछ प्रमुख कार्यक्रम दिए जा रहे हैं जहां सितार वादन शामिल है

- 2010 में श्रीमती अनुष्का शंकर ने ओश्ले में नोबल पीस समारोह में सितार वादन किया।
- 15.12 2015 को धर्मा समारोह में प्रेम जोशुआ ने सितार वादन किया।
- 14.8.2020 को ओश्ले में नोबल पीस समारोह में असद खां ने सितार वादन किया।
- 18.8.2020 को भारतीय उच्चायुक्त द्वारा करवाये गये संगीत समारोह में रोहिणी सहजपाल ने सितार वादन किया।

¹⁶⁰ www.indianembassyoslo.gov.in

- 26.1.2021 में रोहिणी सहजपाल ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष पर सितार वादन किया।
- 2024 ओस्लो विश्व महोत्सव उ. ज़ाकिर हुसैन और पं.नीलाद्री कुमार द्वारा ओस्लो विश्व महोत्सव में तबला और सितार का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया गया।
- ओस्लो मेला महोत्सव- रोहिणी सहजपाल (सितार), जय शंकर (तबला) भारतीय सितार संगीत और बॉल्कन व जैज़ संगीत का मेल।
- 2024 में कॉन्सबर्ग जैज़ महोत्सव में शक्ति बैंड ने भारतीय संगीत और जैज़ का सम्मिलन कर भारतीय वाद्य यंत्रों के साथ प्रयोग के साथ प्रस्तुति दी।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में ICCR की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ICCR ने राष्ट्रीय में सांस्कृतिक केन्द्र खोले हैं। जहाँ पर गायन, वादन की शिक्षा दी जाती है। उन केन्द्रों पर समय-समय पर राष्ट्रीय दिवसों व पर्व और त्योहारों को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। विदेशी लोग भारतीय सभ्यता और संस्कृति में सराबोर हो इन पर्वों और त्योहारों को खुशी-खुशी मनाते हैं। इस तरह यह जितनी भी संस्थाएं व संगठन हैं उन सब का एकमात्र उद्देश्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विश्व स्तर पर बढ़ाने और लोकप्रियता के शिखर तक ले जाना ही है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य के अधिकतर कार्यक्रम अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड में होते हैं। उसके पीछे का कारण है कि पंडित रवि शंकर जी का अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में जाना था और सितार वाद्य से वहां के लोगों से परिचित करवाना था। वहीं यूरोप में, इंग्लैंड में उस्ताद विलायत खां ने सितार वाद्य का अधिक प्रचार प्रसार किया। इसलिये अधिकतर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम वहां होते हैं।

4.4 विदेशों में सितार वादन की प्रस्तुति देने वाले कलाकारों का अनुभव एवं विचार

वैश्विक स्तर पर सितार वाद की प्रस्तुति दे चुके कलाकारों के साथ साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विश्व में विख्यात करने में हमारे कलाकारों का विशेष योगदान रहा है। विदेशों में करवाये जाने वाले कार्यक्रमों ने विशेष योगदान दिया है। विदेशों में बसे भारतीयों द्वारा अपनी सभ्यता और संस्कृति को बढ़ाने व सुरक्षित रखने के लिये कुछ संगठनों व केन्द्र की स्थापना की। जिन में समय-समय पर संगीत सम्मेलन, सामारोह व कार्यक्रम करवाये जाते थे और भारत से कलाकारों को अपनी प्रस्तुति के लिये आमंत्रित किया जाता है। 1960 के दशक से पं. रवि शंकर जी के समय से ही विदेशों में सितार वादन किय जाने लगा था। अंग्रेजों द्वारा करवाये जाने वाले प्रसिद्ध संगीत समारोहों में भी पं. जी सितार वादन कर चुके थे और सितार वाद्य की मधुर ध्वनि का रसायन विदेशियों के कानों तक पहुँच चुका था जिसके बाद यह सिलसिला शुरू हो गया।

4.4.1 उस्ताद निशात खां (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - उ. निशात खां का नाम सितार वादकों में अग्रणी श्रेणी में आता है आप इमदाद खां खानी घराने से हैं। आप उ. इमरात खां के सुपुत्र हैं। आप का जन्म 25 अक्टूबर 1960 को कोलकाता में हुआ। आप ने 3 साल की उम्र में सितार बजाना शुरू कर

दिया था और 7 साल की उम्र में कोलकाता में अपना पहला संगीत कार्यक्रम दिया था। रियाज़, अभ्यास बहुत कठोर, अनुशासित था और आप अक्सर देर रात तक बजाते थे। आप ने अपने पिता और अपने गुरु उ. इमरात खां से तालिम ली, आप के चाचा उ. विलायत खां आप के लिए एक प्रेरणा थे।

वादन शैली- आपने अपने साक्षात्कार के दौरान बताया कि संगीत में इम्पुरोवाइजेशन का बहुत महत्व है। संगीत की सारी व्यवस्था ही इस पर टिकी है। राग का विस्तार करना और बढ़त करना ही सब कुछ है जैसे राग देश का चलन करना, बढ़त करना जैसे पंचम में बढ़ना, मध्यम से रे पर आना ये एक चलती हुई प्रक्रिया है। इसको कल्पना शक्ति के आधार पर संगीत रचना कैसे करना है, मुख्य बात यह है।¹⁶¹

सांगीतिक सफर –उ. निशात खां 13 साल की उम्र में उ. ऑल इंडिया रेडियो पर सबसे कम उम्र के कलाकार दिए गए थे। आपने भारत में ही नई बल्कि विदेशों में भी खुब सितार वादन किया है। आपने विदेशों में प्रसिद्ध पाश्चात्य कलाकारों में फिलिप ग्लास, ऐवलिन गलेस, जान मैकलागन, आदि के साथ बीबीसी नैशनल आर्कैस्ट्रा रायल अलबर्ट हाल में सितार वादन में प्रस्तुत किया। आपने लंदन, न्यूयॉर्क, डालसे, पैरिस, वाशिंगटन, मैनहैटन, कनाडा, तईरान आदि जगहों पर सितार वादन का प्रस्तुतीकरण कर चुके है।

विदेशों में सितार वादन के कार्यक्रम - पहला अंतर्राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम 1977 में लंदन ऐसा हुआ था, तब आपके पिता उ. इमरात खां के साथ वादन किया था। क्वीन एलिजाबेथ हॉल में यह कार्यक्रम हुआ था। ,

- 1981 में यूरोप और अमेरिका में सितार वादन किया।
- 1986 में इटली में जॉन मैकलॉघलिन के साथ प्रदर्शन किया गया, और फिलिप ग्लास के साथ अपने एल्बम द प्रॉमिस में काम किया
- 1993, 1994 में इटली में सितार वादन का प्रदर्शन किया।
- 1993 में इस्माइल मर्चेट के हीट एंड डस्ट को संगीत दिया।

¹⁶¹ साक्षात्कार दिसम्बर, 2023

- 1994,1996 .1999 मे जर्मनी में सितार वादन किया।
- 2000 में पाको पेना के साथ फ्लेमिंगो और सितार की विशेषता वाला एक अनोखा वादन शुरू किया, आप के ग्रुप स्पिरिट एंड पैशन ने यूके और यूरोप में कई दौर किये।
- 2002 भारत-जापान राजनयिक संबंधों के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया गया ।
- 2003 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स और 2005 में कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, लॉन्ग बीच में एथनोम्यूजिकोलॉजी के नामांकित प्रोफेसर रह चुके है।
- एवलिन ग्लेनी के साथ, उन्होंने दो संगीत कार्यक्रम का प्रदर्शन किया - एकबीबीसी स्कॉटिश सिम्फनी के साथ सीगल नाम से डांसिंग वीडियो तैयार किया था ।यह लंदन के विगमोर हॉल में भी चित्रित किया गया था
- 2004 में, उन्हें डलास में क्रॉसरोड्स गिटार फेस्टिवल में एरिक क्लैप्टन , कार्लोस सैंटाना , जेफ बेक , जॉन मैकलॉघलिन और अन्य को प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था।
- 2007 में उन्होंने वेनेसा में वायलिन वादक के साथ पूरे भारत का दौरा किया और अगस्त में सीग्राम्स 100 पाइपर्स प्योर वैलोनिका शो में प्रदर्शन किया।
- 2008 में अपने प्रमुख प्रोजेक्ट, स्पिरिट एंड पैशन के साथ यूरोप का दौरा किया , जिसमें फ्लेमिंगो गिटार के ग्रेट पाको पेना शामिल थे और उसी वर्ष बीबीसी प्रोम्स में कार्यक्रम आयोजित किया गया ।
- 2009 में बोवाड्र थिएटर में लॉस एंजिल्स में सितार वादन किया।
- 2010 में, ने एंजलंज के कॉन्सेप्ट पर काम किया , जो एक फ्रैमंज-जैज़ शो है जिसमें दुनिया भर के संगीतकारों और कलाकारों का प्रदर्शन किया गया ।इसके उपरांत

राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति के लिए प्रदर्शन करने के लिए भी आमंत्रित किया गया था।

- 2012 अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शन किया है, हैकार्नेगी हॉल, न्यूयॉर्क मेंलिंगन सेंटर, लंदन में रॉयल अल्बर्ट हॉल और वेटिकन में पोप जॉन पॉल द्वितीय समारोह शामिल हैं।
- 2013 को रॉयल अल्बर्ट हॉल में प्रस्तुति दी पश्चिमी ऑर्केस्ट्रा के साथ एक सितार कंसर्टों को प्रदर्शित किया । डेविड एथरटन ने वेल्स के बीबीसी नेशनल ऑर्केस्ट्रा का प्रदर्शन द गेट ऑफ़ द मून में किया, जिसे बीबीसी रेडियो 3 और बीबीसी एशियन नेटवर्क दोनों ने लाइव प्रसारित किया गया।
- 2013 में छंदयान संगीत सम्मेलन अमेरिका में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2015 में पेरिस के थिएटर डे ला विले , वाशिंगटन डीसी के कैनेडी सेंटर और बुडापेस्ट फेस्टिवल में प्रदर्शन किया गया।
- 2016 में प्रधान मंत्री के प्रतिनिधिमंडल के साथ तेहरान के संगीत कार्यक्रम में भाग लिया।
- 2016 में लंदन के बारबिकन हॉल में पं जसराज और श्रीमती किशोरी अमोनकर के साथ प्रदर्शन किया।
- 2017 को मैनहट्टन के कॉफ़मैन संगीत केंद्र में मर्किन कॉन्सर्ट हॉल में प्रदर्शन किया।
- 2017 में प्रतिष्ठित यूएस रविनिया फेस्टिवल, यूके एल्डेबर्ग फेस्टिवल, दरबार फेस्टिवल, और कनाडा के मॉन्ट्रियल में वीरी फेस्टिवल और बोस्टन में भी प्रदर्शन किया ।
- 2018 में सिएटल सिम्फनी के साथ मिलकर यूएस में प्रीमियर दिया ।

- 2021 में उ. निशात खां ने कुईन एलिजाबेथ हॉल और लंदन जैज़ फेस्टिवल में सितार प्रस्तुति दी।
- 2023 में लंदन में उ.इरशाद खां के साथ जुगलबंदी प्रस्तुत की। पेरिस में थिएटर दी ला विल्ले में और न्यूयॉर्क में सितार वादन किया।
- 2024 में दरबार संगीत सम्मेलन में सितार वादन किया।
- 2024 में रॉयल ऑपेरा हाऊस ओमान में सितार वादन किया।
- 2024 में सेंट्रल केथेड्रल पुर्तगाल में सितार वादन किया।
- 2024 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में सितार वादन किया।
- 12.7.25 को ग्रंगे पार्क ओपेरा में सितार वादन कर रहे हैं।

पुरस्कार और उपलब्धियाँ

- 2002 में यूएन-लिंकड फाउंडेशन अवार्ड संगीत के माध्यम से प्रेरणा देने के लिये दिया गया।
- 2004 में प्रशांत एशिया संग्रहालय पुरस्कार संगीत में उत्कृष्टता और पारंपरिक एशियाई कला के संरक्षण के प्रति समर्पण के लिए सम्मानित किया गया।
- 2005 में अमेरिकी कांग्रेस पुरस्कार संगीत में आपके द्वारा दिये गये असाधारण योगदान के लिए संयुक्त राज्य कांग्रेस द्वारा मान्यता दीया गया।
- फ्यूचर टैलेंट के लिए राजदूत (यूके) युवा संगीतकारों का समर्थन करने के लिए डचेस ऑफ केंट द्वारा स्थापित चैरिटी द्वारा नियुक्त किया गया।

वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के प्रचार प्रसार पर आप के विचार - आपने बताया कि यह बहुत अच्छी बात है आपने बताया कि मैं विदेशों में भी विदेशी कलाकारों के साथ काम करता हूँ। हमारी (अनुरचना) ही उनको पसंद है। राग का एक रूल है, एक ढंग है, कानून है उसमें रह कर ही काम करना होता है। कल्पना शक्ति के आधार पर संगीत रचना की

लिमिट नहीं है विदेश में यह काम अधिक हो रहा है उन लोगों को हमारे संगीत का शौक ही विदेशियों के सितार वादन को लेकर आपके विचार है कि विदेश लोग सितार बजाये और खूब बजाये बहुत अच्छा है, हमारे संगीत का प्रचार हो रहा है। विदेशों में दो तरह का संगीत चल रहा है, एक शांत रस है, श्रृंगार रस है और दूसरा इसमें जोश भी है। लोग आलाप को भक्ति रस और योगा के रूप में लेते हैं, उसका आनंद लेते हैं। हमारे संगीत में आलाप, ताने और अलग-अलग तरह की चीजें हैं जो वो लोग पसंद करते हैं।¹⁶²

4.4.2 उस्ताद शुजात खां (ईमदादाखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - उस्ताद शुजात खां इमदाद खानी घराने की सातवीं पीढ़ी के सितार वादक हैं। आप उस्ताद विलायत खां के सुपुत्र हैं। आप का जन्म 19 मई 1960 को कलकत्ता में हुआ। आप को सितार वादन की शिक्षा अपने पिता जी से मिली। आप गायकी अंग का सितार वादन करते हैं। आप अपनी राग प्रस्तुत करने से पहले आलाप , जोड़ , जोड़ झाला , बहुत ही कलात्मकता और सुंदरता के साथ कहते हैं।

सांगीतिक सफ़र – आप ने 6 वर्ष की आयु में अपना पहला संगीत कार्यक्रम जहांगीर आर्ट गैलरी मुंबई में प्रस्तुत किया था। आप ने देश विदेश में सितार वादन के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। आप ने 2007 में भारत की स्वतंत्रता की 60 वीं वर्षगांठ मनाने वाले संगीत समारोहों में सितार वादन प्रस्तुत किया। आप ने कार्नेगी हॉल, न्यूयॉर्क शहर में ईरानी संगीतकार काहान कलहोर पैरामाउंट थिएटर, सिएटल और मेयर्स सिम्फनी थिएटर,

¹⁶²साक्षात्कार , उ. निशात खां , दिसम्बर, 2023

डलास के साथ प्रदर्शन किया था। आप ने जिनेवा के असेंबली हॉल में संयुक्त राष्ट्र में भी सितार वादन प्रस्तुत किया।

विदेशों में सितार वादन – आप ने विदेशों में बहुत ही यादगार प्रस्तुतियों जैसे लंदन में रॉयल अल्बर्ट हॉल, लॉस एंजिल्स में रॉयस हॉल और बर्लिन में कांग्रेस हॉल में दी है--

- 70 के दशक में पेरिस और जर्मनी में सितार वादन किया।
- 1980 के दौर में अमेरिका के दौरे पर गये। लॉस एंजिल्स और सैन फ्रंसिस्को में सितार वादन किया।
- 1998 में क्लीवलैंड में सितार वादन किया।
- 1999 की गर्मियों में, वह कनाडा में एडमॉन्टन सिम्फनी ऑर्किस्ट्रा के प्रमुख एकल कलाकार थे।
- 1991,1992 ,1993,1996, 1998, 2000,2001,2003,2004,2005,2006 ,2011,2012,2014,2024 में राग माला टोरंटो में सितार वादन किया।
- 1999 में वाशिंगटन , न्यूयार्क और लॉस एंजिल्स में सितार वादन किया।
- जनवरी 2000 में बोस्टन हेराल्ड ने आप को सेइजी ओज़ावा और लुसियानो पावरोटी जैसे दिग्गजों कलाकारों के साथ साल भर में होने वाले 25 आगामी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये आमंत्रित किया।
- 2004 में एल्बम, द रेन को ग्रेमी पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था।
- आप को इंग्लैंड में डार्टिंगटन स्कूल ऑफ़ म्यूज़िक, सिएटल में वाशिंगटन विश्वविद्यालय और यूसीएलए, लॉस एंजिल्स में विजिटिंग फैकल्टी के रूप में आमंत्रित किया गया है।
- एशिया,अफ्रीका,उत्तरी अमेरिका और यूरोप प्रदर्शन करते हुए दुनिया भर की यात्रा की है ।

- 2009-2010 की सबसे यादगार सहायकों में से एक है। सैक्सोफोन पर टिमरीस , पियानो पर केविन हेस, पर्क्यूशन परकरस काले , गायन पर कटायं गौदरजी , सितार पर उस्ताद शुजात खां, बास पर कार्ल पीटर्स और तबला पर योगेश समसी के साथ लेंज (बैंड) ने प्रदर्शन किया है।
- 2012 में दरबार संगीत सम्मारोह इंग्लैंड में सितार वादन किया।
- 2014 में फ़ारसी पारंपरिक संगीत एल्बम बियॉन्ड एनी फोरम पर संगीत दिया।
- 2015,2016 में स्टॉकहोम संगीत सम्मेलन स्वीडन में सितार वादन किया।
- 2016 में स्पेन औद फेस्टिवल मे सितर वदन प्रस्तुत किया।
- 19.4.2017 में सेंट पीटरबर्गस में सितार वादन किया।
- 2020 मे अमेरिका में बैठक -2 में सितार वादन किया।
- 2021 में आपका एलबम दिस पेल का विमोचन हुया।
- 2022 में ईस्टवूड पार्क थिएटर स्कॉटलैंड में सितार वादन किया।
- 6.9.2025 से लंदन और मैनचेस्टर में सितार वादन करेंगे ।

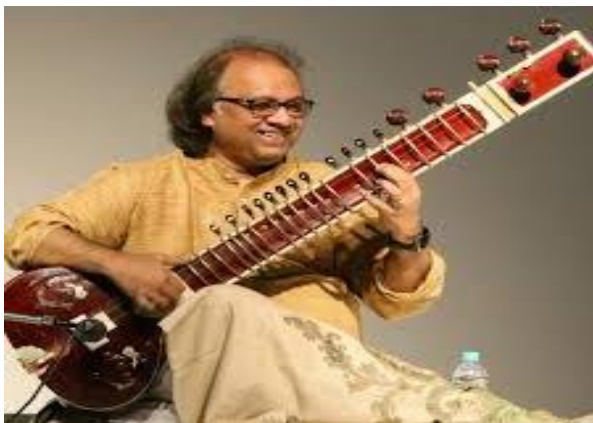
पुरस्कार और उपलब्धियाँ

- आप की एल्बम, द रेन को 2004 में ग्रैमी पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था।
- 2001 राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान दिया गया। यह सम्मान 45 वर्ष से कम आयु के शास्त्रीय संगीतकारों को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान किया जाने वाला भारत के सर्वोच्च सम्मानों में से एक है।
- गुरु मदन लाल कोसर पुरस्कार प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ द्वारा प्रदान किया जाने वाला यह पुरस्कार भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के प्रति उनके समर्पण को मान्यता देता है।

- उ. शुजात खां ने 100 से अधिक संगीत एल्बम दिये हैं, जो कला के प्रति उनकी बहुमुखी प्रतिभा और प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के प्रचार प्रसार पर आप के विचार- आप का मानना है की सितार एक बहुत ही खूबसूरत वाद्य है। इस में भावनाओं की बहुत ही सुंदर अभिव्यक्ति होती है। इसी कारण विदेशी लोग सितार वाद्य से जोड़ें। हमारे कलाकार उ. विलायत खां साहिब, पं. रवि शंकर आदि वहां गये और उन्होंने वहां रह कर सितार वादन के साथ – साथ सितार सिखाया भी और समझाया भी। आप के अनुसार विदेश में लोग संगीत बहुत ही तन्मयता के साथ और तमीज़ के साथ सुनते हैं और वहां पर इज्जत भी बहुत दी जाती है।¹⁶³

4.4.3 पंडित नयन घोष (मैहर और फर्रुखाबाद घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - पं. नयन घोष जी सितार और तबला दोनों ही वाद्ययंत्रों के सिद्ध हस्त कलाकार हैं। आपने तबला फारूखबाद घराने से सीखा। आप का जन्म 28 अप्रैल 1956 को हुआ था। सितार वादन आपने अपने पिता पद्म भूषण पं. निखिल घोष से गायन, सितार और तबला वादन विधिवत सीखा। उच्चकोटि के बासुरी वादक पं. पन्ना लाल घोष आप के चाचा थे। आप पं. रवि शंकर, उ. विलायत खां, पं. निखिल बैनर्जी, पं. शिव कुमार शर्मा, उ. रईस खां जैसे नामवर उच्चकोटि के कलाकारों के साथ तबले पर संगत करते आये हैं। आपने सितार वादन भी देश और विदेश में खूब किया है। पं. रवि शंकर का

¹⁶³ साक्षात्कार, उ. शुजात खां, दिसम्बर, 2024

आपसे विशेष स्नेह रहा है। आपने सितार वादन की बारीकियां पंडित जी से भी सिखी थी। आप पर तबला वादक उस्ताद अहमद जान थिरकवा का भी बहुत प्रभाव रहा है।

संगीतिक सफ़र – पं. रवि शंकर जी के बारे में बताया कि पं. जी ने आपको घर बुलाया और कहा तुम वहां मेरे साथ रहो। तब आप दिल्ली गये और वहाँ आप 3 दिनों तक उनके साथ रहे आपने बताया कि तीसरे दिन पं. जी ने बोला कि तुम मुझे सितार सुनाओ तो आपने कहा कि सितार तो मैं लाया नहीं उन्होंने अपना सितार देकर कहा लो अब बजाओ। आप फरुखबाद के हैं। आपने बताया कि आपने आधा घंटा सितार बजाया और पं. जी आँखे बंद करके बैठे रहे और बहुत प्यार और आशीर्वाद दिये और फिर आप जब भी पं. जी के साथ होते तो वह आपका परिचय तबला और सितार दोनों का ही देते थे और बहुत आशीष देते थे। आपने पं. जी के साथ बहुत बार तबला बजाया है। उ. विलायत खां जी के साथ भी प्रदर्शन किया है।

विदेशों में संगीत कार्यक्रम – अपने अपना तबला वाद्य का वादन 4 साल की आयु में 1960 में शुरू किया। आपने सितार वादक और तबला वादक दोनों में ही प्रवीणता हासिल की। आप मुम्बई में संगीत महाभारती के निर्देशक के पद पर हैं। क्लीवलैंड में केंट स्टेट यूनिवर्सिटी, अटलांटा में एमोरी यूनिवर्सिटी, बोल्डर में कोलोराडो विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड में लॉज़ेन म्यूज़िक कंज़र्वेटरी में संगीत शिक्षण दिया।

- 1958 में आपने अपने पिता जी के साथ यूरोप का दौरा किया था।
- 1983 अप्रैल कनस फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 1983 में टेलीविजन इन ऑस्ट्रेलिया में सितार वादन किया।
- 2 अप्रैल 1999 में अमेरिका में कार्यक्रम प्रस्तुत किया।
- 2001 में न्यू ऑर्लींस में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2016 में अमेरिका के प्रेसिडेंट से मिले।
- 2019 में फ़िनलैंड, बेजिंग, ईरान, स्वीडन सितार वादन किया

- 2022 में यूरोप में सितार कार्यक्रम अर्ज में वादन किया।
- 2022 में एम्सटर्डम में सितार वादन किया।
- 2022 में अरब में सितार वादन किया।
- 2023 में कंनास फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 2024 में अमेरिका स्प्रिंग टॉर मे सितार वादन किया।
- 2024 में एम्सटर्डम में सितार वादन किया।

पुरस्कार और उपलब्धियाँ

- 2014 में पंडित नयन घोष को हिंदुस्तानी वाद्य संगीत में उनके योगदान के लिए केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार दिया गया।
- 1998 में उत्तरी अमेरिका में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में आपके द्वारा दिये योगदान के लिए कैलिफोर्निया के लेफ्टिनेंट गवर्नर ने लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से नवाजा।
- 2018 में हिंदुस्तान आर्ट एंड म्यूजिक सोसाइटी (कोलकाता) से मानद डॉ.क्टरेट की उपाधि दी गई ।
- 2013 में स्वर साधना समिति, मुंबई द्वारा स्वर साधना रत्न प्रदान किया गया।
- 2019 में बेंगलुरु में इंफोसिस-बले खां लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया।
- 2019 में प्रयागराज में पद्मभूषण पंडित समता प्रसाद लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के प्रचार प्रसार पर आपके विचार- सितार वाद्य की ध्वनि बहुत आकर्षक है जो श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित करने में अदभूत भूमिका निभाती है। सरोद की भी ध्वनि अकर्षण है परन्तु खास करके सितार अधिक मंत्रमुग्ध करने वाला वाद्य है। आपके अनुसार ऐसे-ऐसे सितार वादक हो गये है जिन्होंने सितार को ऊँचाईयों

तक पहुँचा दिया है जैसे उ. विलायत खां, पं. रवि शंकर जी, पं. निखिल बैनर्जी, उ. हाफिज खां बहुत सारे नामवर कलाकार है। उन्होंने सितार को ऐसे बजाया की वह लोकप्रियता की और बढ़ता गया। विदेशी लोग सितार बजा रहे हैं उनका कहना है कि विदेशी लोग तबला, सरोद, सितार, बीन, बाँसुरी आदि हिन्दुस्तानी वाद्य सीख रहे हैं उनके कल्चर में जो बैचेनी है उनको शांत करने और आत्मियता की शांति के लिये वह संगीत सीखते है या फिर योगा सीखते है वह आत्मा की शांति भारत में ही ढूँढते हैं जो उनको संगीत द्वारा ही मिलती है।¹⁶⁴

पं. रवि शंकर जी के बारे में बताया कि पं. जी ने आपको घर बुलाया और कहा तुम वहां मेरे साथ रहो। तब आप दिल्ली गये और वहाँ आप 3 दिनों तक उनके साथ रहे आपने बताया कि तीसरे दिन पं. जी ने बोला कि तुम मुझे सितार सुनाओ तो आपने कहा कि सितार तो मैं लाया नहीं उन्होंने अपना सितार देकर कहा लो अब बजाओ। आपने बताया कि आपने आधा घंटा सितार बजाया और पं. जी आँखे बंद करके बैठे रहे और बहुत प्यार और आशीर्वाद दिये और फिर आप जब भी पं. जी के साथ होते तो वह आपका परिचय तबला और सितार दोनों का ही देते थे और बहुत आशीष देते थे। आपने पं. जी के साथ बहुत बार तबला बजाया है। उ. विलायत खां जी के साथ भी प्रदर्शन किया है। आप के भाई पंडित ध्रुव घोष सारंगी वादक थे । उनके बेटे ईशान घोष युवा पीढ़ी के जाने-माने तबला वादक हैं।

4.4.4 श्रीमती अनुष्का शंकर (मैहर घराना)



¹⁶⁴साक्षात्कार पं. नयन घोष दिसम्बर, 2023

जन्म और संगीत शिक्षा – अनुष्का शंकर का जन्म 9 जून 1981 को लंदन में हुआ था। आप पं. रविशंकर जी की बेटी हैं, और एक ब्रिटिश-अमेरिकी सितार वादक और संगीत कलाकार हैं। आप ने संगीत कला और सितार वादन अपने पिता पंडित रवि शंकर से सिखा। आप का पालन पोषण संगीतिक वातावरण में हुआ।

सांगीतिक सफ़र – आप ने आठ साल की उम्र में अपने पिता के शिष्यों में से एक गौरव मजूमदार के साथ सितार पर प्रशिक्षण लेना शुरू किया। अपने दस साल की उम्र से अपने पिता के प्रदर्शन में तानपुरा पर उनका साथ देना शुरू कर दिया था। उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक सितार प्रदर्शन 27 फरवरी 1995 को 13 साल की उम्र में नई दिल्ली के सिटी फोर्ट में अपने पिता के 75वें जन्मदिन समारोह के अवसर पर दिया था। आपने एकल शुरुआत तबला वादक जाकिर हुसैन जी के साथ की थी। आप ब्रिटिश हाउस ऑफ़ कॉमन्स शील्ड प्राप्त करने वाली सबसे कम उम्र की पहली महिला थीं। उनके पास नौ ग्रैमी पुरस्कार नामांकन हैं और समारोह में लाइव प्रदर्शन करने और प्रस्तुतकर्ता के रूप में काम करने वाली भारतीय मूल की पहली संगीतकार थीं। आप कई शैलियों में प्रदर्शन करती हैं- भारतीय शास्त्रीय संगीत और पाश्चात्य संगीत। आप ने विश्व के हर कोने सितार वादन किया है।¹⁶⁵

विदेशों में सितार वादन – आप ने आपने पिता जी के साथ सितार वादन की शुरुआत की। अमेरिका, इंग्लैंड, अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम आदि देशों में कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। आपने विदेशों में कई दौरे किये। आपके कुछ संगीत कार्यक्रमों की सूची –

- 31.01.2020 ऐक्स-एन-प्रोवेंस, फ्रांस ग्रैंड थिएटर डे प्रोवेंस
- 01.02.2020 ल्योन, फ्रांस ऑडिटोरियम-ऑर्किस्ट्रे नेशनल डी ल्योन
- 04.09.2020 लंदन, यूनाइटेड किंगडम रॉयल अल्बर्ट हॉल (द प्रोम्स)
- 19.09.2021 वियना, ऑस्ट्रिया कोन्ज़र्टहाउस वियना (शिराज)
- 23.09.2021 बुडापेस्ट, हंगरी बेला बार्टोक नेशनल कॉन्सर्ट हॉल (शिराज)

¹⁶⁵ <https://www.anoushakashankar.com>

- 01.10.2021 ड्रेसडेन, जर्मनी ड्रेसडनर फिलहारमोनी (शिराज)
- 05.11.2021 हैम्बर्ग, जर्मनी एल्बफिलहारमोनी हैम्बर्ग (शिराज)
- 07.11.2021 हैम्बर्ग, जर्मनी एल्बफिलहारमोनी हैम्बर्ग
- 28.01.2022 ग्लासगो, स्कॉटलैंड ग्लासगो रॉयल कॉन्सर्ट हॉल (सेल्टिक कनेक्शन 2022)
- 06.02.2022 दुबई, संयुक्त अरब अमीरात एक्सपो 2020 (फ़िरदौस ऑर्किस्ट्रा)
- 05.03.2022 लंदन, यूके रॉयल फेस्टिवल हॉल, साउथबैंक सेंटर
- 09.04.2022 लंदन, यूके अर्थएच (इवोल्यूशनरी आर्ट्स हैकनी), लंदन (डायलड इन फेस्टिवल @ अर्थ हैकनी - ट्रियो)
- 08.07.2022 ललंगोलेन, वेल्स ललंगोलेन इंटरनेशनल म्यूजिकल ईस्टेडफोड (अनुष्का शंकर और मनु डेलागो कॉन्सर्ट में। ब्रिटन सिंफ़ोनिया के तारों के साथ)
- 08.07.2022 ललंगोलेन, वेल्स ललंगोलेन इंटरनेशनल म्यूजिकल ईस्टेडफोड (अनुष्का शंकर और मनु डेलागो कॉन्सर्ट में। ब्रिटन सिंफ़ोनिया के तारों के साथ)
- 09.07.2022 चेल्टेनहैम, यूके चेल्टेनहैम टाउन हॉल (अनुष्का शंकर और मनु डेलागो का संगीत कार्यक्रम)
- 15.10.2022 लंदन, यूके बारबिकन (अनुष्का शंकर और ब्रिटन सिंफ़ोनिया मनु डेलागो के साथ)
- 16.10.2022 एसेक्स, यूके सैफ्रॉन हॉल (अनुष्का शंकर और ब्रिटन सिंफ़ोनिया विद मनु डेलागो)
- 30.10.2022 नॉर्विच, यूके नॉर्विच थिएटर रॉयल (अनुष्का शंकर और ब्रिटन सिंफ़ोनिया विद मनु डेलागो)

- 19.11.2022 सिंगापुर एस्प्लेनेड कॉन्सर्ट हॉल (रवि शंकर का कॉन्सर्टों नंबर 3 और बिटवीन अस जिसमें मनु डेलागो शामिल हैं)
- 14.05.2023 ब्राइटन, यूके कॉन्सर्ट हॉल (ब्राइटन फेस्टिवल - अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 20.05.2023 लॉस एंजिल्स, अमेरिका एलेक्स थिएटर (रवि शंकर का कॉन्सर्टों नंबर 3)
- 14.06.2023 वाशिंगटन डीसी, यूएसए कैनेडी सेंटर (जूल्स बकले और नेशनल सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा - बिटवीन अस)
- 27.08.2023 एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड फेस्टिवल थिएटर (एडिनबर्ग फेस्टिवल - अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 03.10.2023 स्टोर्स, सी.टी., यूएस.ए. जॉर्गेनसन सेंटर (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 05.10.2023 रिजफील्ड, सी.टी., यूएस.ए. द रिजफील्ड प्लेहाउस (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 06.10.2023 बेथेस्टा, एमडी, यूएसए स्ट्रैथमोर में संगीत केंद्र (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 07.10.2023 ब्रुकलिन, NY, संयुक्त राज्य अमेरिका पायनियर वर्क्स (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 08.10.2023 बोस्टन, एमए, यूएसए बर्कली परफॉर्मेंस सेंटर (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 10.10.2023 मॉन्ट्रियल, क्यूसी, कनाडा प्लेस डेस आर्ट्स, थिएटर मैसन्यूवे (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 11.10.2023 ओटावा, कनाडा राष्ट्रीय कला केंद्र, साउथम हॉल (अनुष्का शंकर और पंचक)

- 13.10.2023 शिकागो, अमेरिका सिम्फनी सेंटर (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 14.10.2023 टोरंटो, कनाडा कोर्नर हॉल (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 15.10.2023 वैन्कूवर, कैनड चान शुन कॉन्सर्ट हॉल (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 17.10.2023 सिएटल, वाशिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका द मूर थिएटर (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 18.10.2023 सैन फ्रांसिस्को, CA, संयुक्त राज्य अमेरिका हर्बस्ट थिएटर (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 20.10.2023 सांता फ़े, एनएम, यूएसए लेंसिक परफॉर्मिंग आर्ट्स सेंटर (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 21.10.2023 ऑरेंज, CA, संयुक्त राज्य अमेरिका मस्को सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 22.10.2023 नॉर्थ्रिज, CA, संयुक्त राज्य अमेरिका ग्रेट हॉल @ द सोराया (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 12.01.2024 सिडनी, ऑस्ट्रेलिया सिडनी ओपेरा हाउस, कॉन्सर्ट हॉल (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 13.01.2024 सिडनी, ऑस्ट्रेलिया ब्रेट व्हाइटली स्टूडियो (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 20.01.2024 न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया पैरामट्टा पार्क (अनुष्का शंकर द्वारा निर्देशित जूल्स बकले बिटवीन अस)
- 03.04.2024 पेरिस, फ्रांस फिलहारमनी - सिटी डे ला म्यूसिक 04.04.2024 पेरिस, फ्रांस फिलहारमनी - सिटी डे ला 05.04.2024 डिजों, फ्रांस ओपेरा डी डिजॉन
- 06.04.2024 लंदन, यूनाइटेड किंगडम बार्बिकन

- 10.04.2024 जिनेवा, स्विटजरलैंड थिएटर डी लेमन जिनेवा (अनुष्का शंकर)
- 13.04.2024 हैम्बर्ग, जर्मनी एल्बफिलहारमोनी
- 14.04.2024 कोपेनहेगन, डेनमार्क डीआर कॉन्सरथुसेट
- 15.04.2024 ब्रुसेल्स, बेल्जियम बोजार
- 16.04.2024 एम्स्टर्डम, नीदरलैंड कॉन्सर्टगेबॉउ
- 19.04.2024 मोंटे कार्लो, मोनाको ओपेरा गार्नियर मोंटे-कार्लो (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 29.05.2024 वियना, ऑस्ट्रिया वेनर कोन्ज़र्टहॉस (अनुष्का शंकर, मनु डेलागो - मोज़ेक स्ट्रिंग ऑर्केस्ट्रा, जूल्स बकले)
- 03.06.2024 ड्रेसडेन, जर्मनी ड्रेसडेन संगीत महोत्सव - कुल्तुरपालास्ट (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 03.07.2024 पोर्टो, पुर्तगाल कासा दा म्यूज़िका में साला सुगिया (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 04.08.2024 इगर, हंगरी डैडपुसज़ता - ओज़ोरा महोत्सव (अनुष्का शंकर और पंचक)
- 28.09.2024 कोलन, जर्मनी कोलनर फिलहारमोनी (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 30.09.2024 आइंडहोवन, नीदरलैंड मुज़ीकेगेबॉउ (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 01.10.2024 एंटवर्प, बेल्जियम डी सिंगेल कॉन्सर्ट हॉल (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 02.10.2024 बर्लिन, जर्मनी बर्लिनर फिलहारमोनी (अनुष्का शंकर और क्रिटेट)
- 08.03.2025 लंदन, यूके रॉयल अल्बर्ट हॉल
- 14.03.2025 स्टैनफोर्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका बिंग कॉन्सर्ट हॉल

- 15.03.2025 लॉस एंजिल्स, अमेरिका फोंडा थिएटर
- 16.03.2025 सैन डिएगो, अमेरिका एपस्टीन फैमिली एम्फीथियेटर 18.03.2025 रिचर्डसन, अमेरिका आइज़मैन सेंटर
- 19.03.2025 ह्यूस्टन, अमेरिका कुलेन थिएटर
- 20.03.2025 एथेंस, अमेरिका हॉजसन कॉन्सर्ट हॉल
- 22.03.2025 अलबामा, संयुक्त राज्य अमेरिका बर्न यूनिवर्सिटी
- 23.03.2025 तल्हासी, संयुक्त राज्य अमेरिका रूबी डायमंड कॉन्सर्ट हॉल
- 25.03.2025 टोरंटो, कनाडा मैसी हॉल
- 27.03.2025 न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य अमेरिका ले पॉइसन रूज (अध्याय III)
- 28.03.2025 न्यूयॉर्क, अमेरिका टाउन हॉल
- 30.03.2025 नॉक्सविले, यूएसए टेनेसी थिएटर (अनुष्का शंकर - बिग इयर्स फेस्टिवल 2025)
- 09.05.2025 ब्राइटन, यूके ब्राइटन डोम
- 25.05.2025 ब्राइटन, यूके ब्राइटन डोम (ब्राइटन महोत्सव (अध्याय III...))
- 20.06.2025 रीडिंग, यूके वासिंग संक्रांति महोत्सव (वासिंग संक्रांति 2025)
- 03.07.2025 स्पॉलेटो, इटली पियाज़ा डुओमो (स्पॉलेटो फेस्टिवल देई ड्यू मोंडी)
- 05.07.2025 रोस्किल्डे, डेनमार्क महोत्सव स्थल (अनुष्का शंकर - रोस्किल्डे महोत्सव)
- 09.07.2025 गेन्ट, बेल्जियम जेंट जैज़ फेस्टिवल स्थल (जेंट जैज़ फेस्टिवल)

- 11.07.2025 ट्रेन्सिन, स्लोवाकिया ट्रेन्सिन हवाई अड्डा (पोहोडा महोत्सव 10 - 12 जुलाई 2025)
- 13.07.2025 रॉटरडैम, नीदरलैंड रॉटरडैम अहोई (उत्तरी सागर जैज़ महोत्सव)
- 17.07.2025 मोंटपेलियर, फ्रांस मोंटपेलियर रेडियो महोत्सव (मोंटपेलियर रेडियो महोत्सव)
- 18.07.2025 ल्योन, फ्रांस थिएटर रोमेन्स - ग्रैंड थिएटर (नुइट्स डी फोरविएर)
- 12.08.2025 लंदन, यूके रॉयल अल्बर्ट हॉल (बीबीसी प्रोम्स: अनुष्का शंकर - 'चैप्टर्स')
- 25.08.2025 हेलसिंकी, फिनलैंड हुविला महोत्सव तम्बू (हेलसिंकी महोत्सव)

पुरस्कार और उपलब्धियाँ – आप को समय समय पर कई पुरस्कार और उपाधियाँ दी गईं ।

- 1998 में ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स शील्ड ।
- 2003 में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर सर्वश्रेष्ठ महिला का अवॉर्ड भारत सरकार द्वारा दिया गया।
- 2021 में आईवर नॉवेलो पुरस्कार के लिये नामांकित किया गया।
- 2024 में ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी ने संगीत के पढ़ती अद्भुत योगदान कई लिये डॉ. ऑफ म्यूजिक की मानक उपाधि दी।
- 2024 में आप को 11वीं दफा गैमी अवॉर्ड के लिये नामांकित किया गया है।¹⁶⁶

¹⁶⁶ <https://www.anushkashankar.com>

4.4.5 पंडित नीलाद्री कुमार (मैहर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा – पंडित नीलाद्री कुमार का जन्म 9 अप्रैल 1973 को कलकत्ता में हुआ। आपके पिता जी श्री कार्तिक कुमार पं. रवि शंकर के शिष्य थे। आप का बचपन सितार वादन के साथ ही शुरू हुआ। चार साल की उम्र में अपने पिता से सितार सीखना शुरू कर दिया था। छह साल की उम्र में अपना पहला सार्वजनिक प्रदर्शन किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे गंभीर युवा कलाकारों में से एक के रूप में विख्यात नीलाद्री की अद्वितीय प्रतिभा की झलक वर्षों के अध्ययन और सितार वादकों की पांच पीढ़ियों की वंशावली का परिणाम है। इससे उन्हें विविध घराना शैलियों के कलात्मक पहलुओं और बारीकियों की गहन समझ और तकनीकी कौशल में महारत हासिल हुई है।

संगीतिक सफ़र – आप ने अल्प आयु में ही सितार वादन करना शुरू कर दिया था। आप ने अपना पहला कार्यक्रम पाडिचेरि में अरविंदो आश्रम में दिया था। आपने सितार वाद्य को एक नया आयाम दिया है। आप एक ऐसे दुर्लभ वाद्य वादक हैं जिनके पास एक अद्वितीय संगीत संग्रह, अभिनव कौशल और तेज, चुस्त उंगलियों की निपुणता है। चाहे वह भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति हो या विश्व संगीत समारोह, वह लगभग तुरंत ही संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर सकते हैं, क्योंकि उनकी अद्भुत क्षमता दर्शकों के साथ एक ऐसा रिश्ता बनाने की है जो सभी आयु सीमाओं को पार कर जाता है। वह ईमानदारी से युवा पीढ़ी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि और सम्मान पैदा करने का प्रयास करते हैं।

ज़ितार वाद्य – आप ने सितार के नवीन इलेक्ट्रिक रूप का निर्माण कर उसे ज़ितार का नाम दिया। ज़ितार" (पांच तारों वाला एक इलेक्ट्रिक सितार) हैं जिसमें ध्वनि को आधुनिक

बनाने और सुलभ बनाने के लिये बनाया गया है। इसकी कुछ अलग विशेषताएँ हैं। इसमें एक सपाट आधार होता है डाई – कास्ट मशीन हेड और ध्वनि प्रबंधन के लिये हम बकिंग पिकअप है। आप शुद्ध शास्त्रीय और प्यूजन संगीत के बीच सही संतुलन कायम रखा हैं।¹⁶⁷

विदेशों में सितार वादन – आपने दुनिया भर के संगीत समारोहों में अपने शानदार प्रदर्शनों के लिए और 10 अंतर्राष्ट्रीय संगीत एल्बमों में अपनी अपार और शानदार प्रतिभा के लिए प्रशंसा प्राप्त की है। आप को अपनी पीढ़ी के सबसे चमकते सितारों में से एक माना जाता है। विदेशों में किये गये कुछ सितार वादन के कार्यक्रमों की सूची –

- 2001 में रॉयल अल्बर्ट हॉल लंदन सितार वादन किया।
- 2001 मोंट्रेक्स जैज फेस्टिवल स्विज़लैंड सितार वादन किया।
- 2.5.2008 में कोल्बस अमेरिका में सितार वादन किया।
- 5.11.2010 अल्बनी स्वेयर थिएटर में सितार वादन किया।
- 20.3.2011 को ग्रांड ऑपेरा हाउस अमेरिका सितार वादन किया।
- 2011 में कनाडा में मुत्सरी बेगम फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 20.4.2012 को हाइलाइन वल्लरूम सितार वादन किया।
- 2013 में ऐरेना में प्लम एक्सप्रो इंडिया में सितार वादन किया।
- 21.11.2014 को दरबार संगीत सम्मेलन इंग्लैंड में सितार वादन किया।
- 2014 में शिकागो में सितार वादन किया।
- 2015 राग माला टोरंटो में सितार वादन किया।
- 02 10. 2016 हस्टन, टेक्सस कुलेन थिएटर, वर्थम थिएटर सेंटर

¹⁶⁷ Niladrikumar.com

- 16.10.2016 को अमेरिका में पीस सेंटर समारोह में सितार वादन किया।
- 20 10.2016 वाशिंगटन डीसी 6 ऐतिहासिक आराधनालय में सितार वादन किया।
- 30.10 2022 में आप उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के साथ यूरोप गये थे।
- 21.11.2022 को हावर्ड युनिवर्सिटी में सितार वादन किया।
- 16.11.2022 क्रन्नेर्ट सेंटर फोर परफॉर्मिंग अर्त्स में सितार वादन किया।
- 2022 स्टोकहोम संगीत समारोह मे कनाडा मे मुत्सरी बेगम फेस्टिवल मे सितार वादन किया।
- 2022 में आइल द फ्रांस में सितार वादन किया।
- 20.3.2023 को फोनिक्स में सितार वादन किया।
- 2023 में असावरी परफॉर्मिंग आर्ट्स फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 1.5.2024 लीड्स, यूनाइटेड किंगडम हावर्ड असेंबली रूम
- 2024 मैनचेस्टर सिटी सेंटर, यूनाइटेड किंगडम स्टोलर हॉल
- 2024 मे कनाडा मे मुत्सरी बेगम फेस्टिवल मे सितार वादन किया।
- 2024 मैनचेस्टर सिटी सेंटर, यूनाइटेड किंगडम स्टोलर हॉल
- 2.1. 2024 को बारबीकन सेंटर, यूनाइटेड किंगडम में सितार वादन
- 11.2.2024 को दरबार फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 19.5 2024 को सेंट जॉर्ज , इंग्लैंड
- 18.2 2024 को जापान में सितार वादन किया।

पुरस्कार और उपलब्धियाँ – आप को बहुत से पुरस्कारों से समानित किया गया। आप माया सोमैया स्कूल ऑफ म्यूजिक एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स में संगीत और प्रदर्शन कला के डीन हैं।

- 2007 में, नीलाद्री ने वाद्य हिंदुस्तानी संगीत के लिए प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी का “उस्ताद बिस्मिल्लाह खां युवा पुरस्कार” जीता।
- उनके एल्बम ‘आईएफ’ के लिए “संस्कृति पुरस्कार”, “जादुभट्ट पुरस्कार” और “सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय/फ्यूजन वाद्य एल्बम के लिए एमटीवी आईएमएमआईईएस” कुछ अन्य पुरस्कार हैं
- इसके अलावा उनके नाम “शंमुख श्री” और “सुरमणि” जैसे मूल्यवान खिताब भी हैं।
- 24.7.2024 को आपनी इण्डियन टीवी पर गायन शो सुपरस्टार सिंगिंग सीज़न 2 में सितार वादन किया। अपने कौन बानेगा में सितार बजाया।

आप ने सितार वादन को एक नया आयाम दिया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और हिन्दी फ़िल्म संगीत से लेकर पाश्चात्य संगीत भी खूब बजाया। आप ने नया वाद्य यंत्र ज़ितार बनाया। विश्व के लगभग हर कोने अपनी कला का लोहा मनवाया।¹⁶⁸

4.4.6 उस्ताद हरविन्दर सिंह (मैहर घराना)



¹⁶⁸ <https://www.niladarikumar.com>

जन्म और संगीत शिक्षा – 1 मार्च 1952 को पंजाब के बटाला में हुआ आप के पिता जी श्री अर्जुन सिंह जी आल इंडिया रेडियो पर प्रसारण निर्देशक थे। हरविंदर सिंह जी पंजाब के बटाला के रहने वाले हैं। आपने प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता जी से ग्रहण की। इसके उपरान्त सितार वादन की बारिकियां सेनिया घराने के पं. सुचिंदर कुमार दत्ता से प्राप्त की। आप ने सितार और वीणा दोनों का वादन सीखा। आप ने अपनी वादन शैली में कलात्मकता के साथ परिपक्वता का भी परिचय दिया। आप के वादन में आलाप ,जोड़, और झाला का काम और राग का सुंदर दंग से प्रस्तुतिकरण होता है।

सांगीतिक सफ़र - 1974 से भारत से स्वीडन गये जहाँ पर सितार वादन का प्रसार आपने ही किया। आप मैहर घराने के पं. दत्ता जी के शिष्य रहे हैं। जो आप के गुरु 1923 से लेकर 1930 से उ. अलाउद्दीन खां जी के शिष्य रहे। उ. हरविंदर सिंह जी पंजाब के बटाला के रहने वाले हैं। आपने प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता जी से ग्रहण किया। आपने 10 वर्ष के अल्प आयु में शिमला में भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के समक्ष सितार वादन किया और आप को 200 रु. ईनाम दिया गया। आपके साथ साक्षात्कार में कुछ बातचीत के क्षणों में आपके द्वारा दी गई जानकारी इस प्रकार है।

विदेशों में सितार वादन – आप ने देश में ही नहीं विदेशों में भी सितार वादन किया है। आप का कहना है की जब आप स्वीडन गए थे तो लोग सितार के बारे में इतना नहीं जानते थे। विदेश में रहते हुये ही आप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले कार्यक्रमों में भाग लिया। आप ने इंटरनेशनल म्यूजिक फेस्टिवल इन बर्गनलैंड,, इंटरनेशनल गिटार फेस्टिवल, फोक म्यूजिक फेस्टिवल वेल्स , स्टॉकहोम, ओस्लो नोर्वे कई अतिरिक्त ब्राज़ील, बुडापेस्ट ,स्विज़रलैंड, वियाना, आस्टेलिया ,आदि देशों में सितार वादन किया है। आप ने वहां पर सितार वादन का प्रशिक्षण भी दिया। आप ने यूनिवर्सिटी ऑफ स्टॉकहोम और अपसाला, कॉलेज ऑफ म्यूजिक इन कल्स्कॉर्ग में संगीत प्रशिक्षण दिया है। आप के द्वारा दिये गये कुछ कार्यक्रमों की सूची-

- 1974 में युरोप का दौरा किया।
- 1975 में बर्गनलैंड में सितार वादन किया।

- 1975 मे कपेल्लबेर्ग द फोक यूनिवर्सिटी हर्नोसैंड में सितार वादन किया।
- 1980 में वियाना , ब्राज़ील , बुडापेस्ट ,स्विज़रलैंड में सितार वादन किया।
- 1985 में होली नाईट कैथेड्रल में में सितार वादन किया।
- 1986 मे गिटार महोत्सव में सितार वादन किया।
- 1987 मे ओस्लो नोर्वे में सितार वादन किया।
- 1988 मे एशिया का दौरा किया।
- 90 के दशक में यूरोप का दौरा किया।
- 1995 में स्कंदियाना महोत्सव स्वीडन में सितार वादन किया।
- 1996 मे ब्राज़ील में सितार वादन किया।
- 1997 सरस्वती कलाकक्षेत्र स्वीडन में सितार वादन किया।
- 1999 मे स्टॉकहोम में सितार वादन किया।
- 2002 मे उमेअ फोक फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 2008 मे अरोस ओर्कस्ट्रा में सितार वादन किया।
- 2009 मे उमेअ फोक फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 2010 मे यूरोपियन दौरे पर गये।
- 2011 मे क्रिश्मिस शो स्वीडन में सितार वादन किया।
- 2013 में वर्कशॉप ऑन म्यूजिक थेरेपी में सितार वादन किया।
- 2015 मे जरनी ऑफ इन्त्र व्ल्ड में सितार वादन किया।
- 2016 में स्टॉकहोम मे ओर्कस्ट्रा में सितार वादन किया।

- 2017 में स्टॉकहोम में ऑपेरा हाउस में सितार वादन किया।
- 2020 में मतिने समारोह में प्रस्तुत हुये वृन्दवादन में सितार वादन किया।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार - आज अगर विश्व स्तर पर सितार इतना प्रसिद्ध हुआ है उसका कारण पं. रवि शंकर जी है। पं. रवि शंकर जी की सितार की टोनल क्वालिटी विदेशियों को बहुत पसंद आई। उनको समझ तो कुछ आता नहीं था। परन्तु सितार की मधुर ध्वनि की ओर आकर्षित होते हैं।

आपके अनुसार आप पूरे यूरोप में सितार वादन कर चुके हैं। इंग्लैंड, स्वीडन, आयरलैंड, फ्रांस, जर्मनी इत्यादि देशों में सितार वादन कर चुके हैं।¹⁶⁹

आपने बताया कि जब मैं पहले पहल यहाँ आया तो इनका एक कार्यक्रम हुआ। 1974 में (ग्रोसिस स्टार आवनिंग) द विंग स्टार ईविनिंग के नाम से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उ. लातिफ ने तबला वादन किया। यह कार्यक्रम भारतीय मूल के लोगो द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें 26 हजार दर्शक एकत्रित हुये। यह कार्यक्रम जर्मन में म्यूनिख में हुआ।

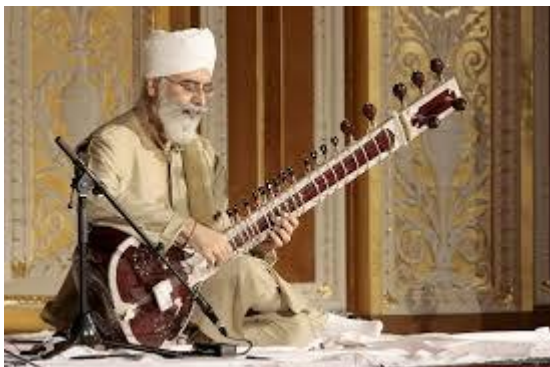
अपने शिष्यों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि मैं जब से विदेश में आया हूँ। तब से केवल विदेशी ही सितार वादन की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लिये काम कर रही सोसाईटियों के बारे में आपके विचार है कि 1980 में ICCR ने विदेशों में कलाकारों को संगीत के प्रचार-प्रसार के लिये भेजना शुरू कर दिया था। और कई संस्कृतिक केन्द्र खोले। विदेशों में आप ने संगीत चिकित्सा शुरू की। संगीत के द्वारा ईलाज किया जाता है। विदेशी लोग इससे जुड़े है राग गायन वादन के साथ ईलाज किया जाता है।¹⁷⁰

¹⁶⁹साक्षात्कार उ. हरविन्दर सिंह, दिसम्बर, 2022

¹⁷⁰साक्षात्कार उ. हरविन्दर सिंह, अक्टूबर, 2022

4.4.7 उस्ताद धर्मवीर सिंह (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - उ. धर्मवीर सिंह इंग्लैंड में रहने वाले सबसे प्रमुख सितार वादकों और भारतीय संगीत शिक्षक में से एक हैं। आप का जन्म 24 जून को पंजाब में हुआ। आप ने सितार वादन की शिक्षा महान सितार वादक उस्ताद विलायत खां से प्राप्त की। आप ने इमदाद खानी और विलायत खानी शैली को बखूबी आत्मसात किया है। आप को संगीत की प्रारंभिक शिक्षा पंजाब में अमृतसर के प्रोफेसर सीता राम से प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद उन्होंने पंजाब के पटियाला के प्रोफेसर नरिंदर निरुला से सितार बजाने की गायकी शैली सीखी। आप पर नामधारी सिख संप्रदाय के आध्यात्मिक गुरु सतगुरु जगजीत सिंह का आशीर्वाद और प्यार था, जिसके कारण धर्मवीर का परिचय उस्ताद विलायत खां से हुआ।

सांगीतिक सफर – आप 1979 में इंग्लैंड चले गए और तब से इंग्लैंड में भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए मजबूत नींव रखने में लगे हुए हैं। उन्होंने भारत में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और इंग्लैंड जाने के बाद लंदन विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ ओरिएंटल और अफ्रीकन स्टडीज में एमए की पढ़ाई की।

विदेशों में सितार वादन- आप ने इंग्लैंड, स्पेन, जर्मनी और इटली के प्रमुख संगीत समारोहों में प्रदर्शन किया है। आप ने यूरो एशियाई फ्यूजन समूह शिवा नोवा के साथ बड़े पैमाने पर काम किया है। वह अन्य संगीत शैलियों के संगीतकारों के साथ मिलकर नियमित रूप से प्रदर्शन करते हैं। प्रख्यात ब्रिटिश सैक्सोफोनिस्ट मार्टिन स्पीक के साथ उनके काम के परिणामस्वरूप एक अच्छी तरह से प्रशंसित सीडी "जर्नी" बनी।

- 1983 में लीसेस्टर संगीत सेवा के लिए पढ़ाना शुरू किया। आप ने लीड्स कॉलेज ऑफ़ म्यूज़िक द्वारा एक व्याख्याता और लीड्स सेंटर फ़ॉर इंडियन म्यूज़िक एंड डांस के कलात्मक निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया था। आप ने जैज़ संगीतकारों को पढ़ाने के लिए एक खास जगह बनाई और परिणामस्वरूप कुछ प्रमुख संगीतकारों को तैयार किया जो पश्चिमी वाद्ययंत्रों पर उत्तर भारतीय संगीत प्रस्तुत करते हैं।
- 1990 में इंग्लैंड के टीवी पर उ. ज़ाकिर हुसैन के साथ सितार वादन किया।
- 2011 में पीपल सेटर में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2011 में डौतिंग्टन हाल इंग्लैंड में सितार वादन किया।
- 2016 में संगम संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- 2017 में साउथ एशियन आर्ट्स इंग्लैंड में सितार वादन किया।
- 2019 में निश्काम सेट समारोह में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2021 को नज़राना समारोह में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 को सितार म्यूज़िक सोसायटी सेटर में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 में सुर ताल आर्ट्स सेटर में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 में राग और ताल सेटर में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 में नेहरू सेटर में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 में साज़ संगत समारोह में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2022 में द म्यूज़िक रूम समारोह में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2023 में कनाडा में संगीत समारोह में सितार वादन किया।

- 2023 मे रामा संगीत समारोह में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2023 मे सुर ताल संगीत समारोह में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- 2024 मे साउथ एशियन आर्ट्स इंग्लैंड में सितार वादन किया।
- 2024 मे दरबार फेस्टिवल इंग्लैंड में सितार वादन किया।

संगीत संगठनों में भूमिका -

- आप 1997 से 2005 तक लीड्स स्थित एक अग्रणी कला संगठन SAA-Uk के कलात्मक निदेशक थे।
- आप SAMYO के संस्थापक और कलात्मक निदेशक थे,
- आप ने श्रुति आर्ट्स, लीसेस्टर, नॉटिंगहम एशियाई कला परिषद, दरबार उत्सव में एक प्रमुख भूमिका निभाई है, कला परिषद के विभिन्न पैनलों पर रहे हैं और आर्ट्स काउंसिल यॉर्कशायर के बोर्ड सदस्य थे।
- आप लंदन स्थित भारतीय विद्या भवन के सलाहकार थे, जो देश में भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र है। आप ने भवन में बीएमयूएस (ऑनर्स) भारतीय संगीत, ट्रिनिटी कॉलेज ऑफ म्यूजिक की डिग्री के लिए पाठ्यक्रम दस्तावेज लिखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- आप को 2006 से 2010 तक नेशनल एंडोमेंट फॉर साइंस टेक्नोलॉजी एंड द आर्ट्स (NESTA) फेलोशिप मिली। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत के कई पहलुओं पर शोध किया।
- आप ने वर्ष 2011 में एमबीई की उपाधि प्राप्त की।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार:- आपके साथ बातचीत के क्षणों में जो आपके द्वारा जानकारी प्राप्त हुई इस प्रकार है। वैश्वीकरण स्तर पर

पं. रवि शंकर जी और उ. अलाउद्दीन खां के सुपुत्र उ. अली अकबर जी ने विश्व स्तर पर बहुत प्रसिद्धी किया। वैश्वीकरण के स्तर पर संगीत का प्रसार दो तरह से हुआ।

प्रथम स्तर:- इस स्तर पर वह कलाकार आते हैं जिन्होंने संगीत में सितार वादन प्रस्तुत किया और विभिन्न स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों में संगीत सिखाया जैसे उ. इमरत खां, उ. अली अकबर खां, पं. रवि शंकर, उ. विलायत खां यह कलाकार अपने संगीत कार्यक्रम सम्पन्न कर भारत लौट आते थे।

द्वितीय चरण:- यह उन कलाकारों का है जो भारत से विदेशों में चले गये। वहीं पर बस गये और अपने कठिन परिश्रम और प्रयास के द्वारा अलग-अलग देशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को स्थापित किया। वहाँ के युवाओं को जोड़ा। अपने साथ उनको संगीत सिखाया। आपके शिष्य में जसदीप और सुश्री रूपा पनेसर है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सितार वादन कर रहे हैं।

तृतीय चरण:- इसमें वह लोग है जो विदेशी है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखा और सितार वादन प्रस्तुति करते हैं, और सितार वाद्य का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।¹⁷¹

4.4.8 पंडित हरविंदर शर्मा (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - डॉ. हरविंदर कुमार शर्मा 9 मई 1957 को जन्मे थे। आप एक असाधारण प्रतिभावान सितार वादक हैं। आप ने पांच साल की छोटी सी उम्र में ही सितार वादन में गहरी रुचि दिखाई और नौ साल की उम्र में ही उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक

¹⁷¹साक्षात्कार उ. धर्मवीर सिंह, नवम्बर, 2022

प्रदर्शन दिया। आप को शुरू में उनके पिता श्री मेघराज शर्मा ने प्रशिक्षित किया और उसके बाद आप को प्रख्यात संगीतकारो स्वर्गीय प्रो. जितेंद्र कुमार और डॉ. आर.डी. वर्मा ने प्रशिक्षित किया। इमदादखानी घराने के उस्ताद विलायत खां से आपने सितार की बारीकियां सीखी ।

संगीतिक सफ़र - आप के पास सितार पर ख्याल अंग के माध्यम से राग को विस्तार से प्रस्तुत करने की एक अलग शैली है, इस घराने की पारंपरिक को शैली को बनाए रखते हुए, आप शास्त्रीय और लोकप्रिय संगीत के फ्यूजन या जुगलबंदी जैसे नवीन प्रयोगों के लिए भी खुले विचार रखते हैं। लोक संगीत और सुगम संगीत के विभिन्न रूपों पर सितार के साथ उनके प्रयोग उनकी शैली को समृद्ध और उन्नत करते हैं। पंडित हरविंद्र शर्मा जी सरकारी कॉलेज पंचकुला, हरियाणा में प्रिंसिपल के पद से सेवानिवृत्त हुए है।

विदेशों में सितार वादन- आपने देश और विदेश दोनों ही जगहों पर सितार वादन किया है। वैश्विक स्तर पर विभिन्न संगीत समारोहों और सम्मेलनों में शामिल हुए हैं। आपने एशिया पोलैंड, कनाडा, अमेरिका, न्यूजीलैंड आस्ट्रेलिया यूनिवर्सिटी में सितार का प्रशिक्षण दिया। रशिया में पं. जवाहर लाल नेहरू सेंटर में सितार वादन की शिक्षा दी। 1989 से 1992 तक रूस और पूर्वी यूरोप में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने आप को मास्को में जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र में कलाकार के रूप में कार्य करने कई लिये भेजा। आप ने इस कार्यकाल के दौरान हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का और सितार वादन का प्रदर्शन पोलैंड, जर्मनी और फ्रांस सहित विभिन्न यूरोपीय देशों में किया।

- 2016 में साज़ संगीत संघ के कार्यक्रम में सितार वादन किया ।
- 2016 में कनाडा के प्रमुख शहरों में प्रदर्शन किया ।
- 2017 में सरगम स्कूल ऑफ इंडियन म्यूजिक के वार्षिक महोत्सव में सितार वादन किया।
- 2018 में कनाडा के प्रमुख शहरों में प्रदर्शन किया है, जहाँ उन्होंने विविध दर्शकों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया है ।

- 2018 में मुत्सरी बेगम फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 2022 में कनाडा के प्रमुख शहरों में प्रदर्शन किया है, जहाँ उन्होंने विविध दर्शकों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया है।
- 2024 में न्यूज़ीलैण्ड में सितार वादन किया।
- 2025 में इंवरकार्गिल समारोह में सितार वादन किया।

पुरस्कार और उपलब्धियाँ- आप ऑल इंडिया रेडियो के ए ग्रेड कलाकार हैं। आप देश और विदेशों में सितार वादन की अनगिनत प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं। आप भारतीय संस्कृति संबंध परिषद के पैनल में भी शामिल रहे हैं।

- 1987 में सुर सिंगार संसद, मुंबई द्वारा सुरमणि पुरस्कार
- 2012 में हरियाणा सरकार द्वारा पंडित लक्ष्मी चंद राज्य पुरस्कार
- 2012 में हरियाणा सरकार ने ललित कला संस्थान द्वारा संगीत के क्षेत्र में सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, करम योगी पुरस्कार से नवाजा।
- 2024 में आप को संगीत नाटक अकादमी द्वारा अवॉर्ड दिया गया है।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार -आप के साथ हुई बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार हैं। आप के अनुसार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन को प्रसिद्ध करने में मुख्य भूमिका पं. रवि शंकर जी की रही है। विदेशियों को सितार समझने के लिये कुछ चीजें अवश्यक थीं। कोई भी कला को विकसित करने के लिये कुछ चीजें अवश्यक होती हैं।¹⁷²

आपका कहना है कि विदेशों में लोग बहुत सभ्य हैं भारत में ऐसा नहीं है सारा कार्यक्रम समय पर शुरू हो जाता है। कार्यक्रम के दौरान किसी भी तरह की हलचल नहीं रहती। आप 1989 से लेकर 1992 तक ICCR द्वारा विदेश की यात्रा पर रहे। रशिया में

¹⁷²साक्षात्कार प. हरविन्दर शर्मा, जनवरी, 2021

बहुत कार्यक्रम दिये लोगों में बहुत उत्साह होता था। कार्यक्रम के बाद तालियां की इतनी गड़गड़ाहट होती थी कि बार-बार मंच पर आना पड़ता था। जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका आदि देशों में आपने प्रस्तुतियां दीं।

आप का कहना है कि पं.रवि शंकर जी की वीडियो में हम देखते हैं तो यह सब देखने को मिलता है की विदेशियों को हिंदुस्तानी संगीत से कितना लगाव है। हमने भी महसूस किया है कि विदेशियों को भारतीय संगीत से बहुत लगाव है।

आपके शिष्य कनाडा, यूएसए, अस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फिजी आदि स्थानों पर है। शरणजीत माड, (गुरुकुल), संगम संगीत आकलैंड, आस्ट्रेलिया में रसपाल, यूएसए में अपने संगीत केन्द्र चला रहे हैं। सभी संगीत की सेवा करते हैं किसी का नाम बड़ा हो गया किसी का छोटा। पर मेहनत सब करते हैं। उ. विलायत खां जी ने सितार बहुत प्रचार किया। विदेशों में एक दूसरे को मिलने सुनने का मौका मिलता है जो यहाँ नहीं है।

आपका कहना है कि विदेशों में जो भी संस्थाएं है वो सभी अच्छे पैसे देती है। जबकि भारत में ऐसा नहीं है कभी-कभी कार्यक्रम फ्री में भी करना पड़ता है। विदेशों में कलाकार की बहुत इज्जत करते हैं जो भारत में नहीं होती।

आप का मानना है की दूसरे कल्चर में जाकर अपनी संगीत की स्थापना कैसे करनी है यह पं. रवि शंकर से सीखना चाहिए। फिर उनके बाद उ. विलायत खां जी भी गये। लंदन, अमेरिका, जापान, अफ्रीका यहां तक कि ग्लोब पर देखे तो सितार हर स्थान पर सुनने को मिलता है। इसके लिये पं. रवि शंकर जी ने बहुत मेहनत की जिससे हम जैसे कलाकारों का रास्ता खुला। बीटल्स और यहूदी मैनुहिन जैसे लोग जुड़े उनके साथ तानपुरे पर विदेशी ही होते हैं। बहुत बड़े-बड़े कार्यक्रम और लम्बे-लम्बे समय के किये जाते थे और तबले पर उ. अल्लारखा खां साहिब ने साथ दिया। पं. जी के सितार वादन को विदेशियों ने समझा। विदेशी लोग भारतीय कलाकारों की बहुत सम्मान जनक रूप से देखते हैं।

विदेशों में कोई न कोई बच्चा संगीत वाद्य जरूर बजाता है। आपका मानना है कि हम सब इंसान है हमारी भावनाएं और संवेदनाएं एक जैसी है चाहे वो भारतीय हो या विदेशी हो। विदेशों में सितार वाद्य इसलिए भी प्रचलित हुआ क्योंकि इसमें भाषा का बंधन नहीं था।¹⁷³

4.4.9 पंडित राम कुमार मिश्र (बनारस घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा -आप का जन्म 16 जून 1964 को बनारस में हुआ था। बनारस घराने के प्रमुख तबला नवाज पं. राम कुमार मिश्र जी एक विश्व विख्यात तबला वादक हैं। आप सुप्रसिद्ध तबला वादक स्वर्गीय पंडित अनोखे लाल मिश्र के पोते और पंडित छत्रू लाल के पुत्र हैं। आपने तबले की शिक्षा अपनी माता जी से प्राप्त की है। आपने देश-विदेश में बहुत उच्चकोटि के प्रसिद्ध कलाकारों के साथ संगत की। उनके साथ बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार हैं।

सितार वाद्य पर आपके विचार - जब हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वाद्यों की बात आती है तो सबसे पहले सितार वाद्य का नाम लिया जाता है। सितार वाद्य गायक के बहुत करीब है। विश्व स्तर पर सितार वाद्य बहुत प्रसिद्ध है और इसे प्रसिद्ध करने में सबसे अधिक योगदान पं. रवि शंकर जी का रहा है। इसलिये इस वाद्य को अधिक तवज्जो मिली बाद में उ. विलायत खां साहिब, पं. निखिल बैनर्जी आदि हैं। आप ने उ. शुजात खां, उ. शाहिद परवेज जी के साथ बहुत बार प्रदर्शन किया है। यह लोग नई-नई तकनीकें, लयकारीयां

¹⁷³साक्षात्कार पं. हरिवंदर शर्मा, जनवरी, 2021

आदि का प्रदर्शन करते हैं। नये-नये तरीके के शोध उस्तादों द्वारा किया जा रहा है। हर बार नया प्रयास किया। इसी प्रकार युवा कलाकारों में नीलाद्री कुमार ने जितार और ऐसा ही कुछ पूर्वयन चैटर्जी ने सीटर का निर्माण किया यह अदभुत है। यह लोग पश्चिम की तरफ मुड़ गये। । आम आदमी की पहुँच तक जा सकने के लिये अच्छा काम किया। काफी लोगों का योगदान रहा है।

विदेशी लोगों के सितार वादन पर आपके विचार है कि जब आप बनारस में रहते थे तो गंगा के घाट के इर्द गिर्द जितने भी मकान है वह सब विदेशियों के है उन्होंने वहां पर घर किरये पर ले रखे है । सर्दियों के महीने में विदेशी लोग वहां पर रहते है और अगले 6 महीने का किराया दे कर चले जाते है। सितार को उतना देखा और सुना है उन लोगों ने इसलिये उसको सीखते हैं। उन में सिखने की तीव्र ललक होती है।

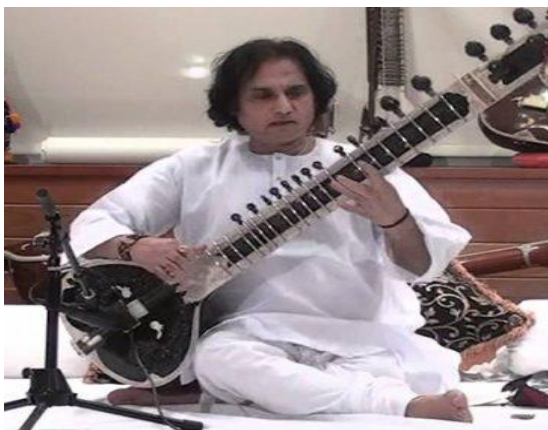
श्रोतागणों पर आपका विचार है कि वह लोग इस बात पर हैरान होते हैं कि बिना किसी स्वरलिपी के यह लोग इतना कैसे बजा लेते है , उनके लिये यह अश्चर्य की बात होती है । सितार की ध्वनि पर आपने बताया कि लोग सितार की आवाज बहुत पसंद करते हैं। राज कपूर के गाने और सितार वाद्य उन लोगो को बहुत पसंद आते थे ।

राग माला ,दरबार फैस्टिवल आदि में हो रहे हैं। विदेश में आपका बजाना सबसे अच्छा लगता है। वो लोग इतने सभ्य है कि अगर प्रोग्राम 7 बजे हो रह है तो 6.55 पर अपनी जगह ले लेंगे। हाल में इतनी शांति होती है कि अगर सूई भी गिरे तो उसकी भी आवाज आती है। लोग प्रोग्राम को बीच में छोड़कर उठते नहीं है। हमारी सभ्यता ये लोग अपना रहे हैं। वो लोग बहुत अच्छी तरह से सुनते हैं और उतने ही अच्छे कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

युवा वर्ग संगीत के साथ बहुत जुड़ रहे हैं। IIT के छात्र भी संगीत के साथ जुड़ रहे हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत बहुत ही प्रचलित हो रहा है ।सोशल मीडिया ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। हमें बहुत प्रसन्नता होती है कि हमारा शास्त्रीय संगीत इतना आगे जा रहा है।¹⁷⁴

¹⁷⁴साक्षात्कार पं. राम कुमार मिश्र, दिसम्बर 2023

4.4.10 पंडित किन्नर सीन (पंजाब घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - आप का जन्म 27 अक्टूबर को पंजाब में हुआ। आप पंजाब घराने के प्रसिद्ध कलाकार उस्ताद लक्ष्मण सिंह सीन के सुपुत्र हैं। पं. किन्नर सीन प्रसिद्ध सितार वादक हैं। आप ने छोटी आयु से ही संगीत की शिक्षा दीक्षा अपने पिता जी से लेनी शुरू कर दी थी। आप अमेरिका में रहते हैं। आप देश और विदेश कई जगहों पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार कर चुके हैं।

सांगीतिक सफ़र - आप ने पहली संगीत प्रस्तुति 14 साल की उम्र में दी थी। आप 1984 में अमेरिका चले गये थे। तब से आज तक आप हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार कर रहे हैं। आप अमेरिका, कनाडा, यूरोप, अफ्रीका, वेस्ट इंडिज, मोस्को आदि जगहों पर सितार वादन कर चुके हैं। भारत सरकार की ओर से आप कई देशों का दौरा कर चुके हैं। आप 2005 में वीटल्स आर्केस्ट्रा के साथ सितार वादन कर चुके हैं। आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सम्भाषण देने हेतु कई बार Howard University, Woson University, State University और The Julliard School of Music में जा चुके हैं।

- 2004 में आर्ट सेर्वे सेंटर फ्लोरिडा में सितार वादन किया।
- 2006 में मोंरोए कॉलेज न्यूयार्क के संगीत सम्मेलन में सितार वादन किया।
- 2009 में अमेरिका में कल्चरल सेंटर में सितार वादन किया।
- 2009 में संगीत विलास के संगीत समारोह अमेरिका में सितार वादन किया।

- 2011 मे संगीत विलास के संगीत समारोह अमेरिका में सितार वादन किया।
- 2012 मे पाकिस्तान में सितार वादन किया।
- 2013 में कनाडा कैल्गरी में सितार वादन किया।
- 2013 मे परम्परा संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- जुलाई 2013 मे सितार वादन की वर्कशॉप का टोनी एड डैन्नी लोल्स म्यूजिक स्कूल द्वारा अयोजन किया गया।
- अप्रैल 2014 में रगेश्वरी म्यूजिक स्कूल में सितार वादन किया।
- अक्टूबर 2014 में परम्परा संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- सितम्बर 2015 मे योगा आनंद आश्रम मे वादन किया।
- अगस्त 2015 मे एन एवेनिंग म्यूजिक मे वादन किया।
- सितम्बर 2015 मे परम्परा संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- अगस्त 2017 में इंडियन क्लासिकल समारोह में सितार वादन किया।
- 2017 में परम्परा संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- 2018 मे कुसुम महोत्सव मे सितार वादन किया।
- 2018 मे प्रेम भारती मंदिर में सितार वादन किया।
- 2019 में इंडिया सेंटर वेस्टचेस्ट्र मे सितार वादन किया।
- 2019 कारवाँ संगीत सम्मेलन मे सितार वादन किया।
- 2019 संगीत विलास कल्चरल सेंटर मे सितार वादन किया।
- 2019 मे छन्दयान सेंटर मे सितार वादन प्रस्तुत किया।

- 2023 में इंडियन क्लासिकल वर्कशाप में सितार वादन किया।
- 2024 में संगीत समारोह में सितार वादन किया।

संगीत विलास संगीत केंद्र - आपने अमेरिका में संगीत विलास के नाम से स्कूल की स्थापना की जहां पर शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा दी जाती है। आपके बहुत सारे शिष्य हैं जो सितार वादन कर रहे हैं। आप अमेरिका में गुरु शिष्य परम्परा के अन्तर्गत ही संगीत शिक्षण देते हैं।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार -आपके अनुसार सितार वादन का प्रचार पं. रवि शंकर जी द्वारा किया गया फिर उनके बाद अन्य कलाकारों ने विदेश का रुख किया। क्योंकि यहाँ पर उनको कार्यक्रम के अच्छे पैसे दिये जाते थे। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी होनी शुरू हो जाती है। श्रोताओं के बारे में आपका कहना है यहाँ के लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आनंद शांत रह कर लेते हैं।¹⁷⁵

4.4.11 पंडित अजीत सिंह (गवालियर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा- आप का जन्म 14 मार्च आप गवालियर घराने से सम्बन्धित है। गवालियर घराने ध्रुवपद अंग की वादन शैली के लिये प्रसिद्ध है। आपने बताया कि आपके दादा जी को सितारिये बाबा के नाम से जाना जाता था। आप इलाहाबाद से 1950 बनारस

¹⁷⁵साक्षात्कार पं. किन्नर सीन, मार्च, 2022

आ गये। जब बनारस में B.H.U. में संगीत विभाग की स्थापना की गई तब सर्वप्रथम ओंकार पं. नाथ ठाकुर जी के कहने पर आपके चाचा ने संगीत विभाग में डॉ. राजमान सिंह कार्यरत रहे। आपने सितार वादन में प्रवीणता हासिल कर आपने भारत भ्रमण किया। हिमाचल से केरल तक आपने सितार वादन किया जो लोगों ने बहुत पसंद किया। आपके दादा जी से पं. नेहरू जी की बहन विजय लक्ष्मी नेहरू ने भी सितार वादन की शिक्षा ली। आपके पिता जी सरोद वादक थे। बनारस रेडियो सेंटर में अलाऊद्दीन खां और आपके दादा जी, पं. रवि शंकर जी और आपके चाचा जी ने वहां पर अकसर कार्यक्रम दिये हैं। ग्वालियर घराने के कलाकार बहुत कम मिलेंगे। पुरानी से पुरानी गतों के लिये बहुत मशहूर है इस घरानों के कलाकार बहुत कम मिलते हैं।¹⁷⁶

सांगीतिक सफ़र - आपने जर्मनी, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, स्विजरलैंड, लैक्स्मवार्ग, ईटली, यूरोप में सितार वादन प्रस्तुत किया है। आप ईस्ट यूरोप में जाना चाहते थे क्योंकि वहां के लोग संगीत समझते हैं। जर्मनी, ईटली और आस्ट्रेलिया पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के गढ़ हैं और वो संगीत को गहराई से सुनते हैं। भारत में भी आप याद करते हैं कि ऐसे-ऐसे क्षेत्रों में सितार वादन किया है कि जैसे आदिवासियों के क्षेत्र में। भारतीय श्रोता बड़े भाव से सुनते हैं। गायन में तो श्रोता साथ-साथ गाते हैं परन्तु वादन में श्रोतागणों को संग करना मुश्किल होता है। विदेश में आप के द्वारा दिये गये कुछ कार्यक्रमों की सूची –

- 2005 में रदुगा समारोह में सितार वादन किया।
- 2011 में अर्जेटीना में व्लर्ड म्यूजिक में सितार वादन किया।
- 2012 में नव वर्ष के उपलक्ष पर फ्रांस में सितार वादन किया।
- 2015 में अग्नि ग्रुप के साथ सितार वादन किया।
- 2015 में दिवाली महोत्सव पर द टी हाउस में सितार वादन किया।
- 2019 में डेनमार्क में संगीत समारोह में सितार वादन किया।

¹⁷⁶साक्षात्कार पं. अजीत सिंह, नवम्बर, 2022

- 2020 में डविड हॉल में सितार वादन किया।
- 2021 में योगा और संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- 2021 में वेलकम औटअम में सितार वादन किया।
- 2022 में बसंत उत्सव में सितार वादन किया।
- 2022 में फेस्ट ऑफ कलर में सितार वादन किया।
- 2024 में वलेंसे म्यूजिक फिस्ट में सितार वादन किया।
- 2024 में जर्मनी और लुक्सेम्बर्ग संगीत समारोहों में सितार वादन किया।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार -विदेशियों के सितार वादन को लेकर आपके विचार हैं कि भारत से पश्चिम की ओर एक लहर चली थी। जिसमें भारत से बहुत से सितार वादक विदेशों में आये। सितार वादन करने के लिये और विदेशों से बहुत से लोग इंग्लैंड, अमेरिका, स्वीजरलैंड, पैरिस आदि से सितार वादन सीखने आये। विदेशी लोग बहुत ध्यान से सुनते हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को समझने और उसमें डुबने के लिये तैयार होते हैं विदेशी लोग पीछे-पीछे नहीं चलते ना ही वो लोग परेशान करते हैं। आपका कहना है कि जब मैं विदेश आया तो यह देखकर बहुत स्तब्ध और हैरान हुआ कि वो लोग हमारे संगीत को कितना समझते हैं।

पैरिस में कार्यक्रम को याद करते बताया कि वहां पर किसी ने बैठक रखी और वहां के जो श्रोतागण हैं जो बहुत ही अनुभवी संगीत प्रेमी कलाकार थे। उस प्रोग्राम में जो तबला वादक थे वो अपने आप को दिखाने के लिये बहुत ही जोर से तेज तबला बजाया तो श्रोताओं ने कहा कि कार्यक्रम ठीक था परन्तु तबले वाले ने बहुत खलल डाला। आपने कहा कि जब भी मैं किसी कार्यक्रम में सितार बजाता हूँ तो आँखें बंद करके ही अपनी धुन में बजाता हूँ फिर चाहे वो कल्याण हो या पहाड़ी या दरबारी हो तो यह देखता हूँ कि श्रोताओं की आँखें भी बंद होती हैं, एक दम सन्नाटा होता है केवल साज ही सुनाई पड़ता है।

आपका मानना है कि जब तक आप संगीत में खुद को समर्पित ना करो तब तक कुछ नहीं आयेगा। आपका कहना है कि भारत की संस्थाओं द्वारा विदेशों में कार्यक्रम करवाया जाता है। कुछ स्थानीय लोगों द्वारा संस्थाएं बनाई गई है उसका भी कार्यक्रम होता है। ICCR का भी कार्यक्रम होता है। भारत सरकार को चाहिये अपने ऐतिहासिक और समृद्ध कल्चर को बढ़ावा दें।¹⁷⁷

4.4.12 पंडित मदन ओक (मैहर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा – पंडित मदन लाल ओक का जनम 10 नवंबर को हुआ। आप पं. शिव कुमार शर्मा के शिष्य है। आप अमेरिका में संतुर वादक है। आप के अनुसार सितार वाद्य के प्रचार में भारत रत्न पं. रवि शंकर जी का नाम सबसे प्रथम आता है। अमेरिका में सितार वाद्य बहुत प्रसिद्ध है जिसका श्रेय पं. जी को जाता है। उन्होंने अमेरिका में बहुत काम किया है। भारत की कला पूरी दुनिया में लेकर गये। पं. हरि प्रसाद चौरसिया, पं. शिव कुमार शर्मा, उ. जाकिर हुसैन जैसे उच्चकोटी के कलाकारों के लिये भी उन्होंने रास्ते खोले। वह लोग भी विदेश गये अपनी कला कौशल, भारतीय सभ्यता और संस्कृति को विदेश में प्रसिद्ध किया उसकी झलक दिखाई, यह बहुत बड़ा काम किया है। सितार तो एक कारण बना फिर उसके बाद भारतीय शास्त्रीय संगीत में दूसरी दुनिया के रास्ते खुल गये, आप उनसे काफी बार मिले है।

¹⁷⁷साक्षात्कार पं. अजीत सिंह, नवम्बर, 2022

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार -सोशल मीडिया पर सितार वाद्य का बहुत प्रचार है विदेशी लोग सितार बजा रहे हैं इस पर इनके विचार है कि हमारा संगीत बहुत अव्वल है, अगर हम नहीं तो कोई और तो करने वाला नहीं है हमारी विद्या है हमारा सनातन धर्म है, हमें ही हमारे संगीत का प्रचार करना है। आपने बताया कि 34 वर्ष पहले जब वह अमेरिका गये तो उनके साथ केवल उनका वाद्य था और सूटकेस था। हमारा संगीत कहीं लिखा नहीं है यह केवल रियाज के कारण ही होता है। हमारा संगीत मनोरंजन का कारण नहीं है बल्कि धार्मिकता पर आधारित है, आत्मा परमात्मा का मिलन है, हमारा संगीत यूनीक है। जार्ज म्यूजिक भारतीय शास्त्रीय संगीत से मिलता जुलता कह सकते हैं परन्तु उसका पैटर्न अलग है।

श्रोताओं के बारे में कहते हैं कि जब मैं प्रदर्शन के लिये जाता हूँ तो मैं यह नहीं देखता कि श्रोता कितने हैं 50 है, 5 हजार है यह 50 हजार है मैं अपने भगवान को कहता हूँ कि आपने ही करवाना है। हमारे संगीताकरों की अपने वर्षों की तपस्या का ही यह परिणाम है। श्रोता लोग जो समझते हैं वो ही आते हैं, ज्यादातर तो लोग पाश्चात्य ही सुनते हैं। बहुत सारे अमेरिकन और यूरोपियन लोग हैं जो भारत आते हैं संगीत सीखते हैं।¹⁷⁸

4.4.13 उस्ताद प्रो. नरेन्द्र नरूला (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा- आप का जन्म 15 जुलाई 1948 में पटियाला में हुआ। आप के पिता जी जगदीश राय नरूला जी प्रसिद्ध सितार वादक थे और पटियाला घराने के आशिक अली के शागिर्द थे। आपके माता जी गयिका थी और शब्द गायन करती थी।

¹⁷⁸साक्षात्कार पं. मदन ओक दिसम्बर, 2023

संगीत को वातावरण आपको घर से मिला सितार की प्रारंभिक शिक्षा अपने अपने पिता जी से प्राप्त की। आप जी जान से अभ्यास करते थे। 1965 में आप ईमदादखानी घराने के उस्ताद विलायत खां के शिष्य रहें हैं। 1965 से 1970 तक उस्ताद जी से सितार वादन सिखा। उन्होंने आप को सितार उपहार में दी जो आप आज भी बजाते हैं। आप पटियाला में रहते हैं और आप सरकारी कन्या कॉलेज सुनाम से बातौर संगीत विभाग के मुखी के पद से सेवानिवृत्त हुये हैं।

सांगीतिक सफ़र –आप ने 18 वर्ष की आयु में अपना पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। आप गायकी अंग की वादन शैली का अनुकरण करते हैं। आप ने देश और विदेश में अपनी कला का जादू बिखेरा। आप रेडियो और टी. वी के नियामित कलाकार रहे हैं।

विदेशों में सितार वादन – आप इंग्लैंड ,अमेरिका, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, हॉलैण्ड,कनाडा, दुबई आदि देशों में सितार वादन कर चुके हैं। 1988 में आप ICCR कि तरफ से 3 साल के लिये फिजी में रहे और वहां पर रह कर संगीत क प्रचार किया।

- 1988 में ICCR के माध्यम से विदेश में कार्यक्रम के लिये गये।
- 1990 में आस्टेलिया में सितार वादन किया।
- 2017 में कोनोशिया स्कूल में कार्यक्रम दिया।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार - आपके कथनुसार सितार वादन को प्रसिद्ध करने का श्रेय पं. रवि शंकर जी को जाता है जो आज सितार उतना प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने माहौल इतना अच्छा बना दिया फिर उ. विलायत खां, उ. रईस खां आदि वहां गये। पं. रवि शंकर जी से पहले सितार किसी ने नहीं सुना था। सितार की गूँज, उसकी ध्वनि, उसका रख रखाव आदि सब उनके लिये नया था। गिटार यद्यपि वहां प्रसिद्ध था परन्तु सितार से बहुत भिन्न था। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपने आप में एक पुरी सभ्यता है। जो पं. रवि शंकर जी ने दिखाई। उनकी प्रस्तुतीकरण अनोखी थी। विदेशियों को समझ कुछ नहीं लगता था परन्तु फिर भी वो बहुत चाव के साथ सुनते थे और उनके सम्मान में खड़े हो जाते थे।

विदेशों में भारतीय बहुत ज्यादा बस गये जो वहाँ पर भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहित करते थे। सितार वाद्य वहाँ इतना प्रसिद्ध हो गया कि हर कोई सितार सुनना चाहता था।

आप अपना एक अनुभव बताते हैं कि मैं एक बार में आस्ट्रेलिया गया तो वहाँ पर बीच के किनारे बैठा था तो एक गोरा आया और कहा कि (This is Sitar) यह सितार है। उन्होंने खुद से कुछ नहीं कहा परन्तु उसकी बात सुन कर हैरान हो गये कि ये लोग सितार के बारे में समझते हैं।¹⁷⁹

विदेशों में बहुत से सितार वादक जा कर बस गये। बीटल्स पं.जी से सितार वादन सिखते थे। आप U.S.A. गये तो Oxford University के Head of Dept. Music माईक ने भी सितार वादक सीखा और साथ में प्रस्तुती भी दी। उनके द्वारा स्टेज पर कार्यक्रम किया गया। वह लोग सिम्फनी आरकेस्ट्रा बजाते थे। वह प्रोग्राम टिकट के साथ ही रखा गया होता था। वह स्वर, ताल, लय सब समझते थे।

वहाँ के लोग प्रोत्साहित बहुत करते हैं। विदेशियों को राग की समझ नहीं है उन्होंने कहा कि दुनिया की सबसे सुन्दर और आकर्षक आवाज सितार की है। सितार की अपनी खुबसूरती है। गोरों को राग की समझ नहीं लगती फिर भी वह लोग इसका आनन्द लेते हैं जब सितार पर मींड का काम किया जाता है तो बहुत उत्तम और खुबसूरती के साथ होता है।

आप ने बताया कि, न्यूजीलैंड में कार्यक्रम के दौरान एक विदेशी व्यक्ति ने कहा कि आपकी सितार की टोनल सबसे बढ़िया है। बहुत सितार सुनी पर आज जैसी नहीं है। वो लोग सितार के साथ तबले की रिधम का आनंद लेते हैं। वो सितार सीखना चाहते हैं परन्तु उंगली में होने वाले दर्द की वजह से छोड़ देते हैं।

1998 में इंडियन कलचरल सेंटर में कार्यरत रहे। तब वहाँ पर गायन और तबला के भी स्टूडेंट थे। तो जब वो गये उस समय गायन और तबले में काफी शिष्य थे लेकिन

¹⁷⁹साक्षात्कार प्रो. नरेन्द्र नरूला, मार्च, 2022

सितार में कम थे। आपके जाने के बाद वहां सितार के काफी छात्र हो गये। वहाँ का एक वाक्या बताते हुये आपने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम होना था। सभी को 30 मिनट का समय दिया गया पर आप को 10 मिनट का समय दिया। आप के और समय माँगने पर उन्होंने यह कह कर माना कर दिया कि सितार यहां पर कोई नहीं सुनता । परंतु आप ने हार नहीं मानी थोड़ा समय ले लिया और कहा कि आप मुझे इशारा कर देना मैं उसी समय वादन समाप्त कर दूँगा । आप ने इतना उत्तम वादन किया की 45 मिनट हो गये और किसी ने नहीं रोका । आप ने बताया कि जब वो वहां पर गए थे तो सितार सीखने वालो की संख्या बहुत कम थी और जब आप की समय अवधि समाप्त हुई तो सब से अधिक छात्र सितार के ही थे। विदेशियों को सितार सीखने के लिये आपने विदेशियों की सितारों को खुद रिपेयर भी किया।¹⁸⁰

4.4.14 पंडित कुशल दास (मैहर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - पं. कुशल दास का जन्म 1959 को कलकत्ता के संगीत परिवार में हुआ। आपके दादा विमल दास इसराज बजाते थे और आपके पिता और चाचा सितार वादन करते थे। आपने मैहर घराने उ. अलाऊद्दीन खां के शिष्य सजय वंदोपाध्याय और पं. अजय राय से सितार वादन की शिक्षा प्राप्त की। प्रारम्भिक शिक्षा आपको अपने घर से मिली। आपने गायन भी सीखा है।

¹⁸⁰साक्षात्कार प्रो. नरेन्द्र नरूला, मार्च, 2022

सांगीतिक सफ़र - आपने जर्मनी, यूके, जर्मनी, नेपाल, फ्रांस आदि जगह पर मंच प्रस्तुति दे चुके हैं। आपने सितार वादन की तकनीकों और संगीत बनाने की कला में गहन और कठोर प्रशिक्षण प्राप्त किया। आप को स्वर्गीय पंडित अजय सिन्हा राँय जैसे महान संगीतकारों से सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पंडित मानस चक्रवर्ती और स्वर्गीय पंडित रामकृष्ण बसु से गायन की शिक्षा प्राप्त की। संगीत और राग ज्ञान के गहन समझ के साथ आप को अब भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत की परंपरा के अग्रणी मशालवाहकों में से एक माना जाता है। परिपक्वता के साथ आप में भारतीय विरासत और संगीत के प्रति समर्पण का प्रमुख गुण है। ऑल इंडिया रेडियो और टेलीविज़न के ए ग्रेड संगीतकार हैं। आपको चंडीगढ़ के प्राचीन कला केंद्र से संगीत विशारद और मुंबई के सुर सिंगार संसद से सुरमणि से सम्मानित किया गया है। 2022 को संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड दिया गया।¹⁸¹

विदेशों में सितार वादन – आप ने भारत में आयोजित होने वाले प्रमुख संगीत समारोहों में भाग लिया है। 1987 से अब तक उनके विदेश दौरे, जिनमें अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, स्कॉटलैंड, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैंड, इटली, हॉलैंड, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड और बांग्लादेश शामिल हैं, आप को असाधारण सफलता और दर्शकों की सराहना मिली।

- 2015 पेरिस में फिलहारमोनी में सितार वादन किया।
- 13.4.2019 को बोस्टन में 16वें संगीत सम्मेलन में सितार वादन किया।
- 18.10.2021 को दरबार फेस्टिवल में सितार वादन किया है।
- 19.10.2021 को यूरोप के दौरा किया।
- 1.11.2022 जूरिच में सितार वादन किया।
- 5.11.2022 को जर्मनी में सितार वादन किया।

¹⁸¹ साक्षात्कार पं. कुशल दास सितम्बर, 2024

- 18.12.2022 को गाला समारोह सेंटर में सितार वादन किया।
- 19.3.2023 को द भवन लंदन में सितार वादन किया।
- 20.3.2023 को पीपल सेंटर लेस्टर में सितार आदन किया।
- 27.3.2023 एडिनबर्ग स्कटलैंड में सितार वादन किया।
- 20.10.23 को यूरोप के दौरे पर गई।
- 2023 सितार वाद्य की कार्यशाला का आयोजन जर्मनी में किया।
- 2.11.23 को फ्रांस में Strasbourg में वादन किया।
- 15.10.23 नीदरलैंड में सितार वादन किया।
- 10.11.23 को जर्मनी में सितार वादन किया।
- 8.10.23 को स्विज़लैंड में सितार वादन किया।
- 2.4.24 को चैत्रि उत्सव अमेरिका में सितार वादन किया।
- 19.10.24 को नाद जर्नी ऑफ साउंड में सितार वादन किया।
- 21.10.24 को जुगलबंदी समारोह स्विज़लैंड में सितार वादन किया।
- 27.10.24 को दरबार फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 29.10.24 को जर्मनी में सितार वादन किया।
- 2.11.24 को सीलिसकेय स्विज़लैंड में सितार वादन किया।
- 9.11.24 को थिएटर डे ला विले पेरिस में सितार वादन किया।
- 17.11.24 को एम्सटर्डम में सितार वादन किया।
- 13 से 15 .11.24 तक गोस्लर जर्मनी में सितार की वर्कशॉप लगाई।

- 5.3.25 को न्यूयार्क में छदयान सामारोह सितार वादन किया।
- 5.4.25 को मेरीलैंड में सितार वादन किया।
- 12.4.25 को न्यूयार्क में स्ट्रिंग्स ऑफ एटेन्टि में सितार वादन किया।
- 26 से 27.4.25 को मेरीलैंड में सितार की वर्कशॉप लगाई।
- 2.4.25 से 28.4.25 तक अमेरिका के दौरे पर रहे।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार- वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य का प्रचार केवल पं. रवि शंकर जी की वजह से हुआ। हम लोग अब जा रहे हैं तो यह सब उनकी बदौलत ही है। अगर कोई हवाई अड्डे पर सरोद लेकर भी जा रहा है तो विदेशी लोग उसे सितार ही समझते हैं। बहुत ही लोकप्रिय वाद्य है। सितार वादन को लेकर विदेशों में बहुत ही सुन्दर माहौल हो चुका है। विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सितार हर तरफ आज कल देखने सुनने को मिलता है। श्रोता लोग बहुत ही प्यार से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को सुनते हैं और समझते हैं।

आप विदेश में हुए कार्यक्रम को याद करते हुए बताते हैं कि एक बार जब वो विदेश में दौरे पर थे तो वह ईटली गये तो दोपहर में एक सज्जन आये और बोले कि मैंने सुना है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इतनी शक्ति है कि राग रागिनी के गायन वादन से अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, बारिश भी हो जाती है। तो आपने कहा कि यह आपने कहाँ से सुना, तो उस सज्जन ने बोला कि मैंने पढ़ा है तो आपने उसे बोला कि पहले संगीत महात्मा और ऋषि मुनियों द्वारा गाया बजाया जाता था तब वह सब होता था। तो उन्होंने बोला कि ठीक है। फिर आपने बोला कि आप ऐसा क्यों पूछ रहे थे तो उन्होंने बोला कि मिलान शहर में बहुत धुँध हो रही है आज कल आये दिन धुँध के कारण दुर्घटनाएं होती हैं इसलिये अगर बारिश हो जाये तो धुँध हट जायेगी। अगर मानसून का राग बजा देंगे तो बारिश हो जायेगी। तब आपने बोला ऐसा तो नहीं हो सकता पर मैं कोशिश करूँगा मानसून का राग बजाने कि मगर वहाँ का माहौल बिल्कुल वैसा होगा जैसा मैं बोलूँगा, कोई फोटो नहीं खीचेगा, कोई रोशनी नहीं होगी, बस मोमबत्तियाँ होगी। दो घंटे मेघ बजाने के

बाद पूरी रात बारिश हुई और उस दिन मेरे होटल में फूल ही फूल आ गये और आपके गुरु जी ने पूछा कि आपने क्या बजाया था तो आपने बोला कि मुझे कुछ भी याद नहीं है एक लाईन भी नहीं याद है कि मैंने क्या बजाया था।¹⁸²

4 .4.15 पंडित रविन्द्र नारायण गोस्वामी (मैहर घराना)



जन्म और संगीत सफ़र - आप वाराणसी भारत से सम्बन्ध रखते हैं। आप सितार और सुरबहार के कुशल वादक हैं। आप ने संगीत शिक्षा पं. रमाकांत मिश्र ,श्रीमती अमिया देवी, श्री राजेश मोइत्रा आदि से ली। आप ने एमए अर्थशास्त्र में बनारस विश्वविद्यालय से की है। आप रागों और तालों के विशाल ज्ञान के लिए जाने जाते हैं, आप आम तौर पर बजाए जाने वाले रागों के साथ-साथ बहुत दुर्लभ रागों की भी गहराई से जानकारी रखते हैं। आप ने विभिन्न घरानों और शैलियों से वाद्य और गायन संगीत सीखा है, और सितार के साथ-साथ सुरबहार में भी प्रदर्शन करते हैं। पंडित रवींद्र गोस्वामी 50 से अधिक वर्षों से एक पेशेवर संगीतकार हैं और भारत के संगीत शहर बनारस (वाराणसी) में एक वरिष्ठ कलाकार के रूप में पहचाने जाते हैं।

पुरस्कार- आप को भारत में कई राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं, जिसमें प्रयाग संगीत समिति, अखिल भारतीय प्रतियोगिता और उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में प्रथम स्थान शामिल है। आप AIR के ए ग्रेड कलाकार हैं। ICCR के पैनल सदस्य हैं।

¹⁸²साक्षात्कार पं. कुशल दास सितम्बर, 2024

विदेशों में कार्यक्रम - आप देश-विदेश में बहुत से कार्यक्रम दे चुके हैं स्कॉटलैंड, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, डेनमार्क, फिनलैंड, इटली, हॉलैंड, बेल्जियम, स्विट्जरलैंड , कनाडा , अमेरिका आदि देशों में आप सितार वादन कर चुके हैं। आपके शिष्यों में KG Westman, Gianni Cavallaro जो की कुशल सितार वादक है। आप सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में अतिथि शिक्षक रह चुके है। आप येल यूनिवर्सिटी में सीनियर रिसर्च फेलो रह चुके हैं और आपका शोध चर्च कायर संगीत से भारतीय रागों के स्रोतों पर था। आपके अनुसार" मैं चर्च संगीत से नए रागों को प्राप्त करने की प्रक्रिया में हूँ, जिसे मैं सीडी के रूप में लाने की योजना बना रहा हूँ।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार-"संगीत एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सफलता का कोई शॉर्ट कट नहीं है। आजकल के युवा संगीत छात्रों को यह महसूस करना चाहिए कि अभ्यास और कड़ी मेहनत ही एक मात्र रास्ता है। आपके अनुसार विदेशी श्रोता बहुत ही अनुशासित होते हैं। विदेशों में ICCR बहुत अच्छा काम कर रहा हैं। विदेशी सोसाइटी और संस्थाएं भी काफी सारे कार्यक्रम करवाती रहती हैं जैसे- दरबार फेस्टिवल, स्टॉकहोम संगीत सोसाइटी।¹⁸³

4.4.16 पंडित पूर्वयन चैटर्जी (मैहर घराना)



जन्म और शिक्षा संगीत- पूर्वयन चैटर्जी का जन्म 12 सितंबर 1976 को मुम्बई में हुआ। आप एक भारतीय सितार वादक हैं। आप ने पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय संगीत को

¹⁸³साक्षात्कार दूरभाष के माध्यम से नवम्बर 2022

समकालीन विश्व संगीत शैलियों के साथ मिलाने के लिए जाना जाता है। आपने अपने पिता पार्थ प्रतिम चैटर्जी से सितार वादन सीखा। आप का सितार वादन पंडित निखिल बैनर्जी से प्रेरित है।

सांगीतिक सफ़र - आप ने एकल कलाकार के रूप में और शास्त्री सिंडिकेट और स्ट्रिंगस्ट्रक समूहों के एक भाग के रूप में प्रदर्शन किया है। आप शास्त्रीय सिंडिकेट के साथ काम किया है – पहला भारतीय शास्त्रीय बैंड, जिसने रोस्किल्ड फेस्टिवल, डेनमार्क, ओज़ाशिया फेस्टिवल, ऑस्ट्रेलिया, ट्रॉमज़िट फेस्टिवल, जर्मनी आदि में प्रदर्शन किया है। 2008 में टाइम्स म्यूजिक द्वारा जारी एल्बम "लेहर" डेढ़ साल तक बेस्ट-सेलर रहा है। शंकर महादेवन ने टाइम्स म्यूजिक द्वारा जारी आप के सुपर-हिट फ्यूजन एल्बम, "स्ट्रिंगस्ट्रक" में शीर्षक गीत "द्वो" का प्रदर्शन किया है। यह टाइम्स म्यूजिक द्वारा जारी भारत-पाक शांति परियोजना एल्बम "अमन की आशा" में भी संकलित की गई है और इसे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ विश्व संगीत एल्बम के लिए पाम आईआरएए पुरस्कार भी मिला है। उन्होंने "वाद्य" डिजाइन किया जो भारतीय सितार से मिलता जुलता है।

विदेशों में सितार वादन – आप ने 25 सालों में कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी सितार वादन की प्रस्तुति से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अपनी गहन समझ से दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है। आपने विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के होने वाले लगभग सभी कार्यक्रमों और समारोहों में हिस्सा लिया है।

- 2010 में इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सर्कल ऑफ आस्टिन में सितार वादन किया।
- 2011 और 2022 ने दरबार फेस्टिवल में अपनी महारत का प्रदर्शन किया।
- 2012 में ग्लोबल फेस्टिवल जापान में सितार वादन की प्रस्तुति दी।
- 2022 में अमेरिका और इंग्लैंड का दौरा किया।
- 2022 कार्नेगी हॉल में आयोजित प्रतिष्ठित फेस्टिवल ऑफ इंडिया में सितार वादन की प्रस्तुति दी, जिसका आयोजन इंडो-अमेरिकन आर्ट्स काउंसिल ने भारत के महावाणिज्य दूतावास के साथ साझेदारी में किया था।

- 2022 लंदन के बारबिकन सेंटर में सितार वादन की प्रस्तुति दी।
- 2023 में राशिया में सितार वादन किया ।
- 2024 में एमआईटी के वोंग ऑडिटोरियम में सितार वादन प्रस्तुत किया।
- शास्त्रीय सिंडिकेट बैण्ड के सदस्य के रूप में, आप ने डेनमार्क के रोस्किल्डे फेस्टिवल, ऑस्ट्रेलिया के ओज़एशिया फेस्टिवल और जर्मनी के ट्रॉमज़िट फेस्टिवल सहित प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में प्रदर्शन किया है।
- 2024 में शिकागो में सितार वादन किया।
- 2024 दुबई में ग्लोबल फ़्यूज़न कॉन्सर्ट में भाग लिया, जिसमें बिक्रम घोष, मैनुअल हर्मिया और खालिद अल ज़ाबी जैसे कलाकारों के साथ मिलकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को नवीन परिवेश दिया।
- 2025 में PAAMF मैनहट्टन और न्युयॉर्क में सितार वादन की मास्टर क्लास ली ।
- 2025 में चाईना मे चैत्री आर्ट्स के कार्यक्रम में सितार वादन किया।
- 2025 में लटीवीया मे कार्यक्रम में सितार वादन किया।



'सी-टार' वाद्य यंत्र – आप ने नवीन वाद्य 'सी-टार' की खोज की। यह वाद्य यंत्र प्लेक्सी ग्लास या मिथाइल मेथैक्रिलेट से बना पारदर्शी सितार जैसा दिखता है। इसके मुख्य भाग तारदान और जवारी है। जो की सींग से बने हैं और स्टील के तारों पर चांदी की परत चढ़ी

हुई है। यह 1,070 मिमी लंबा है और नीचे और गर्दन पर पारंपरिक सितार के अर्धगोलाकार आकार तुम्बा के बिना आता है, जिससे इसे खड़े होकर बजाना संभव हो जाता है।¹⁸⁴

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार- आप भारत के युवा कलाकार हैं। आप बेहद सम्मानित और बहुमुखी सितार वादक हैं, जो अपने असाधारण कौशल और संगीत के प्रति अभिनव दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। आप ने कई दशकों के करियर के साथ, अपने मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रदर्शनों से दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है, जिसमें पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय संगीत को समकालीन प्रभावों के साथ सहजता से मिश्रित किया गया है। आप के अनुसार आज अगर हमारा संगीत विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध और सबसे अधिक सुना जाने वाला संगीत है तो उसके पीछे हमारे विश्व प्रसिद्ध और विख्यात कलाकारों का ही योगदान है। बीज हमारे बुजुर्गों ने ही डाला है उस फसल की देखरेख हमलोग कर रहे हैं।¹⁸⁵

4.4.17 पंडित मनु सीन (ईटावा घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - पंजाब घराने के तबला नवाज डॉ. लक्ष्मण सिंह सीन और प्रसिद्ध सितार वादक पं. किन्नर सीन के छोटे भाई हैं। पं. मनु सीन सितार वादक हैं। आप का जन्म नवंबर 1967 को पुंजाब में हुआ। सितार वादक मनु सीन देश की युवा पीढ़ी के

¹⁸⁴ द हिंदू 6 अप्रैल 2023,

¹⁸⁵ साक्षात्कार पं. पुर्बयन चैटजी दिसंबर 2021

बेहतरीन और स्थापित सितार वादकों में से एक हैं। उन्हें इटावा घराने के विश्व विख्यात सितार वादक उस्ताद शाहिद परवेज खां से सितार सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सितार वादन में दीक्षित होने से पहले मनु को उनके पिता संगीत आचार्य लछमन सिंह सीन ने गायन और तबला से परिचित कराया था। लछमन सिंह सीन पंजाब घराने के महान संगीतकार थे, जिन्हें भारत के राष्ट्रपति ने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया था। उन्होंने 1950 में संगीत संस्थान 'संगीत विलास' की स्थापना की थी, जिसका संचालन वर्तमान में मनु सीन करते हैं।

सांगीतिक सफर – आप किशोरावस्था में सितार पर धुन बजाते रहते थे। छात्र जीवन से ही उन्होंने कई प्रतिष्ठित पदक और पुरस्कार जीते हैं। उन्होंने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य और संगीत में स्वर्ण पदक के साथ सफलतापूर्वक मास्टर डिग्री पूरी की है। आप आकाशवाणी और दूरदर्शन के 'ए' ग्रेड कलाकार हैं। आप आल इण्डिया रेडियो जालन्धर में बतौर कलाकार नियुक्त हैं। आप अद्भुत और जीवंत सितार प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं।

विदेशों में सितार वादन – पिछले कुछ वर्षों में आपने भारत और विदेशों (अमेरिका, कनाडा, इंडोनेशिया, इंग्लैंड) में बड़े पैमाने पर दौरा किया है। आप ICCR के द्वारा विदेशों में कई जगह पर जा चुके हैं। आप इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका, इंडोनेशिया, यूरोप आदि जगह पर सितार वादन प्रस्तुत कर चुके हैं।¹⁸⁶ आप का सुपुत्र ऋषभ सीन युवा सितार वादक है। उन्होंने अपनी सितार वादन की शिक्षा आपसे प्राप्त की और विश्व भर में बहुत बड़े बड़े मंचों पर सितार वादन की प्रस्तुती दे चुके हैं।

- 2002 में जे फोक्स थिएटर कनाडा में सितार वादन किया।
- 2003 ग्लोब फिस्ट में सितार वादन किया।
- 2002 में विरासत समारोह कनाडा में सितार वादन किया।
- 2011, 2013, 2017 में अमेरिका में सितार वादन किया

¹⁸⁶ साक्षात्कार पं. मनु सीन, नवम्बर, 2022

- 2019 में दरबार फेस्टिवल में सितार वादन किया।

4.4.18 पंडित नरेन्द्र मिश्रा (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - पं. नरेन्द्र मिश्रा बनारस से हैं। आप सितार वादक हैं। आपने सितार वादन की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता पं. मनु लाल मिश्रा से ली और फिर आप उ. विलायत खां के पास चले गये। आप ने 10 साल की आयु में सितार वादन करना शुरू कर दिया था। आपने सितार वादन देश और विदेशों दोनों जगहों पर किया है। सितार वादन में गायकी अंग और परम्परागत गतशैली का सुन्दर मिश्रण मिलता है।

सांगीतिक सफ़र- आप आल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के ए ग्रेड कलाकार हैं। विदेश में 2002 में इंग्लैंड की महारानी क्वीन एलीजाबेथ के सामने सितार वाद्य प्रस्तुत किया। जिसकी खूब सराहना हुई।¹⁸⁷ आप अमेरिका, यूके, जर्मनी, फ्रांस, इटली, चाईना, साऊथ कोरिया, जापान बहुत जगहों पर सितार वादन प्रस्तुत कर चुके हैं।

- 10.10.2019 को जर्मनी में सितार वादन किया।
- 21.10.2019 को फ्रांस में सितार वादन किया।
- 13.7.22 से 31.7.22 तक फ्रांस में अलग अलग शहरों में सितार वादन किया।
- 28,29,30 जुलाई 2023 को योगा सेंटर में फ्रांस में सितार वादन किया।

¹⁸⁷साक्षात्कार पं. नरेन्द्र मिश्रा, सितम्बर, 2023

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार- वैश्विक स्तर पर सितार के प्रचार-प्रचार पर आपने बताया कि देश में तो ठीक है विदेश में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अधिक प्रसार हो रहा है। देश में अभी कम हो गया है। विदेशी लोग भारत के संगीत को पसंद करते हैं। आजकल हर कलाकार विदेश जा रहा है।

विदेशी लोग आपके शिष्य है सितार वाद्य सीख रहे हैं, लैंक्समवर्ग, जर्मनी, इंग्लैंड आदि जगह है, वहां के लोगों में सीखने का जज्बा अधिक है। वह सीखने के लिये, ज्ञान प्राप्ति के लिये जान लगा देते है, मर-मिटते है यहाँ पर ऐसा नहीं है।

4.4.19 ऋषभ रिखी राम शर्मा (मैहर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - ऋषभ रिखीराम शर्मा का जन्म दिल्ली में रिखी राम परिवार में हुआ था, जो की वाद्य यंत्रों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। आप का जन्म 17 सितंबर 2000 को हुआ। 10 साल की उम्र में आप के पिता, संजय रिखीराम शर्मा ने उन्हें सितार से परिचित कराया और संगीत प्रतिभा को निखारा। 11 साल की उम्र में, शर्मा पंडित रविशंकर के शिष्य बन गए, दो साल तक उनके मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त की। पं. जी के निधन के बाद, आप ने पंडित परिमल सदाफल के अधीन अपना प्रशिक्षण जारी रखा और उस्ताद अमजद अली खां और उस्ताद रईस खां जैसे संगीतकारों से भी शिक्षा ग्रहण की। 17 साल की उम्र में संगीत निर्माण और अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए क्वींस कॉलेज, सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क में चले गए।

सांगीतिक सफ़र - आप ने 2011 में विश्व मंच पर सितार वादन शुरू किया, आप ने पंडित रविशंकर के साथ बहुत कम आयु में मंच साझा किया। आप ने वैश्विक ब्रांडों के साथ काम किया है। दूरदर्शन और प्रमुख भारतीय रियलिटी शो जैसे प्लेटफॉर्मों पर पहचान दिलाई है। आप ने शास्त्रीय संगीत को आधुनिक तत्वों के साथ मिला कर वीर रस से प्रेरित चाणक्य जैसी रचनाएं की हैं। 2023 में Spotify के लिए संगीत निर्देशन किया, और 2024 में आप ने पेरिस में ओलंपिक समापन समारोह में भारतीय एथलीटों के लिए प्रदर्शन किया।

आप YouTube, Instagram और Clubhouse जैसे प्लेटफॉर्म पर लाइव कार्यक्रम के माध्यम से दर्शकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं, जहाँ वे अपना संगीत साझा करते हैं और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों पर चर्चा करते हैं। 2020 में, आप ने मानसिक स्वास्थ्य के इलाज के लिए सितार वाद्य का प्रयोग किया। आप मुफ्त में संगीत चिकित्सा सत्र प्रदान करते हैं।

विदेशों में सितार वादन- अपने में संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, कनाडा और दक्षिण अमेरिका में कई स्थानों का दौरा किया है।

- 2012 में हिंदुस्तान के हुन्नरबाज़ में सितार वादन किया।
- 19.8.2014 को पं. रवि शंकर जी के समक्ष सितार वादन किया।
- 2014 दूरदर्शन पर सितार वादन किया।
- 2017 में द युनितर्न चर्च में सितार वादन किया।
- 2019 में अमेरिका के टेक्सास में प्रधानमंत्री श्री नरिंदर मोदी जी और अमेरिका के राष्ट्रीयपति शारी डोनाल्ड ट्रम्प के समक्ष सितार वादन किया।
- 2019 में न्यूयार्क वर्क शॉप का आयोजन किया गया जिसमें सितार वादन की बनावट और तकनीक पर चर्चा की गई।
- 19.10.2020 में प्रारंभ नामक कार्यक्रम में सितार वादन किया जो पंडित रवि शंकर और चतुर लाल जी को समर्पित था में सितार वादन किया।

- 13.9.2020 मे आनन्द सांध्य अमेरिका में सितार वादन किया।
- 20.2 .2021 को अमेरिका में मल्हार समारोह में सितार वादन किया ।
- 21.6.2021को मैनेहर्टेन में संगीत बैठक में सितार वादन किया।
- 27.6.2021 को ओयस्टर बे ऑफ म्यूजिक फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 9.7.2021 को ज़ीवा अर्ल्स फ़ेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 9.8.2021 को नवतमंस ड्राइव ईस्ट फेस्टिवल मे सितार वादन किया।
- 24.10.2021 को योगा सेंटर न्यूयार्क में सितार वादन किया।
- 2.2.2021 को असावरी फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 10.2.2021 को लॉन्ग इसलैण्ड यूनिवर्सिटी में सितार वादन किया।
- 26.1.2022 को राग रंग अमेरिका में सितार वादन किया।
- 7.3.2022 को हॉटॉन अमेरिका में सितार वादन किया।
- 25.6.2022 को चिन्मया मिशन बोस्टन में सितार वादन किया।
- 29.6.2022 को टोरंटो में सितार वादन किया।
- 17.9.2022 को सितार फोर मेंटल हेल्थ कार्यक्रम न्यूयार्क में सितार वादन किया।
- 15.3.2023 को अमेरिका मे सितार वादन किया।
- 17.6.2023 को द भवन संगीत समारोह में सितार वादन किया।
- 23.9.23 को न्यूयार्क में सितार मेंटल प्रस्तुत किया गया।
- 3.12.2022 को हौस्टोन में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
- 19.11.2023 को न्यूयार् में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

- 26.11.2023 को सन फ्रंसिस्को में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
- 17.9.2024 को हावर्ड यूनिवर्सिटी में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
- 19.9.2024 को न्यूयार्क में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
- 22.9.2024 को मेनहटन में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
- 11.10.2024 को न्यूयार्क में सितार मेंटल हेल्थ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
- 8.4.2025 को UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज माई नेपाल में सितार वादन किया।

सितार वादन के साथ मानसिक स्वास्थ्य का उपचार- आप ने वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य को जागरूक करने में संयुक्त राष्ट्र के साथ सहयोग करने वाले पहले संगीतकार के रूप में इतिहास बनाया। आप ने मानसिक स्वास्थ्य मिक्स टेप के लिए सितार वादन भी जारी किया है, जिसमें पाँच राग शामिल हैं, जैसे कि अलहैया बिलावल, भैरवी, खमाज, शंकर और बिहागानंद, जो सभी मानसिक शांति के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। आप ने प्रतिष्ठित “वी द फ्यूचर: रीइमेजिनिंग द फ्यूचर ऑफ़ ग्लोबल मेंटल हेल्थ” शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

आजकल आप का सितार वादन सुन कर युवाओं में सितार वाद्य सीखने की ललक उत्पन्न हो गई है। 2022 में, राष्ट्रपति जो बाईडेन ने दिवाली कार्यक्रम के लिए व्हाइट हाउस में सितार वादन करने के लिए निमंत्रित किया था। आप ने पंडित रविशंकर के वुडस्टॉक की प्रसिद्ध मूल प्रस्तुति को श्रद्धांजलि देते हुए, वुडस्टॉक महोत्सव की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में वुडस्टॉक 50 रीयूनियन का प्रदर्शन किया।¹⁸⁸

¹⁸⁸ साक्षात्कार NDTV के माध्यम से (<https://youtu.be/GfPBE2Nizdk?si=4l07PkkgiNA57lBE>)

4.4.20 अदनान खां (दिल्ली घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - अदनान खां का जन्म दिल्ली घराने के प्रसिद्ध संगीतकार उस्ताद सैय्यद खां के घर में हुआ। आप ने अपने नाना दिवंगत उस्ताद जफर अहमद खां से सितार सीखना शुरू किया था। वह अपने पिता, दिल्ली घराने के प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद सैय्यद खां से वाद्य यंत्र की बारीकियां सीख रहे हैं। वह अब अपने चाचा बंदिश नवाज़ उस्ताद मशकूर अली खां से गायकी अंग सीख रहे हैं।

आप के सितार वादन में गायकी अंग स्पष्ट रूप से झलकता है, जो माधुर्य और उत्कृष्ट तान की गुणवत्ता, राग स्वर और सरगम की शुद्धता पर जोर देता है। आप तानों और झाले का अति द्रुत लय में वादन बखूबी वादन करने में माहिर हैं।

सांगीतिक सफ़र - अदनान का पहला प्रदर्शन 8 साल की उम्र में था; तब से उन्होंने भारत और विदेशों में कई प्रतिष्ठित समारोहों में प्रदर्शन किया है, जिनमें दुनिया में भारतीय शास्त्रीय संगीत का सबसे पुराना समारोह हरिबल्लभ संगीत सम्मेलन, मुंबई में कल के कलाकार और उस्ताद विलायत खां फाउंडेशन शामिल हैं।

विदेशों में सितार वादन - आप रियाज़ को अधिक महत्व देते हुये कहते हैं की रियाज़ इतना होना चाहिये कि आप मंच पर 4 घंटे लगातार सितार वादन कर सके। आपने अपने यादगार पलों को याद करते हुए बताया कि अमेरिका में एक कार्यक्रम के दौरान प्रसिद्ध विदेशी गायिका टेलर स्फिट के सामने सितार वादन किया। जिसकी उन्होंने बहुत सराहना की। कार्यक्रम के बाद मेल के माध्यम से तारीफ भी की। आप ने बताया कि वहां पर लोग

संगीत सुनते हैं उसका आनन्द लेते हैं। आप ने अमेरिका , कनाडा , यूरोप आदि जगह पर सितार वादन कर चुके हैं।

आप के अनुसार संगीत कला वह कला है जिससे आप जितनी मेहनत और लगन के साथ सीखेंगे उतना ही आप वादन में पारंगत होते जाओगे पर आजकल नौजवान मेहनत मशक्कत से दूर भागते हैं। विदेशी लोग ऐसे नहीं हैं वह हर एक काम को पूरी लगन के साथ करते हैं।¹⁸⁹

4.4.21 श्री अशोक नायर (मैहर घराना)



जन्म और संगीत यात्रा – अशोक नायर जी का जन्म 30 दिसंबर को हुआ। आप कोलकाता में पं. पार्थ बोस के शिष्य हैं। आप सितार और सुरबहार दोनों वाद्य बजाते हैं। आपके अनुसार पं. रवि शंकर जी ने सितार को प्रसिद्ध किया है। आप जर्मनी में रहते हैं और वहां पर संगीत की शिक्षा दे रहे हैं आप पेशे से इंजीनियर हैं। आप मैहर घराने से हैं।

विदेशों में सितार वादन - आप मैनेहिन अकादमी ऑफ म्यूजिक में आपने सितार वादन की शिक्षा देते हैं। आप जर्मनी में यूनिवर्सिटी में भी संगीत शिक्षा देते रहे हैं। आप जर्मनी में कई जगह पर सितार वादन प्रस्तुत कर चुके हैं। आपके पास अधिकतर जर्मनी के लोग संगीत सीखने आते हैं। आपने ही सर्वप्रथम सितार में DJ Boxes और Contact Mics लगाये थे। पं. पार्थ चटर्जी, उ. अशरफ खां (पाकिस्तान) ऋषभ शीन आदि की सितार

¹⁸⁹साक्षात्कार अदनान खान दिसम्बर, 2023

पर आप ही काम करते हैं।¹⁹⁰ आप ने जर्मनी मे इंदरझाला नामक ओर्केस्ट्रा का भी निर्माणा किया जिसका प्रदर्शन करते रहते है।

- 20.7.2013 को जर्मनी में इंडिया क्लासिकल म्यूजिक समारोह में सितार वादन किया।
- 7.12.2013 को जर्मनी में वर्ल्ड म्यूजिक अकादमी में सितार वादन किया।
- 19.1.2015 को मन्हिम में सितार वादन किया।
- 10.5.2015 को ओरिएंटल संगीत अकादमी में सितार वादन किया।
- 2.2.2016 को जर्मनी में सितार वादन किया।
- 14.7.2016 को सितार समारोह मैज़ यूनिवर्सिटी द्वारा करवाया गया मे सितार वादन किया।
- 19.11.2016 को बेगलामा फेस्टिवल में सितार वादन किया।
- 12.1.2017 को मैज़ यूनिवर्सिटी मे सितार वादन किया।
- 30.7.2017 को क्लास समारोह में सितार वादन किया।
- 10.6.2017 में ओपन वर्ल्ड स्टेज पर सितार वादन किया।
- 26.1.2018 को रिपब्लिक दाएँ पर सितार वादन किया।
- 15.7.2019 को इंदरजाला का प्रदर्शन किया।
- 29.1.2021 में शिराज़ समारोह में सितार वादन किया
- 23.6.2022 को इंदरजाला का प्रदर्शन म्यूनिख में किया।
- 20.10.22 इंडिस्चेर तंज़ एंड म्यूजिक में सितार वदन किया।
- 20.11.2022 में मन्हिम में सितार और ओर्केस्ट्रा का वादन किया।

¹⁹⁰माध्यम दरभाषा, साक्षात्कार श्री अलोक नवम्बर, 2022

- 27.2.2022 को ओरिएंटल संगीत अकादमी में सितार वादन किया।
- 20.5.2023 को इंदरजाला का प्रदर्शन किया।
- 16.9.2-23 को ओरिएंटल संगीत अकादमी में सितार वादन किया।

4.4.22 सरदार जगजीत सिंह (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - स. जगजीत सिंह ईमदादखानी घराना से संबंध रखते हैं। आप उ. शाहिद परवेज जी के शिष्य हैं। आप का जन्म 8 अगस्त 1969 को फगवाड़ा में हुआ था। आप के पिता जी स. प्रगट सिंह जी संगीत आचार्य थे और उच्चकोटि के गायक थे। वह शाम चौरासी घराना के प्रमुख संगीतकार मास्टर रत्न जी के शगिर्द थे। आप ने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता जी से ली। उस्ताद किन्नर सीन से तबला और सितार वादन की शिक्षा ग्रहण की। पिछले 2 दशकों से भी अधिक समय से आप उस्ताद शाहिद परवेज़ जी से जुड़े हुए हैं।

संगीतिक सफ़र- सन् 1979 में 10 वर्ष की आयु में आप अपने परिवार के साथ न्यूयार्क में बस गये। आप एक गुणी सितार वादक हैं और कई जगहों पर सितार वादन की प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं। 1980 में आप ने अपनी पहली प्रस्तुति अपने पिता जी के साथ दी थी। आप अमेरिका में SPK अकादमी द्वारा लगाये जाने वाले संगीत शिविर में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। आप पेशे से इंजीनियर हैं। सितार वादन में आप की अत्यंत रूचि है।

विदेश मे सितार वादन-

- आप ने 2011 और 2015 में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के सामने वाईट हाउस में प्रस्तुति दी थी।
- 2013 और 2018 में छंदयान संगीत समारोह मे सितार वादन किया।
- 2015 पंजाबी सहित्य अकादमी अमेरिका मे प्रस्तुति दी ।
- आप ने न्यूयार्क सिटी हॉल , न्युजर्सी गेलन रॉक, टॉउन हॉल मैनेहेटन , रिचमंड हिल् लाईब्रेरी में भी सितार वादन किया।
- फिनेक्स में प्रति वर्ष SPK अकादमी द्वारा चंदलेर पब्लिक हाइ स्कूल में सालाना संगीत समारोह करवाये जाते है जिसमें आप सितार वादन करते है।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार- आप पेशे से एक इंजनीयर है। आपके अनुसार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचलन विदेशों में पिछले दशकों से काफी बढ़ गया है। विदेशी लोग संगीत को अपना रहे है। पं. रवि शंकर ने इस में बहुमूल्य योगदान दिया।उसी का प्रभाव है कि अमेरिका में सितार आज बहुत प्रसिद्ध हई। सितार वाद्य के प्राचार में उ. विलायत खां के द्वारा दिये योगदान और गायकी अंग के सितार वादन ने सितार वाद्य को अलग मुकाम दिया।¹⁹¹

4.4.23 डॉ. श्रावणी बिस्वास (ईटावा घराना)



¹⁹¹ साक्षात्कार स. जगजीत सिंह , मई 2022

जन्म और संगीत शिक्षा - आप क जन्म 1 सितंबर 1969 को हुआ। आप भारत रत्न पं. रवि शंकर इंटरप्रीटेशन सेंटर, वाराणसी में शिक्षका के रूप में कार्यरत हैं। आप देश-विदेश कई जगहों पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम दे चुकी हैं आपको कई पुस्तकारों और आवाडों से सम्मानित किया जा चुका है। आप उ. शाहिद परवेज जी की शिष्या हैं। आपने वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के प्रचार-प्रसार के बारे में बताया कि आजकल हिन्दुस्तानी वाद्य यंत्रों में सितार सबसे प्रमुख व प्रचलित वाद्य है।

संगीतिक सफ़र - आप ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन की ए ग्रेड कलाकार हैं। आप ICCR के साथ 2017 से जुड़ी हुई हैं। आपने 2003 से 2012 तक जापान का दौर किया। 2010 में ग्रीस का दौरा लगाया। आप ICCR और स्पीक मैके के कलाकार हैं। विदेश में आपके कई छात्र हैं जिसमें यशोहिरी (टोकियो) Crie Nakaya (जापान) से सितार वादन की शिक्षा ले रहे हैं।¹⁹²

4.4.24 शुभ्रनील सरकार (ईटावा घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - आप पद्म श्री उ. शाहिद परवेज जी के शिष्य हैं। ईटावा घराने से सम्बन्धित हैं। आप युवा सितार वादक हैं। आपने देश-विदेश में बहुत जगहों पर सितार वादन किया है। आपने प्रारम्भिक शिक्षा पं. विमल चटर्जी (कोलकाता) से हुई है जो उ. विलायत खां के घराने से थे। आपने 5 से 6 वर्ष की आयु से सितार बजाना शुरू कर दिया था। आपने ऑल इंडिया रेडियो पर 8 वर्ष की आयु में बजाया।

¹⁹²साक्षात्कार दूरभाष द्वारा अक्टूबर, 2024

सांगीतिक सफ़र - आप अमेरिका , मक्सिको, कनाडा , इंग्लैंड , यूरोप में सितार वादन कर चुके हैं। श्रोताओं के बारे में आपका कहना है कि लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बारे में जो लोग जानते हैं राग की जानकारी रखते हैं। वह इसका आनंद लेते हैं। आयोजक, श्रोता आदि लोग संगीत की जानकारी रखते हैं तो अच्छा लगता है। ताल को , लयकारी को , गतकारी के अलग- अलग पहलू को समझते हैं तो मजा आता है।

वैश्विक स्तर पर सितार वादन के प्रचार प्रसार के बारे में आपके विचार - हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य 600 वर्षों से है यह अपनी इस रूप में बहुत से उथल पुथल और परिवर्तन के दौर से गुजर कर यहाँ तक आई है। पहले यह एक संगतकारी के रूप में गायन के साथ प्रयोग होती थी। परन्तु फिर परिवर्तन के साथ यह एकल वादन के रूप में प्रयोग होने लगा। इसकी ध्वनि इसको सबसे अलग बनाती है। इसकी में मींड दो से पाँच स्वरों की बजाई जाती है जो इससे सबसे अलग बनाती है। गायकी में प्रयोग की जाने वाली हरकतें इसमें निकल सकते हैं।

सितार भारत में बहुत प्रसिद्ध है। भारत में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के हर कार्यक्रम में सितार वाद्य बजाया जाता है। आजकल सितार भारत के बाहर विदेशों में भी बजाया जाता है। अमेरिका और यूरोप में सितार में रूचि बीटल्स की वजह से आई जब जार्ज हैरिसन, भारत, काशी और ऋषिकेश आये तो लोगों ने सितार को पहचाना। इसका श्रेय पं. रवि शंकर को जाता है। वहाँ लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखने के लिये नहीं बल्कि केवल बजाने के लिये सीखा फिर बाद में उन्होंने सितार पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखा। पं. रवि शंकर के कारण ही पश्चिम में सितार प्रसिद्ध हुआ। उनके बाद अलग-अलग जगह पर बहुत सारे लोग गये वहाँ रहे क्योंकि संसार बहुत बड़ा है। अलग-अलग जगहों पर जाकर रहना और भारत का अगर कोई वाद्य प्रसिद्ध है वह केवल सितार ही है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत कोई भी बजा सकता है। अगर वो उसको अच्छे से सीखता है और अच्छे से निभाता है। वह सितार वाद्य और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत बजा सकता है। अगर उसमें सीखने की तीव्र इच्छा है तो वह सीख सकता है। भारतीय सरकार

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार व प्रसार के लिये निरंतर कार्यरत है। संस्थाएँ भी अग्रसर हैं। यूरोपियन देशों में कलाकारों को छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं कि आप अपनी कला कौशल का प्रचार करो पर भारत में ऐसा नहीं है अगर यहां पर भी ऐसा कुछ हो तो कलाकारों को बहुत सहयोग होगा।¹⁹³

4.4.25 श्री राहुल मधुकर (गायक)

श्री राहुल मधुकर मॉरिसस में Mahatma Gandhi Institute में आप शास्त्रीय संगीत के अध्यापक हैं। वार्ता के दौरान आप ने बताया कि आप गुजरात से हैं। मॉरिसस में 1969 में Mahatma Gandhi Institute की स्थापना की गई। यहां पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देने के लिये हिंदुस्तान से ही कलाकारों को बुलाया जाता है। आप की नियुक्ति 2013 से वहां पर है। The Indira Gandhi Centre of Indian Culture, 1987 में इस केंद्र ICCR ने खोला। यहां पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ और भी भारतीय कलाओं को सिखाया जाता है। जिस के लिये कलाकारों को बुलाया जाता है। यह संस्था Cultural Programmers, Cultural Seminars Workshops, Training आदि की भी व्यवस्था करती है। त्योहारों और महत्सवों पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाए जाते हैं। यहां पर पं नंद लाल जी सितार की शिक्षक कई रूप में नियुक्त थे।¹⁹⁴

4.4.26 पंडित श्री लाल सहजपाल



¹⁹³ई मेल के माध्यम से बातचीत के अंश नवम्बर, 2022

¹⁹⁴साक्षात्कार दूरभाष द्वारा अप्रैल, 2024

जन्म और संगीत शिक्षा – आप का जन्म पंजाब के एक कस्बा नुरमहल में हुआ। सांगीत का वातावरण आप को अपने घर से मिला। आप पंजाब घराने के तबला नवाज पं. रमाकांत जी के छोटे भाई हैं। आप ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विधिवत् शिक्षा ली है। आप 1974 में नोर्वे चले गये थे तब से नोर्वे में भारतीय शास्त्रीय संगीत की पहचान के लिए बड़े पैमाने पर काम किया है। आप ने म्यूजिक एंड आर्ट स्कूल इन नोर्वे में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी, आप के पास वहां के स्थानीय नागरिक संगीत की शिक्षा ग्रहण करने आते, आप वहां पर गायन, वादन (वायलिन, सितार) दोनों सिखाते थे।

संगीतिक सफ़र – आप ने 1989 में नेशनल कॉन्सर्ट्स के साथ मिलकर पहली बहुसांस्कृतिक परियोजना का नेतृत्व किया और कई नॉर्वेजियन लोक संगीतकारों के साथ काम किया। आप के पास भारतीय विश्वविद्यालय से संगीत प्रदर्शन में मास्टर डिग्री है और वर्तमान में आप तबला, सितार, वायलिन और गायन सिखाते हैं।

आप के साथ हुई बातचीत में आप ने बताया कि नोर्वे एक छोटा सा देश है। यह पर शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते हैं, पर भारत के मुकाबले कम होते हैं आप की सुपुत्री डॉ. रोहिणी सहजपाल सितार वादिका हैं। पिछले 12 वर्ष से पं. हरि प्रसाद चौरसिया जी से सितार वादन सिख रही हैं। आप नोर्वे में बहुत बड़े – बड़े समारोहों में सितार वादन कर चुकी हैं। रोहिणी ने कार्यक्रमों के अलावा मेला महोत्सव, मोल्डे जैज़ महोत्सव, हरस्टेड महोत्सव में बजाया है और नेशनल कॉन्सर्ट्स के साथ दौरा किया है।

नोर्वे में विभिन्न संस्थाएँ हैं जो संगीत कार्यक्रम करवाती आ रही हैं। Indere Festival, Ice Music Festival, Ultima Music Festival, Oslo World Festival, RIAS concert करवाये जाते हैं। जहाँ पर भारत से कलाकारों को बुलाया जाता है।¹⁹⁵

¹⁹⁵साक्षात्कार ई-मेल के माध्यम से नवम्बर, 2022

4.4.27 डॉ. सावन जोशी (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - आप नेपाल से हैं। आप ने जापान में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा पं. अमित रॉय जी से ग्रहण की। टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फाइन आर्ट्स में सितार के अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। आप के अनुसार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इतना प्रचलित हो चुका है की उसे शास्त्रीय संगीत के नाम से जाना जाता है। भारत के पड़ोसी देश, खास कर पाकिस्तान, नेपाल और बांग्ला देश ऐसे देश हैं जहां उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत कई शताब्दियों से शास्त्रीय संगीत के रूप में पल्लवित हो रहा है और इसे अपनी शास्त्रीय संगीत परंपरा के रूप में भी अपनाया है।

सांगीतिक सफ़र - 2000 में, वे अपने आगे के अध्ययन के लिए जापान गए जहाँ उन्होंने नेपाली संगीत संस्कृति को पेश करने के लिए बहुत सारी गतिविधियाँ कीं। 2003 में मानसून रिकॉर्ड जापान और ईस्ट मीट्स वेस्ट थीम, नेपाल से अपना एकल सितार एल्बम "स्वतन्त्र" जारी किया। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय कलाकारों के साथ नेपाल, जापान और ताइवान में संगीत कार्यक्रम के कई अनुभव हैं। जापान में रहने के दौरान आपने सितार वादक अमित रॉय (सितार लीजेंड पं. निखिल बनर्जी के शिष्य) से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का मार्ग दर्शन भी लिया था। सावन जोशी विभिन्न में नेपाल के शास्त्रीय और पारंपरिक संगीत के बारे में भी शोध कर रहे हैं।¹⁹⁶

- 2006 में टोक्यो नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ फाइन आर्ट्स एंड म्यूज़िक से संगीत शास्त्र में मास्टर डिग्री प्राप्त की।

¹⁹⁶ साक्षात्कार ई-मेल के माध्यम से नवम्बर 2022

- 2010 में, उन्हें टोक्यो नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ आर्ट्स द्वारा संगीत शास्त्र में डॉ. ऑफ़ फिलॉसफी PH.D से सम्मानित किया गया।
- 2013 से आप टोक्यो नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ आर्ट्स के संगीत विभाग में व्याख्याता के रूप में काम कर रहे हैं जहाँ वे सितार बजाने की विधि और उसके सिद्धांत सिखाते हैं।
- वर्तमान में, आप जापान के विभिन्न भागों में सितार सिखाने के साथ-साथ संगीत शोधकर्ता के रूप में काम कर रहे हैं। वह विभिन्न शैलियों के साथ विभिन्न प्रकार के संगीत समारोहों में भी भाग ले रहे हैं।¹⁹⁷

4.4.28 पंडित चन्द्रशेखर (मैहर घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा- पं. चन्द्रशेखर ने 1986 में खैरागढ़ यूनिवर्सिटी से संगीत में एमए किया। आपने संगीत की तालीम दिनकर जी से और ग्वालियर घराने से भी संगीत सीखा। उ. अमजद अली से भी तालीम ली। आप सुरबहार के भी सिद्धहस्त हैं। आप सितार वादन में भी उतने ही निपूण कलाकार हैं। आपने थीम बेस्ड कार्यक्रम किये जैसे (राग अनोखे) जिसमें मुश्किल और जटिल रागों को बजाना जैसे राग गौड सारंग, हिण्डोल, मारवा आदि।

सांगीतिक सफ़र - आपने साऊथ अफ्रीका और इंग्लैण्ड में बहुत कार्यक्रम किये। आपने नेहरू सेंटर में इंग्लैण्ड की राग मारवा में रूद्र ताल में गत वादन और तिलक कामोद में

¹⁹⁷साक्षात्कार ई-मेल के माध्यम से नवम्बर 2022

पंचम सवारी में गत वादन है। सुर बहार आपको बहुत पसंद है उसका वादन भी आप खूब करते हैं। लोग राग कम पसंद करते हैं, बालीवुड संगीत अधिक प्रचलन में है इसलिए पसंद किया जाता है। शास्त्रीय संगीत पसंद करने वालों का वर्ग छोटा है।¹⁹⁸

- सोशल मीडिया पर विदेशी लोगों का सितार वादन पर आपके विचार है कि अच्छा बजाने वाले लोग हर तरह का वाद्य वादन में मिल जाते हैं। भारत में भी अच्छा बजाने वालों की कमी नहीं है। विदेशी लोग यूरोप, अमेरिका आदि में संगीत सीख रहे हैं। विश्व स्तर पर सितार वादन का प्रचार करने में पं. रवि शंकर ही रहे हैं। उनके बाद उनकी बेटी अनुष्का शंकर भी अच्छा काम कर रही है। उस समय निखिल बैनर्जी, उ. विलायत खां आदि लोग भी विदेश गए। तबला वादकों और अन्य वाद्य यंत्रों के कलाकारों ने विदेश जाना आरंभ किया। सितार सबसे आसान वाद्य है तंत्री वाद्यों में सरोद, वायलिन, सारंगी सभी पर्दे रहित वाद्य है। इसलिये सितार पर पर्दे रहते हैं वो इन वाद्यों में बजाना आसान है। पं. शिव कुमार शर्मा जी का संतुर भी बाद में लोकप्रिय रहा है।
- यादगार क्षण साँझ करते हुए बताया कि आपने साऊथ अफ्रीका में भारतीय कौंसल में प्रदर्शन किया था। प्रोग्राम में तो बहुत लोग वाह-वाह बोलते हैं परन्तु बहुत कम लोग होते हैं जो मिलने आते हैं तो वहाँ पर राग समय सिद्धांत की बात चली और मुझ से पूछा गया कि आप इस पर विश्वास करते हैं तो आपने कहा कि हाँ मैं करता हूँ। पं. रवि शंकर जी ने कहा है कि कर्नाटकी संगीत में समय सिद्धांत नहीं है उनका संगीत राग आधारित संगीत नहीं है। राग, प्रथा हिन्दुस्तानी संगीत में है। जिसको राग की जानकारी नहीं है अगर उसके सामने राग भैरवी बजाओ और शाम को कल्याण का वादन करो उसको वो महसूस तो होता है। राग समय सिद्धांत में इतनी शक्ति तो है। आप ICCR की तरफ से बहुत बार विदेशों में दौरे पर जा चुके हैं और सितार वादन प्रस्तुत कर चुके हैं।¹⁹⁹

¹⁹⁸साक्षात्कार Zoom Meeting द्वारा

¹⁹⁹साक्षात्कार Zoom Meeting द्वारा

4.4.29 श्रीमती रूपा पनेसर (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - रूपा पनेसर को ब्रिटेन से भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में उभरने वाली सर्वश्रेष्ठ सितार वादकों में से एक माना जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ जैज़ और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत शैलियों को अपनाकर, आप श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। लंदन में जन्मी और लीसेस्टर में पली-बढ़ी रूपा पनेसर को कम उम्र से ही सितार सीखने का अवसर मिला। सात साल की उम्र में प्रसिद्ध शिक्षाविद् और संगीतकार उस्ताद धर्मबीर सिंह एमबीई के साथ शुरू हुआ। उस्ताद धर्मबीर सिंह, स्वर्गीय उस्ताद विलायत खान के शिष्य थे। पंडित अरविंद पारिख, उस्ताद शाहिद परवेज़, पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी और उस्ताद बहाउद्दीन डागर जैसे उस्तादों से अतिरिक्त प्रशिक्षण प्राप्त करके आपने ज्ञान और कौशल को और भी निखारा गया है। आप गर्व से दुनिया भर में उन भारतीय महिलाओं की सूची में शामिल हो गई हैं जिन्होंने सितार वादक के रूप में अपना करियर शुरू किया है।

संगीत कार्यक्रम - आप ने कई उत्कृष्ट संगीत प्रस्तुतियां दीं। कई उच्च-स्तरीय राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम, दौरे और टेलीविज़न प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें

- बीबीसी1 द्वारा प्रसारित वीजे 75 स्मारक, जिसमें प्रिंस ऑफ वेल्स भी उपस्थित रहे।
- बेल्जियन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के साथ काम किया है।
- आपने मर्करी पुरस्कार विजेता तलविन सिंह के साथ भी सहयोग किया है।

- लंदन के प्रतिष्ठित भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य दरबार महोत्सव और WOMAD UK में भाग लेने वाली संगीतकार रही हैं।
- बर्मिंघम सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के शताब्दी वर्ष समारोह के दौरान द गार्जियन द्वारा की गई लाइव समीक्षा में, जिसका आयोजन सर साइमन रैटल ओएमसीबीई ने किया था, में सितार वादन किया।
- "स्लमडॉग मिलियनेयर साउंडट्रैक से ए.आर. रहमान का संगीत के साथ प्रभावी रूप से सितार वादन और ऑर्केस्ट्रा के एक संगीत कार्यक्रम में अद्भुत निपुणता के साथ सितार बजाया है।"
- आपने यूके, भारत, यूरोप और अमेरिका में व्यापक दौरे किए हैं। पहला एल्बम 'खोज' 2011 में मिलापफेस्ट इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन आर्ट्स के माध्यम से रिलीज़ हुआ था।
- आपका नया सुबह के रागों वाला एल्बम, 'सुभा', एशियन आर्ट्स एजेंसी के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रिलीज़ किया जा रहा है, जिसका वितरण कैडिज़ म्यूज़िक के माध्यम से 12 अगस्त 2022 किया गया।²⁰⁰

4.4.30 श्रीमती सीमा गुलाटी (ईमदादखानी घराना)



²⁰⁰ साक्षात्कार दूरभाष के माध्यम द्वारा, 2025

जन्म और संगीत शिक्षा - सीमा गुलाटी को एसपीके अकादमी ऑफ म्यूजिक की सुपरवुमन के रूप में जानी जाती हैं, । आप अकादमी में अपनी अनेक भूमिकाओं को खूबसूरती और निस्वार्थ भाव से निभाती हैं । आप उस्ताद शाहिद परवेज़ जी की वरिष्ठ शिष्या,, एक कलाकार, अकादमी की निदेशक और छात्रों की मार्गदर्शक, शिक्षिका है। बचपन से ही आप संगीत की ओर हमेशा से ही आकर्षित रही है । आप को बॉलीवुड के गाने बहुत पसंद थे, और आप लताजी (दिवंगत लता मंगेशकर) जी के गाने दिन भर सुनती, उनके साथ गाती, और उनकी तरह बनने का सपना देखती थी । आप छोटी उम्र से ही संगीत से परिचित थी, लेकिन 15-16 साल की उम्र में ही संगीत प्रशिक्षण लेना शुरू किया, पहले रॉयल कंज़र्वेटरी ऑफ़ म्यूज़िक के ज़रिए पश्चिमी शास्त्रीय गायन में, और फिर पाकिस्तानी संगीतकार सोहेल राणा से भारतीय शास्त्रीय संगीत और भारतीय शास्त्रीय नृत्य कथक का भी कुछ प्रशिक्षण लिया।

आप ने सबसे पहले पंडित देबू चौधरी और उस्ताद निशात खां को सितार बजाते देखा था। आपके अनुसार कि मैंने सोचा था, 'ज़रा इनके चेहरे के भाव तो देखो, इन्हें कितना मज़ा आ रहा है। मैं भी ऐसा ही महसूस करना चाहता हूँ। '1999 में जब विश्वविद्यालय में कथक सीख रही थी, तभी एक संगीत समारोह उस्तादजी का सितार वादन सुना। आप पहले से ही संगीत की ओर बहुत आकर्षित थीं, और यह जानकर हैरानी हुई कि एक ही वाद्य यंत्र से इतनी सारी ध्वनियाँ निकल सकती हैं।

कार्यक्रम के कुछ दिन बाद एक कार्यशाला थी, आप किसी कारणवश कार्यशाला में नहीं पहुँच पाईं लेकिन उस समय उस्तादजी के एक वरिष्ठ छात्र से मूल बातें सीखनी शुरू कीं, और यहीं से यह सब शुरू हुआ। टोरंटो की अपनी वापसी यात्रा में आप को उस्ताद जी से दोबारा मिलने का सौभाग्य मिला। आपके अनुसार मुझे नहीं पता था कि यह मुझे कहाँ ले जाएगा, लेकिन मुझे पता था कि मैंने सितार बजाना है।

विदेशों में कार्यक्रम – आप अमेरिका, कनाडा, भारत, यूरोप आदि स्थानों पर सितार वादन की प्रस्तुति दे चुकी है। अमेरिका में जितने भी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते हैं लगभग सभी में सितार वादन कर चुकी है। आप एसपीके अकादमी

ऑफ म्यूजिक की निर्देशिका होने के साथ-साथ शिक्षिका भी हैं²⁰¹। उ. शाहिद परवेज़ जी के अनुसार अकादमी का सारा काम सीमा ही संभलती हैं। अकादमी आज जिस मुकाम पर हैं उसमें सीमा का भी बहुत योगदान है क्योंकि वो चाहती है की हमारा संगीत निरंतर प्रगतिशील रहे।²⁰²

4.4.31 डा. रेणुका गंभीर (ईमदादखानी घराना)



जन्म और संगीत शिक्षा - डा. रेणुका को संगीत विरासत में मिला आपके पिता ओम प्रकाश जी उच्चकोटी के सितार वादक थे और इमदादखानी घराने के कलाकार थे। डॉ. रेणुका हिसार में बतौर प्रोफेसर कार्यरत हैं। आप रेडियो के ए ग्रेड की कलाकार हैं। आपने देश में ही नहीं विदेश में भी सितार वादन की स्वर लहरी छोड़ी है। आपके साथ बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

वैश्विक स्तर पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार पर आपका विचार - यह हमारे हिन्दुस्तानी की धरोहर है बहुत ही खुशी की बात है विदेशी लोग इसे बहुत ही चाव व प्रसन्नता से सुनते हैं हमारे कलाकार विदेश जा रहे हैं इसकी विदेशों में बहुत मान्यता है लोग बहुत ही रूचि के साथ सुनते हैं। हिन्दुस्तानी संगीत के प्रचार का श्रेय हमारे सभी उच्चकोटी के कलाकारों को दिया जाता है जिन्होंने कड़ी मेहनत से हमारे संगीत को विदेश की धरती तक पहुँचाया।

²⁰¹ साक्षात्कार दूरभाष के माध्यम द्वारा , 2024

²⁰² साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज़ 2024

आपने बताया कि आपको सर्वअकाल संगीत अकादमी की तरफ से कनाडा में होने वाले कार्यक्रम में जाने का अवसर मिला जो कि प्रतिवर्ष कलैगरी में करवाया जाता है। वहाँ पर सितार वादन का मौका मिला जो कि बहुत अच्छा रहा। लोगों ने बहुत आनंद से सुना, बहुत रूचि दिखाई जो मुझे देखकर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने आपका वीडियो भी बनाया, विदेशी लोग फोटो खींचा रहे हैं, बहुत अच्छा लग रहा है। श्रोतागण बहुत ही अच्छे से सुनते हैं जब भी उनको कुछ अच्छा सुनने को मिलता है तो जोरदार तालीयाँ बजाई जाती हैं। हाल में किसी भी तरह की अवस्था नहीं होती बहुत ही शांति होती है।

विदेशियों के सितार वादन की शिक्षा पर आपके विचार हैं कि विदेशी लोग सितार सीख रहे हैं। जैसे आज के युग में सांस्कृतिक आदान-प्रदान चल रहा है बहुत सारे विदेशी आकर सितार सीख रहे हैं तो हिन्दुस्तानी लोग भी पश्चिमी संगीत सीख रहे हैं। लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तरफ अधिक आकर्षित हो रहे हैं जो कि बहुत अच्छी बात है। यह हमारे लिये बहुत ही सौभाग्य की बात है हमारे कल्चर विदेश में खूब प्रचलित हो रहा है।

विदेश का अनुभव बहुत अच्छा रहा। विदेश में राग माला, असावरी, साउथ एशियन आर्ट सेंटर, दरबार फैस्टीवल, सर्वअकाल जैसे संस्थाएं हैं जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा दे रही हैं।²⁰³

निष्कर्ष और विश्लेषण

उपरोक्त विवरण के विश्लेषण में यह ज्ञात होता है कि विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समारोह और कार्यक्रमों में प्रतिवर्ष बढ़ोतरी हो रही है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे पुरातन कार्यक्रमों क्लीवलैंड त्यागराज उत्सव है जो पिछले 40 वर्षों से मनाया जा रहा है। विदेशों में अमेरिका में मोंटेरे फेस्टिवल 1967 और वुडस्टॉक फेस्टिवल 1969 में मनाया गया था। जहाँ पर पाश्चात्य कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। परन्तु जब पंडित रविशंकर ने वहाँ सितार वादन की प्रस्तुति की तो वहाँ पर शास्त्रीय संगीत और सितार वादन होने लगा। मोंटेरे पॉप फेस्टिवल में पंडित रवि शंकर जी

²⁰³साक्षात्कार डॉ. रेणुका गंभीर दिसंबर 2023

ने 14 मिनट 42 सेकंड का वादन किया था। और ऐसा ही कुछ मिनटों का सितार वादन वुडस्टॉक फेस्टिवल में बीटल्स के साथ मिलकर किया था। जिसके बाद विदेशी लोगो में सितार वादन को लेकर रुचि बढ़ गई। इसके अतिरिक्त बर्कली, एम्स्टर्डम में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते हैं। वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल शिकागो में पिछले 20 वर्षों से मनाया जा रहा है। लंदन में होने वाला दरबार फेस्टिवल विश्व में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लिए प्रसिद्ध है। जहां पर पिछले 20 वर्षों से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जा रहे हैं।

विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के समारोह और कार्यक्रम विशेष रूप काफ़ी लोकप्रिय हो रहे हैं। कई संगीत विद्यालय , सांस्कृतिक केंद्र और संगठन विदेशों में भारतीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों में संगीत कार्यक्रम, कार्यशालाएं, और व्याख्यान शामिल हैं, जो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अनुपम और समृद्ध परंपरा को प्रदर्शित करते हैं।

विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों में सर्वप्रथम अमेरिका में होने शुरू हुये थे फिर उसके बाद भिन्न- भिन्न देशों में भी संगीत कार्यक्रम करवाये जाने लगे जिनका जिक्र किया गया है जैसे- मॉस्को में भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण , यूरोप में संगीत कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित करना। चीन में संगठित "चैती" चीन में भारतीय शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है, भारतीयों ने जिसका गठन किया है। नेहरू सेंटर, लंदन नेहरू सेंटर, लंदन, यूके में भारतीय संस्कृति और शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से कार्यक्रम आयोजित करता है।

विदेशों में सांस्कृतिक केंद्र भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) विदेशों में कई सांस्कृतिक केंद्र चलाती है जो भारतीय संगीत और कला को बढ़ावा देते हैं। भारतीय और विदेशी संगठनों द्वारा शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए पहल की जा रही है। इसके अतिरिक्त जितने भी संगीत विद्यालय और संस्थाएँ हैं। वह प्रति वर्ष कोई ना कोई कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं। जिसका ब्यौरा दिया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय एम्बेसी द्वारा भी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कार्यक्रम करवाए जाते हैं। स्पीक मैके द्वारा

भी विदेशों में प्रति वर्ष हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस तरह विदेशों में फिर चाहे वो यूरोप हो, या फिर अमेरिका हो या कनाडा हर स्थान पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते रहते हैं। कोरोना काल में सर्वअकाल अकादमी कनाडा ने संगीत के प्रचार-प्रसार के लिये बहुत काम किया। सूचना प्रौद्योगिकीकरण इसमें बहुत सहायक रही है। आजकल सोशल मीडिया पर लाईव कार्यक्रम सूचना प्रौद्योगिकीकरण की सहायता से संभव हो पाये हैं।

संगीत, विशेष रूप से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, विदेशों में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान, कलाकारों की मेहनत, और संगीत प्रेमियों की रुचि के कारण, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय विधा विदेशों में भी फल-फूल रही है।

वैश्विक स्तर पर सितार वाद्य के कलाकारों की प्रस्तुति प्रचार व प्रसार के माध्यम

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार और प्रदर्शन केवल मंच तक ही नहीं सीमित है बल्कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भौगोलिक सीमाओं से निकाल कर विश्व के कई शिक्षण स्थलों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अकादमियों में भी मिलती है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत विदेशों में अपनी जड़े मजबूत कर चुका है। यह इस बात से पता चलता है कि वहाँ पर स्कूलों, कालेजों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। नीलम बाला महेन्द्रु कहती है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत शास्त्रीय संगीत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात होने लगा। विदेशी छात्र भारत आ कर हिन्दुस्तानी संगीत की शिक्षा लेने लगे। गर्व की बात है कि विदेशियों का आकर्षण भारत की ओर बढ़ने लगा।²⁰⁴ बहुत से विदेशी लोग हैं जिन्होंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भारत में आकर ली फिर बाद में विदेशों में जाकर अपनी संगीत अकादमी स्थापित कर ली। इसी तरह 1970-80 के दौरान बहुत से लोग विदेश गये और वहीं पर बस गये। वहाँ उन्होंने अपनी सभ्यता और संस्कृति के साथ जुड़े रखने के लिये संगीत अकादमी खोली। कुछ कलाकार लोग भारत से आते थे और 2 माह में ही अपने बहुत सारे शिष्य बना लेते थे और कुछ समय अंतराल के बाद वापिस आ जाते थे। जैसे कि पं. रवि शंकर, उ. अली अकबर खां आदि कलाकारों ने भारत और विदेशों दोनों ही स्थानों पर अपनी शिक्षा संस्थाएँ खोली, जहाँ पर सितार वादन की शिक्षा दी जाती है। जैसे किन्नर स्कूल ऑफ़ म्यूजिक, अली अकबर कालेज ऑफ़ म्यूजिक।

विदेशों में लोग पं. रवि शंकर की सितार के दीवाने थे। पं. हरविंदर शर्मा जी ने साक्षात्कार में बताया कि भारत के राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी और पं. रवि शंकर दोनों को ही

²⁰⁴ आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका नीलम बाला महेन्द्रु, पृ. 149

विदेशों में किसी तरह की पहचान की ज़रूरत नहीं। क्योंकि विदेशी लोग भारत को महात्मा गाँधी और पं. रवि शंकर जी की बदौलत जानते हैं।²⁰⁵

उ. शुजात खां का कहना है की विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बहुत सारे कार्यक्रम करवाये जाते हैं और सबसे बड़ी बात है बहुत ही व्यवस्थित तरीके से करवाए जाते हैं, 3 – 4 हज़ार के करीब श्रोता होते हैं। वे लोग टिकट खर्च कर के आते हैं, बड़े ही सलीके के साथ संगीत सुनते हैं। अधिकतर कार्यक्रम सभा या सोसाईटी ही करवाती है।²⁰⁶

प्रो. नरेन्द्र नरूला का कहना है कि विदेश लोग राग को नहीं जानते, उनको जो केवल बज रहा है उसको सुनने में रूचि होती है। पं. जी ने विदेशियों को धीरे-धीरे राग के साथ जोड़ा।²⁰⁷

उस्ताद शाहिद परवेज़ का कहना है कि पं. रवि शंकर जी के अतिरिक्त कोई अन्य वादक उस समय जाता तो वह वो कमाल ना कर पाता जो उन्होंने किया, विदेशियों के स्वभाव के अनुरूप सितार वादन किया। जिसके फलस्वरूप बीटल्स ग्रुप के जार्ज हैरिसन, वायलिन वादक याहुदी मैन्हील और केन जुकरमैन जैसे कलाकार उनसे जुड़े।²⁰⁸

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति के लिये कलाकारों को विदेश जाने से वहाँ पर उनके वादन से आकर्षित होकर बहुत सारे लोग हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखने लगे। उ. हरविंदर सिंह ने अपने साक्षात्कार में बताया कि विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखने के लिये विदेशी लोग उत्सुक रहते हैं। तो वहाँ पर विद्यालय और विश्वविद्यालयों में कलाकार अध्यापक के तौर पर जाने लगे। वहीं दूसरी तरफ जो कलाकार भारत से पलायन कर गये। उन्होंने वहाँ पर सेंटर खोल लिये। तीसरे स्थान पर वह विदेशी कलाकार हैं जिन्होंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा हिन्दुस्तान में आकर ग्रहण की।²⁰⁹

²⁰⁵ साक्षात्कार पं. हरविंदर शर्मा 2022

²⁰⁶ साक्षात्कार उ.शुजात खां 2025

²⁰⁷ साक्षात्कार पं. नरेन्द्र नरूला 2022

²⁰⁸ साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज़ 2024

²⁰⁹ साक्षात्कार उ. हरविंदर सिंह, दूरभाष के माध्यम से

5.1 विदेशो मे सांगीतिक शिक्षण संस्थाएँ

पं. रवि शंकर और उ. अली अकबर खां ने विदेशों में अनगिनत कार्यक्रम किये। अमेरिका में लॉस एंजिल्स किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक और अली अकबर कालेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना की। जहाँ पर सितार वादन की शिक्षा दी जाती थी। सितार के अतिरिक्त, वीणा और सुरबहार भी सिखाया जाता था। किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक भारत में भी खोला गया और उसके बाद अमेरिका में यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है। विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन की शिक्षा दे रही संस्थाओं और सोसाईटियों का बहुत योगदान रहा है। क्योंकि ये गैर सरकारी संस्थाएँ बहुत ही कुशलता से शिक्षण कार्य कर रही है। कुछ विद्यालय और संस्थाओं को कलमबद्ध करने की कोशिश की गई है।

5.1.1 किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक

किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना पं. रवि शंकर ने मुम्बई में 1962 में की थी। पं. जी के वैश्विक स्तर पर सितार वादन और विदेशों में लगातार कार्यक्रमों के दौरान किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना इंग्लैंड और अमेरिका में की। किन्नर स्कूल खोलने की पीछे की अवधारणा गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार शिक्षण प्रणाली थी। वीटल्स ग्रुप के जार्ज हैरिसन जो कि पं. जी के शिष्य के रूप में यहीं पर सितार वादन सीख रहे थे। विदेशों में संगीत शिक्षण केन्द्र खोलने के पीछे का कारण सितार वादन और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार व प्रसार ही रहा है। अमेरिका के स्कूल का संचालन दास गुप्ता के पास होता था। अमेरिका में स्कूल खोलने की प्रमुख कारण विदेशियों को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत से अवगत करवाना था। नाद ब्रह्मा को परिभाषित करना था। यद्यपि बाद में उन्हें बहुत सारी मुश्किलों और दिक्कतों का सामना करना पड़ा था और उन्होंने स्कूल को दास गुप्ता के हवाले कर दिया। लेकिन वो अमेरिकियों को संगीत शिक्षा व सितार वादन की शिक्षा देते रहें।

5.1.2 अली अकबर स्कूल ऑफ म्यूजिक

इसकी स्थापना 1967 में उ. अलाऊद्दीन खां के सुपुत्र प्रसिद्ध सरोद वादक उ. अली अकबर खां ने की थी। संगीत की शिक्षा-दीक्षा इस विद्यालय में दी जाती है। इसकी स्थापना कैलिफोर्निया में की गई थी। यह उ. अली अकबर खां का सपना था कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की महक को विश्व भर में फैलाया जाये। जहाँ पर गायन, वादन की शिक्षा दी जाती है। वादन में सरोद, सितार, वीणा, वायलिन और तबला वाद्य प्रमुख है। यहाँ पर पं. रवि शंकर जी भी शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे थे और विद्यार्थियों को सितार वादन की शिक्षा देने अक्सर आया करते थे। राग और ताल की विधिवत जानकारी दी जाती थी। आजकर सूचना प्रौद्योगिकरण के समय में संगीत की शिक्षा ऑनलाईन और ऑफलाईन दोनों ही तरह से दी जा रही है। इसमें खां साहिब स्वयं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा देते थे। आजकल वहां पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा उनके पुत्र श्री आलम खां दे रहे हैं।²¹⁰ यहां पर प्रति वर्ष समर कैप का भी आयोजन किया जाता है और उस्ताद अली अकबर खां के जन्म दिवस के उपलक्ष पर संगीत सम्मेलन का आयोजन भी किया जाता है। आईएस सम्मेलन में अपनी कला की प्रस्तुति देने वाले कलाकारों की सुचि एस प्रकार है।

- 2010 में अर्जुन वर्मा और पीटर वैन गेलदेर के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2011 में उ. शुजात खां ने सितार वादन किया।
- 2012 में अनुपमा भागवत ने सितार वादन किया।
- 2013 में पीटर वैन गेलदेर के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2014,2015,2017 को अर्जुन वर्मा ने सितार वादन किया।
- 2016 में पीटर वैन गेलदेर के द्वारा सितार वादन किया गया।
- 2018 को जोश फिनबर्ग ने सितार वादन किया।
- 2019 में टिम वाइट ने सितार वादन किया।

²¹⁰ <https://aacm.org> के माध्यम से

- 2020 में स्वपनिल चौधरी ने सितार वादन किया।
- 2022- 2023 में पूरा एक वर्ष संगीत कार्यक्रम हुये जिन में समय- समय विश्व विख्यात सितार वादकों पं. कुशल दास, पुर्वयन चैटजी , निलाद्रि कुमार, शाहाना बेनर्जी, अर्जुन वर्मा , आयन सेनगुप्ता ने सितार वादन किया।
- 2025 में विल मार्श ने सितार वादन किया।

अली अकबर कालेज द्वारा संगीत शिक्षा के तीन स्तर स्थापित किये हैं-

- 1) प्रारम्भिक
- 2) माध्यमिक
- 3) एडवांस²¹¹

अली अकबर संगीत विद्यालय की ओर से अमेरिका में स्थित स्कूलों का दौरा किया जाता है, सम्भाषण करवाये जाता है, संगीत प्रस्तुतियाँ करवाई जाती है। हर कक्षा के विद्यार्थियों के लिये उनके सामर्थ अनुसार अलग-अलग तरह का पैटर्न तैयार किया जाता है।

संगीत की कक्षा में कार्य

हिन्दुस्तानी भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरागत रूप से एक मौखिक अभ्यास रहा है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी छात्रों द्वारा अपने शिक्षकों को सुनकर और उनका अनुकरण करके और संगीत विद्या को याद करने के लिए प्रेरित किया जाता है। एक अंकन प्रणाली मौजूद होती है लेकिन छात्रों को सुन कर सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। छात्रों को अपनी कक्षाएं रिकॉर्ड करने की अनुमति है। शेड्यूल बनाने में कॉलेज की सहायता के लिए शीघ्र पंजीकरण को प्रोत्साहित किया जाता है। मास्टर कक्षाएं समूह में ली जाती है।²¹²

²¹¹ <https://aacm.org> के माध्यम से

²¹² <https://aacm.org> के माध्यम से

वाद्य संगीत:

कॉलेज में साप्ताहिक रूप में वाद्य संगीत की कक्षाएँ समूह और निजी रूप में विभिन्न स्तरों पर लगाई जाती हैं। अधिकांश छात्र सरोद, सितार, या वायलिन सीखते हैं, इसके अतिरिक्त विद्यार्थी किसी भी वाद्य यंत्र को सीख सकता है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी को वाद्य यंत्र की संभाल, राग और रचना की शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थियों को संगीत सुनवाया भी जाता है जिससे उनमें सीखने का जोश आये।

अलाप, जोड़, झाला, गत, विस्तार, संगत और सवाल जवाब को विकसित किया जाता है। कक्षा में बातचीत को प्रोत्साहित किया जाता है और प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से और शिक्षक के साथ मिलकर सितार वादन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन सभी का नेतृत्व उस्ताद आलम खां द्वारा किया जाता है।²¹³

5.1.3 कैलिफोर्निया इंस्टिच्यूट ऑफ आर्ट्स

कैलिफोर्निया इंस्टिच्यूट संगीत ऑफ आर्ट्स की स्थापना 1961 में ऐमिली वेलेंटाइन ने की थी। यह कैलिफोर्निया के सातां कलैरिटा में स्थित है। यहाँ पर दृश्यमान और प्रदर्शन दोनों ही कलाओं की शिक्षा दी जाती है और सांगीतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाती है। अपने-अपने क्षेत्र के उत्तम कलाकारों को संगीत शिक्षा के लिये चुना जाता है।

कैलिफोर्निया इंस्टिच्यूट ऑफ आर्ट्स में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के नाम कोर्स उपलब्ध है जिसे MFA (मास्टर ऑफ फरफोमिंग आर्ट्स) के नाम से जाना जाता है जो 2 साल का रहता है। जिसमें छात्राओं को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण दिया जाता है। इनको अच्छा कलाकार में होने वाले गुणों को प्रोत्साहित किया जाता है। स्वर और लय की विशेष जानकारी दी जाती है। शास्त्रीय पद्धति अनुसार रागों को समयानुसार और पूर्ण कौशल के साथ गाने बजाने के विभिन्न लयबद्ध पैटर्न बताये जाते हैं। वाद्य यंत्रों की संभाल, मुरम्मत, रख-रखाव और सुर करने का कौशल विकसित किया जाता है। यहां पर संगीत में डॉक्टर ऑफ म्यूजिक आर्ट्स की डिग्री भी करवाई जाती है। हिन्दुस्तानी कलाकारों

²¹³ <https://aacm.org> के माध्यम से

स्वनिल चौधरी, रनाडे घोष, आशिष खां द्वारा संगीत शिक्षा दी जा रही है।²¹⁴ यहां पर समय-समय संगीत वर्कशॉप और संगीत कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

- 2012 में आशीष खां ने सितार वादन किया।
- 2013 में डिजीतिज़िंग वर्ल्ड म्यूजिक आर्केस्ट्र का वादन किया गया।
- 2019 को ज़ो स्लेपिन ने सितार वादन किया।
- 2022 में सितार और पियानो की जुगलबंदी प्रस्तुत कि गई जिसे गौरी देशपांडे ने बजाया।
- 2022 में नॉर्थ इंडियन संगीत सम्मेलन करवाया गया।
- 2023 को वर्ल्ड म्यूजिक फ़ेस्टिवल का आयोजन किया गया।

5.1.4 बर्कली इंडियन एसैम्बली

बर्कली कालेज ऑफ म्यूजिक में बर्कली इंडियन एसैम्बली में हिन्दुस्तानी और कर्नाटकी संगीत की शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर शास्त्रीय, उप शास्त्रीय, सुफी, गीत, गजल आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ पर तीन कोर्स चलाये जाते हैं। यह कालेज बोस्टन (न्यूयॉर्क) में 1970 में बनाया गया था। यह एक निजी कालेज है इनकी एक शाखा में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की भी शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर कोरोना काल के बाद ऑनलाईन और ऑफलाईन दोनों तरह से शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर 97 देशों से छात्र-छात्राएँ आते हैं।

बर्कली इंडियन एसैम्बली 2012 में खोला गया। यहाँ पर संगीत की स्नातकोत्तर और कोर्स करवाये जाते हैं। यहाँ पर संगीत की अलग-अलग मास्टर डिग्रीयाँ भी करवाई जाती हैं। यहाँ पर म्यूजिक थेरेपी और संगीत और ओटिज़्म पर भी कोर्स उपलब्ध हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम भी करवाये जाते हैं।

²¹⁴(Music@calarts.edu) 661-253-7816

- 2017 में यहाँ पर हरमोनियम और सांरगी पर उ. सुहैल युसुफ खां ने वर्कशाप लगाई थी।
- 2020 में उ. ज़ाकिर हुसैन द्वारा वर्कशाप लगाई गई।²¹⁵

5.1.5 सितार निकेतन संगीत विद्यालय

सितार निकेतन संगीत विद्यालय 2013 में मैरीलैंड में आलिफ लैला ने खोला था। जो कि एक प्रसिद्ध सितार वादक है। आप बांग्लादेश से हैं पर आपकी संगीत शिक्षा सेनिया मैहर घराने से हैं। आपको सितार का 21 वर्षों का अनुभव प्राप्त है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परागत और विधिवत शिक्षा यहाँ पर दी जाती है। सितार निकेतन में छात्राओं को मंच प्रस्तुति के लिये भी तैयार किया जाता है। यहाँ के छात्रों द्वारा विशेष उत्सवों और त्योहारों पर संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। इस संस्था के द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम भी प्रति वर्ष करवाये जाते हैं। यह कार्यक्रम 2019 में शुरू किये गये और लगातार हर वर्ष हो रहे हैं। यहां के छात्रों को विभिन्न मंचों पर सितार वादन का मौका भी मिलता रहता है।²¹⁶

- 2015 में गाँधी स्मारक पर छात्रों द्वारा सितार वादन किया।
- 2016 में गाँधी मैमोरियल सेंटर में छात्रों द्वारा सितार वादन किया।
- 2017 में कैनडी सेंटर में छात्रों द्वारा सितार वादन किया।
- 2024 को संगीतमय प्रार्थना कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- 2025 में वसंत उत्सव मनाया गया ।

5.1.6 गंधर्व महाविद्यालय

इस विद्यालय की स्थापना उत्तरी अमेरिका में निर्मल बाजेकल ने की थी। यह पहला ऐसा संगीत विद्यालय था । जो भारत से बाहर विदेश में खोला गया था। यह भारत में

²¹⁵<https://college.beeklee.edu>

²¹⁶<https://sitniketan.com>

स्थापित गंधर्व महाविद्यालय की शाखा है। यह विद्यालय हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहाँ पर संगीत शिक्षण के साथ-साथ परीक्षाएँ भी करवाई जाती थी। यहाँ पर संगीत सम्मेलन, सैमीनार, कान्फ्रेंस आदि करवाई जाती है। यहाँ पर स्टीफिकेट कोर्स भी करवाया जाता है जिसको गर्वमेंट द्वारा मान्यता प्राप्त है। प्रारम्भिक, प्रवेशिका प्रथम, प्रवेशिका पूर्णा, माध्यमा प्रथम, मध्यमा पूर्णा, विशारद प्रथम, विशारद पूर्णा, अलंकार प्रथम, अलंकार पूर्णा के अनुसार कक्षाएँ चलाई जाती है। जिनका पाठ्यक्रम गंधर्व महाविद्यालय की पूना शाखा द्वारा तैयार किया जाता है। यहाँ पर संगीत क्षेत्र के प्रसिद्ध और विख्यात कलाकारों को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया जाता था। यहां पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम करवाये जाते है। विशेष त्योहारों और उत्सवों पर संगीत कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। वसंत उत्सव, गुरु पूर्णिमा ,दिवाली आदि त्योहारों पर मंच प्रस्तुतियां की जाती है।²¹⁷

5.1.7 इंडियन क्लासिकल म्यूजिक कोर्स

शिवानंद योगा आश्रम द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत सितार वादन, तबला वादन और गायन की शिक्षा दी जाती है। जिसका संरक्षक श्रीमती हसु पटेल द्वारा किया जाता है। आप इमदाद खानी घराने के विख्यात सितार वादक उ. विलायत खां जी की शिष्या है। इस संस्था द्वारा शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम भी करवाये जाते है। इस कोर्स में जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है वह निम्नलिखित है:

- 1) सितार का इतिहास और स्वरलिपी प्रणाली
- 2) हिन्दुस्तानी और पाश्चात्य संगीत की तुलना
- 3) सितार वादन की कला
- 4) सितार वाद्य को सुर करने और उसके भागों की जानकारी देना
- 5) ताल की जानकारी देना

²¹⁷ info@gundhayaaura.org

- 6) विभिन्न तारों और सप्तकों की जानकारी देना
- 7) अलंकारों के रूप, रागों की गतों और तानों की जानकारी देना
- 8) परम्परागत बंदिशों और गतों को सितार वाद्य पर सीखाना
- 9) गमक, मुर्की, मींड जैसी जटिल क्रियाओं को दक्षता के साथ सीखना
- 10) जटिल तालों को समझने और लयकारीयों की शिक्षा देनी
- 11) राग सिद्धान्त और प्रदर्शन में इसके रचनात्मक अभिव्यक्ति को उजागर करना
- 12) सितार वादन शैलीयों की बारीकियां और सितार वाद्य परम्परा का विकास करना²¹⁸

5.1.8 लॉस एंजस इंटरनैशनल म्यूजिक और आर्ट अकादमी

इसकी स्थापना 2015 को लॉस एंजल में की गई थी। यहां पर संगीत की शिक्षा हेतु कार्यक्रम, वर्कशाप, मास्टर क्लास, रिट्रीट और सैमीनार करवाये जाते हैं ताकि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपनी परम्परागत और विधिवत रूप में लोगों तक पहुँचे। यहाँ पर वायलिन, सितार, तबला, बांसुरी के साथ-साथ गायन की भी शिक्षा दी जाती है। सितार वाद्य की शिक्षा राजीव कमाकर द्वारा दी जाती है जो कि एक उत्तम सितार वादक है। विश्व के हर संगीत सम्मेलन में अपनी प्रस्तुति दर्ज करवा चुके हैं। सितार वादन का कोर्स निर्धारित किया गया है। यहाँ पर ऑनलाईन और ऑफलाईन दोनों तरह से कक्षाएँ लगाई जाती है। निर्धारित पाठ्यक्रम की रूपरेखा सितार वादन के प्रारंभ से लेकर छात्रों की वादन दक्षता तक तैयार की गई है। यह कोर्स एडवांस पद्धति से चित्रित किया गया है।

सितार वादन का पाठ्यक्रम:

- पारंपरिक बंदिशों और गतों सहित उन्नत सितार रचनाओं में निपुणता से पारंगत करना ।
- संगीत अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए गमक, मुर्की और मींड जैसी जटिल तकनीकों को क्रियान्वित करने में दक्षता।

²¹⁸nassan@sivananda.org

- ताल के विभिन्न पैटर्न बताये जाते हैं। जटिल लय (ताल) को समझने की क्षमता और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनकी भूमिका को समझने की क्षमता।
- राग सिद्धांत और प्रदर्शन में इसके अनुप्रयोग की गहन समझ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत के ढांचे के भीतर रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ शिक्षण ।
- सितार परम्परा की संगीतात्मकता विशेषता और शैलीगत बारीकियाँ।
- मंच प्रदर्शन की जानकारी के साथ प्रस्तुति भी करवाई जाती है। सितार वाद्य की वादन की बारिकियों पर ध्यान दिया जाता है। सितार वादन के लिये उसकी नींव को मजबूत किया जाता है जिसके लिये सम्भाषण व व्याख्यान प्रदर्शन किये जाते हैं

संस्था द्वारा करवाये गये कार्यक्रम -

- 2016 में विरासत कार्यक्रम में राजीव कर्मकार द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2017 में विरासत कार्यक्रम और हिंद महासागर कार्यक्रम करवाया गया।
- 2018 में लाईमा रिट्रीट कार्यक्रम करवाया गया।
- 2018 में विरासत कार्यक्रम में राजीव कर्मकार द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया।
- 2019 में महफिल , इंडियन म्यूजिक फेस्टिवल, विरासत, लाईमा रिट्रीट और एक दिन उस्ताद के साथ सांगीतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया।
- 2020 में विरासत कार्यक्रम करवाया गया।
- 2021 हारमोनीवर्स , संगीत रहस्य , विरासत कार्यक्रम करवाया गया।
- 2022 को संगीत कार्यक्रम विरासत का प्रदर्शन क्या गया ।
- 2023 में लाईमा समर रिट्रीट कार्यक्रम करवाया गया।
- 2024 को संगीत की मास्टर क्लासे लगाई गई । ²¹⁹

²¹⁹ www.laimacademy.org

5.1.9 रागा स्कूल ऑफ म्यूजिक

भारत की इस धनी धरोहर को विश्व भर में प्रसिद्धी प्राप्त है। वहीं जो लोग भारत से विदेशों में बस चुके हैं उन्हें अपनी सभ्यता और संस्कृति के साथ जोड़े रखने के लिये ही रागा स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना की गई। यहाँ पर हिन्दुस्तानी और कर्नाटकी संगीत की शिक्षा दी जाती है। गायन और वादन दोनों की ही शिक्षा दी जाती है। सितार, तबला, बांसुरी वाद्यों की शिक्षा दी जाती है। संगीत की शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को मंच भी प्रदान किया जाता है। प्रत्येक वर्ष सालाना दिवस भी मनाया जाता है। यहाँ पर कलाकारों को भी बुलाया जाता है। सितार की कक्षाएँ बिल मार्स द्वारा दी जाती हैं। आप मैहर घराना के शार्गिद हैं। आजकल कैलिफोर्निया में संगीत कक्षाएँ ले रहे हैं। आप ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से कक्षा लेते हैं। यहाँ पर स्टीफिकेट कोर्स भी करवाया जाता है। रागा स्कूल के छात्रों को सितार खरीदने के लिये म्यूजिशियन मॉल की तरफ से 10% की अलग से छूट दी जाती है। यह म्यूजिकल मॉल बारबरी में स्थित है इनका रागा स्कूल ऑफ म्यूजिक के नाम से युट्यूब चैनल भी है।²²⁰

5.1.10 बीथोवेन एट होम, स्कूल ऑफ म्यूजिक

कनाडा के बीथोवेन एट होम के द्वारा टोरंटो, वैनकुवर, ओटावा, कैलेगरी, एडमोन, मोटीरियल में सितार वादन की शिक्षा दी जाती है। यह कक्षाएँ ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरफ से लगाई जाती हैं। यह एक संस्था है जो लोगों को शिक्षक के साथ जोड़ती है। यह ऑनलाइन के साथ-साथ ऑफलाइन भी काम करवाती है। इसके लिये पाठ्यक्रम भी निर्धारित किया गया है।

प्रारम्भिक शिक्षा के लिये:-

- 1) सितार की बैठक
- 2) वाद्य की संभाल और तारों को डालने की प्रक्रिया
- 3) अलंकारों का अभ्यास

²²⁰ <https://raagaschool.com>

- 4) सप्तकों का अभ्यास
- 5) क्रियात्मकता के साथ अलकारों का अभ्यास

मध्यवर्ती पाठ्यक्रम

- 1) सितार पर ध्वनि और अभिव्यक्ति की उत्पत्ति करना
- 2) स्वर, लय और संगीत के बुनियादी सिद्धान्त
- 3) परम्परागत तरीके से सितार वादन की शिक्षा

अग्रिम सितार पाठ्यक्रम

- 1) एक निश्चित शैली में सितार वादन
- 2) मंच प्रदर्शन और सृजनात्मकता ²²¹

5.1.11 यूनिवर्सल अकादमी ऑफ म्यूजिशियन

उस्ताद ईरशाद खां ईटावा घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार है और युवा पीढ़ी के पथप्रदर्शक है। आप इंडियन म्यूजिक अकादमी के संस्थापक है। आप गायकी अंग और तंत्रकारी अंग दोनों शैलियों का अभूतपूर्व समंजस्य स्थापित किये हुए हैं। आपने परम्परागत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ सांस्कृतिक बाधाओं को पार कर नवीन संगीत रूपों को मिश्रित किया। आपने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम क्वीन ऐलिजाबेथ हाल में सितार वादन प्रस्तुत किया था। आपने 40 से अधिक देशों में सितार वादन की प्रस्तुति दे चुके हैं। आप भारत में यूनिवर्सल अकादमी ऑफ म्यूजिक के संस्थापक हैं।

आप इमदादी खानी घराने के आठवीं पीढ़ी है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पिछली कई वर्षों से अमेरिका में बहुत प्रसिद्ध है। लोग बहुत मन लगाकर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीख रहे हैं। भारत, कनाडा और अमेरिका में संगीत शिक्षण संस्थान स्थापित किये हैं। ऑनलाईन और ऑफलाईन दोनों तरह से सितार वादन की शिक्षा दी जाती है।

²²¹ <https://www.beethovenathome.com>

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात कलाकारों के द्वारा शिक्षण सेमिनार और कर्यशालाओं का संचालन किया जाता है। यहां पर केवल अच्छा शिक्षण ही नहीं है बल्कि विश्व स्तर पर प्रदर्शन भी किया जाता है।

पाठ्यक्रम:-

- परम्परागत बंदिशों और गतों सहित उन्नत सितार रचनाओं की शिक्षा देना।
- गमक, मुर्की जैसी जटिल तकनीकों को क्रियान्वित करने में दक्षता, और संगीत की अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना।
- जटिल लय (ताल) को समझने और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनकी भूमिका को समझने की क्षमता।
- राग सिद्धांत और प्रदर्शन में सृजनात्मकता की गहरी समझ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत के में रचनात्मक अभिव्यक्ति की कल्पना और सृजनात्मकता का ज्ञान देना।
- सितार वाद्य की परंपरागत शैलियों और विशेषताओं का ज्ञान देना।

पाठ्यक्रम व्यवस्था :-

यह एक व्यापक पाठ्यक्रम है जो शुरुआत से लेकर छात्रों की वादन दक्षता तक के लिए तैयार किया गया है। जो छात्र सितार वादन में अपनी समझ और दक्षता को गहरा करना चाहते हैं। यह पाठ्यक्रम उनके लिये तकनीकी ज्ञान और कौशल पर आधारित है।

पाठ्यक्रम पर आधारित व्याख्यान, प्रदर्शन, व्यावहारिक अभ्यास और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया के संयोजन के माध्यम से संचालित किया जाता है। छात्रों को प्रशिक्षक के साथ बातचीत करने, प्रश्न पूछने के प्राप्त अवसर दिये जाते हैं। यह पाठ्यक्रम सितार तकनीक और राग सिद्धांत में मजबूत आधार बनाए रखने और प्रारम्भ से लेकर उन्नत सितार वादकों के लिए उपयुक्त है।²²²

²²² <https://irshadkhan.net>

5.1.12 इंडियन म्यूजिक एसेंबली

यूनिवर्सिटी ऑफ अलबर्ट में 1945 में संगीत विभाग में वर्ल्ड म्यूजिक एसेंबली और इंडियन म्यूजिक एसेंबली नाम से प्रोग्राम कोर्स उपलब्ध करवाया गया। इंडियन एसेंबली श्रीमति शर्मिला माथुर जी के सानिध्य में प्रगति पथ पर है। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गायन, वादन की शिक्षा दी जाती है। राग और ताल की विधिवत जानकारी दी जाती है। एलबर्ट विश्वविद्यालय का कोई भी छात्रा इसमें जा सकता है और संगीत शिक्षा प्राप्त कर सकता है।²²³

5.1.13 कलावंत सेंटर फॉर म्यूजिक और डांस

1997 में कलावंत सेंटर की स्थापना न्यूयॉर्क, अमेरिका में की गई। यह एक गैर सरकारी संगठन है जिस को तबला नवाज उ. कादिर खां ने को खोला। इस के स्थापना दिवस पर उ. विलायत खां , सारंगी वादक उ. सुल्तान खां और उ. कादिर खां द्वारा प्रदर्शन किया गया था। यहाँ पर गायन, वादन की शिक्षा के साथ बड़े-बड़े सुप्रसिद्ध कलाकारों को बुलाकर संगीत बैठके करवाई जाती है। संगीत के सेमिनार, कार्यशालाएँ और मास्टर क्लासे भी लगाई जाती है। यहां पर उच्च योगिता वाले शिक्षक के द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है जिनको 40 – 40 बरस का सितार का और गायन क अनुभव होता है। इस संस्था का सपना भारतीय कला को विश्व में प्रसिद्ध करना है। आफताब-ए-हिंद उ. विलायत खां द्वारा सितार वादन की शिक्षा यहाँ दी जाती रही है। हर वर्ष हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम भी करवाया जाता है।²²⁴

5.1.14 शाहिद परवेज अकादमी

एसपीके संगीत अकादमी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दुनिया के अग्रणी गैर सरकारी संगीत विद्यालय है। यहां पर परम्परागत शैली में सितार वादन और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ज्ञान, अभ्यास और संरक्षण को आगे बढ़ाया जा रहा है। इस अकादमी

²²³ <https://apps.valberta.ca>

²²⁴ www.kalavantcenter.org

में दुनिया के सबसे बेहतरीन सितार वादकों में से, उस्ताद शाहिद परवेज़ खां जी संगीत प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। यहां पर सितार वादन की शिक्षा पद्धति भारत की प्राचीन परंपराओं के द्वारा दी जाती हैं, फिर भी प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से आधुनिक समय के अनुसार नवीन रूप से अनुकूलित वातावरण भी प्रदान किया जाता है। जैसे zoom ऐप के साथ आनलाईन कक्षा। गुरु शिष्य परंपरा के तहत ही शिक्षा दी जा रही है। यहां पर वर्ष में 2 से 3 बार संगीत शिविर का आयोजन भी किया जाता है और गुरु शिष्य परम्परा को ही संगीत शिविर में दिखाया जाता है।²²⁵

उस्ताद जी, अकादमी के प्रत्येक छात्र के साथ, शुरुआत से लेकर उन्नत होने तक, गुरु शिष्य के रिश्ते को पोषित करते हैं। यहाँ पर छात्रों के मुताबिक शिक्षा प्रदान की जाती है। पाठ्यक्रम पर आपके विचार हैं कि जैसे हर दवाई हर किसी के लिये बेहतर नहीं होती तो हर तरह का पाठ्यक्रम हर संगीत छात्र के लिये कैसे उपयोगी हो सकता है।

5.1.15 संगीत विलास साँस्कृतिक केंद्र

पंडित किन्नर सीन संगीत विलास साँस्कृतिक केंद्र की स्थापना की। आप ने बतलाया की 1986 में आपकी पत्नी श्रीमति पायल, जो एक गायिका है, के साथ संगीत विलास, किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक की एक शाखा खोली। आप संगीत की शिक्षा सामूहिक रूप में, और व्यक्तिगत रूप से मेट्रोपॉलिटन-न्यूयॉर्क और त्रि-राज्य क्षेत्रों में कई छात्रों को सितार वादन का ज्ञान देते हैं। यहां पर पारंपरिक गुरु-शिष्य के अनुरूप ही संगीत की शिक्षा दी जाती है। सितार वाद्य के प्रशिक्षण के साथ गायन का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। आप देश और विदेश दोनों ही जगह सितार की प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं। संगीत विलास साँस्कृतिक केंद्र द्वारा संगीत समारोह और सम्मेलन भी करवाये जाते हैं।²²⁶ प्रति वर्ष केंद्र द्वारा यहां पर सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाये जाते हैं।

²²⁵ साक्षात्कार उस्ताद शाहिद परवेज़, zoom meeting Oct, 2024

²²⁶ साक्षात्कार पं. किन्नर सीन, 27 मार्च 2022

5.1.16 सितार दर्पण स्कूल ऑफ म्यूजिक

सितार दर्पण स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना 2001 में डॉ. स्वर्ण लता ने टोरंटो में की। आप 30 दशकों से सितार वादन की शिक्षा दे रही हैं। आप ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों ही माध्यमों द्वारा सितार वादन की शिक्षा देती हैं। डॉ. स्वर्ण लता 1997 से 2001 तक चंडीगढ़, केंद्र शासित प्रदेश में राज्य सांस्कृतिक गतिविधि परिषद (एकांकी नाटक/ नाटक/ नुक्कड़ नाटक, राष्ट्रीय समूह गीत, लोकगीत, लोकनृत्य, गायन और वाद्य संगीत) की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

एक व्याख्याता और प्रधानाचार्य के रूप में, उन्होंने वाद्य संगीत, समूह गान, समूह नृत्य और मंच नाटकों/ नाटकों में विभिन्न राज्य/ राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया।

डॉ. लता ने कई प्रतिष्ठित थिएटरों (जैसे 1989 में नई दिल्ली परफॉर्मिंग आर्ट्स, 1980-1993 तक टैगोरथिएटर, चंडीगढ़ और कई अन्य) और भारत और उत्तरी अमेरिका के मंचों पर कई सितार संगीत कार्यक्रम और व्याख्यान श्रृंखलाएं भी दी हैं।

1994 में डॉ. लता को कनाडा के सास्काटून में यूनिवर्सिटी ऑफ सास्काचेवन के संगीत विभाग द्वारा आयोजित एकल सितार वादन करने का अवसर मिला। कनाडा की इसी यात्रा के दौरान उन्हें वैकूवर में विभिन्न धार्मिक संगठनों, गुरुद्वारों, मंदिरों द्वारा सितार संगीत कार्यक्रम देने के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ. लता का साक्षात्कार अमेरिका के न्यूजर्सी में टीवी एशिया स्टूडियो में भी लिया गया।

डॉ. लता 2001 से कनाडा में हैं और तब से टोरंटो वासियों को सितार सिखा रही हैं। उन्होंने हैमिल्टन आर्ट्स सेंटर, मोहॉक कॉलेज और मैकमास्टर यूनिवर्सिटी, हैमिल्टन, यॉर्क यूनिवर्सिटी, मेल लास्टमैन स्क्रायर, यॉर्कवुड लाइब्रेरी थिएटर, टोरंटो में अपने सितार वादन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। उन्होंने हैमिल्टन में मैकमास्टर रेडियो, FM 93.3 पर अपना एकल सितार वादन और व्याख्यान श्रृंखला प्रस्तुत की है। 2004 में, डॉ. लता ने टोरंटो में शूट की गई बॉलीवुड फिल्म "टचऑफ़ द पिंक" में अभिनय भी किया था।

पिछले 6 वर्षों से हिमालयन योग मेडिटेशन सोसाइटी ऑफ़ ऑंटारियो, कनाडा ग्रेटर टोरंटो एरिया क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर डॉ. लता के 'सुबह के राग – सितार वादन' का आयोजन कर रही है। उन्होंने टोरंटो के लोकप्रिय पैनोरमा इंडिया सहित विभिन्न समारोहों में सितार वादन किया है।

वर्तमान में, डॉ. लता अपना पूरा समय सितार सीखने के इच्छुक छात्रों को दे रही हैं। उनकी कक्षा टोरंटो की वास्तविक विविधता को दर्शाती है, सभी आयु समूहों और पृष्ठभूमियों से छात्र आते हैं, लेकिन उनमें उनके जैसा ही जुनून है और वह है सितार के प्रति प्रेम

कक्षा का स्तर –

1. बुनियादी
2. मध्यवर्ती
3. अग्रिम²²⁷

5.1.17 सारंग सितार स्कूल

अनुपमा गगनेजा ने फरवरी 2022 को इस संस्था की शुरुआत की थी। यह इंग्लैण्ड में स्थित है। आप लखनऊ घराना से हैं। आप का मानना है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। यह हमारी मानसिक हालत को दुरुस्त रखने में अहम भूमिका निभाता है। इसी सोच के साथ आपने सारंग सितार स्कूल की शुरुआत की। आप यूनिवर्सिटी ऑफ आर्ट्स लंदन में भी गैस्ट लैक्चर दे चुके हैं। आप आनलाईन संगीत की कक्षा भी लेती हैं। आप 100 के लगभग छात्रों को सितार वादन की शिक्षा दाँ चुकी है।²²⁸

- सितार की संभल और बैठक की जानकारी देना ।
- वाद्य में तारों को डालने की प्रक्रिया बताना ।

²²⁷ Sitardarpan.com

²²⁸ <https://anupamagagheja.com>

- अलंकारों का विधिवत अभ्यास
- तीनों सप्तकों का अभ्यास
- प्रारंभिक स्तर पर रागों की जानकारी देना।

5.1.18 साऊथ एशियन आर्ट इंडियन म्यूजिक अकादमी

यह साऊथ एशियन आर्ट इंग्लैण्ड में स्थित है। इस की स्थापना 1997 में की गई। इसको हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की बेहतरीन और सर्वश्रेष्ठ अकादमी माना जाता है। जहाँ पर सितार, दिलरूबा, सरोद, सारंगी, संतुर, वायलिन, तबला आदि वाद्य यंत्रों की शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर गुरुमत संगीत की भी शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर ऑनलाईन कक्षा का भी प्रबन्ध है। यहाँ पर सितार वाद्य की शिक्षा उ. धर्मवीर सिंह और लुके रेडीन विलियम देते हैं। ऑनलाईन शिक्षा कीर्तन कौर विरदी देती है। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम और समारोह समय – समय पर करवाये जाते हैं। गुरुवाणी संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों की शिक्षा भी दी जाती है। इस अकादमी के छात्रों को मंच प्रदर्शन के लिये तैयार किया जाता है।

- उ. धर्मवीर सिंह, रूपा पनेसर, अदनान खां, आकाश परेकर, बालूजी श्रीवास्तव, जसदीप सिंह देगुन, लक्षय महन, महबूब नदीम, मोहम्मद अंसानी जैसे नामवर कलाकारों द्वारा सितार वादन प्रस्तुत किया गया है।²²⁹

5.1.19 विजय जगताप अकादमी

श्री विजय जगताप सांगीतिक परिवार से तालुक रखते हैं। उनके पिता जी विख्यात तबला वादक थे और दादा जी सारंगी वादक थे। उनका मानना है कि वह अपने आप को बहुत खुशकिस्मत समझता हूँ कि मुझे यह करने का मौका मिला। आपने अपनी अकादमी में गुरु शिष्य की परम्परा के अनुरूप ही शिक्षा प्रणाली लागू की है। गुरु शिष्य परम्परा में ही संगीत की तालीम सही रूप में मिल पाती है। 1989 में भारतीय विद्या मन्दिर लंदन में

²²⁹ info@saa-uk.org

शिक्षक के पद पर नियुक्त हुये। आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के पहले कलाकार थे जिन्होंने क्रीन के सामने कामन वैल्थ डे पर सितार वादन किया था। भारतीय विद्या भवन में रहते हुए पं. रवि शंकर और जार्ज हैरिसन से भी मुलाकात हुई।²³⁰

पाठ्यक्रम रचना -

- सितार की सही तरह से संभाल और रखरखाव की जानकारी देना।
- सितार की तारों को सही ढंग से सुर करने और तारों की ध्वनि को सुनिश्चित करना।
- सितार के पर्दों और तारों को तरकीब से बाँधने की जानकारी देना।
- अलंकारों, रागदारी और तालों की विधिवत जानकारी देना।

5.1.20 भारतीय विद्या भवन

भारतीय विद्या भवन 1972 में यूके में स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार करना था। यहाँ पर 800 के करीब छात्रा आते हैं। यहाँ पर परफोर्मिंग आर्ट के साथ विजुअल आर्ट के छात्र भी होते हैं। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार हो रहा है। लंदन, यूके में भारतीय विद्या भवन (भवन) अपने चल रहे समारोहों और आउटरीच कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में विभिन्न प्रकार के संगीत कार्यक्रम और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है। इन कार्यक्रमों में अक्सर प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय संगीतकारों द्वारा गायन, नृत्य प्रदर्शन और कार्यशालाएँ शामिल होती हैं। भवन में विभिन्न शिक्षकों और छात्रों की संगीत श्रृंखला के साथ एक समर स्कूल भी आयोजित किया जाता है।

भवन द्वारा आयोजित संगीत समारोहों और कार्यक्रमों के कुछ विशिष्ट उदाहरण दिए गए हैं

- **स्वर्ण जयंती समारोह**

भवन वर्ष भर संगीत समारोहों, प्रदर्शनों और कार्यशालाओं सहित अनेक कार्यक्रमों के साथ अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है।

²³⁰ <https://vijayjagtap.com>

- **ग्रीष्मकालीन स्कूल संगीत श्रृंखला**

भवन के ग्रीष्मकालीन स्कूल में शिक्षकों और छात्रों द्वारा हिंदुस्तानी गायन, कर्नाटक गायन, कथक, भरतनाट्यम आदि सहित अन्य संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

- **विरासत - परम्परा श्रृंखला**

भवन में पंडित भीमसेन जोशी की विरासत को सम्मानित करने के लिए संगीत कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की जाती है, जिसमें उनके बेटे और पोते भी शामिल होते हैं।

- **युवा महोत्सव**

भवन में उभरते भारतीय शास्त्रीय कलाकारों की प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए वार्षिक युवा महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

- **अन्य कार्यक्रम**

भवन में "ओडिसी संध्या", "प्रकृति की समयानुकूल लय और धुनों का संगीत", तथा "परंपरा की प्रतिध्वनि: भारतीय स्लाइड गिटार, तबला और वाद्य युगल" जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते रहते हैं।

भारतीय विद्या भवन ब्रिटेन में भारतीय कला और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जो स्थापित और उभरते कलाकारों को प्रदर्शन करने तथा दर्शकों को भारतीय सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि का अनुभव करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। सितार वादन सिखाया जाता है। सितार के व्याख्यान और वर्कशॉप के अतिरिक्त तबला, बांसुरी, मृदंग, वीणा और वायलिन आदि वाद्य यंत्र सिखाये जाते हैं। प्रति वर्ष समर स्कूल का आयोजन किया जाता है। हर सप्ताह शनिवार, रविवार और गुरुवार को संगीत कक्षा लगाई जाती है। सितार वाद्य के यहाँ पर चार स्तरीय कोर्स हैं-

- 1) ओपन क्लासिक (प्रारम्भिक शिक्षा)
- 2) डिप्लोमा 3 वर्षीय स्टीफिकेट कोर्स)

- 3) पोस्ट डिप्लोमा (दो वर्षीय स्टीफिके)
- 4) एडवांस लेवल

यह सितार वादन की कक्षाएँ उ. महबूब नदीम के द्वारा ली जाती है। आप विलायत खानी बाज बजाते हैं और लगभग विश्व में हर जगह अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं।

5.1.20 इंडियन म्यूजिक वाय रिकी रोमन

रिकी रोमन इंग्लैण्ड में रहते हैं। इंग्लैण्ड में रहते हुए ही इन्होंने सितार वादन की शिक्षा ग्रहण की। आपने पं. रवि शंकर जी की शिष्या पुनीता गुप्ता से सितार वादन की शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद आपने पी गांगुली से सितार वादन सीखा। आपने बहुत से स्थानों पर सितार वादक की प्रस्तुतियाँ दी हैं। आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ जार्ज, पाप, रॉक आदि में काम किया। 2000 से 2021 तक आप प्लेमोट यूनिवर्सिटी में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रवक्ता रहें। समस्वरा नाम से कार्यक्रम भी करवाया जाता है। आपके द्वारा खोली गई इस संगीत अकादमी में सितार वादन की शिक्षा दी जाती है और उसका पाठ्यक्रम भी दिया गया है:

- 1) वाद्य को स्वर करना पिच और स्केल को समझना।
- 2) राग के स्वरूप का ज्ञान देना।
- 3) ताल का स्वरूप के स्वरूप का ज्ञान देना।
- 4) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कम्पोजिशन करना।
- 5) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सृजनात्मकता की जानकारी देना।
- 6) वादन के साथ गायन में भी निपूणता की जानकारी देना।
- 7) गायन के विभिन्न सप्तकों और उनके लयात्मक पैटर्न की जानकारी देना।²³¹

²³¹ www.rickyromain.com

5.1.21 सितार लैसन लंदन

यहाँ पर सितार वाद्य की शिक्षा टोमी खोसला द्वारा दी जाती है। यहाँ पर हर आयु के वर्ग के लोग सितार वादन सीख सकते हैं। यहाँ पर सितार वाद्य का पाठ्यक्रम बहुत ही सरल ढंग से बनाया गया है। योजनाबद्ध ढंग से तैयार कर छात्रों को शिक्षा दी जाती है। सितार वाद्य और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार के लिये ठोस आधार प्रदान किया जाता है।²³²

5.1.22 श्रुति म्यूजिक स्कूल

श्रुति म्यूजिक स्कूल इंग्लैण्ड में स्थित है यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ, बालीवुड और पॉप संगीत की शिक्षा भी दी जाती है। यहाँ पर तबला, वायलिन, बांसुरी, सितार, आदि वाद्य यंत्रों के बजाने की शिक्षा व तकनीक बताई जाती है। यहाँ पर छात्रों को प्रारम्भिक और अग्रिम शिक्षा दी जाती है।

- 1) हिन्दुस्तानी संगीत का परिचय
- 2) 10-12 घंटे का रियाज
- 3) 12 पर्दों का रियाज
- 4) राग बिलावल, भैरव और भुपाली

इसके बाद इंटरमीडिया और एडवांस कोर्स भी करवाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त और भी कोर्स करवाये जाते हैं, जैसे

- 1) कम्पोजिशन ट्रेनिंग कोर्स
- 2) छात्राओं के लिये स्टेज परफोरमेंस
- 3) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम भी करवाया जाता है।²³³

²³²Tommy.khosla@musicteacher.com

²³³ <https://shrutimusicsschool.com>

5.1.23 दरबार अकादमी

दरबार अकादमी के लाइव और ऑन-डिमांड कोर्स के साथ अपनी संगीत शिक्षा शुरू कर सकते हैं। चाहे आप कोई नया वाद्य यंत्र सीख रहे हों या कोई उन्नत छात्र जो अपने कौशल को निखार रहा हो, यहां पर विशेषज्ञ-निर्देशित कक्षाएं आपको अपनी पूरी क्षमता के साथ शिक्षण कराने में मदद करती हैं। शिक्षा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता में निहित, दरबार की कहानी भाई गुरमीत सिंह विरदी द्वारा 1970 के दशक में पूर्वी अफ्रीका में छात्रों को तबला सिखाने से शुरू हुई। यह जुनून यू.के. में बढ़ा, जिसने भारतीय संगीत शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने के दृष्टिकोण को आकार दिया। दरबार अकादमी इस विरासत को आज भी जारी रखती है, मास्टर शिक्षकों द्वारा विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान की जाती है जो प्रौद्योगिकी के माध्यम से आसानी से सुलभ हो रही है, जिससे छात्र दुनिया में कहीं से भी कला से जुड़ सकते हैं।

इंटरमीडिएट क्लास में, अधिक जटिल रागों और सुधार कौशल को विकसित करते हुए अपनी तकनीक को निखारने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। रूपा पनेसर द्वारा उन्नत मार्गदर्शन किया जाता है, जो की संगीतात्मकता और अभिव्यक्ति को बढ़ाते हैं। नियमित अभ्यास (रियाज़) आपकी प्रगति के लिए आवश्यक होगा, क्योंकि जटिल रचनाओं में महारत हासिल करने और अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने की दिशा में काम करते हैं।

पाठ्यक्रम व्यवस्था

यह कोर्स उन छात्रों के लिए एकदम सही है, जिन्हें बुनियादी बातों की अच्छी समझ है और जो मुख्य रागों और लय से परिचित हैं। अगर आप अपने मौजूदा ज्ञान को और बढ़ाना चाहते हैं और भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्धि को और गहराई से समझना चाहते हैं, यह कोर्स उनके लिए है। यह उन लोगों के लिए एक बेहतरीन अवसर है जो खुद को चुनौती देने और अपने कौशल को बढ़ाने के लिए तैयार हैं।

5.1.24 लंदन सितार अकादमी

लंदन सितार अकादमी यूके लंदन में स्थित है, जहाँ पर सितार वादन की शिक्षा दी जाती है। लंदन में सितार वाद्य को बजाने वालों की अधिक संख्या के लिये यह अकादमी खोली गई। इंग्लैण्ड में सितार वादन के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु और सितार वादन के हर स्तर पर प्रशिक्षण का अवसर देने और सितार वाद्य के प्रदर्शन को बढ़ावा देने के लिये इसका निर्माण किया गया था।

- सितार वादन की प्रारम्भिक, मध्यवर्ती और अन्य स्तर के छात्रों के लिये नियमित रूप से क्लासों का आयोजन करना।
- सितार वादन के शिक्षकों और कलाकारों के लिये व्यावसायिक विकास के लिये प्रोग्राम बनाना।
- नोटेशन और ऑडियो सिस्टम के माध्यम से शिक्षण सामग्री विकसित करना।

यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कक्षाएँ उ. विलायत खां जी के शार्गिद ईमदाद खानी घराने से सम्बन्धित उ. धर्मवीर द्वारा ली जाती है। यहाँ पर वर्कशाप भी आयोजित की जाती है।²³⁴

5.1.25 जेम्स पुसी सितार वादक

जेम्स पुसी इंग्लैण्ड के सितार वादक है। आप ईटावा घराना के उ. धर्मवीर सिंह और पं. अरविंद पारिख जी से सितार वादन की शिक्षा ग्रहण की। आप उ. विलायत खां जी के पास भी रहे और सितार वादन करते हुए आपको 20 वर्षों से अधिक का समय हो गया है। आप इंग्लैण्ड में और विदेशों में सितार वादन और अध्यापन कर रहे हैं।

पाठ्यक्रम

- सितार की सही बैठक
- सितार को सुर करने का ढंग

²³⁴साक्षात्कार उ. धर्मवीर सिंह

- राग और ताल सिद्धान्त और लयबद्ध अभ्यास
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा²³⁵

5.1.26 डेविड बलावन सितार स्कूल

आस्ट्रेलिया के डेविड बलावन सितार वादन की शिक्षा देते हैं। आप ऑनलाईन और ऑफलाईन दोनों ही तरह से प्रशिक्षण देते हैं। आप 2002 में कनाडा के जोम्स हैमिलटन से मिले। 1979 में कोलकाता के रविन्द्र भारतीय युनिवर्सिटी से संगीत वादन में स्नातकोत्तर की एमए की डिग्री प्राप्त की। आप प्रोफ़ेसर वन्दोपोध्याय से संगीत की शिक्षा ग्रहण करते रहे हैं। आप गायकी अंग की सितार बजाते हैं।

सितार वादन का पाठ्यक्रम

- सितार वादन की सही बैठक व मुद्रा तकनीक पर जोर
- रागों और तालों पर ध्यान देना।
- विभिन्न स्केलों पर अभ्यास करना।
- विभिन्न रचनाएँ बनाना और सृजनात्मकता पर ध्यान देना।
- सरागमों का प्रयोग करना। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा गुरु मुख से निकली मौखिक शिक्षा पर जोर दिया जाता है।
- सितार एक कठीन वाद्य है परन्तु उसके आनंद दायक व सहजतापूर्वक शिक्षण के लिए बढ़ावा देना²³⁶

5.1.27 रिधम स्कूल ऑफ़ म्यूजिक

रिधम स्कूल ऑफ़ म्यूजिक न्यूजीलैंड में स्थित है। यहाँ पर कक्षाएँ नाद कम्युनिटी सेंटर में लगाई जाती हैं। इसकी स्थापना 2009 में मनजीत सिंह और दलजीत कौर द्वारा की गई। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, गुरुमत संगीत, तबला, सितार, दिलरूबा

²³⁵ <https://sitar.player.com>

²³⁶ www.devabalaban.com

आदि वाद्य यंत्रों का वादन करते हैं। यहाँ पर एडवांस, इंटरमिडिएट, बिगनर स्तर पर वादन सिखाया जाता है। यहां पर समय – समय पर वर्कशॉप का आयोजन किया जाता है। संगीत शिक्षण प्राप्त कर रहे छात्रों को मंच प्रस्तुतिकरण का मौका भी दिया जाता है। है। संगीत बैठकों का भी आयोजन किया जाता है ²³⁷

5.1.28 सरगम स्कूल ऑफ इंडियन म्यूजिक

यह 2006 में भारतीयों द्वारा मिल कर बनाया गया। इस की स्थापना वसंत माथुर ने की। यहाँ पर गायन, वादन, नृत्य की विधिवत शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर अलग-अलग जगह से स्टूडेंट आते हैं जैसे यूरोप, फिजी, मलेशिया, साऊथ अफ्रीका आदि जगह से सितार वाद्य व संगीत की शिक्षा ग्रहण करते हैं। यह ऑकलैंड में स्थित है। यहाँ पर सरगम माथुर द्वारा सितार वादन की शिक्षा दी जाती है। पिछले तीन वर्षों से सरगम स्कूल एशिया न्यूजीलैंड फाउंडेशन और ओकलैंड पर्यटन, कार्यक्रम एवं आर्थिक विकास लिमिटेड द्वारा आयोजित ओकलैंड दिवाली महोत्सव में संगीत कार्यशालाएँ आयोजित कर रहा है। सरगम माथुर न्यूजीलैंड में होने वाले बहुत से संगीत कार्यक्रमों जैसे ऑकलैंड आर्ट्स फेस्टीवल, तोरागा आर्ट्स फेस्टीवल, इंटरनैशनल योगा फेस्टीवल न्यूजीलैंड 2019 और स्पीरिट फेस्टीवल आदि में सितार वादन का कौशल दिखा चुकी है। ²³⁸

5.1.29 ग्लोबल अकादमी ऑफ आर्ट्स, लैंग्वज एंड कल्चर

ग्लोबल अकादमी ऑफ आर्ट्स, लैंग्वज एंड कल्चर की स्थापना 2012 में हुई थी। यहाँ पर वैश्विक स्तर पर संगीत की कक्षाएँ लगाई जाती है जोकि सूचना प्रौद्योगिकीकरण की सहायता से आनलाईन होती है।

यहाँ पर अलग-अलग साईट (स्काईप, गुगल टॉक) आदि पर जाकर सितार वादन की शिक्षा दी जाती है। सितार के स्टीफिकेट कोर्स जैसे (शॉर्ट टर्म) और (extended term) 54 माह का कोर्स करवाया जाता है। यहाँ पर बच्चे, युवा, बजुर्ग हर कोई सितार वाद्य की विधिवत शिक्षा ले सकता है। GAALC –कला, भाषा और संस्कृति की वैश्विक

²³⁷ www.rhythmschool.co.nz/

²³⁸ <https://sargamschoolofmusic.co.nz/>

अकादमी भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्ययंत्र बजाना सीखने के लिए दूरस्थ संगीत शिक्षा कार्यक्रम प्रदान करती है , जैसे कि सितार की कुंजी पर आधारित हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत वाद्ययंत्र सीखना, स्काइप या गूगल हैंगआउट पर ऑनलाइन संगीत कक्षा पाठों के साथ। GAALC ऑनलाइन कक्षा पाठों के साथ शुरुआती , मध्यवर्ती और उन्नत स्तरों के लिए दूरस्थ शिक्षा शौक सीखने के कार्यक्रम आयोजित करता है और सितार बजाना सीखने के लिए अल्पकालिक प्रमाणपत्र कार्यक्रम (24 महीने की अवधि) के रूप में। GAALC द्वारा सभी के लिए असीमित अवधि का शौक सितार सीखने का कार्यक्रम भी पेश किया जाता है।

- **GAALC लघु अवधि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम** – 24 महीने की अवधि : सितार सीखने के निम्नलिखित तीन स्तर शामिल हैं

शुरुआती प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम – 6 महीने की अवधि (24 पाठ) ऑनलाइन सितार संगीत वाद्ययंत्र कक्षा शुरुआती स्तर के प्रशिक्षण के लिए। पात्रता – 8 वर्ष से अधिक कोई भी आयु वर्ग। सितार ऑनलाइन कक्षाएँ : 45 मिनट की अवधि वाली कक्षा – प्रति माह 4 कक्षाएँ (1 कक्षा / सप्ताह)।

इंटरमीडिएट सर्टिफिकेट कोर्स – 6 महीने की अवधि (24 पाठ) इंटरमीडिएट स्तर के प्रशिक्षण के लिए ऑनलाइन सितार संगीत वाद्ययंत्र कक्षा पाठ। योग्यता – शुरुआती प्रमाणपत्र स्तर उत्तीर्ण या समकक्ष। सितार ऑनलाइन कक्षाएँ : 45 मिनट की अवधि वाली कक्षा – प्रति माह 4 कक्षाएँ (1 कक्षा / सप्ताह)।

उन्नत प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम – उन्नत स्तर के प्रशिक्षण के लिए 12 महीने की अवधि (48 पाठ) ऑनलाइन सितार संगीत वाद्ययंत्र कक्षा पाठ। योग्यता – इंटरमीडिएट प्रमाणपत्र स्तर उत्तीर्ण या समकक्ष। सितार ऑनलाइन कक्षाएँ : 50 मिनट की अवधि वाली कक्षा – प्रति माह 4 कक्षाएँ (1 कक्षा / सप्ताह)।

- **GAALC नियमित अवधि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम** – 36 महीने की अवधि : सितार सीखने के निम्नलिखित तीन स्तर शामिल हैं

शुरुआती प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम – 12 महीने की अवधि (48 पाठ) ऑनलाइन सितार संगीत वाद्ययंत्र कक्षा पाठ शुरुआती स्तर के प्रशिक्षण के लिए। पात्रता – 8 वर्ष से ऊपर का कोई भी आयु वर्ग। सितार ऑनलाइन कक्षाएँ : 45 मिनट की अवधि वाली कक्षा – प्रति माह 4 कक्षाएँ (1 कक्षा / सप्ताह)।

इंटरमीडिएट सर्टिफिकेट कोर्स – इंटरमीडिएट स्तर के प्रशिक्षण के लिए 12 महीने की अवधि (48 पाठ) ऑनलाइन सितार संगीत वाद्ययंत्र कक्षा पाठ। योग्यता – शुरुआती प्रमाणपत्र स्तर उत्तीर्ण या समकक्ष। सितार ऑनलाइन कक्षाएँ : 45 मिनट की अवधि वाली कक्षा – प्रति माह 4 कक्षाएँ (1 कक्षा / सप्ताह)।

उन्नत प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम – 12 महीने की अवधि ऑनलाइन (48 पाठ) उन्नत स्तर के प्रशिक्षण के लिए सितार संगीत वाद्ययंत्र कक्षा पाठ। योग्यता – इंटरमीडिएट प्रमाणपत्र स्तर उत्तीर्ण या समकक्ष। सितार ऑनलाइन कक्षाएँ : 50 मिनट की अवधि वाली कक्षा – प्रति माह 4 कक्षाएँ (1 कक्षा / सप्ताह)।

- **GAALC विस्तारित अवधि प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम** – 54 महीने की अवधि : इसमें सितार वाद्ययंत्र बजाना सीखने के तीन स्तर शामिल हैं – शुरुआती, मध्यवर्ती और उन्नत स्तर, प्रत्येक स्तर में 72 ऑनलाइन पाठ।

- **GAALC हॉबी लर्निंग लेसन**– असीमित अवधि :

हॉबीलेसन– असीमित अवधि के ऑनलाइन सितार संगीत वाद्ययंत्र सीखने के लिए हॉबी क्लास लेसन। सितार ऑनलाइन क्लासेस : 30 मिनट की अवधि वाली क्लास – प्रति माह 4 क्लास (1 क्लास / सप्ताह)। पात्रता – 8 वर्ष से ऊपर का कोई भी आयु वर्ग।

5.1.30 सुर अकादमी ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक लैसन

पल्लवी मेहता द्वारा अमेरिका में यह अकादमी खोली थी। पिछले 33 वर्षों से कार्यरत है यहाँ पर सितार वाद्य की शिक्षा दी जा रही है। आपने 1989 में 3 छात्रों के साथ अकादमी शुरू की थी उसके बाद सैकड़ों छात्र सितार वाद्य की शिक्षा ले चुके हैं। आप का मानना है कि संगीत से मनुष्य के मानवीय गुण विकसित होते हैं और व्यक्ति में विनम्रता

आती है तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलता है। सुश्री मेहता कैलिफोर्निया स्टेट में "वर्ल्ड म्यूजिक" मेंटर भी रही हैं सुश्री पल्लवी मेहता ने एकल और अपने छात्रों के साथ मंच पर कई लाइव स्टेज प्रस्तुतियाँ दी हैं। कैलिफोर्निया कॉलेज, केजे सोमैया कॉलेज आदि ।

5.1.31 रेमो स्कनो

आप 2008 से 2014 तक भारत में वाराणसी में रहे और वहाँ पर सितार वादन सीखा। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में डिग्री ली। 2015 के बाद पिता बन जाने के बाद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन की क्लास ले रहे हैं। आप यूरोप और एशिया के दौरे भी करते हैं। आप ऑनलाईन संगीत प्रशिक्षण देते हैं। आप अपने शिक्षण में उपज और सृजनात्मकता पर विशेष जोर देते हैं। राग और ताल की जानकारी के साथ-साथ विभिन्न लयकारियों का रायज और विभिन्न तकनीकों की जानकारी देते हैं।²³⁹

5.1.32 ची नाकायमा

ची नाकायमा द्वारा जापान में यह अकादमी खोली गई। जहाँ पर सितार वाद्य की शिक्षा दी जाती है। ची एक प्रशिक्षित सितार वादक है। ची नाकायमा ने अपनी प्रारंभिक सितार शिक्षा यशोहिरी मीनामीजवा से ग्रहण की और 2019 में प्रसिद्ध सितार वादक डॉ. श्रावणी विश्वास से ग्रहण की और आजकल पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी से प्राप्त कर रही हैं। आप गायकी अंग और तंत्रकारी दोनों तरह से सितार वादन करती है। आप ऑनलाईन और ऑफलाईन सितार कक्षाएँ लेती है। सितार की कक्षाएँ, छात्रों, कामकाजी लोगों और जो लोग कुछ नया करना चाहते हैं उसी आधार पर ली जाती है। कक्षा का समय छात्रों के अनुरूप रखा जाता है।²⁴⁰

5.1.33 हॉन सेमबावी

हॉन सेमबावी कोरिया से है। आप जब 17 वर्ष की आयु में भारत गये तो वहाँ पर पहली बार सितार सुना। आप कोरिया में ताल वाद्य बजाते थे। फिर आप वापिस भारत

²³⁹ साक्षात्कार द्वारा सितम्बर, 2024

²⁴⁰ <https://nakayamachie.wixside.com>

आये और बनारस में सितार वाद्य की शिक्षा ग्रहण की। आप बनारस में पं. रविन्द्र नारायण गोस्वामी के शिष्य हैं। हॉन सेमबावी जापान में सितार वाद्य की शिक्षा देते हैं। उन्होंने उसके लिये पाठ्यक्रम निर्धारित किया है।

- प्रारम्भिक शिक्षा देने के दौरान उसके लिए आवश्यक बुनियादी बातें का ज्ञान देना
- सितार शुरू करने वालों के लिए पहले आमने-सामने कैसे बैठक सिखाई जाती है। कक्षा में यह भी बताया जाता है कि सितार बजाने के लिए आपको क्या चाहिए, किसी वाद्य यंत्र को कैसे पकड़ें, इसकी धुन कैसे बजाएं, इसमें तार कैसे बांधें, इत्यादि।
- संगीत वाद्ययंत्र किराये पर भी दिया जाता है। उसकी फीस प्रत्येक बार 1000 येन है।
- सितार वादन की प्रमुख शैलियाँ बताई जाती हैं।

5.1.34 सुर संगम लरन इंडियन म्यूजिक

सुर संगम के नाम से श्री प्रदीप ने ऋषिकेश में गंगा के घाट से संगीत विद्यालय की स्थापना की थी। जो 2009 में जर्मनी में भी स्थापित किया। जर्मनी में यहाँ पर अमेरिका, जापान, यूरोप और ईजराईल के छात्र संगीत विद्या ग्रहण करने के लिये आते हैं। आप ओशो स्कूल ऑफ क्रिएटिव आर्ट्स के साथ भी जुड़े हैं और कई कार्यक्रम करवाते हैं। यहाँ पर योगा और ध्यान की कक्षाएँ भी लगती हैं। सितार वादन का सालाना कार्यक्रम वन स्प्रीट के नाम से करवाया जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु पुजा, बसंत उत्सव और भारतीय तीज त्योहारों पर कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाती है।²⁴¹

5.1.35 अली अकबर कालेज ऑफ स्वीजरलैंड

अली अकबर कालेज ऑफ स्वीजरलैंड को खुले हुये 38 वर्षों से अधिक का समय हो गया है। 1985 में यह कालेज उ. अली अकबर खां द्वारा खोला गया। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीतके अन्तर्गत सितार वाद्य की शिक्षा दी जाती है। यहां पर प्रति वर्ष सेमिनार का आयोजन किया जाता है , गायन और वादन पर कलाकारों द्वारा व्याख्यान

²⁴¹ <https://www.muteiba.com>

दिया जाता है और जहाँ पर गायन और वाद्य की विधिवत् जानकारी दी जाती है। यहाँ पर लाईव क्लास, ऑनलाईन क्लासिकल और ऑनलाईन लैसन दिये जाते हैं। संगीत समारोहों और सम्मेलनों का अयोजन किया जाता है। इन संगीत समारोहों में उ. शुजात खां, पं. शुभेंद्र राव, पं कुशल दास, श्रीमति अनुपमा भगवत् आदि कलाकारों ने सितार वादन की प्रस्तुतियाँ दी है।

आजकल यहाँ शंकर चौधरी सितार वाद्य की शिक्षा दे रहे हैं। वाद्य-यंत्र की कक्षाएँ निजी और छोटे समूहों दोनों में आयोजित की जाती हैं और इनमें मुख्य रागों और तालों में तकनीकी अभ्यास और रचनाएँ दोनों शामिल होती हैं। वर्तमान में, वाद्य-यंत्र की कक्षाएँ नियुक्ति के आधार पर होती हैं। स्टूडियो फर मुसिक डेर कल्चरन - SMK" (दुनिया की संस्कृतियों के संगीत के लिए स्टूडियो) के सहयोग से प्रस्तुत की जाती हैं, जो संगीत अकादमी का एक विभाग है जो दुनिया भर की संगीत परंपराओं के संगीत कार्यक्रम और कार्यशालाएँ भी प्रस्तुत करता है।²⁴²

5.1.36 परम्परा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और नृत्य

परम्परा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और नृत्य विद्यालय सिंगापुर में स्थित है। परम्परा विद्यालय गैर सरकारी है जो एक संस्था द्वारा खोला गया है। जहाँ पर गायन, वादन, तबला व नृत्य की शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर हर दो माह में संगीत कार्यक्रम करवाया जाता है। छात्रों के लिये ज्ञानवर्धक कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं किस्मों आदि पर शोध भी किया जाता है। सितार वादन का प्रशिक्षण ईमदाद खानी घराना शैली पर आधारित है। यहाँ पर जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह सर्वभारतीय संगीत और संस्कृति परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त है। प्रति वर्ष संगीत समारोह और कार्यक्रम करवाये जाते है।²⁴³

➤ 2015 परंपरा संगीत समारोह चंद्रनाथ भट्टाचार्य ने सितार वादन किया ।

²⁴² www.aliakbarcollege.org

²⁴³ info@paramparo.sg.org

- 2015 को संगीत संध्या कार्यक्रम में सुमन भट्टाचार्य, बुद्धादित्य मुखर्जी ने सितार वादन किया ।
- 2016 में सब रंगीली कार्यक्रम में चंद्रनाथ भट्टाचार्य ने सितार वादन किया ।
- 2017 में बसन्त बहार कार्यक्रम करवाया गया ।
- 2018 में सुर श्रगार कार्यक्रम में सुमन भट्टाचार्य ने सितार वादन किया ।
- 2019 में परंपरा संगीत समारोह पं. बुद्धादित्य मुखर्जी ने सितार वादन किया ।

5.1.37 संगीत विश्वभारती (अकादमी ऑफ इंडियन म्यूजिक)

संगीत विश्वभारती की स्थापना जतिन कुमार ओझा ने 1993 में लंदन में की थी। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का 33 वर्षों से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यहां पर गायन, वादन (तबला, सितार, हारमोनियम) शास्त्रीय औप उपशास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह एकलौता सेंटर है जो गार्थव महाविद्यालय मंडल के साथ जुड़ा हुआ है। सितार वाद्य की शिक्षा पहले इंद्रनील भट्टाचार्य द्वारा , पं. गणेश मोहन और श्री सुखराज सिंह झाला द्वारा की जाती है। सभी कक्षाएं व्यक्तिगत दृष्टिकोण से संचालित की जाती हैं, जिसमें व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है और गायन, तबला, सितार और हारमोनियम जैसी विभिन्न भारतीय संगीत शैलियों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। पाठ्यक्रम को व्यवस्थित और अच्छी तरह से संरचित पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए सावधानीपूर्वक डिज़ाइन किया गया है। हिंदुस्तानी भारतीय शास्त्रीय गायक, तबला वादक, सितार वादक में अपने कौशल और विशेषज्ञता को विकसित करने के लिए हमारे कार्यक्रम में दाखिला लें और एक कुशल कलाकार बनने की दिशा में यात्रा शुरू करें।

संगीत विश्वभारती यूके और यूरोप में एकमात्र केंद्र है जो 1995 से एबीजीएमवीएम - मुंबई, भारत से संबद्ध है। छात्रों को विशारद पूर्णा (बी.म्यूज के समकक्ष) तक किसी भी विषय में भारतीय संगीत परीक्षा देने का अवसर मिलता है।

अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल - मुंबई, भारत, जिसे भारत का सबसे पुराना (1901), सबसे मान्यता प्राप्त और सबसे प्रसिद्ध भारतीय संगीत परीक्षा बोर्ड माना जाता है। ये सभी परीक्षाएँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं।

1995 से लेकर अब तक हज़ारों छात्र यूके और यूरोप से संगीत की परीक्षा में शामिल हो चुके हैं। यूके, भारत या अन्य जगहों पर किसी भी शिक्षक से भारतीय संगीत और नृत्य सीखने वाले छात्र संगीत विश्वभारती - यूके सेंटर से संगीत की परीक्षा देने के पात्र हैं, बशर्ते कि उन्होंने पाठ्यक्रम के अनुसार सीखा हो।

परीक्षा के विषय इस प्रकार हैं-

1. शास्त्रीय गायन 2. सितार 3. तबला 4. हारमोनियम 5. बांसुरी 6. कथक 7. भरतनाट्यम 8. ओडिसी 9. वायलिन ²⁴⁴

5.1.38 हेलेनिक-इंडियन सोसाइटी फॉर कल्चर एंड डेवलपमेंट

यह एक गैर-सरकारी और गैर-लाभकारी सोसायटी है जिसकी स्थापना जुलाई 2003 में एथेंस कोर्ट में पंजीकरण संख्या 8591 के साथ की गई थी। यह पंजीकरण संख्या: 4711 के साथ हेलेनिक संस्कृति और खेल मंत्रालय के सांस्कृतिक संस्थानों की सूची में पंजीकृत है। सोसाइटी का संचालन एक निदेशक मंडल द्वारा किया जाता है जिसमें नौ सदस्य होते हैं और इसमें सलाहकार और परामर्शदाता भी हैं।

सोसायटी का उद्देश्य हेलेनिक-भारतीय शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और विकासात्मक सहयोग का विकास करना है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति का सौंदर्य, नैतिक और बौद्धिक उत्थान, सार्वभौमिक विचार का विकास, अंतरसांस्कृतिक संवाद और लोगों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व हो। उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, निम्नलिखित गतिविधियों को करवाता है।

²⁴⁴ www.sangeetvishwabharti.com

प्रकाशन:

- इंडो-ग्रीक और इंडोलॉजिकल विषयों पर किताबें, शब्दकोश और अनुवाद प्रकाशित करता है।
- वेबसाइट का रखरखाव करता है और फोटोग्राफिक अभिलेखागार और तीन इंटर कल्चरल फोरम प्रकाशित करता है: ए) इंडिका (इंडोलॉजिकल और इंडो-ग्रीक स्टडीज पर शोध पत्र और लेख) ISSN: 1394-2654; बी) एनईए इंडिया (आधुनिक भारत और ग्रीक-भारतीय उद्यमिता पर अध्ययन और लेख) आईएसएसएन: 2654-1386; और सी) ग्रीक भारतीय आर्थिक मंच (अर्थव्यवस्था और व्यापार पर लेख) आईएसएसएन: 2732-799X।

सांस्कृतिक कार्यक्रम:

- शास्त्रीय, पारंपरिक और आधुनिक संगीत प्रदर्शन के कार्यक्रम आयोजित करता है।
- कला प्रदर्शनियों, सिनेमैटोग्राफिक अनुमानों, फिल्म समारोहों और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है।
- ग्रीस और भारत में सांस्कृतिक पर्यटन का आयोजन करता है।

5.1.39 संपदा इंडियन आंदरा

संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य सीखने वाले छात्रों के लिए प्रमाणपत्र कार्यक्रम प्रदान करता है।

संपदा प्रमाणन सिलिकॉन आंध्र द्वारा पोर्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय (PSTU), और NAAC मान्यता प्राप्त संस्थान के सहयोग से किया जाता है। पीएसटीयू (1985 में स्थापित) एक प्रतिष्ठित और व्यापक रूप से सम्मानित विश्वविद्यालय है जिसका मुख्यालय हैदराबाद, तेलंगाना राज्य, दक्षिण भारत में है।

संपदा से संबद्ध शिक्षक/गुरु या स्कूल अपने छात्रों को कर्नाटक संगीत (गायन, वीणा, वायलिन, बांसुरी और मृदंगम) में जूनियर और/या वरिष्ठ प्रमाणपत्र कार्यक्रम करवा सकते हैं। हिंदुस्तानी संगीत (गायन, सितार, वायलिन, तबला); भरतनाट्यम, आंध्रनाट्यम और कुचिपुड़ी आदि की शिक्षा प्रदान करता है।

जूनियर सर्टिफिकेट - 2 वर्ष

वरिष्ठ प्रमाणपत्र - 4 वर्ष

हिंदुस्तानी संगीत (सितार) पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष - सिद्धांतक

- संगीत, स्वर, शुद्ध, विकृत, कोमल, तीव्र, सप्तक, मंद्र, सप्तक, मध्य-सप्तक, तार-सप्तक, आरोह, अवरोह, वर्जित स्वर, अलंकार की परिभाषाएँ और व्याख्याएँ।
- निम्नलिखित शब्दावली की समझ:-
मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेके के बोल, द्रुगुण, चौगु और आवर्तन।
सिखाए जाने वाले ताल - तीनताल, झपताल, दादरा और एकताल इसके संपूर्ण विवरण।

अनुभाग - बी

- निर्धारित स्वर एवं अलंकार लिखना।
- बाज के तार पर बीस (20) पर्दों का ज्ञान।
- निर्धारित तालों का उनके ठेके सहित संपूर्ण विवरण।
- निर्धारित रागों का सम्पूर्ण विवरण देना।

प्रथम वर्ष - क्रियात्मक

- मिजराब पहनने का सही तरीका, बोल दा, रा और दिर उत्पन्न करने के लिए दाहिने हाथ की सही गति।
- बाएं हाथ की उचित स्थिति और उँगलियाँ की जानकारी देना।
- कल्याण और बिलावल थाट में सही उँगलियों को विकसित करने के लिए बाएं हाथ के अभ्यास सीखना।
- बाज के तार पर शुद्ध विकृत स्वरों की पहचान।
- अंलकारों का अभ्यास
- हाथ पर ताल प्रदर्शित करने और निर्धारित मात्राओं और बोलों की गिनती करने की जानकारी देना

अनुभाग - बी

- मसीतखानी गत मध्य लय में दुगुण में पांच तान के साथ – रजाखानी गत को जानकारी देना
- निम्नलिखित निर्धारित रागों की जानकारी देना
राग यमन, राग खमाज, राग काफी, राग भूपाली
- अल्हैया बिलावल, राग बंदावनी सारंग
- निर्धारित ताल हैं:
1.तीनताल 2.झपताल 3.चौताल 4.दादरा।
- सितार की बुनियादी बातें, जैसे वाद्ययंत्र का उचित संचालन, दाएं और बाएं हाथों की सही स्थिति और बैठने की स्थिति।
- विद्यार्थी को हाथों की सही गति और उँगलियों की सही पकड़ विकसित करने का अभ्यास करवाना।

हिंदुस्तानी संगीत पाठ्यक्रम (सितार)

द्वितीय वर्ष - सिद्धांत

- नाद- इसके तीन गुण हैं: स्वर, परिमाण और समयकी परिभाषाएँ और स्पष्टीकरण :
- श्रुति, स्वरस्थान (मंद्र, मध्य, तार), वर्ण, अलंकार, पकड़, वक्र स्वर, थाट और राग।

परिभाषाएँ और स्पष्टीकरण :

स्थाई, अंतरा, संचारी, अभोग, लय, विलंबित, मध्य लय और द्रुत, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी की परिभाषाएँ :

ग्रह, अंश, न्यास, मींड, कण, तान, अलाप, दुगुन, चौगुन का ज्ञान देना

अनुभाग - बी

- सितार में तारों का विवरण एवं उपयोग लिखना
- निर्धारित रागों में तानों के साथ विलम्बित और द्रुत गत की स्वरलिपी लिखना।
- निर्धारित तालों का संपूर्ण विवरण।
- दूसरा वर्ष - क्रियात्मक
- शुद्ध और विकृत स्वरों को बजाते समय पहचानना।
- विलम्बित और द्रुत गत के बोलो का अभ्यास करना

चौगुन लय में पाँच तानों के साथ निम्नलिखित निर्धारित रागों के विलम्बित गत।

1. राग यमन 2. राग खमाज 3. राग काफी 4. राग भूपाली 5. राग बृंदावनी सारंग 6. राग अल्हैया बिलावल 7. राग दुर्गा

द्रुत निम्नलिखित रागों में से प्रत्येक में दुगुन लय में पाँच तान के साथ गत वादन करना।

1. राग यमन 2. राग खमाज 3. राग काफी 4. राग भूपाली 5. राग बृंदावाणी सारंग 6. राग अल्हैया बिलावल 7. राग दुर्गा

ठेके के साथ निम्नलिखित निर्धारित ताल:

1. एकताल 2. धमार 3. सुलताल 4. केहरवा

दूसरे वर्ष के अंत तक सितार की मूल बातें और बुनियादी सिद्धांतों को पूर्णता से समझाया जाता है। छात्र को सभी बुनियादी अलंकारों को सही उंगलियों के क्रम के साथ पूरी तरह से बजाने में सक्षम होना चाहिए। उसे अलंकार और गत बजाने के लिए उत्तम लय विकसित करनी चाहिए और तान और झाला बजाने के लिए गति लानी चाहिए।

हिंदुस्तानी संगीत (सितार) पाठ्यक्रम

तृतीय वर्ष - सिद्धांतक

- रागों की नौ जातियाँ (औडव, षाडव, सम्पूर्ण) परिभाषाएँ और स्पष्टीकरण :
- शुद्ध, छायालग, संकीर्ण राग, पूर्व राग, उत्तर राग, पूर्वांग, वादी, आश्रय राग।
- राग गायन की प्राचीन पद्धति का सन्दर्भ सहित अध्ययन।
- ग्रह, अंश और न्यास को वर्तमान की तुलना, राग का काल सिद्धांत,
- कृतन, ज़मज़मा, घसीट, आंदोलन, लयकारी, मींड की परिभाषाएँ और स्पष्टीकरण :
- सितार पर बजायी जाने वाली रचनाओं के रूप तृतीयवर्ष के लिए निर्धारित रागों में गत को स्वरबद्ध करना, और चौगुन और दुगुन लय तान के साथ गत के बोल भी लिखना।
- वर्ष के लिए निर्धारित तालों का पूरा विवरण और थाह और दुगुन में ठेका भी लिखना है।

तृतीय वर्ष - प्रैक्टिकल

- सितार बजाने का ज्ञान और अभ्यास
- द्रुत लय में बजाने का अभ्यास

- गत बजाते समय मींड, घसीट, कृन्तन का सरल प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के झालों का अभ्यास।
- मींड और कृन्तन के अलंकार
- पिछले वर्षों में सीखे गए तालों के अलावा तृतीय वर्ष के लिए निर्धारित थाह और दुगुन में बोल का अभ्यास करके हाथ पर ताल दिखाने की क्षमता।
- तबले पर बजने पर ताल की पहचान।

चौथा वर्ष - सिद्धांतक

- पंडित व्यंकटमुखी के 72 मेलों का संपूर्ण विवरण और उन्हें गणितीय प्रक्रिया द्वारा हिंदुस्तानी संगीत के 12 स्वरों के साथ विकसित करना
- हिंदुस्तानी संगीत के 10 थाटों की संपूर्ण व्याख्या और पैतृक पैमाने से रागों को विकसित करने की प्रक्रिया।
- साम्प्रकृतिक रागों का तुलनात्मक अध्ययन।

इसकी परिभाषाएँ और स्पष्टीकरण:

- गमक, अलाप - जोड़ (जोडालाप) - जोड़झाला, आंदोलन, बोल-कारी, और लय के प्रकार
- प्रत्येक गत में क्रमशःचौगुन और दुगुन में बोलकारी और पांच तान के साथ विलम्बित और द्रुत गत लिखना।
- तृतीय वर्ष के लिए निर्धारित रागों का सम्पूर्ण विवरण। पिछले वर्षों में सीखे गए तालों के अलावा, निर्धारित तालों को थाह और दुगुन में उनके विवरण के साथ लिखना।
- पंडित भातखंडे और पं. वी.डी.पलुस्कर की जीवनियाँ

क्रियात्मक

- रागों के अनुसार सितार को बजाने का ज्ञान और अभ्यास।
- राग के अनुसार तरब के तारों को स्वर करने का ज्ञान।
- रचना के विभिन्न रूपों के लिए बोलकारी का ज्ञान
- पिछले वर्षों में निर्धारित रागों और तालों का ज्ञान और अभ्यास।
- निम्नलिखित थाटों में अलंकार बजाने की क्षमता।

1. कल्याण 2. काफ़ी 3. भैरव 4. भैरवी

- निर्धारित रागों में और पिछले वर्षों में सीखे गए रागों में भी सरल तात्कालिक अलाप बजाने की क्षमता।
- अलाप, विलंबित और द्रुत गत बजाते समय चिकारी तारों का उपयोग करने का ज्ञान और अभ्यास।
- पिछले वर्षों में सीखे गए तालों के अलावा थाह और दुगुन में निर्धारित तालों को हाथ में प्रदर्शित करना

निम्नलिखित रागों में अलाप:

1. बिहाग 2. देस 3. केदार

निम्नलिखित रागों में से प्रत्येक में चौगुन में पांच तान के साथ विलम्बित गत का वादन कहना।

1. तिलक कामोद 2. बिहाग 3. देस 4. केदार 5. सोहिनी 6. जौनपुरी

दुगुन और झाला में पांच तान के साथ द्रुत गत का वादन करना।

ठेके के साथ निम्नलिखित तालों का अभ्यास।

1. रूपक ताल 2. अड़ा-चौताल और पिछले वर्षों में निर्धारित सभी ताल।

विद्यार्थी से तीसरे और चौथे वर्ष के लिए निर्धारित रागों में सरल आलाप बजाने की अपेक्षा की जाती है। उसे सही बोलकारी के साथ गत बजाने में सक्षम और राग की शुद्धता बनाए रखने के साथ ही उसे तबले पर बजाते समय बोल और मात्राओं को पहचानने में सक्षम होना अनिवार्य है। उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि उसे अब तक सीखे गए रागों और तालों का पूरा ज्ञान और पहचान की समझ हो, और उसे राग, ताल और लय की अच्छी समझ हो।²⁴⁵

5.1.40 यूनिवर्सिटी ऑफ सिलिकन अंध्र

भारत की समृद्ध संस्कृति और मूल्यों पर स्थापित और भारत की परंपराओं में निहित, सिलिकॉन आंध्र विश्वविद्यालय एक मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय है। यह अमेरिका में स्थित है। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का शिक्षण प्रदान किया जाता है।

पाठ्यक्रम व्यवस्था

- बुनियादी रागों के बारे में जानकारी और उनमें से प्रत्येक में बुनियादी अलाप तान के साथ एक सरगम, लक्षण संगीत, छोटाख्वाल गायन।
 - 1) भूपाली
 - 2) बिलावल
 - 3) भैरव
 - 4) भैरवी
 - 5) बागेश्री
 - 6) यमन

²⁴⁵ <https://sampada.silianandra.org>

उपरोक्त रागों में से कोई एक राग आधारित फिल्म/लोकगीत।

- 1) कला, प्रदर्शन एवं अन्य कलाओं का अर्थ।
- 2) मूल स्वर, सप्तक और मूल ताल के बारे में जानकारी। बुनियादी स्वर सीखना, विभिन्न प्रकार के लय और ताल एक सरस्वती वंदना।
- 3) संगीत की उत्पत्ति, संगीत की उत्पत्ति से जुड़ी विभिन्न कहानियाँ, लोक संगीत से संगीत का विकास, संगीत के किसी एक लोक रूप को सीखना।
- 4) संगीत की सराहना, संगीत सीखने की कुछ बुनियादी अवधारणाएँ देशभक्ति गीत, गीत, गज़ल, सरगम, लक्षसंगीत, छोटा ख्याल।
- 5) भारत में दो प्रकार की संगीत प्रणालियों के बारे में सामान्य जानकारी कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत में शामिल विभिन्न संगीत शैलियाँ एक तिल्लाना या तराना।
- 6) बंदिश, कविता, संगीत रूप और संगीत में भाषा की भूमिका विभिन्न प्रकार की बंदिशों जैसे ध्रुपद, धमार, छोटाख्याल आदि की रूपरेखा सीखना।
- 7) संगत और एकल प्रदर्शन के लिए बुनियादी उपकरणों के बारे में जानकारी, तबला, तानपुरा, सितार और हारमोनियम के बारे में जानकारी।
- 8) हिंदुस्तानी संगीत और संगीतकारों की जीवनियाँ , स्वरलिपी प्रणाली, नोटेशन दी गई स्वरलिपी को पढ़ने, लिखने और गाने का अभ्यास।
- 9) निम्नलिखित विषयों पर निबंध:
 - समाज और संगीत
 - एक अच्छे संगीतकार, संगतकार और एक अच्छे श्रोता के गुण
 - शास्त्रीय संगीत सीखने पर फिल्म संगीत और लोकप्रिय संगीत का प्रभाव
 - मानसिक शांति के लिए संगीत
 - संगीत के माध्यम से करियर की संभावनाएं

- 10 शुद्ध स्वरों के विभिन्न प्रकार के अलंकार और पलटें कोमल स्वरों में अलंकार और पलटें²⁴⁶

5.1.41 भारद्वाज संगीत अकादमी

एक प्रतिष्ठित वैश्विक संगीत संस्थान है, जो दुनिया भर में गुणवत्तापूर्ण संगीत शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है। अकादमी संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, सिंगापुर, भारत, ऑस्ट्रेलिया और 20 से अधिक देशों में छात्रों को शिक्षण प्रदान करती है। विविध संगीत शैलियों और स्तरों पर संगीत की कक्षाएँ लगाई जाती हैं। यह अकादमी ऑनलाइन, ऑफलाइन और हाइब्रिड शिक्षण मोड के माध्यम से सभी उम्र और कौशल स्तरों के छात्रों को वैश्विक मानक और प्रमाणित संगीत पाठ्यक्रम प्रदान करती है। यहाँ पर गायन, गिटार, की-बोर्ड, पियानो, वायलिन, बांसुरी और अन्य में विशेषज्ञता वाले गायन और वाद्य के माहिर शिक्षक हैं।

उच्च योग्य, पेशेवर और संगीत को समर्पित भारद्वाज संगीत अकादमी छात्रों को उनकी संगीत संबंधी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक ज्ञान मुहैया करती है। अकादमी संगीत छात्रों की मदद करने, उनका आत्मविश्वास बढ़ाने और उन्हें संगीत क्षेत्र में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल से तैयार करने के लिए प्रसारित है।

पाठ्यक्रम

शुरुआती स्तर

- हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्वर और मूल ताल/लय पैटर्न का परिचय।
- सरल स्वर अभ्यासों के माध्यम से स्वर अभ्यास। बुनियादी अलंकारों का अभ्यास
- एक मूल राग का परिचय
- हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और मानव मन, शरीर और आत्मा पर इसके फायदे/प्रभाव पर एक संक्षिप्त चर्चा

²⁴⁶ <https://uapsaeduc>

- किसी भी विश्व संगीत शैली में संगीत (गायन या वाद्य) में प्रवीणता और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का ज्ञान देना:
- भारतीय राग प्रणाली का समग्र अन्वेषण व जानकारी प्रदान करना
- एक मूल राग का परिचय देना।

5.1.42 साऊथ अफ्रीका में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अकादमी

केप टाउन में नटेश्वर नृत्य अकादमी साऊथ अफ्रीका में स्थापित है। यहाँ पर बॉलीवुड फिटनेस सहित हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कक्षाएं भी दी जाती हैं। प्रिटोरिया में भारतीय उच्चायोग प्रतिभा संगम प्रतियोगिता की मेजबानी करता है, जिसमें विभिन्न देशों के भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य के कलाकार शामिल होते हैं। डिप्लोमैटिक सोसाइटी ने दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया में इंडिया हाउस में शास्त्रीय भारतीय संगीत समारोह की मेजबानी की है।

पाठ्यक्रम

केप टाउन विश्वविद्यालय भारतीय शास्त्रीय संगीत पर एक पाठ्यक्रम प्रदान करता है जो सिद्धांत और प्रदर्शन को जोड़ता है, और इसमें निर्देशित श्रवण, वीडियो और लाइव प्रदर्शन शामिल हैं। पाठ्यक्रम में उत्तर और दक्षिण भारत की प्रमुख संगीत परंपराओं के साथ-साथ लोक संगीत की जानकारी दी जाती है।

त्रिनिदाद और टोबैगो में राष्ट्रीय पहचान के उद्भव का पता लगाने के लिए मुंगल पटासर और पेंटर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत, कैलिप्सो, जैज़ और कैरेबियाई लोक संगीत के साथ प्रयोग किया है।

5.1.43 उस्ताद इकलाक हुसैन

आप दिल्ली घराने से हैं। आप आजकल न्यूयॉर्क में रहते हैं। दिल्ली घराने जो की सितार और तबले के लिए प्रसिद्ध है और अमीर खुसरो से जुड़ा हुआ है। आप में सितार

वादन की शिक्षा पिता उस्ताद इमदाद हुसैन और सितार वादक उस्ताद कबीर खां से प्राप्त की। 1991 में आपको भारत सरकार ने पंडित रवि शंकर जी के साथ मिलकर 'शास्त्रीय संगीत विस्तृत परिपेक्ष्य की तलाश में' के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की। आप इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा आदि देशों में सितार बादल कर चुके हैं। आप सितार वादन की कक्षाएं भी देते हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से सितार वादन की शिक्षा दी जाती है।²⁴⁷

निष्कर्ष और विश्लेषण

उपरोक्त विवरण के विश्लेषण में यह ज्ञात होता है की हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन की शिक्षा विदेशों में भी दी जाती है। हमारे प्रतिष्ठित कलाकारों ने विदेशों में जाकर संगीत विद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की और वहाँ पर संगीत के शिक्षा देनी आरंभ की। 1970 के दौर में जब पंडित रवि शंकर जी ने विदेशियों को अपने सितार वादन से मंत्रमुग्ध कर दिया। तो इसके पश्चात् बाकी कलाकारों के भी विदेश जाने के मार्ग खुल गए और उन्होंने विदेश को अपना दूसरा घर बना लिया। जैसे पंडित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खां, उस्ताद विलायत खां आदि नामवर कलाकार इस कड़ी में आते हैं। फिर इन के उपरान्त हर छोटा बड़ा कलाकार विदेश की तरफ रुख करने लगा और वहाँ पर उन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देनी आरंभ कर दी। कुछ ऐसे कलाकार भी थे जो विदेश जाते थे और कार्यक्रम करने के उपरांत वतन वापिस आ जाते थे। उ. शुजात खां कहना है कि "हिंदुस्तानी कलाकार विदेश में रहें भी और उनको अपना संगेत्त सिखाया भी और समझाया भी।"²⁴⁸ उन कलाकारों के वादन से प्राभावित हो कर विदेशी लोग भी भारत आते गये। बनारस इस का उत्तम उदाहरण है। जहाँ पर प्रति वर्ष हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को समझने और सीखने के लिये दुनिया के हर कोने से लोग आते हैं। पं. राम कुमार मिश्रा विश्व के विख्यात तबला वादक का कहना है कि "बनारस मे गंगा के घाट के इर्द- गिर्द प्रावासी भारतीयों ने कमरे किराये पर ले रखे है वह लोग हर साल 6 मास के लिये बनारस में और अगले 6 मास किराया दे कर के अपने देश

²⁴⁷ lkhloq@ragasitar.com

²⁴⁸ साक्षात्कार उ. शुजात खां, 2025

वापिस चले जाते हैं। 6 मास बीतते ही बनारस वापिस आ जाते हैं।”²⁴⁹ इस तरह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रति उनके प्रेम, उत्साह, निष्ठा और श्रद्धा भावों के अतिरिक्त उनकी गहन रूचि का परिचय मिलता है। हिन्दुस्तानी कलाकारों के अतिरिक्त विदेशी सितार वादकों ने भी सितार वादन की शिक्षा देनी आरंभ की। जिनका ब्यौरा दिया गया है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की पाठ्यक्रम पर विचार किया जाए तो वहाँ पर भी संगीत का पाठ्यक्रम उसी तरह से चलता है जैसे भारत में चलता है। सितार वादन के पाठ्यक्रम में सिद्धांतिक और क्रियात्मक दोनों ही पक्षों से शिक्षा दी जाती है। सितार की बैठक, मिज़राब के विभिन्न बोल, अलंकारों का ज्ञान, ताल का ज्ञान, लय का ज्ञान, और फिर रागों की जानकारी दी जाती है। सितार वादन की विभिन्न शैलियों की भी जानकारी दी जाती है। संगीत के पाठ्यक्रम पर उस्ताद शाहिद परवेज़ जी का मानना है कि संगीत का कोई भी निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं होता बल्कि संगीत शिक्षा तो विद्यार्थी के मुताबिक ही दी जाती है।²⁵⁰ इन संस्थाओं में क्रियात्मक ज्ञान के साथ सैद्धांतिक ज्ञान भी दिया जाता है। हर संस्था किसी ना किसी दूसरी संस्था से जुड़ी हुई है जैसे- गंधर्व महाविद्यालय, प्रयोगराज संगीत समिति, प्राचीन काल केंद्र आदि। इन समितियों के पाठ्यक्रम के अनुसार ही पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई है। छात्रों को प्रमाण पत्र भी दिये जाते हैं। इस तरह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन विदेश की धरती पर पालवित हो रहा है।

5.2 वैश्विक स्तर पर सितार वादन की शिक्षा व लोकप्रियता में भारतीय संस्थाओं का योगदान

विश्व में जितना भी संगीत है मानव हृदय की अभिव्यक्ति ही है। गायन, वादन या फिर नृत्य फिर चाहे वो हिन्दुस्तानी हो या फिर पश्चिमी संगीत हो। सम्पूर्ण जगत संगीत के दो तत्व लय और ताल में ही व्याप्त है। संगीत मानव हृदय की अभिव्यक्ति भी है और आनंद भी। सम्पूर्ण जगत को स्वर, लय और ताल हो आपस में जोड़ते हैं। हर प्रदेश की, देश की भौगोलिकता के साथ-साथ उसमें बहुत सारी विविधताएं पाई जाती हैं जिनमें से

²⁴⁹ साक्षात्कार पं. रामा कुमरा मिश्रा, दिसंबर 2023

²⁵⁰ साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज़, अक्टूबर, 2024

भाषा प्रमुख है। यद्यपि संगीत सम्पूर्ण चर-चर जगत की भाषा है परन्तु फिर भी भेद पाया जाता है। संगीत मौलिक रूप से सात स्वरों पर ही केन्द्रित है। संस्कृति, जलवायु, तत्व, सभ्यता और भाषा भेद में विभिन्नता पाई जाती है। जिसका प्रभाव कला और उसके प्रदर्शन पर भी व्यापक रूप से पड़ता है। इसलिए संगीत एक जैसा होकर भी विभिन्न शैलियों और विविध रूपों में पाया जाता है।

आज से ही परन्तु प्राचीन काल से ही विभिन्न कालाओं और संस्कृतियों का भूमण्डलीकरण होता आया है। तभी तो उत्तरी भारतीय संगीत दक्षिण भारतीय संगीत से भिन्न है और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटकी संगीत के नाम से जाना जाता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विश्व स्तर पर प्रसिद्ध करने और उसके प्रचार प्रसार के लिये हिन्दुस्तानी सरकारों और गैर सरकारी संगठनों और संस्थाओं ने अथक प्रयास किये। जिनका उद्देश्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्राचीन व आलौकिक परम्परा से विश्व को अवगत करवाना था और उसके साथ विश्व को जोड़ना था। किसी भी तरह के संगीत को प्रसिद्ध करने में संस्थाएँ र संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन संस्थाओं में सरकारी व गैर सरकारी संगठनों के नाम हैं।²⁵¹

1. सांस्कृतिक मंत्रालय
2. संगीत नाटक अकादमी
3. आई टी सी रिसर्च सेंटर
4. भारतीय सम्बन्ध परिषद (ICCR)
5. सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र
6. इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
7. स्पीक मैके
8. नार्थ जॉन कल्चर सेंटर
9. सर्व अकाल संगीत सोसाईटी

²⁵¹साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज, अक्टूबर, 2024

यह कुछ सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के नाम हैं, जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को उत्सव, कार्यशालाएँ और सैमीनारों द्वारा आगे बढ़ा रही हैं। सांस्कृतिक मंत्रालय के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों व समारोह का आयोजन किया जाता है। यह कार्य विभिन्न संस्थाओं के साथ होता है जैसे संगीत नाटक अकादमी देश भर में उत्सवों का आयोजन करती हैं और सभी कार्यक्रमों का रिकार्ड रखा जाता है। प्रकाशन के लिये भी अनुदान देती हैं। कलाकारों को सम्मान व उपाधियाँ दी जाती हैं। संगीत के छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

5.2.1 सांस्कृतिक मंत्रालय

सांस्कृतिक मंत्रालय की स्थापना 2006 में हिन्दुस्तानी कला और साहित्य के प्रचार-प्रसार व उसको पल्लित करने के लिये की गई थी। इससे पहले यान संस्कृति विभाग के अधीन कार्य करता था। इसका उद्देश्य भारत की कला, संस्कृति की महान विरासत का संरक्षण करना है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत हमारी प्राचीन विरासत की धरोहर है। शास्त्रीय संगीत के विकास के लिये सरकार द्वारा बहुत सारे कार्य किये गये।

वैश्विक सद्भावना व सहभागिता योजना

इसके अन्तर्गत विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सांस्कृतिक विरासत व छवि को बढ़ाने के लिये विदेशों में कार्य किये जाते हैं जैसे ICCR के सेंटर खोलना और वहाँ पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना। अपने विशिष्ट और अनुभवी कलाकारों को विदेशों में भेजना और विदेशियों को यहाँ बुलाया यह सब कार्यों के लिये विविध अनुदान दिये जाते हैं।

प्रतिभा संगम प्रतियोगिता

वैश्विक स्तर पर जो ICCR के केन्द्र खोले गये हैं वहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और नृत्य की प्रतियोगिताएँ करवाई जाती हैं जिसमें कई बाल कलाकारों का भी प्रोत्साहन बढ़ता है और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार भी होता है। छात्रों की छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

स्कॉलरशिप और फैलोशिप

विद्यार्थियों को संगीत के क्षेत्र में अधिक सफलता मिले और वह अपना लक्ष्य निर्धारित करने से ना चुके इसके लिये विभिन्न प्रकार की स्कॉलरशिप भी दिये जाते हैं। शोध करने, प्रकाशन करवाने और उसके अतिरिक्त कई प्रकार की छात्रवृत्तियां दी जाती है।

अनुदान

मंत्रालय द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों और समारोहों के लिये अनुदान राशि भी दी जाती है जिसके अन्तर्गत अनगिणित स्कीमें लागू की गई है, जिनमें कार्यक्रमों समारोहों उत्सवों, कार्यशालाएँ व प्रकाशन का कार्य भी किया जाता है। यह योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करता है। जैसे सांस्कृतिक समारोह और उत्पादन अनुदान योजना, नैशनल प्रिसेंस योजना शामिल है। भारत-विदेशी संधि सांस्कृतिक समितियों को सहायता राशि प्रदान करना। सांस्कृतिक मंत्रालय विदेशों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय समितियों को सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करती है। जिनमें विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

अनुभवी कलाकारों के लिये वित्तीय सहायता योजना

सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा अनुभवी व मझे हुये कलाकारों को और ज़रूरतमंद वृद्ध कलाकारों को समय समय वित्तीय सहायता के रूप में अनुदान दिये जाते हैं ताकि उनका आर्थिक रूप से सहयोग हो सके।

वरिष्ठ कलाकारों के लिए वित्तीय सहायता योजना

60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ कलाकारों को 6,000 रुपये प्रति माह तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। कलाकारों के लिए वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खाते में जमा की जाती है।

कला प्रदर्शन अनुदान योजना

संस्कृति मंत्रालय द्वारा कला प्रदर्शन के लिए अनुदान दिया जाता है। कई योजनाओं के लिए, आय प्रमाण पत्र और जीवन प्रमाण पत्र जैसे दस्तावेज प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है।

युवा कलाकारों के लिए छात्रवृत्ति योजना

विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति दी जाती है। कुछ योजनाओं के लिए, जैसे कि युवा कलाकारों के लिए छात्रवृत्ति, छात्रों को किसी गुरु या संस्थान से न्यूनतम पांच वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योजना

देश की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता

ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक कलाओं के कलाकारों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। यह योजना केंद्रीय क्षेत्र की योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों सहित पूरे देश में पारंपरिक कलाओं सहित विभिन्न प्रकार की प्रदर्शन कलाओं में लगे कलाकारों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता योजना के तहत, प्रत्येक गुरु/निदेशक को 15,000 रुपये प्रति माह की वित्तीय सहायता दी जाती है, जबकि प्रत्येक शिष्य/कलाकार को आयु समूह के अनुसार 10,000 रुपये से 20,000 रुपये प्रति माह तक की सहायता मिलती है।

विभिन्न राज्य सरकारें भी कलाकारों के लिए अपनी योजनाएं चलाती हैं।

इस तरह सरकार द्वारा स्थापित सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में हर संभव कदम उठाये जाते हैं। वैश्विक स्तर पर हिन्दुस्तानी

शास्त्रीय संगीत अगर आज उच्च मुकाम है तो उसके पीछे हमारी सरकार का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैसे सांस्कृतिक संसाधन, प्रशिक्षण केन्द्र और कलाक्षेत्र फांऊडेशन। इन समितियों का कार्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कौशल को बढ़ा देना ही है। यहाँ पर प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाये जाते हैं। संगीत समारोह व कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।²⁵²

5.2.2 संगीत नाटक अकादमी

संगीत नाटक अकादमी की स्थापना 1953 को की गई थी। इसका निर्माण भारत की विशाल सभ्यता और संस्कृति की विरासत के संरक्षण और प्रचार के लिये किया गया था। संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष को राष्ट्रपति द्वारा पाँच वर्षों की अवधि के लिये नियुक्त किया जाता है। यह भारत सरकार द्वारा सांस्कृतिक मंत्रालय की स्वायत्त संस्था है। जहाँ पर संगीत, नृत्य और नाटक को संरक्षित करने का कार्य किया जाता है।

संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिये गये पुरस्कार की देश के सर्वोच्च पुरस्कारों में मान्यता प्राप्त है। संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक के विख्यात और प्रख्यात कलाकारों और विद्वानों को फेलोशिप प्रदान करती है उनको विभिन्न पुरस्कारों द्वारा सम्मानित करती है। युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिये उनको अवार्ड देती है।

संरचना और इकाइयाँ

संगीत नाटक अकादमी भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। यह स्वायत्त निकाय है जो अपना कार्य बहुत ही व्यवस्थित रूप से कर रहा है।

घटक इकाइयाँ

इसकी कई घटक इकाइयाँ हैं, जिनमें इम्फाल में जवाहरलाल नेहरू, मणिपुर नृत्य अकादमी (जेएनएमडीए) और दिल्ली में कथक केंद्र शामिल हैं, जो नृत्य सिखाने के लिए समर्पित हैं।

²⁵² www.indiaculture.gov.in

केंद्र

अकादमी के पास विशिष्ट कला रूपों पर केन्द्रित विभिन्न केंद्र हैं, जैसे कि कुटियाट्टम के लिए तिरुवनंतपुरम में कुटियाट्टम केंद्र, सल्लिया परंपराओं के लिए गुवाहाटी में सल्लिया केंद्र, तथा पूर्वोत्तर प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण के लिए गुवाहाटी में ही उत्तर-पूर्व केंद्र।

कलाकार

अकादमी द्वारा बहुत से कलाकारों, विद्वानों और प्रदर्शन कला से जुड़े व्यक्तियों का एक संग्रह रखा गया है जो अपनी कला में माहिर है।

प्रदर्शन कलाओं का संरक्षण और संवर्धन

संगीत नाटक अकादमी भारत की संगीत, नृत्य और नाटक की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। भारतीय कला को पल्लवित और प्रोत्साहित करने में बहुमुल्य योगदान दे रही है।

मान्यता एवं पुरस्कार

यह संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान करता है, जो प्रदर्शन कला के पेशेवरों, गुरुओं, विद्वानों और कर्मचारियों के लिए सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान है। पहले संगीत जगत के कलाकारों को दिये जाने वाले पुरस्कारों संख्या 9 होती थी। परंतु 2016 से 11 पुरस्कारों का वितरण किया जाता है। पुरस्कार में दी जाने वाली राशि पहले 50 हजार रुपये होती थी परंतु 2009 में 1 लाख रुपये कर दी गई।

वित्तीय सहायता

अकादमी प्रदर्शन कलाओं के संवर्धन और संरक्षण में लगे संस्थानों और व्यक्तियों को वित्तीय अनुदान प्रदान करती है।

राष्ट्रीय संस्थाएं और परियोजनाएं

संगीत नाटक अकादमी प्रदर्शन कलाओं में राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं और परियोजनाओं की स्थापना और प्रबंधन करता है, जैसे नृत्य अकादमियां और विशिष्ट कला रूपों के लिए केंद्र।

कार्यक्रम और आयोजन

यह प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा देने और समर्थन देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों, उत्सवों, सेमिनारों और कार्यशालाओं का आयोजन करता है।

पुरस्कार और फैलोशिप

अकादमी रत्न- यह अकादमी द्वारा प्रदर्शन कला में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान की जाने वाली सर्वोच्च फैलोशिप है।

अकादमी पुरस्कार- अकादमी पुरस्कार, प्रदर्शन कला के क्षेत्र में उत्कृष्टता और निरंतर उपलब्धि को मान्यता प्रदान करते हैं।

फैलोशिप और छात्रवृत्ति

अकादमी द्वारा कलाकारों और विद्वानों की वृद्धि और विकास को समर्थन देने के लिए फैलोशिप और छात्रवृत्ति भी प्रदान करता है। फैलोशिप के लिये दी जाने वाली राशि 1,00,000 से 3,00,000 तक दी जाती है और फैलोशिप की संख्या 30 से 40 तक बढ़ाकर की जा सकती है और प्रति वर्ष 2 सीटें अतिरिक्त भरी जाएंगी।

संक्षेप में, संगीत नाटक अकादमी भारत की प्रदर्शन कला की समृद्ध परंपरा को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संगीत नाटक अकादमी का विश्व स्तर पर योगदान

अकादमी द्वारा भारत के विख्यात कलाकारों को विदेशों में भेजा जाता है और विदेशी कलाकारों को भारत में बुलाया जाता है। इस प्रकार संगीत कला का सांस्कृतिक

आदान-प्रदान होता है। अकादमी द्वारा प्रशिक्षण व शोध कार्यों के लिये वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई जाती है।²⁵³

5.2.3 आई टी सी रिसर्च अकादमी

आई टीसी रिसर्च अकादमी का उद्देश्य आधुनिक युग में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के उत्थान और प्लावित करने के लिये उसे वर्षों पुरानी गुरु शिष्य परम्परा को स्थापित करना। गुरुकुल प्रणाली की स्थापना 1977 में एक सर्वजनिक स्वतन्त्र धर्माथ संगठन के रूप में हुई।

इसका मुख्य उद्देश्य गुरुकुल प्रणाली में संगीत कार्यक्रमों का आयोजन करना, छात्रों को संगीत शिक्षण के साथ उनको मंच प्रस्तुति के लिये भी तैयार और प्रोत्साहित करना। संगीत कार्यक्रमों की रिकार्ड करना, शोध कार्य करवाना इत्यादि कार्य इस संस्था द्वारा किये जाते हैं। वैश्विक स्तर पर भी इसके योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। यहाँ पर इतिहासिक तथ्यों की जैसे पुराने शिलालेख, धर्म ग्रंथ, संगीत ग्रंथ, चित्र आदि को सहेज कर रखा जाता है।

गुरुकुल प्रणाली

अकादमी पारंपरिक "गुरुकुल" प्रणाली का पालन करती है, जहां छात्र गहन प्रशिक्षण के लिए अपने गुरुओं के साथ परिसर में रहते हैं।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

आईटीसी एसआरए हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर केंद्रित है, जो एक समृद्ध परंपरा है और जिसका लंबा इतिहास है।

छात्रवृत्ति और सहायता

अकादमी उत्कृष्ट विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है, जिससे उन्हें संगीत की शिक्षा जारी रखने का अवसर मिलता है।

²⁵³ Sangeetnatak.gov.in

प्रमुख गुरु

यह अकादमी कई प्रसिद्ध संगीतकारों का घर रही है, जिसने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संगीत कार्यक्रम, सेमिनार और कार्यशालाएं

आईटीसी एसआरए भारतीय शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए संगीत समारोह, सेमिनार और कार्यशालाओं सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

"अपना राग जानें" और "समय राग"

अकादमी की वेबसाइट "अपना राग जानें" और "समय राग" जैसे ऑनलाइन शिक्षण उपकरण प्रदान करती है, जो छात्रों और संगीत प्रेमियों के लिए संसाधन उपलब्ध कराती है।

क्षेत्र में योगदान

आईटीसी एसआरए ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अगली पीढ़ी के गुरुओं को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वैश्विक स्तर पर योगदान:- अमेरिका द्वारा एक फोर्ड फाउंडेशन प्रोजेक्ट के तहत ITC को अनुदान मिला अलग-अलग घरानों की बंदिशों का संग्रह तैयार कर उनको रिकार्ड किया। 5000 रचनाओं की 1000 घंटों में रिकार्ड किया गया।

- ITC का मुख्य उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाले संगीत को अलग-अलग क्षेत्रों और वर्गों तक पहुँचना।
- परम्परागता के साथ-साथ नवीन ढांचे को तैयार करना।
- छात्रों को संगीत पारखी बनाना। इस प्रकार ITC हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में अपने विशिष्ट योगदान दे रही है।²⁵⁴

²⁵⁴ <https://itcsra.org>

5.2.4 ICCR भारतीय संस्कृति सम्बन्ध परिषद

भारतीय संस्कृति सम्बन्ध परिषद का उद्घोष 1950 को किया गया। यह भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संगठन है जो भारतीय संस्कृति को अन्य देशों और लोगों के साथ आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। इसकी स्थापना ही सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिये की गई थी।

उद्देश्य- सांस्कृतिक आदान-प्रदान करना, विभिन्न कलात्मक कार्यक्रमों का निर्माण करना और उसमें भाग लेना।

- कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, उत्सवों और मण्डलियों को माध्यम बनाकर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।
- कलाकारों को फैलोशिप, छात्रवृत्तियां, पुरस्कार, व्याख्यान और शोध एवं अनुसंधान में मदद करना और जानकारी प्रदान करना।
- विश्वभर के देशों में ICCRने शाखाएँ खोली गई हैं। इन सभी केन्द्रों पर कला को प्रोत्साहित किया जाता है। वशिष्ट और प्रख्यात कलाकारों को उन केन्द्रों में भेजा जाता है और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और नृत्य की शिक्षा व प्रशिक्षण दिया जात है। निम्नलिखित देशों में ICCR के केन्द्र स्थापित किये गये हैं।

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
मोनश युनिवर्सिटी	1970	ICCR	सिडनी	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर, सुवा	1972	ICCR	फिजी	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1972	ICCR	जॉर्ज टाउन, गुयाना	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	1972	ICCR	जॉर्ज टाउन, गुयाना	सरकारी
नोर्वेयन अकादमी ऑफ म्यूजिक	1973	Olav selvaag	नोर्वे	सरकारी
महात्मा गाँधी इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स	1976	Indian & Mauritius Government	मॉरिशस	सरकारी
इंडो इतालियन कल्चरल रिलेशन	1976	ICCR	रोम	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1976	ICCR	पेरामरिबो, सूरीनाम	सरकारी
इंदिरा गाँधी इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडियन म्यूजिक	1987	ICCR	मॉरिशस	सरकारी
रसिया- इंडिया कल्चरल कॉर्पोरेशन	1987	एम्बेस्सी ऑफ इंडिया	मॉस्को	सरकारी
जवाहर लाल नेहरू कल्चरल सेंटर	1989	ICCR	मॉस्को	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
जवाहर लाल नेहरू इंडियन कल्चरल सेंटर	1989	ICCR	जकार्ता, इंडोनेशिया	सरकारी
मौलाना आज़ाद सेंटर फोर इंडियन कल्चर	1992	ICCR	कैरो, यूनान	सरकारी
द नेहरू सेंटर इंडिया एंड बेयोंद	1992	ICCR	इंग्लैंड	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	1994	ICCR	अस्थना, कज़ाकस्तान	सरकारी
लाल बहादुर शास्त्री सेंटर फोर इंडियन कल्चर	1995	ICCR	ताशकंद, उज्बेकिस्तान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1996	ICCR	डरबन, साउथ अफ्रीका	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	1996	ICCR	जोहानसबर्ग, साउथ अफ्रीका	सरकारी
महात्मा गाँधी इंडियन कल्चरल सेंटर	1997	ICCR	पोर्ट ऑफ स्पेन त्रिनिदाद एंड तबगो	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1998	ICCR	कोलंबो, श्री लंका	सरकारी
द टैगोर सेंटर	2002	ICCR	बर्लिन, जर्मनी	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2003	ICCR	बीजिंग, चीन	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
इंडियन कल्चरल सेंटर	2005	ICCR	बली, इंडोनेशिया	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2007	ICCR	काबुल, अफगानिस्तान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2008	ICCR	काठमांडू, नेपाल	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल एम्बस्से ऑफ म्यूजिक	2009	ICCR	बैकाक	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	दर-एस-सलाम, तंज़ानिया	सरकारी
गुरुदेव टैगोर इंडियन कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	मेक्सिको सिटी, मेक्सिको	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	ढाका, बांग्लादेश	सरकारी
नेहरू वंग्चुक कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	थिंपु, भूटान	सरकारी
अमृता शेरगिल कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	बुडापेस्ट, जर्मनी	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	प्राग, चैक रिपुब्लिक	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	मलें, मालदीव	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	साउ पाउलो, ब्राज़ील	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	सिओल, साउथ कोरिया	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	सिओल, साउथ कोरिया	सरकारी
द गाँधी सेंटर	2011	ICCR	द हेग, नीदरलैंड	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2013	ICCR	तेहरान, ईरान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2014	ICCR	रगोन, म्यांमार	सरकारी
विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2014	ICCR	टोक्यो, जापान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2015	ICCR	सिडनी	सरकारी
नेता जी सुभाष चन्दर बोस इंडियन कल्चरल सेंटर	2015	ICCR	कुलललुम्पुर, मलेशिया	सरकारी
सोसाइटी ऑफ इंडियन म्यूजिक एंड आर्ट्स	2016	ICCR	वियन्ना	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2016	ICCR	हनोई, वियतनाम	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2016	ICCR	हनोई, वियतनाम	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2017	ICCR	तल अविव, इज़राइल	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2018	ICCR	दुशंदे, ताजिकिस्तान	सरकारी ²⁵⁵

²⁵⁵ <https://iccr.gov.in>

- ICCR द्वारा विख्यात और उच्चकोटि के कलाकारों को भिन्न देशों में भी भेजा जाता है जहाँ पर वह संगीत में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों का प्रशिक्षित करते हैं। सितार वाद्य बजाने वाले विभिन्न कलाकारों की सूची दी गई है जो भिन्न-भिन्न समय पर ICCR द्वारा खोले गये विभिन्न देशों में केन्द्रों में जाकर छात्राओं को शिक्षित कर चुके हैं या कर रहे हैं।
- ICCR द्वारा अलग-लग तरह की छात्रवृत्तियों का भी संचालन किया जाता है जो संगीत के छात्रा के लिये लाभप्रद होती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीत कार्यक्रम, संगोष्ठीयां भी करवाई जाती है।
- ICCR द्वारा कला के क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिये कलाकारों की रिकार्डिंग्स भी करवाई जाती है और उनको विदेशों में स्थित केन्द्रों में भेजा जाता है।

क्र.	कलाकार का नाम	प्रदेश	वर्ष	ICCR प्रयोजन
1.	उस्ताद शाहिद परवेज़	अमेरिका	1999	1997, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर
2.	अनुपमा भागवत	कर्नाटक	2003	इंग्लैंड 2017
3.	पूर्बयन चैटर्जी	महाराष्ट्र	2008	2018, रशिया
4.	असीम चौधरी	कलकत्ता	2009	2018, भुटान
5.	गौरव मजूमदार	दिल्ली	1996	2002, अमेरिका
6.	सुरीना कासलीवाला	दिल्ली	1994	
7.	पर्था बोस	कल्कत्ता	1996	1998, मेडगास्कर
8.	रास बिहारी दत्ता	उत्तर प्रदेश	1994	2016, किर्गिस्तान
9.	संजय बंदुपाध्या	वेस्ट बंगाल	1997	1998, आस्ट्रिया, फ्रांस
10.	शुभेंद्र राव	दिल्ली	1994	2016 आस्ट्रेलिया
11.	हर्विंदर शर्मा	पंचूकला	2017	

क्र.	कलाकार का नाम	प्रदेश	वर्ष	ICCR प्रयोजन
12.	शिराज़ अनवर खां	महा	2017	
13.	साहित्य कुमार नाहर	उत्तर प्रदेश	2017	
14.	अग्नी कुमार वर्मा	उत्तराखंड	2005	2017, मोरकोक ,2018 मिस्र
15.	अंजन साहा	वेस्ट बंगाल	2005	2017 स्लोवेनिया ,क्रोतिया
16.	जयंत कुमार	कर्नाटक	2005	
17.	लवली शर्मा	उत्तर प्रदेश	2004	2008
18.	परिमल मनमोहन	दिल्ली	2010	
19.	रविंदर नारायण गोस्वामी	उत्तर प्रदेश	2010	
20.	रतिफ खां	कर्नाटक	2008	2017, जापान
21.	संदीप बनेर्जी	वेस्ट बांगाल	2010	
22.	शाकिर शहिद खां	महाराष्ट्र	2005	2022, मोरोक्को
23.	सुदीप्ता शर्मा	दिल्ली	1992	
24.	सुगातो नाग	वेस्ट बंगाल	1996	2016, ताजिकिस्तान
25.	सुधीर पंडित	छत्तिसगढ़	2008	
26.	स्वेतलाना जनार्दन गतिन	दिल्ली	2011	
27.	दीप शंकर भट्टचार्यजी	वेस्ट बंगाल	2012	2016, फ्रांस
28.	शुभेंद्र राव और शशिकय राव	दिल्ली	2012	2019 न्यूयार्क , 2020, स्पेन
29.	ध्रुव बेदी	दिल्ली	2017	
30.	भगीरथ कुमार , पंकज भाई भट्ट	गुजरात	2017	
31.	श्रावनी विश्वास	उत्तर प्रदेश	2017	
32.	अजीम अहमद अल्वी	दिल्ली	2017	
33.	असद गुल्लेज़ खां	मुम्बई	2017	

क्र.	कलाकार का नाम	प्रदेश	वर्ष	ICCR प्रयोजन
34.	सोहम् श्रेयस मुनिम	मुम्बई	2017	
35.	अद्वित विवेक गाडगिल	महाराष्ट्र	2017	
36.	रोहन दास गुप्ता	वेस्ट बंगाल	2017	
37.	कल्याण मजूमदार	वेस्ट बंगाल	2017	
38.	आयन सेनगुप्ता	वेस्ट बंगाल	2017	
39.	स्मिता नागदेव	मध्यप्रदेश	2017	
40.	सुप्रतिक सेनगुप्ता	वेस्ट बंगाल	2017	
41.	अनुपमा भाट्टचार्य	बिहार	2019	
42.	मालविका चोपड़ा	कर्नाटक	2019	
43.	गोलोक बॉस मलिक	वेस्ट बंगाल	2019	

ICCR के पैनल में शामिल कलाकारों की सूची 2024²⁵⁶

5.2.5 युवाओं में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और संस्कृति को बढ़ावा देने वाली सोसाइटी- स्पिक मैके

स्पिक मैके की स्थापना 1977 में दिल्ली में की गई थी। यह एक गैर सरकारी संगठन है जिसको राष्ट्रव्यापी स्वैच्छिक आंदोलन भी कहा जाता है। दिल्ली के IIT के प्रो. डॉ. किरण सेठ ने इसकी स्थापना की थी। इस संस्था का उद्देश्य भारत की प्राचीन विरासत के साथ युवा वर्ग को जोड़ना और उनमें भारतीय कलाओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। यह एक संगठन या संस्था ना रह कर आंदोलन बन चुका है। 2009 में डॉ. किरण सेठ को भारत सरकार के द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

भारत में बढ़ते पाश्चात्य संस्कृति को बिना किसी विरोध के भारतीय समाज में पनप से रोकना और युवा वर्ग को अपने गौरवमय स्वर्णिम इतिहास से जोड़ना और उनको

²⁵⁶ <https://iccr.gov.in>

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के विचार से उसका निर्माण किया गया।

डॉ. किरण सेठ के अनुसार स्पिक मैके द्वारा स्कूलों, कालेजों और विश्व विद्यालय में गायन, वादन व नृत्य के कार्यक्रम और कार्यशालाएँ करवाई जाती हैं। विख्यात कलाकारों के व्याख्यान भी रखे जाते हैं। भारत वर्ष के प्रख्यात और उच्चकोटि के सभी कलाकार स्पिक मैके के साथ जुड़े हुए हैं। इस संस्था के कार्य को चलाने के लिये अनुदान राशि, सरकारी और गैर सरकारी स्त्रोतों से प्राप्त होती है। बहुत ही कम शुल्क पर कलाकारों को मंच प्रस्तुति के लिये रखा जाता है उनके आने जाने और यात्रा का शुल्क भी संस्था ही देती है।

स्पिक मैके कें देश और विदेश में कार्य – स्पिक मैके कें देश में कई अलग – अलग जगह पर कार्यालय स्थापित किये गये हैं। यह आंतरिक ज्ञान और पूर्णता की ओर जोर देता है, यह विश्वास करते हुए कि बाहरी विकास मापनीय है जबकि आंतरिक विकास अंतर्हीन है।

मॉड्यूल (इकाई): स्पिक मैके पारंपरिक संगीत समारोहों से आगे बढ़कर कलाकार-छात्र संपर्क के लिए "व्याख्यान-प्रदर्शन" को बढ़ावा देता है और युवा छात्रों को प्रेरित करने के लिए दूरदराज के क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित करता है। यह , हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत , लोक संगीत, योगा , थिएटर , वार्तालाप , विरासत भ्रमण , विश्व संगीत विरासत को संजोने और आगे बढ़ाने का काम करता है।

प्रभाव: प्रतिवर्ष, SPIC MACAY 1300 से अधिक संस्थानों में 4000 से अधिक कार्यक्रम आयोजित करता है, तथा 800 से अधिक शहरों/कस्बों/गांवों में 3 मिलियन से अधिक छात्रों तक पहुंचता है। स्पिक मैके युवाओं में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं संस्कृति के संवर्धन हेतु संस्था के तौर पर एक स्वैच्छिक युवा आंदोलन है जो शैक्षणिक संस्थानों में युवाओं के बीच भारतीय सांस्कृतिक विरासत, विशेष रूप से शास्त्रीय संगीत और कला को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

स्पिक मैके के प्रमुख पहलू:

उद्देश्य: युवाओं के बीच शास्त्रीय कलाओं, लोक परंपराओं, योग, ध्यान, शिल्पकला और भारतीय संस्कृति के अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, भारत की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूकता का संरक्षण और संवर्धन करना।

दृष्टिकोण: स्पिक मैके मुख्य रूप से स्कूलों और कॉलेजों में संगीत कार्यक्रम, व्याख्यान-प्रदर्शन, कार्यशालाएँ, सांस्कृतिक रिट्रीट (विरासत शिविर) और प्रख्यात कलाकारों और विचारकों द्वारा फिल्म प्रदर्शन जैसे विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता है।

स्पिक मैके के चार स्तंभ: यह आंदोलन कलाकारों, स्वयंसेवकों, संस्थानों और समर्थकों के योगदान पर आधारित है, जो सभी युवाओं को प्रेरित करने और भारतीय विरासत के साथ शिक्षा को समृद्ध करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

दर्शन: यह मूल्य-आधारित शिक्षा, स्वैच्छिक कार्य (निष्काम कर्म) के महत्व और समग्र व्यक्तिगत विकास पर भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रभाव के परिवर्तनकारी प्रभाव पर जोर देता है।

संस्था के तौर पहुँच: 1977 में आईआईटी दिल्ली में डॉ. किरण सेठ द्वारा अपनी स्थापना के बाद से, स्पिक मैके ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हजारों संस्थानों में अपनी शाखाओं के साथ वैश्विक स्तर पर विस्तार किया है, प्रतिवर्ष कई कार्यक्रम आयोजित करता है और लाखों छात्रों तक पहुँचता है।²⁵⁷

5.2.6 स्पिक मैके यूरोप चैप्टर

यह संस्था 1977 में अस्तित्व में आई। यह एक गैर सरकारी संगठन है। पूरे यूरोप में इसके 150 के करीब सदस्य हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और नृत्य के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। नीदरलैंड, जर्मनी, स्वीडन, फ्रांस, स्वीजरलैंड, बेल्जियम, इंग्लैंड और ईटली में कार्यक्रम करवाये जाते हैं। अमेरिका और कनाडा में भी स्पिक मैके का सेंटर खुल रहा है। युवाओं को कला की जानकारी देना इसका मुख्य उद्देश्य है।²⁵⁸ स्पिक मैके

²⁵⁷साक्षात्कार डॉ. किरण सेठ, अगस्त, 2023

²⁵⁸साक्षात्कार KG West Men 2022

के द्वारा संगीत बैठक करवाई जाती है। पूरे विश्व में 20 केंद्र स्थापित किये गये हैं। गायन, वादन और नृत्य के कार्यक्रम करवाये जाते हैं। इसका विस्तार यूरोप में भी हुआ है। यह अधिकारिक रूप में नीदरलैंड में पंजीकृत है। यूरोप में 180 से अधिक सदस्यों के साथ इसका प्रचार प्रबन्ध हो रहा है। यह नीदरलैंड, जर्मनी, फ्रांस, वैल्जियम, ईटली, स्विजरलैंड, स्वीडन आदि देशों में संगीत कार्यक्रम, व्याख्यान प्रदर्शित करती है।

स्पिक मैके हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार की सबसे बड़ी कड़ी है जिसने देश और विदेशों को एक साथ पिरोया है। भारत सरकार के (Ministry of HRD, Ministry of Culture, Ministry of Tourism, Ministry of Youth Affairs & Sports) मंत्रालय द्वारा समर्थन प्राप्त है और यह संस्था 4 मजबूत खम्बों पर खड़ी है। (1) कलाकार (2) शिक्षण संस्थाएँ (3) सहयोगी (स्वयं सेवी) (4) समर्थकों इस प्रकार स्पिक मैके हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहित और प्लावित करने में अतुलनीय योगदान दे रही है।

कलाकारों के नाम- उस्ताद शाहिद परवेज, पंडित शुभेंद्र राव, पंडित कुशल दास , पंडित पूर्बयन चट्टजी, उस्ताद शफिक़ खां, उस्ताद हिदायत खां, उस्ताद शाकिर खां , श्रीमती शाहाना बेनर्जी, श्री गौरव मजूमदार, श्रीमती अनुपमा भागवत, श्री ध्रुव बेदी जैसे कलाकार स्पिक मैके के साथ जुड़े हुये हैं।

5.2.7 इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत के अनुसंधान, संरक्षण और संवर्धन के लिए समर्पित एक प्रमुख संस्थान है। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत 1987 में स्थापित, यह कला के लिए एक राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करता है।

प्रमुख प्रभाग

IGNCA कई कार्यात्मक इकाइयों के माध्यम से संचालित होता है:

कलानिधि - पांडुलिपियों, दुर्लभ पुस्तकों और अभिलेखीय सामग्रियों का भंडार।

कलाकोश - भारतीय भाषाओं में मूलभूत ग्रंथों को प्रकाशित करने के लिए समर्पित।

जनपद संपदा - जीवनशैली अध्ययन और लोक परंपराओं के दस्तावेज़ीकरण पर ध्यान केंद्रित करती है।

कलादर्शन - शोध को दृश्य प्रदर्शनियों में बदल देता है।

सांस्कृतिक सूचना विज्ञान प्रयोगशाला - सांस्कृतिक संरक्षण और प्रसार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करती है।

सांस्कृतिक पहल

IGNCA नियमित रूप से पुस्तक विमोचन, प्रदर्शनियों और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करता है। उदाहरण के लिए, फरवरी 2025 में, इसने "क्राउनिंग ज्वेल्स: द इलस्ट्रेटेड रेयर बुक्स" नामक एक प्रदर्शनी और "मानसून: सांस्कृतिक और व्यापार प्रभाव का क्षेत्र" पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की।

ऑनलाइन संसाधन

IGNCA ऑनलाइन प्रकाशनों, शोध पत्रों और आभासी प्रदर्शनियों सहित डिजिटल संसाधनों का खजाना प्रदान करता है। ये सामग्रियाँ उनकी आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से सुलभ हैं, जो दुनिया भर के शोधकर्ताओं और उत्साही लोगों के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान करती हैं।²⁵⁹

5.2.8 बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

काशी (बनारस) में स्थित हिन्दू विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की स्थापना में हुई थी। बनारस जहाँ धार्मिक आस्था का प्रतीक माना जाता है वहीं पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की राजधानी कहा जाये तो कुछ गलत नहीं होगा। यहाँ पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली तीनों विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। (गायन, वादन,

²⁵⁹ <http://ignca.gov.in>

नृत्य) वादन में यहाँ पर तबला, सितार, बाँसुरी और वायलिन की शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर विदेशी लोग भी शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। मुख्यतः सितार वादन की विश्व के कई देशों से यहाँ पर लोग शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं जैसे ईटली, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, कनाडा आदि।

हिन्दू विश्वविद्यालय में संगीत के वादन विभाग में कार्यरत प्रो. डॉ. सुप्रिया शाह के साथ हुये वार्तालाप में बताया कि यहाँ पर विदेशों से सितार वादन सीखने के लिये छात्र आते रहते हैं। उन्होंने बताया कि यहाँ पर (BPA), (MPA) की डिग्री के साथ ग्रेजुएशन में संगीत विषय के रूप में और M.A., M.Phil, Ph.D की डिग्रीयाँ करवाई जाती हैं। कुछ विदेशी कलाकारों के नाम हैं जो यहाँ से सितार वाद्य का प्रशिक्षण ग्रहण करके गये हैं। वह लोग बनारस में गंगा घाट पर सुबह-सुबह बनारस को भी बहुत याद करते हैं।²⁶⁰

5.2.9 सरब अकाल संगीत सोसाइटी कैलगरी

सरब अकाल का शाब्दिक अर्थ है "हर जगह, कालातीत, अमर और गैर-सामयिक"। सरब अकाल संगीत सोसाइटी ऑफ कैलगरी की स्थापना 2014 में हुई थी। यह सोसाइटी भारत के शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के साथ-साथ पूर्वी और पश्चिमी संगीतकारों और नर्तकियों को प्रोत्साहित करने के लिए अग्रसर है। सरब अकाल ने भारत की उत्तरी (हिंदुस्तानी) परंपराओं से शास्त्रीय संगीत के कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। कलाकारों में दिग्गज और कई उभरते संगीत के सितारे शामिल थे। सरब अकाल को अल्बर्टा, कनाडा में किसी भी तरह के "भारतीय शास्त्रीय संगीत महोत्सव कैलगरी" की शुरुआत करने का गौरव प्राप्त है। यही भारतीय शास्त्रीय संगीत महोत्सव (ICMF) अब विश्व प्रसिद्ध हो गया है, ICMF कैलगरी और सरब अकाल को संगीत के विश्व मानचित्र पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह वार्षिक कार्यक्रम 2016 में ही शुरू हुआ है। ICMF भारतीय शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने का एक मंच है और इसी कारण से योग्य स्थानीय कलाकारों को संगीत के उस्तादों के मंच को साझा करने और अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया जाता है। चमकते सितारों के साथ-साथ

²⁶⁰ साक्षात्कार डॉ. सुप्रिया शाह मई 2023

उभरते कलाकारों द्वारा ये प्रस्तुतियाँ कई युवा छात्रों और संगीत प्रेमियों को शास्त्रीय संगीत सीखने, अभ्यास करने और उसमें उत्कृष्टता प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। आईसीएमएफ एक बहु-सांस्कृतिक और बहु-जातीय कार्यक्रम है जिसमें भारत, पाकिस्तान, अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा के कलाकार पहले ही प्रदर्शन कर चुके हैं और इसमें हमारे अपने स्वदेशी कलाकार भी शामिल हैं। कैलगरी में सितंबर के मध्य में हर साल आयोजित होने वाला भारतीय शास्त्रीय संगीत महोत्सव 2-दिवसीय उत्सव के रूप में शुरू हुआ था और 2019 में 3-दिवसीय कार्यक्रम बन गया। अब आईसीएमएफ 2023 एक 5-दिवसीय कार्यक्रम है और अल्बर्टा के दो शहरों: एडमोंटन और कैलगरी में आयोजित किया जाता है। कोरोना काल के दौरान सर्व अकाल संगीत मंच ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से घर घर तक पहुंचा दिया

इस प्रकार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विश्व में स्थापित करने और भारतीय सभ्यता सांस्कृति का विश्व में दर्शन स्थापित करने में हमारी इन संस्थाओं और संगठनों का अविस्मणीय और अतुल्य योगदान रहा है। संस्थाओं के साथ हमारे प्रवासी भारतीयों का भी योगदान रहा है जो अपनी इस अनमोल विरासत की संजोय रखने में मदद कर रहे हैं जैसे कोरोना काल में जब सभी तरफ से कोई कार्यक्रम नहीं करवाया जा रहा था तब कनाडा में सर्व अकाल संगीत सोसाईटी के नाम से अकादमी खोली गई जो आज बहुत ही अच्छा काम कर रही है।²⁶¹

5.3 विदेशों में सितार वादन की शिक्षा ले रहे शिष्य व उनका अनुभव

सितार वाद्य अपनी गुंजती तारों और आकर्षण धुनों के साथ दुनिया भर में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की और श्रोताओं को खींचता आया है। सितार की तारों की मधुर झंकार और सुमधुर ध्वनियाँ हिन्दुस्तान की समृद्ध और घनी संगीत विरासत का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक है। पीढ़ी दर पीढ़ी अनेकों कलाकारों ने सितार वादन में कई बदलाव किया और सितार वादन की परंपरा पर छाप छोड़ते गये। जिसके फलस्वरूप वाद्य परंपरा भी घनी विकसित हुई और प्रफुल्लित हुई। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कई प्रसिद्ध

²⁶¹ <https://sarbakal.com>

कलाकारों में कुछ कलाकारों ने राजनैतिक सीमायें लांघ कर सुदूर क्षेत्रों में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का परचम लहराया। उन्होंने न केवल सितार वादन की परंपरा और कला का विकास ही नहीं किया बल्कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समृद्ध संगीत शैलियों को भी वैश्विक स्तर पर श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया।²⁶²

उ. हरविन्दर सिंह जी का कहना है कि “1960 के दशक में जब पं. रवि शंकर जो सितार वाद्य को विदेश में लेकर गये तो सितार का मधुर आवाज से विदेशी बहुत प्रसन्न हुए और सर्वप्रथम यूएसए के वायलिन वादन याहुदी मैनहिल ने पं. जी से सितार वादन की शिक्षा लेने आरंभ की।”²⁶³ यहूदी एक वायलिन वादक थे। फिर अमेरिका के सुप्रसिद्ध संगीत ग्रुप बीटल्स के कलाकार पं. जी ने साथ जुड़े और उनके शिष्य बन गये ऐसे ही विदेशों में बहुत से लोग पं. जी के साथ जुड़ते गये। पं. रवि शंकर जी के बाद, उ. विलायत खां, पं. निखिल बैनर्जी, पं. मणि लाल चाग, उ. रईस खां आदि लोग विदेश गये और विदेशी छात्रों को अपने साथ जोड़ा।

जैसे-जैसे विदेशों में कलाकारों ने जाना शुरू किया। लोग वैसे ही इसके साथ जुड़ते गये क्योंकि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रागदारी का वह लोग आनंद लेते हैं यद्यपि उनको कुछ नहीं पाता। फिर भी वहाँ लोग समझते हैं, विदेशों में बसे कई भारतीय लोग भी सितार वाद्य की शिक्षा लेते हैं। उ. हरविन्दर सिंह जी का कहना है कि “कलाकारों का विदेशी धरा पर पलायन करने के कई सारे कारण हैं जिनमें से प्रमुख कारण आर्थिक स्थिति रही होगी क्योंकि विदेशों में कार्यक्रम प्रस्तुति के अच्छे खासे रूप में धन मिलता है। उसके बाद कलाकारों को ख्याति भी प्राप्त होती है उनका नाम भी बढ़ता है।”²⁶⁴ भारतीय सभ्यता सांस्कृति का तो प्रचार-प्रसार होता ही है। साथ-साथ संगीत की लोकप्रियता भी दिन व दिन बढ़ती जाती है क्योंकि भारतीय सभ्यता में हर दिन त्यौहार, कोई भी रीति-रिवाज, धार्मिक महोत्सव, संगीत के बिना अधुरे हैं। पश्चिमी लोगों को भारतीयता सभ्यता संस्कृति बहुत आकर्षित करती है इसलिये वह हिन्दुस्तानी संगीत की ओर आकर्षित होते हैं।

²⁶² साक्षात्कार शुभ्रानील सरकार नवम्बर, 2022

²⁶³ साक्षात्कार उ. हरविन्दर सिंह जी, अक्टूबर, 2022

²⁶⁴ साक्षात्कार उ. हरविन्दर सिंह जी, अक्टूबर, 2022

5.3.1 पॉल लिविंगस्टोन (अमेरिका)

जन्म और संगीत शिक्षा - आप अमेरिकी सितार वादक और संगीतकार हैं। आप का जन्म 1970 में लेबनॉन में हुआ था। आप पंडित रविशंकर के कुछ अमेरिकी शिष्यों में से एक हैं, जिन्होंने सेनिया मैहर घराने के राजीव तारानाथ और अमिय दासगुप्ता से भी सितार वादन का प्रशिक्षण लिया है। आप ने अपने साक्षात्कार में बताया कि आप बीटल्स के प्रशंसक थे और जब आप ने सितार वाद्य को सुना तो उसे सीखने का फैसला कर लिया। आप ने 15 साल की उम्र में भारत में रहते हुए सितार और तबला सीखना शुरू किया।

सांगीतिक सफ़र - आप ने दुनिया में होने वाले हर संगीत समारोह में भाग लिया है। आप ने पंडित स्वप्न चौधरी, अभिजीत बनर्जी, पंडित शशांक शेखर बख्शी और सोम नाथ उपाध्याय सहित भारत और नेपाल के कई प्रमुख तबला वादकों के साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत राग प्रस्तुत किया है। विदेशों में होने वाले संगीत समारोहों में प्रस्तुति दी, जैसे कि

- वर्ल्ड फेस्टिवल ऑफ़ सेक्रेड म्यूज़िक, वूड्स्टॉक फेस्टिवल, रागमाला, अली अकबर स्कूल ऑफ़ म्यूज़िक और मेक्सिको में कम्बेताजिन आदि।
- आप कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ़ द आर्ट्स में 5 साल तक संगीत शिक्षक रहे, लॉस एंजिल्स में संगीत स्कूल ऑफ़ वर्ल्ड म्यूज़िक की स्थापना की और अमेरिका, मैक्सिको स्पेन और भारत में रचनात्मक विश्व संगीत वर्कशॉप का आयोजन किया।
- आप ने सितार वादन की शिक्षा के लिए एक पुस्तक 'सितार तालीम' भी प्रकाशित की। पॉल ने डिज़्नी कॉरपोरेशन, लॉस एंजिल्स में सांस्कृतिक म विभाग और मेयर एंटोनियो विलाराइगोसा के कार्यालय में 3 साल तक युवाओं को हिन्दुस्तानी और रचनात्मक संगीत सिखाया है।

पुरस्कार - 2005 में आप को ओज़ोमैटली के 'स्ट्रीट साइन्स' में सितार वादन के लिए ग्रैमी अवार्ड से नवाजा गया। आप ने अमरीकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडी में

फेलोशिप के दौरान ध्रुपद साधना प्रोजेक्ट किया जो कि डागर वाणी पर आधारित था। जिस में गुरु शिष्य परंपरा के अनुसार प्रशिक्षण दिया गया।²⁶⁵

5.3.2 स्टीफन स्लावेक

संगीत शिक्षा - आप अमेरिका में पं. रवि शंकर जी के शार्गिद है। आप प्रोफेसर के तौर पर, 1983 में संकाय में शामिल हुए। आजकल आप प्रिंसिपल के तौर पर कार्यरत है। आपने पं. रवि शंकर जी के साथ बहुत समय बिताया है। आप दक्षिण एशिया की संगीत परंपराओं में माहिर हैं और दक्षिण पूर्व एशियाई संगीत और अमेरिकी लोकप्रिय संगीत में उनकी माध्यमिक रुचि है।

सांगीतिक सफ़र - आप सितार वादन में माहिर है विदेश में कई विश्वविद्यालय में सितार वादन कर चुके हैं। आप ने पं. रवि शंकर जी के साथ भी मंच प्रस्तुति दी है। आपने अपनी सितार वादन कि प्रस्तुतियाँ सोशल मीडिया पर उपलब्ध है। आपके लेखन व प्रकाशन भारत में प्रदर्शन अभ्यास के व्यापक क्षेत्र अनुभव और व्यक्तिगत अध्ययन पर आधारित हैं। आपने पुस्तकों की रचना भी की है, सितार तकनीक इन निबद्ध फॉर्म्स (दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास 1987) और, रॉबर्ट हार्डग्रेव, जूनियर के साथ, बाल्टाजार्ड सोल्विन्स द्वारा लिखित म्यूजिकल आपने पुस्तकों की रचना भी की है, सितार तकनीक इन निबद्ध फॉर्म्स (दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास 1987) और, रॉबर्ट हार्डग्रेव, जूनियर के साथ, बाल्टाजार्ड सोल्विन्स द्वारा लिखित म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स ऑफ नॉर्थ इंडिया: अठ्ठारहवीं शताब्दी में (दिल्ली: मनोहर पब्लिशर्स 1997) के सह-लेखक हैं। आप ने एथनोम्यूजिकोलॉजी, एशियन म्यूजिक, द ईयरबुक फॉर ट्रेडिशनल म्यूजिक, नोट्स और जर्नल ऑफ वेस्ट स्टडीज जैसी कई पत्रिकाओं में लेख और समीक्षाएं दी हैं और द गारलैंड इनसाइक्लोपीडिया फॉर वर्ल्ड म्यूजिक: साउथ एशिया और द न्यू ग्रीव डिक्शनरी ऑफ म्यूजिक में भी लेख लिखते रहे हैं। संगीतकार प्रोफेसर स्लावेक एथनोम्यूजिकोलॉजी सोसायटी के बोर्ड के सदस्य रहे हैं,

²⁶⁵ साक्षात्कार

वर्तमान में एशियन म्यूज़िक सोसायटी के बोर्ड में हैं, और एशियन म्यूज़िक, जर्नल ऑफ़ द सोसाइटी फ़ॉर एशियन म्यूज़िक के संपादक के रूप में कार्य करते हैं। पंडित रविशंकर के वरिष्ठ शिष्य, भारतीय सितार वादक के रूप में उनकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति है। एशियाई संगीत पर स्नातक पाठ्यक्रम और नृवंशविज्ञान में स्नातक सेमिनार पढ़ाने के अलावा, प्रोफेसर स्लावेक एक उत्कृष्ट सितार वादक है।

आपने बताया कि आपको शास्त्रीय संगीत से बहुत प्यार है। रागों से बहुत लगाव है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत इतना महान है कि हमारे यहाँ पर लोग अभी उसे जान नहीं पाये। यह बहुत अदभूत और अद्वितीय है। आजकल आप कर्नाटक संगीत की जानकारी ले रहे हैं ताकि वह इन दोनों के फ्यूजन पर काम कर सके। ²⁶⁶

5.3.3 जोश फीनबर्ग

जन्म और संगीत शिक्षा –आप जन्म 28 अप्रैल को हुया। आप एक विदेशी अमेरिकी यहूदी युवा सितार वादक है। आपको बचपन से ही से संगीत का शौक था। आपने संगीत की शुरुआत पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत के साथ की थी। आप ने न्यू इंग्लैंड कंज़र्वेटरी से संगीत में स्नातक और गोडार्ड कॉलेज से ललित कला में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है फिर आप ने मैहर घराने उस्ताद अली अकबर खां से सितार वादन सिखा। आप को पं. निखिल बेनर्जी का सितार वादन भी बहुत पसंद था। आपने उस्ताद आशीष खां, श्री आलम खां जैसे कलाकारों से भी तालीम हासिल की। आप तबले के भी उत्तम जानकार हैं।

सांगीतिक सफ़र - आप 20 वर्षों से सितार वादन कर रहे हैं। आप दुनिया भर में सितार वादन कर चुके हैं। भारत, अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया समेत लगभग संपूर्ण विश्व भर में सितार वाद्य की प्रस्तुति कर चुके हैं। आपने 2013 में सितार वादन इस पर एक पुस्तक भी प्रकाशित करवाई। आप सितार वादन की शिक्षा भी देते हैं। ²⁶⁷

➤ आप ने भारत के सबसे बड़े टीवी नेटवर्क में से एक दूरदर्शन के लिए राष्ट्रीय प्रसारण के लिए आलम खां के साथ भी काम किया। मुंबई में नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग

²⁶⁶ बातचीत कई माध्यम से और हट्स:// लिबेरलर्स.उतेक्सस.एदु

²⁶⁷ <https://www.joshsitar.com>

आर्ट्स, शिकागो वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल, लोटस वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल, मिलापफेस्ट यूके, यूके में डरहम यूनिवर्सिटी, पड्यू यूनिवर्सिटी, द सप्तक म्यूजिक फेस्टिवल, मुंबई में पृथ्वी थिएटर, कोलकाता में चौधरी हाउस म्यूजिक कॉन्फ्रेंस, धारवाड़ में रहीमत खां म्यूजिक फेस्टिवल, सैन फ्रांसिस्को में बसंत बहार, लॉस एंजल्स में द म्यूजिक सर्कल, शिकागो में रागमाला, पोर्टलैंड में कलाकेंद्र, न्यूयॉर्क सिटी में छंदयान, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, कोलकाता में आईटीसीएसआरए, दिल्ली में स्पिकमैके, मुंबई में संगीत महाभारती, रागमाला टोरंटो, और दिल्ली में रविशंकर इंस्टीट्यूट फॉर म्यूजिक एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स सहित कई संगीत सम्मेलनों और समारोहों में सितार वादन किया है।

- आप ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय, न्यू इंग्लैंड कंज़र्वेटरी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ्लोरिडा गेन्सविले, यूनिवर्सिटी ऑफ़ हवाई होनोलुलु, यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो और कई अन्य में विजिटिंग लेक्चरर के रूप में काम किया है। वर्तमान में लुईस और क्लार्क कॉलेज और पोर्टलैंड में रीड कॉलेज में संगीत शिक्षण दे रहे हैं और उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ ओरेगन और मैरीलहर्स्ट यूनिवर्सिटी में पाठ्यक्रम व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं

5.3.4 के जी वेस्टमेन

आपने अपनी सितार वादन की यात्रा 2006 में पं. रविन्द्र गोस्वामी जी से शुरू की। जो अपने आप में मैहर घराने, इमदाद खाली शैली, ध्रुवपद डागर शैली और रामपुर सेनिया सहस्वान घराने का अद्भुत मिलन है। आपका मानना है कि सितार संगीत प्रदर्शन के लिये अति उत्तम वाद्य है। सितार में सभी भारतीय शैलियाँ फिर चाहे वो गायन में हो या वादन में यह एक सबसे बढ़िया संतुलन बनाती है। पं. रवि शंकर जी ने सितार वाद्य को विश्व प्रसिद्ध बनाया, इसमें कोई शक नहीं है परन्तु जार्ज हैरिसन के बिना यह संभव नहीं था। पश्चिम में अगर सितार वाद्य इतना प्रसिद्ध हुआ है तो जार्ज हैरिसन श्रेय के पात्र है। अगर बाबा अलाउद्दीन पं. जी को इतना कुशल कलाकार ना बनाते तो वह लोगों को मंत्रमुग्ध करने में कैसे सक्षम होते।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को सितार वाद्य के बिना इतनी पहचान वैश्विक स्तर पर नहीं मिलती जितनी आज है। सितार एक सही वाद्य रहा है। सितार वाद्य सीखना कोई आसान बात नहीं है यह सीखना वास्तव में बहुत कठिन कार्य है। यह समय लेता है रियाज करना पड़ता है। कई लोग तो बीच में ही छोड़ जाते हैं। आपके कुछ छात्र हैं जो नियमित रूप से सितार वादन सीख रहे हैं। उनके नाम हैं मिल्टन एंडरसन, सुवन आटे, मंजु महाजन, वोकेश सच विलियन, राबे तिन ख्वाजी। आपने अधिकतर भारत, यूरोप और अमेरिका में प्रदर्शन किया है। पश्चिम के लोग भारत के शुद्धतम संगीत स्वरूप को सुनने और पाने में रूचि रखते हैं यही वजह है कि ध्रुवपद जैसे गहरी और मुश्किल शैलियां सीखने में गहरी रूचि और आनंद का अनुभव करते हैं। आप यूरोप, लुक्समबर्ग, बर्लिन, मैनचेस्टर, स्वीडन आदि जगहों पर अपना वादन प्रस्तुत कर चुके हैं। आपका कहना है कि किसी भी देश में जाओ तो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के जानकार और गैर-जानकार दोनों ही तरह के लोग मिलते हैं। फिर चाहे वो हिन्दुस्तान हो या विदेश। शास्त्रीय संगीत का भारत में एक विशेष स्थान है, चाहे आजकल भारत में बालीवुड और पॉप संगीत का प्रचलन बढ़ रहा है। सरकार का सांस्कृतिक समर्थन आवश्यक है और संगीत कला के विस्तार के लिये संगठनों की अधिक ज़रूरत है। कला का समर्थन करना चाहिये। कला समाज को उत्थान कार्य में अवल है। बिना कला कौशल के व्यक्ति जानवर बन जायेगा। आप स्वीडन पर स्टोकहोम संगीत उत्सव करवाते हैं। 2023 में पं. नीलाद्रि कुमार और उ. जाकिर हुसैन का कार्यक्रम इन्होंने करवाया था। प्रतिवर्ष उच्च कोटि के कलाकारों को बुलाया जाता है।²⁶⁸

5.3.5 अल्बर्टा जुरको

संगीत शिक्षा - आप इटली में रहते हैं। आप ने पहली बार सितार 1976 में श्री प्रमोद कुमार से सुना था। आप के अनुसार सितार की ध्वनि ने मुझे तुरंत मंत्रमुग्ध कर दिया और इसलिए मैंने वाद्य यंत्र के बारे में पूछताछ करना शुरू कर दिया और लगभग केवल भारतीय संगीत ही सुनने लगा। 1980 में मैंने लंदन में अपना पहला सितार खरीदा लेकिन

²⁶⁸ ईमेल के माध्यम से 15 नवम्बर 2022

यह एक पेशेवर वाद्य यंत्र नहीं था, फिर आप को रिखी राम से विलायत खां शैली में एक सितार मिला। और स्वयं सितार सीखा और फिर 4 वर्षों तक वेनिस में पंडित बुधादित्य मुखर्जी के कुछ सेमिनारों में भाग लिया और उनसे सितार वादन सीखा, लेकिन यह केवल हर साल अगस्त में 15 दिनों के लिए था। वेनिस की नगर पालिका द्वारा सभी सेमिनारों का आयोजन स्वयं ही किया जाता है। अब आप के पास मिराज में के एस सितार मेकर द्वारा निर्मित 4 सितार हैं। आप कहते हैं की आप को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत किसी भी अन्य चीज़ से अधिक पसंद है।²⁶⁹

5.3.6 लेगर सितार

संगीत शिक्षा - आप यूरोप से हैं आपसे साक्षात्कार करते हुए पता चला कि आप 1993 में भारत में (कुल्लू) हिमाचल प्रदेश से आये थे तो आपने शाम लाल ठाकुर जी, जो कि एक शास्त्रीय गायक थे, से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली और वाद्य संगीत की जानकारी प्राप्त की। फिर पढ़ाई के दौरान आपने आशोक पाठक और पार्थ बोस से भी शिक्षा ग्रहण की। आज कल आप एक अच्छे सितार वादक हैं।

5.3.7 बक्काउत (बैल्जियम)

संगीत शिक्षा- आप बैल्जियम में रहते हैं और आप सितार वादक हैं। आपने बताया कि आपने पहली बार सितार जसपाल सिंह जी से सुना था। फिर उसके बाद आप कोलकत्ता आये और पं. मीता नाग जी से सितार वादन की शिक्षा ली। आप को पं. मणि लाल नाग जी का आश्रय और आर्शीवाद भी प्राप्त हुआ। आप ध्रुपद को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का मुख्य आधार मानते हैं और उसे नाद योग, कहते हैं।

5.3.8 ईवान मॉयकेलो डैजिलो

संगीत शिक्षा - आप अर्जेंटीना से हैं। आपने 20 वर्ष पहले सितार वाद्य को पहली बार सुना था। आपके अनुसार आपके एक मित्र ने आपको कुछ सीडी दिल्ली और बनारस से खरीद कर दी। आपने पहले बीटल्स ग्रुप के जार्ज हैरिसन और पं. रवि शंकर का सितार भी सुना

²⁶⁹साक्षात्कार अल्बर्टा जुरको दूरभाष के माध्यम से 9 मार्च 2022

था। जो कि अद्भुत था। आपने बताया कि आप कपड़ों को कारोबार दौरान भारत और विभिन्न देशों के साहित्य और सांस्कृतिक के साथ जुड़े हुये थे। आप इमदाद खानी घराने से सम्बन्ध रखते हैं और उ. विलायत खां जी से संगीत की और सितार वादन की शिक्षा लेते रहे हैं।

5.3.9 इवान मोरोलोव (रूस)

संगीत शिक्षा - आप बनारस में पं. नारायण गोस्वामी जी, जो कि मैहर घराने के विख्यात सितार वादक है से सितार वादन सीख रहे हैं। आपने बताया कि सबसे पहले आने पद्म श्री उ. शाहिद परवेज जी के शाम के समय के रागों की एलबम में से हंसध्वनि राग सुना था। जिसने उन पर जादू कर दिया और आपने सितार वादन सीखाना आरंभ किया। आप बनारस से पं. रविन्द्र नारायण गोस्वामी जी के मैहर घराने से है। सितार वादन सीख रहे हैं।²⁷⁰

5.3.10 दिमित्री रूमेलिथोटिस (ग्रीस)

संगीत शिक्षा - आपका जन्म (Athens) ऐटस में हुआ। बचपन में ही आपको संगीत का शौक था आपके अनुसार खुद का गायन और गिटार वादन के साथ जुड़ाव महसूस किया। आपने बताया कि 11 जून 1988 में (Herodein Theatre under Acropolis) में पं. रवि शंकर जी का सितार वादन सुना जिसने आपको हमेशा के लिये बदल दिया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार की अद्भूत झंकारों ने आप पर गहरा असर छोड़ा। दिसंबर 1989 में आपने समृद्ध संगीत विद्यालय में कठिन और आकर्षक सितार वादन की शिक्षा लेनी आरंभ की। रॉस डेली में 1994 में आपका परिचय पं. रविन्द्र गोस्वामी जी के साथ हुआ। जो कि बनारस के उत्कृष्ट सितार वादक है। तब आपने लगन के साथ रागों के रहस्यों को सीखा।

अनुभव - आपके अनुसार सरोद वादक उ. अली अकबर खां, पं. निखिल बैनर्जी का गहरा और गीतात्मक वादन, पं. रवि शंकर की दार्शनिक दृष्टि और उ. विलायत खां की

²⁷⁰साक्षात्कार इवान मोरोलोव, 9 मार्च 2022

प्रतिभापूर्ण अभिव्यक्ति आज भी प्रेरणा स्रोत है। भारतीय संगीतकार बहुत खुश-मिजाज और प्रभावशाली होते हैं। जब आपने नया राग बनाया तो आपके गुरु द्वारा उसका सम्मान किया गया और उन रागों को (सुबह के समय के राग को) आभा रंजनी और (राग कौशिक ध्वनि) हॉस्पिटैलिटी नाम दिया। आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर आधारित वाद्यों की रचना की और बहुत सारे गीतों की रचना भी की। आपने भारत में बनारस सहित कई स्थानों पर कार्यक्रम भी दिये।²⁷¹

5.3.11 सिमोन जिल (आस्ट्रेलिया)

संगीत शिक्षा - आप आस्ट्रेलिया में रहते हैं। आप पिछले 30 सालों से आस्ट्रेलिया से अलेन पोसेट से सितार वादन सीख रहे हैं। आपने बताया कि सर्वप्रथम आपने बनारस में 1992 में सितार वाद्य सुना था उसकी कुछ जानकारी एकत्रित करके और सितार की शिक्षा लेनी आरंभ की। आपके गुरु अलेन मैहर घराने से उ. अलाऊद्दीन खां के शिष्य रहे हैं। आप कोलकत्ता से राधिका मोहन से और मुम्बई से अरविंद पारेख जी से भी सितार वादन की शिक्षा लेते रहे हैं। यह विभिन्न घरानों और वादन शैलियों का मिश्रण है। आप कोलकाता में सिद्धार्थ राय चौधरी से भी सितार वाद्य की शिक्षा लेने आते रहते हैं।²⁷²

5.3.12 पॉल लैफ्टी राईट (डंडी)

संगीत शिक्षा - आपसे बातचीत के दौरान आपने बताया कि संगीत का शौक आपको बचपन से ही था। 70 और 80 के दशक में हिन्दुस्तानी संगीत की आवाजे कानों को बहुत भाती थी। आपके अनुसार जब भी उनको सुनता था तो रंग बिरंगी रोशनियां और भावनाएँ उभर आती थीं। BBC में East Network पर हिन्दुस्तानी संगीत और स्कॉटलैंड में स्कूल के दिनों के पाकिस्तानी मित्रों के घरों में लता मंगेशकर के गीत और वाद्ययंत्र सुनने को मिलते थे तो बहुत अच्छा लगता था। तब आपके चचेरे भाई ने आपको रिकार्डिंग्स लाकर दी जो कि पं. रवि शंकर, पं. निखिल बैनर्जी, जी ए सचदेवा और चीटी बाबू की थी। फिर आपने गिटार बजाने की सोची। क्योंकि आपने जीमी हैडरिक्स को देखा था जो कि एक गिटार

²⁷¹ साक्षात्कार दिमित्री रूमेलिथोटिस, 9 मार्च 2022

²⁷² साक्षात्कार सिमोन जिल, 9 मार्च 2022

वादक थे और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीख रहे थे। मोन्टरी पॉप फेस्टीवल में पं. रवि शंकर और उ. अल्ला खां जी के साथ प्रस्तुति दे रहे थे।

फिर आपने स्कॉटलैंड में सितार वादन की शिक्षा लेने के लिये सोची और आपको आपका पहला सितार मिला। आपने पं. रवि शंकर जी के रिकार्ड और भारतखण्डे स्वरलिपी की पुस्तकें की मदद से सितार वादन करना आरंभ किया।

अनुभव - सौभाग्य से आप पं. रवि शंकर मिले। जहाँ पर उन्होंने पंचम सेगोड़ा राग बजाया। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और ढेर सारी शुभकामनाएँ भी दी। फिर आप स्कॉटलैंड में तबला वादक श्री विजय खांडार मिले। सितार पर राग सर्वप्रथम राग वृंदा वनी सारंग बजाया। जो एक नेपाली सितार वादक वरेन्द्र रंगोग से सीखा था। फिर आपने सितार वादन की विधिवत शिक्षा विष्णुपुर घराने के पं. गोकुल नाग से ग्रहण की। आपने राग सीखने बाद उनसे पूछा कि मैं आपको इसके कितने पैसे दूँ तो उन्होंने कहा कि नहीं पोल तुम इसे बजाओ यही मेरा ईनाम है।

आपने उनसे लगातार कई वर्षों तक सितार वादन सीखा। आपका मानना है कि उन्होंने मुझे एक सुनहरा उपहार सितार वादन के रूप में दिया। आज कल आप उ. शाहिद परवेज और उ. छोटे रहमत खां से सितार वादन सीख रहे हैं।²⁷³

5.3.13 याव फकेटे (ईजरायल)

संगीत शिक्षा- आप ईजरायल से हैं। आप 35 साल पहले 21 वर्ष की आयु में भारत आये थे। आप पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत बजाते थे। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत आपको बहुत पसंद है। आपने हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला में कुछ संगीत की शिक्षा ली। तबला और सितार की आवाज बहुत प्रभाव डालती थी। आपने डेविड ऐलावीर से सितार वादन सीखा जो कि रूद्र वीणा वादक थे और उ. शुजात खां के शिष्य थे।

अनुभव -आपने शास्त्रीय कार्यक्रमों में बजाने के साथ-साथ, आधुनिक संगीत और सूफी आरकेस्ट्रा भी बजाया है। आप के अनुसार मैं ओर नया सीखता रहता हूँ। हमारा कार्यक्रम

²⁷³साक्षात्कार पॉल लैफ्टी राईट, 08 मार्च 2022

1 घंटे का होता है जिसमें सूफी शैली में आरकेस्ट्रा बजाया जाता है जिससे हमारे निर्देशक लिखते और बनाते हैं। मुझे आशा है कि एक दिन हम इसे भारत में भी प्रस्तुत करेंगे। आप भारत में अपनी प्रस्तुति देनी की इच्छा रखते हैं।²⁷⁴

5.3.14 क्रिस्टोफ सिंक कुएबेक

संगीत शिक्षा –आप मैहर घराने के कलाकार पं. सुधीर फड़के के शिष्य आरण्य कुमार के शिष्य हैं। आप 2015 में कर्नाटक में कालकेरी संगीत विद्यालय (कनाडाई) (एनजीओ द्वारा मान्य) में शिक्षा ले रहे थी। आपके अनुसार तब मुझे रागों के प्रकटीकरण और मंत्रमुग्ध करने वाली संगीत शैली से इतना लगाव हो गया कि मैं वो करना चाहता था।

अनुभव - इससे पूर्व आप पं. रवि शंकर और बीटल्स के जार्ज हैरिसन का सितार वादन भी सुन चुके थे। आप तार वाद्य (गिटार, वास) बजाने में माहिर थे। आपने वीडियो गेम्स इंस्टालेशन और फिल्मों में इलैक्ट्रोकास्टिक अध्ययन में बीएफए की स्नातक डिग्री ली। आप हिन्दुस्तानी भाषा हिन्दी के भी ज्ञाता हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आप पर बहुत प्रभाव है सितार वादन सीखने के लिये गुरु शिष्य परम्परा को शैक्षणिक दृष्टिकोण से उठाया गया उत्तम कदम मानते हैं।²⁷⁵

5.3.15 ब्रारेन प्राटेज (कानास)

संगीत शिक्षा -आप फ्रांस में सितार वादक हैं आपने पहली बार बचपन में रेडियो पर सितार वादन सुना था तब आप 4 या 5 साल की उम्र के होंगे। तब यह आपको अपना सा लगा। आपने बताया कि मैंने माँ से पूछा कि ये क्या है उन्होंने कहा कि यह भारतीय वाद्य सितार है। कुछ साल बाद मैंने गिटार बजाना सीखा, पर मेरे दिमाग में सितार ही बजता था। उन दिनों पं. रवि शंकर जी का एलबम सुना। फिर एक दिन एक दुकान पर सितार मिला आपने उसे खरीदा और यह मालूम नहीं था कि यह बजाया कैसे जाता है। तब इंटरनेट नहीं होता था। फिर आपकी रॉन विलसन से मुलाकात हुई। वह उ. अली अकबर खां से सरोद सीख रहे थे। कैलिफोर्निया के सैन राफल स्कूल में सात वर्षों तक पढ़ाई की

²⁷⁴साक्षात्कार दूरभाष के माध्यम द्वारा 10 मार्च 2022

²⁷⁵साक्षात्कार दूरभाष के माध्यम द्वारा 10 मार्च 2022

और उ. अली अकबर खां ने आपको बहुत ही स्नेह और दयालुता दिखाते हुए पार्किंग स्थल में रहने की जगह दी। आपके गुरु द्वारा आपका मैहर घराने शैली में सितार वादन की शिक्षा दी।

अनुभव- आपका कहना है कि मैं लगभग 20 वर्षों से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विशाल सागर में आनंदित हूँ। आप सितार व सरोद दोनों वाद्यों को बजाने में परागत हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में जो आध्यात्मिक और रुहानी अनुभव होता है वो कहीं और नहीं मिलता।²⁷⁶

5.3.16 लिस्टर सिलवर (न्यूजीलैंड)

संगीत शिक्षा - लिस्टर सिलवर न्यूजीलैंड में रहते हैं और आप 66 वर्ष के हो चुके हैं। आज भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रति उतने ही उत्साही हैं जितने 23 वर्ष की आयु में थे। आपने एक पुराना सितार एक संगीत वाद्यों की दुकान पर देखा क्योंकि आप गिटार बजाते थे। संगीत से आप का लगाव पहले से ही था। आपने 20 वर्ष की आयु में ईसाई धर्म को छोड़ कर पूर्व की ओर आ गये थे और धार्मिक ग्रंथ पढ़े। तब उन ग्रंथों में सितार की जानकारी मिली। तो उस समय आप की रुचि सितार वाद्य में पैदा हुई थी और जब आपने सितार देखा तो खरीद लिया। तब आपकी जिंदगी और उसके विचार पूरी तरह से बदल चुकी थी। आपने एक नया सितार पाकिस्तानी व्यक्ति से खरीदा और उससे ही सितार वाद्य की प्रारम्भिक शिक्षा लेनी आरंभ की। तब आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अद्वितीय अदभुत गरमाहट और उसमें असीम ऊर्जा को महसूस किया। पं. रवि शंकर को सुनना आपको बहुत पसंद था उनके द्वारा बजाये गये, धुनें बहुत अच्छी लगती थी। आपको बाँसुरी और संतूर की जुगलबंदी जो पं. हरि प्रसाद चौरसिया और पं. शिव कुमार शर्मा जी ने राग झिझोटी में बजाई है बहुत पसंद है। फिर आप वापिस आस्ट्रेलिया आ गये और ऐलन पोस्टे से सितार वादन दो साल तक सीखा।

अनुभव - 1983 में आप भारत आ गये और श्री संजय वर्दोपोध्याय (खैरागढ़ विश्वविद्यालय) से 3 महीने संगीत सीखा। 1984 में फिर 3 महीने उनके पास रहे। फिर आप धर्मशाला

²⁷⁶साक्षात्कार दूरभाष के माध्यम द्वारा 14 मार्च 2022

हिमाचल प्रदेश में गये। आपके अनुसार फिर मैं शांति निकेतन में रहते हुए आपको प्रो. प्रसन्नता जो की विश्व भारती विश्वविद्यालय में 3 माह पहले ही आये थे, से सितार वादन सीखा। आपने बताया कि मेरे अगले 30 वर्ष तक वो ही मेरे गुरु रहे। मैं उनके पास शांति-निकेतन में आया करता था। मेरे गुरु और उनकी पत्नी भी कुछ देर के लिये न्यूजलैंड आये थे। जहाँ पर उनके संगीत बैठकों और कार्यक्रमों की व्यवस्था आपने की। आप के गुरु जी ईटावा और मैहर-सेनिया घराने से हैं। दोनों ही शैलियाँ बहुत ही अच्छी तरह से बजाते हैं। मैं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को बजाता हूँ और उससे सीखने और समझने में बहुत आनंद महसूस करता हूँ।²⁷⁷

5.3.17 के वाई पी पारस्केवा (साईप्रस)

संगीत शिक्षा -आपने सितार को 70 के दशक में पहली बार वादन करते हुए देखा और सुना था। आपने मोटेन्टी पॉप फेस्टीवल में पं. रवि शंकर जी के सितार वादन को देखा था। बचपन में भारतीय सिनेमा और बॉलीवुड संगीत सुनते थे क्योंकि लंदन में एक ही सिनेमा में सारी फिल्में होती थी। उसी में ग्रीक फिल्में लगाई जाती थी। पं. देव ज्योति गुप्ता (ईमदाद खानी घराना) के शिष्य है। आप साईप्रस में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की फांऊडेशन भी चले रहे हैं जिसका मार्ग दर्शन महेश काले जी द्वारा किया जाता है।²⁷⁸

5.3.18 निकोल्स मारंटेलमोस वैल्जियम (बैल्जियम)

संगीत शिक्षा -आप निकोल्स बैल्जियम से है। आप सितार और गिटार वादक है। आपने 2010 में सोशल मीडिया पर मोटेरी पॉप फेस्टीवल 1967 की वीडियो देखी। आपने तब हिन्दुस्तानी संगीत से प्रभावित होकर सितार खरीदने और और सीखने का निर्णय लिया। 2012 से 2017 तक भारत में सितार वादन सीका। फिर उसके बाद अब लंदन में श्रीमती अनुष्का शंकर से सितार वादन की शिक्षा ले रहे हैं। आप अपने सोशल मीडिया पर अपने वादन की वीडियो डालते रहते हैं।²⁷⁹

²⁷⁷ साक्षात्कार दूरभाष द्वारा 24 मार्च 2022

²⁷⁸ साक्षात्कार केवाईपी पारसकेवा 16 मार्च 2024

²⁷⁹ साक्षात्कार दूरभाष द्वारा निकेतन 24 मार्च 2022

5.3.19 फ्राइकलीन परेरा पुर्तगाल

संगीत शिक्षा

1976 में ओपोर्टो पुर्तगाल के एक संग्रहालय में सितार और तबला वादन सुना। आपने बुडस्टाक फेस्टिवल 1976 में भी पं. रवि शंकर को सुना था। उसके बाद एम्स्टर्डम में आपने पं. जी को सुना। फिर आप भारत में पूना में रजनीश आश्रम में गये। आपकी रूचि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तो थी ही। 1981 में पं. श्री निवास केसकर से मिले। 1982 में बनारस गये फिर आप 1985 में श्री हेमराज निषाद जो कि एक शानदार शिक्षक थे, से सितार वादन सीखा। फिर आप पूना आ गये और रफीक नदाफ से मिले जो कि एक अद्भुत गुरु थे। आप उनके साथ मिराज में रहे। हिन्दुस्तानी संगीत में आपको एक अद्भुत अहसास का आभास होता है कि यह संगीत कितना विचित्र है।²⁸⁰

5.3.20 सितारिस्ट कलाई (मलेशिया)

आप मलेशिया से हैं, आप मैहर और विष्णुपुर घराने से सम्बन्धित हैं। आपके पहले गुरु पं. जनार्थन थे और आजकल आप पं. राजू चक्रावर्ती से सितार वादन सीख रहे हैं। आप सितार वादन का प्रस्तुतिकरण भी करते हैं। बहुत स्थानों पर सितार वादन की प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं।²⁸¹

5.3.21 पॉल हबबर्ड (कलिफोर्निया)

आपने 1960 के दशक के शुरूआत में रेडियो पर बीटल्स को नार्वैविजन वुड को सुना था। आप उस धुन पर मोहित हो गये। आपके अनुसार आप नहीं जानते थे कि यह क्या है। परन्तु सुनने में बहुत मधुर और अलग था। 1970 में पं. रवि शंकर के बारे में सुना और 1969 में उन्होंने बुडस्टॉक संगीत समारोह में प्रस्तुति दी थी। उसके बाद सितार और भारतीय वाद्य यंत्रों के साथ बीटल्स के अन्य गाने सुने। जिनमें विदिन यू विदाऊट यू और लव यू टु शामिल थे। जिनमें सितार बजाया गया था। 1980 में रिच हेवन्स के एलबम में सितार बजाया गया था।

²⁸⁰साक्षात्कार- फ्राइकलीन परेरा 25 अप्रैल 2022

²⁸¹पॉल हैबवार्ड 28 अप्रैल 2022

आप आस्टिन टेक्सास में अपने बड़े भाई से मिलने गये। उनके मित्र ने कई सारे तार वाद्य यंत्रों को रखा हुआ था और उनमें से एक सितार भी था जिसे देखकर आपकी उसमें दिलस्वपी हुई। इसे कैसे बजाया जाता था कोई नहीं जानता था।

सितम्बर 1982 के अंत में आप दक्षिणी कैलीफोर्निया गये जहाँ पर एनसिनिटास इम्पोर्ट नामक एक स्टोर था जहाँ से आपने अपना पहला सितार 1983 में खरीदा जो बहुत ही अच्छा गुणवत्ता वाला था। आप इसे सुर करना नहीं जानते थे। शुरूआत में इसे सुर करने के चक्कर में तारों को तोड़ते गये। फिर आपको उत्तरी कैलिफोर्निया में अली अकबर कालेज के बारे में पता चला और तारों के कई सेट भी खरीदे। 1985 में लॉस एंजिलस से पासोडेना में हरिहर राव के बारे में सुना और उनसे एक और सितार खरीदा। राधा कृष्ण शर्मा से सितार का सबक लेना शुरू किया। फिर स्वयं रियाज और अभ्यास करते रहे और कुछ कार्यक्रमों में वादन भी किया। 1985 में लॉस एंजिलस में आक्सिडेंटल कालेज में हैरिक चैपल को सितार बजाते हुए सुना। 1990 में पूर्बयन चैटर्जी को सैक्रामेंटोस्टेट यूनिवर्सिटी में सितार वादन करते सुना। आपने 1990 के दशक में सरोद वादक अली अकबर खां के कुछ सितार वादक छात्रों से शिक्षा ली।

अनुभव- आपने बताया कि आपके पंसदीदा सितार वादक पं. मणि लाल नाग रहे हैं। उन्होंने ही आपको प्रेरित किया। 1984 के दौरान आपने पं. मणि लाल नाग का बजाया गया राग चारुकेशी सुना। जो इतना खूबसूरत बजाया गया है जिसकी जितनी सराहना की जाये कम है। बहुत सारे अंग्रेजी गानों में आपने वादन किया। आप पुरानी-पुरानी रिकॉर्डिंग्स इकट्ठी करते रहते, जिनमें सितार वाद्य बजाया गया है।²⁸²

5.3.22 सेबस्टियन ड्रेयर (जर्मनी)

सेबस्टियन ड्रेयर जर्मनी सितार वादक है। आप जब 17 साल के थे तब पहली बार स्कूल में सितार सुना था और वह पं. निखिल बैनर्जी थे जिन्होंने आपको आश्चर्यचकित कर दिया। क्योंकि आपने उससे पहले ऐसा कुछ नहीं सुना था। उसके बाद 1997 में बर्लिन में आपने सीखना शुरू किया। जो जयपुर सेनिया की सितार वादन शैली थी। 2003 में पं. पार्थ

²⁸²साक्षात्कार- दूरभाष पॉल हैबवार्ड 29 अप्रैल 2022

चटर्जी से मिले जो आपके वर्तमान गुरु हैं। वह पं. निखिल बैनर्जी और उ. अली अकबर के शिष्य रहे हैं। आपका Sebastian dreyer नाम से youtube channel भी है।

अनुभव- आपने बताया कि आप बहुत जगह पर सितार वादन कर चुके हैं। यहाँ पर लोग बहुत ध्यान से सुनते हैं और ताली बजाते हैं। एक बार एक कार्यक्रम में एक बुढ़ा आदमी आया और कहने लगा कि आपका वादन मुझे declaration of war जैसा लगा जो बाद में मुझे बहुत पसंद आया।²⁸³

5.3.23 एंटी एन (बुल्गारिया)

आपने 16 साल की उम्र में पं. रवि शंकर जी को सुना और सितार वाद्य से प्यार हो गया। आप तब स्कॉटलैंड में रहते थे और वहाँ से सितार खरीद कर कुछ समय बाद महबूब नदीम से सितार का सबक लिया। आपने उनसे तकनीकी और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की कुछ बुनियादी चीजें सीखीं। फिर आप ने सितार सीखने के लिये सितार बजाकर ही पैसा कमाया।

फिर आप भारत आये और बनारस में तारक नाथ मिश्र से आगे मार्गदर्शन प्राप्त किया। उन्होंने काफी कुछ सिखाया। फिर आपकी भेंट पं. राम प्रसन्ना भट्टाचार्य से हुई जिनसे पिछले 5 साल से सितार वादन सीख रहे हैं। आप ने बताया कि 2017 में बहुत लम्बी बीमारी के चलते कुछ सितार वादन नहीं किया परन्तु राम प्रसन्न जी के नियमित मार्गदर्शन और लंबे समर्पित रियाज से मैं आज सितार वादन में सक्षम हूँ। केवल राम प्रसन्न जी की बदौलत ही आज तबला वादकों के साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रदर्शित करने योग्य हो सका हूँ। उनको दिल की गहराई से धन्यवाद। सितार एक जादूई वाद्य यंत्र है जो दुनिया भर पर प्रचारित है।²⁸⁴

5.3.24 डनियाल सितार (अर्जेन्टीना)

आप अर्जेन्टीना से है आपने अपनी युवावस्था में सितार वादन सुना। आपको रवीन्द्र संगीत बहुत पसंद है। आप इमदाद खानी घराने से हैं और आपके गुरु पं. देवाशीष

²⁸³ साक्षात्कार दूरभाष द्वारा मार्च 2022

²⁸⁴ साक्षात्कार- एंटीएन 16 सितम्बर 2022

सान्याल है। आप भारत में भी आ चुके हैं। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत आप को भारत खींच लाया। Dani Raodriguez Ganges के नाम से आपको youtube channel भी है।²⁸⁵

5.3.25 सावन जोशी (नेपाल)

आप नेपाल के बहुमुखी सितार वादक है आप का जन्म 1977 में हुआ। 14 साल की उम्र में संगीत की शिक्षा लेनी आरंभ कर दी थी। 1997 में भारत में इलाहाबाद प्रयाग संगीत समिती बोर्ड में सितार और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का 6 वर्ष का कोर्स पूरा किया। आजकल आप जापान में रह रहे हैं और वहाँ पर टोकियो यूनिवर्सिटी में सितार वादन सीखा रहे हैं। आप कई मंचों पर सितार वादन कर चुके हैं।²⁸⁶

5.3.26 पीटर डिवियन

पीटर डिवियन आरमनिया से है और आजकल आस्ट्रेलिया में रह रहे हैं। आप पिछले 40 वर्षों से सितार का अध्ययन कर रहे हैं और सितार वादन कर रहे हैं। आपने 1980 के दशक में जयपुर सेनिया घराने के उ. कादिर खां से सितार वादन की शिक्षा ली। आप पाकिस्तान कराची में PBC के साथ भी अध्ययन कर चुके हैं। महान गज़ल गायक मेहंदी हसन के बड़े भाई थे उ. कादिर खां, जिन से आप ने संगीत शिक्षा प्राप्त की। आप आस्ट्रेलिया और अमोनिया में एक पेशेवर सितार वादक के रूप में स्थापित हैं।

अनुभव- आप बताते हैं कि उ. विलायत खां का राग यमन और राग तिलक कामोद की रिकार्डिंग बहुत ही मनमोहक हैं। पं. रवि शंकर और पं. निखिल बैनर्जी का भी सितार वादन अदभुत रहा है। आपको बिस्मिलाह खां की शहनाई पर बजाया गया राग गुजरी तोड़ी और भैरवी बहुत पसंद है।²⁸⁷

5.3.27 निक प्रोक्टर

आप सितार और सुर सिंगार के अच्छे ज्ञाता है। आपके अनुसार आपने पहली बार 1973 में द गोल्डन वायज ऑफ सिनवाद नामक फिल्म में सुना था। फिर टेलीविजन में

²⁸⁵ danielsitar74@gmail.com

²⁸⁶ साक्षात्कार दूरभाष द्वारा मार्च 2022

²⁸⁷ साक्षात्कार- पीटर डिवियन – 18 अप्रैल 2022

सरस्वती वीणा देखी। 1978 में श्रीमती सिंह से सितार वादन सीखा। 1978 में ही पहला सितार लिया तब से आज तक मैंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। 1981 में भारत आये और बहुत सारे मित्र बने आजकल आप उ. शाहिद परवेज खां से सितार वादन सीख रहे हैं। आप सुर बहार, सुर सिंगार, वीणा के भी अच्छे वादक है। बनारस में आप कई बार सितार वादन कर चुके हैं। पं. रवि शंकर जी से कई बार मिल चुके हैं। आपके द्वारा कुछ youtube लिंक भी सांझे किये गये।²⁸⁸

5.3.28 टोमी क्रोमी

आप एक छोटे से दीप माल्टा में रहते हैं। आपने स्वयं रियाज द्वारा सितार सीखा। सितार एक बहुत ही पवित्र वाद्य यंत्र है। आपने पं. रवि शंकर जी की पहली ऐलबम स्पीरिट ऑफ इंडिया में सितार वादन सुना। सितार की ध्वनि ने आपको झंझोर कर रख दिया और आपके अनुसार आपकी पूरी जिंदगी ही बदल गई। आपने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सुनना शुरू कर दिया और कई शोध भी इंटरनेट के माध्यम से किये। आपको पं. रवि शंकर, पं. निखिल बैनर्जी, अनुष्का शंकर और नीलाद्री कुमार का सितार वादन पसंद है। आपने अपने शौक को बहुत गंभीरता के साथ लिया। आपने कुशन नामक भारतीय बैंड बनाया। हिन्दुस्तानी शादियों में भारतीय संगीत बजाया जाता है। आपने योगा केन्द्र भी खोला है। आप यूरोप में 3 बार अनुष्का शंकर से मिल चुके हैं। आपका कहना है कि मैं पूरी तरह से सितार को संपर्कित हूँ।²⁸⁹

5.3.29 जोनाथन मेयर (इंग्लैण्ड)

आप भारतीय मूल के सितार वादक हैं। आपने 16 साल की उम्र में सितार बजाना सीखा। आपके पहले गुरु कलेम अलफोर्ड एक स्काटलैंड के अध्यापक थे जिनसे सितार वादन की सर्वप्रथम शिक्षा ली। फिर उ. निजाहित खां से सितार की तकनीक सीखी। फिर रामपुर सेनिया घराने के पं. सुबोत्रो रॉय से सीखा। सितार वाद्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत बजाने के लिये विशेष रूप से बनाया गया है। पं. रवि शंकर जी ने इसे विश्वव्यापी बना

²⁸⁸ साक्षात्कार- निक प्रोक्टर – 18 अप्रैल 2022

²⁸⁹ साक्षात्कार दूरभाष द्वारा 24 मार्च 2022

दिया। उ. मुश्ताक अली खां और उ. इमदाद खां ने भी इसके प्रचार-प्रसार में बहुत योगदान दिया। आप जर्मनी, इस्टोनिया चेक रिपब्लिक, ईस्टन यूरोप के कई देशों में सितार वादन कर चुके हैं। इंग्लैण्ड में मिलाप फेस्ट, सम्पदा आर्ट्स, दरबार आदि कार्यक्रम करवाये जाते हैं। जहाँ पर बड़े-बड़े दिग्गजों द्वारा सितार वादन किया जाता है।²⁹⁰

5.3.30 गित्री कैवलोर (स्वीडन)

गित्री कैवलोर स्वीडन में सितार वादक है। आपने पहली बार सुरबहार की आवाज़ 1984 में सुनी। यह बहुत सुकुन देने वाली थी और उस समय आप गिटार वादक थे। आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत नहीं सुनते थे। 1995 में पहली बार भारत आये और फिर लगातार 20 सालों में 6 माह भारत में और 6 माह स्वीडन में रहने लगे। साल 2000 में आपने अपने सितार के प्रति जुनून को समझा। आपने स्वीडन के एक मित्र के साथ हिमाचल प्रदेश स्थित धर्मशाला में संगीत कार्यक्रम सुना और सितार वादन करते कलाकारों को देखा तो अगले दिन तबला वादक के घर रहने चले गये। वहाँ आप में सितार सीखने की ललक जागी और आप सीधा बनारस चले गये सितार वादन सीखने के लिये। आपके कथानुसार सितार वादन का प्रारम्भिक दौर मुश्किल रहता है। दर्द से गुजरना पड़ता है कई घंटों का अभ्यास रहता है।

आप मैहर घराने के पं. रवीन्द्र नारायण गोस्वामी जी के शिष्य है। अभी पिछले दिनों गुरु जी वार्सिलोना में संगीत कार्यक्रम में आप आमंत्रित थे। आप सितार वादन में परागत है सितार वादन की शिक्षा दे भी रहे हैं। योगा केन्द्र भी चला रहे हैं।²⁹¹

5.3.31 जेवीयर लेगरीन (अर्जेन्टीना)

आप अर्जेन्टीना से है आपने पं. रवि शंकर जी का सितार वादन बांग्लादेश के एक संगीत समारोह में सुना था। फिर आपने अर्जेन्टीना में मारियो पार्किन्स में सितार वादन सुना और उनसे सितार का सबक लेना आरंभ किया और फिर 12 साल पहले भारत आये और कोलकत्ता के अभिक मुखर्जी जो कि इमदाद खानी घराने के शानदार कलाकार हैं उनसे

²⁹⁰ साक्षात्कार दूरभाष द्वारा मार्च 2022

²⁹¹ साक्षात्कार- गित्री कैवलोर – 27 मार्च 2022

मिले। आपने पं. कुशलदास के शिष्य व उनके भाई शौविक मुखर्जी से भी सितार वादन सीखा है।²⁹²

5.3.32 स्योही कमेमित्स (ताईवान)

आप ताईवान में सितार वादक के रूप में स्थापित हैं। आप ईमदाद खानी घराने के उ. शुजात खां के शिष्य हैं। आपका कहना है कि सितार मेरे लिये दुनिया के सबसे खूबसूरत और गहरे वाद्य यंत्रों में से एक है। आपने पं. निखिल बैनर्जी, उ. विलायत खां, उ. शुजात खां को खूब सुना है। आप पेशे से सितार वादक हैं और सितार वादन की शिक्षा भी देते हैं। आपने जापानी वाद्यों के साथ ओरक्स्ट्रा में सितार वादन किया। ताईवान में अभी लोग सितार वाद्य को पसंद करने लगे हैं। आप चाईना में भी आरक्स्ट्रा बजा चुके हैं। आप भारत सहित थाईलैंड, बैंकॉक, सिंगापुर, ताईवान आदि जगहों पर सितार वादन कर चुके हैं।²⁹³

5.3.33 सज्बी तोठ (हंगरी)

सज्बी तोठ हंगरी में सितार वादक हैं। एक सितार वादक के रूप में आपने भारतीय टेलीविजन पर बहुत सारे लाईव कार्यक्रम दिये। आप नियमित रूप से पश्चिमी, यूरोपीय और अमेरिका मंचों पर सितार वादन करते हुए दिखाई देते हैं। आप विश्व प्रसिद्ध तबला वादकों के साथ प्रस्तुति दे चुके हैं। आप हंगरी में बुड्वापिस्ट में हंगरीयन संगीत अकादमी के साथ-साथ यूरोप में और भारत में विश्वविद्यालय में भारतीय कला का प्रदर्शन पर व्याख्यान भी देते हैं। आप पं. राजीव जनार्दन के शिष्य हैं। आपने यूरोप में कई पुरस्कार जीते हैं। 30 से अधिक रिकार्ड बनाये हैं। 2005 से आप मास्टर ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक नाम से कार्यक्रम का आयोजन कर रहे हैं। आपके ही प्रयासों का नतीजा है कि भारतीय कलाकार ट्रॉफा और मुपा में अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं। आप का रेडियों कार्यक्रम आलाम में 2003 से आनएयर चल रहा है। जो हंगरी में सबसे पुराना और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रहा कार्यक्रम है।²⁹⁴

²⁹²साक्षात्कार- जेवीयर – 13 मार्च 2022

²⁹³ईमेल के माध्यम से sitaryo@live.jp

²⁹⁴साक्षात्कार सज्बी तोठ 9 मार्च 2022

5.3.34 राजन नरेन्द्र लॉरेंस (फ्रांस)

आप नेपाल से हैं और आपके पिता जी और दादा जी सांरगी वादक थे। परन्तु आपने गायन को चुना और आप गायन की शिक्षा लेने लगे और शास्त्रीय संगीत के गायक बन गये। फिर आपने एक दिन रेडियो पर सितार वादन सुना। आपके अनुसार जिनकी स्वर लहरियों में जादू था। आपने सितार की शिक्षा कई गुरुओं से ली। सबसे पहले बनारस में आनंद मिश्रा जी, फिर नेपाल में इन्द्रजीत बैनर्जी, उसके बाद राम प्रसन्ना भट्टाचार्य जी, जोश फेनबर्ग, दुवेश रेग्गी जी आदि से। आप एक पेशेवर संगीतकार और सितार वादक हैं। आपने जैज समूह के साथ काम किया, सितार वादन की प्रस्तुतियां भी की। कई बार त्योहारों और थिएटर में सितार वादन किया।²⁹⁵

5.3.35 डायना वाल्डोन

आप अपस्टेट न्यूयॉर्क से हैं। आप हडसन वैली में रहकर बड़ी हुई हैं। कॉलेज के दौरान, आपने योग और योग दर्शन का अध्ययन किया। अपनी पढ़ाई के दौरान, आपकी मुलाकात एक मास्टर सितार वादक आचार्य रूप वर्मा से हुई, जो नाद योग (ध्वनि का योग) का गहन प्रशिक्षण दे रहे थे, जिसमें प्रतिभागी घंटों सीखते थे, जबकि वह संगीतकार प्राचीन राग बजाते थे। इसके पीछे का उनका विचार था कि श्रोताओं के मन को शांत करना और श्रोताओं को शांति और आंतरिक शांति की स्थिति में लाना है।

जब आप पहली बार सप्ताहांत में ध्यान कक्षा में गयी, तो आपने संगीतकार के साथ तुरंत जुड़ाव महसूस किया। आपके अनुसार इससे पहले कि वह बजाना शुरू करे। मुझे पता था कि मैं उससे कुछ सीखने जा रही हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता था कि मैं सितार का अध्ययन करूँगी। उस सप्ताहांत के रिट्रीट के दौरान, उसके संगीत ने मुझे आकर्षित किया और मेरे अंदर कुछ पूरी तरह से बदल दिया। मुझे लगा जैसे मेरे अंदर नए आयाम खुल गए हैं और मेरे सामने प्रकट हो गए हैं।

इस अनुभव से पहले, आपकी सितार सीखने की इच्छा थी, लेकिन कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानती थी जो इसे बजाता हो, इसलिए आपके सक्रिय रूप से इसका

²⁹⁵साक्षात्कार राजन नरेन्द्र लारे, 10 मार्च 2022

पीछा नहीं किया। आपने 7 साल की उम्र से ही विभिन्न वाद्ययंत्र सीख लिये थे- गिटार, पियानो और शहनाई। जब आप कॉलेज में पढ़ रही थी, तो आप गिटार की क्लास लगाती थी। मैं अच्छा काम रही थी, लेकिन आपके अंदर ऐसा महसूस होता रहा कि कुछ कमी है। यह वह ध्वनि नहीं थी जिसकी मुझे तलाश थी। अपने अंदर एक आवाज़ सुनती रही जो सितार बजाना चाहती थी। अंततः, फिर से गिटार सीखने से असंतुष्ट होने के बाद, मैं अपने कॉलेज परिसर में घूम रही थी और बुलेटिन बोर्ड पर "सितार बिक्री के लिए" प्लायर देखा। आपने इसे खरीदने और संगीत की इस नई, अज्ञात दुनिया में कूदने का फैसला किया।

आपने आनंद आश्रम के ईस्ट-वेस्ट स्कूल ऑफ़ म्यूजिक में पंडित रविशंकर और उस्ताद अली अकबर खां के शिष्य रूप वर्मा से कक्षाएं लेनी शुरू कीं।

जब आपने वास्तव में भारतीय शास्त्रीय संगीत सुनना शुरू किया, तो ऐसा लगा जैसे आपकी कुछ बेशकीमती चीज मिल गई हो। आपके अनुसार जो भी संगीत सुना है, उसमें से कोई भी संगीत मेरी आत्मा में इतनी गहराई तक नहीं पहुंचा और मुझे खुद में वापस नहीं लाया। यह संगीत बहुत आध्यात्मिक और दिव्य रूप से सुसज्जित है। यह मन और हृदय को शुद्ध आनंद देता है। दुःख की बात है कि आपके शिक्षक आचार्य रूप वर्मा का 2017 में निधन हो गया। उनके निधन के बाद, उनके बेटे अर्जुन वर्मा, जो एक बेहद प्रतिभाशाली पेशेवर सितार वादक हैं से शिक्षा ले रही हैं। अर्जुन वर्मा उस्ताद अली अकबर खां, आलम खां और अपने पिता रूप वर्मा के छात्र रहे हैं। आपका कहना है कि मैं हमेशा आभारी रहूँगी कि संगीत मेरे जीवन में आया और मुझे यह महान अनुभव मिला।²⁹⁶

5.3.36 मिशेल गौय (फ्रांस)

आप फ्रांस में सितार वादक हैं। आपने सितार वादन की शिक्षा बनारस के पं. राम दास चक्रवर्ती से ली, जो कि सेनिया घराने से थे। उ. मुश्ताक अली खां के गुरु भाई थे। मसीतखानी बाज इसी वंश परम्परा से आया। जिसे आज सितार में विलम्बित गत कहा जाता है।

²⁹⁶लिखित रूप में अपना डाटा भेजा 9 मार्च, 2022

आप कनाडा में शास्त्रीय गिटार वादक थे। इसीलिए सितार वादन जल्दी सीखा क्योंकि तार वाद्य की जानकारी पहले से ही थी। आपने बताया कि जब गुरु जी ने पूछा कि किसी यूरोपियन का सितार सीखना संभव है तब आपने कहा कि यदि जुबिन मेहता न्यूयॉर्क में फिलहारमोनिक आर्केस्ट्रा का संचालन कर सकते हैं तो और कोई यह क्यों नहीं कर सकता। तो उन्होंने कहा सितार बजाओ तो आपको राहत मिली। जब आपने पूछा कि कितना समय लगेगा तो उन्होंने कहा कि 5 वर्षों में सीख जाओगे।

इस प्रकार जब 6 साल हो गये और मुझे सीमाएँ महसूस होने लगी तो सितार वादन की मूल शैली के अनुसार तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये घराने के खलीफा उ. मुश्ताक अली खां की तालाश की। उ. जी एक सख्त परंपरा वादी संगीतकार थे। उन्होंने फिर से शुरूआत करने को कहा जो कि बहुत निराशाजनक था, परन्तु यह सही था। उन्होंने गत और आलाप अभ्यास दोनों को अनुशासित करवाया। 1989 में जब उ. जी का निधन हो गया तो आप उ. विलायत खां साहिब के पास गए। जहाँ पर कई गायन रचनाओं को सितार में ढाला। सितार वादन में गायकी अंग की शैली बनाई। इस प्रकार उ. जी के साथ स्वर की तालीम ली।

पं. बी. सी. पाटेकर से गायन की तालीम ली जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे। आप जयपुर अंतरौली घराने से थे। इस शैली को सीखने के लिये कड़ा अनुशासन चाहिये था। कई दिग्गज कलाकार केसरी बाई से लेकर, मलिकार्जुन मैसूर, किशोर अमोलकर इस घराने के कलाकार हैं। यहाँ की रागदारी में दुर्लभ और जटिलता का भंडार है। आज आपका सितार वादन गायन अभ्यास से अति उत्तम हो गया। आपके अनुसार यद्यपि गुरुओं और उस्तादों का निधन हो चुका है परन्तु मैं फिर भी तालीम के पहलु खोजता रहता हूँ।

आप 20 वर्षों से अधिक समय से पैरिस में रह रहे हैं। आजकल 12 अच्छे छात्राओं को शिक्षा दे रहे हैं जिनमें से सितार वादन और गायन के छात्र हैं। आपने पैरिस में फिलहाल मनी डे में तबला कक्षाएँ भी लेते जो पैरिस में संगीत संग्राहलय में स्थित है।

भारत में अपने वादन अनुभव को सांझा करते हुए कहा कि पहली बार राग पुरिया बजाया था जिसका प्रथम पुरस्कार मिला था। बनारस में तुलसी घाट पर दोपहर के संगीत कार्यक्रम में ही गंगा के वोट हाऊस में संगीत महफिल थी। पूर्णिमा की रात में सारी रात बैठक चलती है। फिर सुबह के राग में भैरव बजाया था। सूर्य उदय तक भैरव बजता रहा फिर जब घाट पर आये तो लगा सब कुछ बदल गया है और हम जमीन पर लौट आये हैं।

कनाडा में भी भारतीय समुदाय के लोगों के बीच प्रदर्शन किया और वाह-वाह से मन बहुत प्रसन्न हुआ। कई बार फ्यूजन बैंड के साथ भी प्रस्तुति दी है।

हिन्दुस्तानी संगीत सबसे प्राचीन संगीत परम्परा है। सितार इसके अपेक्षाकृत हालिया आविष्कार है, जो 18वीं शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है। यह प्राचीन वीणा का आधुनिक रूप है। इसको सुर करने का तरीका सब अलग है। मुश्ताक अली खां अपना सितार बी पर ट्यून करते थे और आप डी पर करते हैं जिससे सितार के ध्वनि में गतिशीलता और उठान आये।²⁹⁷

5.3.37 आलिस कुपर (सरी)

आप बर्कली कालेज ऑफ म्यूजिक के छात्र रहे हैं। आपने 18 वर्ष की आयु में पहले सितार वादन सुना था। आपका प्रथम प्रदर्शन पं. रवि शंकर और वीटल्स के मध्य से हुआ। आपने दक्षिणी एशियाई संगीत सीखना शुरू किया। हिन्दुस्तानी कलाकारों से परिचित होने लगे। इसके बाद पहली बार भारत आये और सितार सीखने की कोशिश की परन्तु सफल नहीं हुये। फिर जब 28 वर्ष के हुये तो एडिनवर्ग विश्वविद्यालय से संगीत में पीएचडी करने की सोची तो बनारस में पं. देबाशीष सान्यल और पं. आशीष जयसवाल से सितार और गायन सीखना शुरू किया। सितार वादन में आपके गुरु जी ने वादन शैली उ. विलायत खां और पं. निखिल बैनर्जी के तत्वों को मिलाकर अनुठी शैली और मुक्त शैली का निर्माण किया।

व्यक्तिगत रूप से आपका मानना है कि सितार किसी भी अन्य वाद्य से पूर्णता भिन्न है। यह एक सुंदर और आकर्षक वाद्य है। सितार एक भारतीय वाद्य यंत्र के रूप में लगभग

²⁹⁷ ईमेल द्वारा mggau@wandadoo.fr 11-10-2024

एक अलग इतिहास और परम्परा रखती है। जिसे पश्चिमी शैली ने आयात किया है। आपके लिये हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत परम्परा काफी अलग है। संगीतकारों को शास्त्रीय सिद्धान्तों और तकनीकी राग, ताल आदि का पालन करना चाहिए।

आप सितार वादन की कक्षाएँ भी लेते हैं सप्ताह में 3 दिन जो 3 समूहों में होती है—

- 1) प्रथम शुरुवाती लोगों के लिये
- 2) मध्यवर्ती लोगों के लिये
- 3) तीसरी ऑनलाईन

हर कक्षा में 8 छात्र है। डेढ़ घंटे (1.5) समय की कक्षा होती है। पहले महीने तकनीक सीखाने का काम किया जाता है फिर राग पहला, राग यमन करवाया जाता है। जो 3 महीने चलता है। छात्रों को मंच प्रदर्शन भी करवाया जाता है।²⁹⁸

5.3.38 जॉमस हेमिलटन (कनाडा)

आप कनाडा से है। आपने दक्षिणी एशिया संगीत का अध्ययन करते हुए 40 वर्ष से अधिक समय बिताया है, आप भारत में 14 वर्ष तक रहे भी है। आपने राधिक मोहन मेत्रा और सुश्री कल्याणी राय सहित प्रसिद्ध संगीतकारों के पास से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखा। कलकत्ता के रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय के वाद्य संगीत में मास्टर की डिग्री ली। क्वींस यूनिवर्सिटी, बेलफास्ट, उत्तरी आयरलैंड से पीएचडी की है। आपका शोध कार्य कलकत्ता में सितार संगीत: एक नृवांश विज्ञान संबंधी अध्ययन। यह कनाडा और भारत में प्रकाशित हुई है। आप सितार, सरोद, मंडोलिन, गिटार आदि वाद्य बजाते हैं। कनाडा में इंटर कल्चर, आरकैस्ट्रा के कलाकार है। आपके अनुसार उस्ताद अलाऊद्दीन खां, पं. रवि शंकर और गोकुल नाग जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने सितार को प्रचलित किया। फिर धीरे-धीरे भारत से कलाकार यूरोप आने लगे। 1960 और 1970 के दशक में सितार का उपयोग पश्चिमी संगीत में होने लगा तो पश्चिमी लोगों ने सितार सीखना आरंभ किया। कुछ

²⁹⁸ ईमेल के माध्यम से alecsitar@gmail.com 26 नवम्बर 2022

लोग भारत भी आये सितार सीखने के लिये। इसका महत्वपूर्ण कारण सितार की मधुर ध्वनि और पश्चिमी संगीत में इसका उपयोग है। आप बैनकुवर में सितार वादन की ओर अतर-सांस्कृतिक वाद्यवृंद में भी सितार वादन कर चुके हैं।²⁹⁹

5.3.39 टोमो होकीन नीदरलैंड

आपने सितार वादन 1986 में शुरू किया। आप विख्यात सितार वादक पं. बुद्धादित्य मुखर्जी के शिष्य हैं। आप लंदन में श्रीमती रूपा पनेसर से भी सीख रहे हैं। आप संगीत को साधना मानते हैं और आपका मानना है कि यह हमारे मन और आत्मा की भूख मिटाती है। यह ही हमारी असल में खुराक है जो मानव को भागवान से अधिक पास लाने में मददगार है। ईश्वर प्राप्ति का सबसे सरल मार्ग यही है।³⁰⁰

5.3.40 बैज़मीन डिज़ुबस (इज़राइल)

आप इज़राइल से हैं, आपने 30 वर्ष पहले भारत आकर सितार वादन की शिक्षा लेने शुरू की थी। आपने बनारस में बहुत समय गया तट पर बिताया। भारत इज़राइली लोगों में अपनी कला और संस्कृति को लेकर बहुत प्रसिद्ध है। इज़राइल में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम होते रहते हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ लोक गीत भी खूब बजाया। वही एक संगीत समारोह में आप अपने गुरु से पहली बार मिले। जो कि एक लंबा दौर लिये हुए हैं। पश्चिमी सभ्यता का किसी अलग संस्कृति से मिलना अच्छा है। आपके बहुत सारे वीडियो सोशल मीडिय पर मिलते हैं। आप विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देते हैं आपने बहुत से संगीत सम्मेलनों व कार्यक्रमों में सितार वादन प्रस्तुत किया है।³⁰¹

निष्कर्ष –आज विश्व के हर कोने में सितार वादक मिल जाते हैं जिनकी सितार वादन में गहन रुचि है जिन्होंने बहुत ही लगन और परिश्रम से सितार वादन की शिक्षा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संगीतज्ञों से ली है। यही कारण है कि आज सितार विश्व के हर कोने में सुनने को मिल जाता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रति विदेशियों के प्रेम और स्नेह का

²⁹⁹साक्षात्कार, दूरभाष जामेस हेमिलान 11 मई, 2023

³⁰⁰साक्षात्कार, दूरभाष द्वारा टोमो होकीन, 5 मई, 2024 tommo.helkhen@tiscali.nl

³⁰¹bennydj@gmail.com

पता चलता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ पल्लवित हो रही है। सनातन धर्म, रीति-रिवाज, त्यौहार और हिंदी भाषा भी विदेशी लोग संगीत के साथ अपना रहे हैं। विदेशियों का यह मानना है कि जो आन्तरिक और आध्यात्मिक सकून हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में है वो कहीं नहीं है। तभी तो विदेशों में लोग महँगी टिकट खरीद कर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों में देखने और सुनने जाते हैं। भारत ने पुरे विश्व को संगीत और योग साधना से अवगत करवाया है। संगीत भी योग क्रिया का एक माध्यम है। योग साधना से ध्यान केंद्रित होता है और संगीत इसका सबसे सरल माध्यम है जब गायक या वादक षड्ज का अभ्यास करते हैं तो उनका ध्यान केंद्रित हो जाता है इसलिये संगीत को अध्यात्म के साथ जोड़ा जाता है, और विदेशी लोग इसी कस्तूरी को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ढूँढते हैं। सोशल मीडिया में देखा जाता है कि विदेशी कितनी लगन और श्रद्धाभाव के साथ सितार वादन सीखते हैं। देश और विदेश में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों में विदेशी सितार वादक भी सितार वादन करते देखे जाते हैं।

5.4 वैश्विक स्तर पर सितार वादन के अध्ययन के विषय में अनुभवी कलाकारों के सुझाव

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विश्व स्तर पर प्रसिद्ध प्राप्त करने और उसे विश्वव्यापी बनाने में हमारे कलाकारों का बहुमूल्य योगदान रहा है। किसी भी देश या भाषा से उसके संगीत का रसापन नहीं किया जा सकता बल्कि संगीत तो अपने आप में एक रस है जो मानव को अपनी ओर आकर्षित करता है। फिर चाहे वो अमेरिका का ओपरा हो या फिर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का राग बिहाग हो। संगीत अपनी सुगन्ध में समाहित करवा ही लेता है। संगीत मानव के मन के भावों का वह सुन्दर सोपान है जो मानव की दिनभर की भाग दौड़ से ऊपर उठाकर तारो ताजा महसूस करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शास्त्रीय संगीत के सभी वाद्यों में सितार वाद्य अपना अहम और खास स्थान रखती है। सितार वाद्य को विश्व प्रसिद्ध करने व लोकप्रिय करने में पं. रवि शंकर जी के दिये योगदान को हर कोई समर्थन करता है। विदेशी कलाकार के जी वेस्टमैन का कहना

है पं. रवि शंकर ने सितार वाद्य को विश्व प्रसिद्ध बनाया।³⁰² यही कारण है कि भारतीय संस्कृति भी विश्व में अपनी पकड़ मजबूत बनाये हुये हैं। उ. शाहिद परवेज जी के कथानुसार पं. रवि शंकर जी ने अमेरिका में और उ. विलायत खां जी ने यूरोप में सितार वाद्य को बहुत प्रचलित किया। उस समय लोग केवल सितार और तबला दोनों भारतीय वाद्य यंत्रों को ही प्रमुखता देते थे। शास्त्रीय संगीत को समूचे विश्व में प्रचलित करने के लिये हमारे गुरुओं और उस्तादों ने बहुत सारे विदेशी दौरे भी किये। जिसका परिणाम आज विश्व के मानचित्र पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपनी छाप छोड़े हुये हैं।³⁰³ सितार वाद्य के अध्ययन के लिये हमारे कलाकारों ने अथक मेहनत की है जिसका साक्षात दर्शन हमारे संगीत पर दिखाई देता है।

5.4.1 उ. शाहिद परवेज

सितार वाद्य के उन्नयन के लिये कलाकारों के सुझाव पद्म श्री उ. शाहिद परवेज जी के साथ साक्षात्कार में उ. जी ने बताया कि सितार वाद्य के उन्नयन के लिये हमारे स्कूलों और कालेजों में सितार वाद्य का प्रचार करना चाहिये। यद्यपि स्पीक मैके संस्था अपना काम बाखुबी कर रही है। परन्तु इसके अतिरिक्त हमारी सरकार और अन्य संगीत विद्वानों और संगीत से प्यार करने वालों को भी आगे आना चाहिये। सितार हमारी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रमुख वाद्य है जिसको आजकल भारत में लोग कम बजा रहे हैं क्योंकि कोई भी इतनी मेहनत और परिश्रम करने को तैयार नहीं है क्योंकि जितना रियाज किया जायेगा उसका उतना ही प्रभाव पड़ता है। इसलिये युवाओं को सितार के साथ जोड़ा जाना चाहिये।³⁰⁴

5.4.2 उ. निशात खां

उ. निशात खां ईटावा घराने के नामचीन व प्रसिद्ध सितार वादक है। आपने अपनी सितार वादन की प्रस्तुति दुनिया के हर कोने में दी है। सितार वादन में रियाज को अधिक

³⁰²साक्षात्कार केजी वेस्टमैन, 25 नवम्बर, 2022

³⁰³साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज, अक्टूबर 2024

³⁰⁴साक्षात्कार उ. शाहिद परवेज, अक्टूबर 2024

महत्व देते हुये आपका कहना है कि जितना हम रियाज करेंगे हमारे में कल्पना और सृजनात्मकता का चलन होगा जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की पहचान है क्योंकि हमारे संगीत में कुछ भी लिखा नहीं रहता। सब कुछ रियाज व अभ्यास के माध्यम से ही सार्थक होता है।³⁰⁵

5.4.3 उ. शुजात खां

उ. शुजात खां ईटावा घराने के नामचीन व प्रसिद्ध सितार वादक और उस्ताद विलायत खां के सुपुत्र हैं। आपने अपनी सितार वादन की प्रस्तुति दुनिया के हर कोने में दी है। आप का कहना है कि आजकल कई युवा सितार वादकों को अच्छे सितार वादकों को सुनना चाहिये आप सितार प्रशिक्षण के साथ – साथ, रियाज को अधिक महत्व देते हैं। आपका कहना है कि जितना हम रियाज करेंगे तो हमारे लिये नये – नये रास्ते खुलेंगे। रियाज व अभ्यास के माध्यम से ही संगीत रुपी सागर में मोती निकालते हैं।³⁰⁶

5.4.4 उस्ताद सैय्यद खां

दिल्ली घराने के उस्ताद सैय्यद खां के अनुसार सितार वाद्य बहुत प्राचीन वाद्य है हमारे घराने की 7वीं पीढ़ी है जो सितार बजा रही है। हमारे घराने में रियाज को बहुत महत्व दिया जाता है। जितना रियाज किया जायेगा उतनी ही उन्नति होती है। अच्छे लोगों से तालीम ली जाये और खूब रियाज किया जाए। इसके साथ ही सब कुछ हासिल होता है। सितार वाद्य को साधना आसान नहीं है। स्वर्गीय जाकिर हुसैन जी ने तबले जैसे संगत वाद्य को दुनिया में इतने ऊंचे स्तर पर उठा दिया। यह केवल रियाज से ही संभव हो पाया है।³⁰⁷

5.4.5 पं. हरविंदर शर्मा

पं. हरविंदर शर्मा जी, ईमदाद खानी घराने के वरिष्ठ कलाकार हैं उन्होंने सितार वादन में कीर्ति अर्जित की है। पंडित हरविंदर शर्मा जी सरकारी कालेज में प्रिंसीपल के

³⁰⁵ साक्षात्कार उ. निशात खां, अक्टूबर 2024

³⁰⁶ साक्षात्कार उ. निशात खां, अक्टूबर 2024

³⁰⁷ साक्षात्कार उ. सैय्यद खान, दिसम्बर 2023

पद से सेवानिवृत्त हुये हैं और ऑल इंडिया रेडियो के ए ग्रेड कलाकार है आपका मानना है कि सितार वाद्य के उन्नत के लिये हमारे स्कूलों में प्रावधान होना चाहिए। लोगों को, बच्चों को संगीत की तरफ अग्रसर करना चाहिए ताकि बच्चों को हमारी सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान हो सके।³⁰⁸

5.4.6 प्रो. डॉ. रवि शर्मा

प्रो. डॉ. रवि शर्मा जी रोहतक से विभागमुखी के तौर पर कार्यरत थे। आपने अपनी सेवा मुक्ति से पहले बहुत सारे विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा दी और उनको सितार वादन के साथ जोड़ा। आपका मानना है कि सितार वादन के साथ छात्रों को जोड़ना चाहिये। एक अध्यापक की कक्षा में इतनी साकारात्मक होनी चाहिये कि छात्र आपके साथ जुड़े रहे। सितार वाद्य के उन्नत हमें स्कूलों से शुरू करना चाहिये अगर छोटी आयु से ही छात्र संगीत के साथ जुड़ेंगे तो वो सितार वादन की ओर अधिक आकर्षित होंगे। उनको स्कूलों में सितार वादन की शिक्षा दी जानी चाहिए।³⁰⁹

5.4.7 पं. रविन्द्र नारायण गोस्वामी

पं. रविन्द्र नारायण गोस्वामी जी बनारस में रहते हैं। आपके देश और विदेश में अनगिनत शिष्य है आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटकी संगीत के ज्ञाता है। आप सितार वाद्य और वीणा वाद्य के सिद्ध हस्त कलाकार है। आप पेल यूनिवर्सिटी के रिसर्च फेलो रह चुके हैं। आपने चर्च के संगीत को भारतीय रागों के साथ शोध प्रस्तुत किया। आप देश-विदेश में सितार वादन की प्रस्तुति दे चुके हैं। आप हमेशा से ही छात्रों को संगीत के साथ जोड़ते आये हैं। आपका मानना है कि संगीत के साथ छात्रों में अनुशासन आता है जो कि इंसान में होना अति अनिवार्य है। आपके आयरलैंड जर्मनी, फ्रांस में बहुत से शिष्य है।³¹⁰

5.4.8 पं. नयन घोष

पं. नयन घोष हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दो प्रमुख वाद्य यंत्र सितार व तबला दोनों में ही सिद्धहस्त है। पं. नयन घोष जी का सितार वाद्य के प्रचार-प्रसार पर विचार है

³⁰⁸साक्षात्कार पं. हरविन्द्र शर्मा, अक्टूबर 2024

³⁰⁹साक्षात्कार डॉ. रवि शर्मा, अक्टूबर 2024

³¹⁰ साक्षात्कार पं. रविन्द्र नारायण गोस्वामी, अक्टूबर 2024

कि सरकार को बच्चों की शिक्षण व्यवस्था में संगीत को शामिल करना चाहिये। ऐसा करने से विद्यार्थियों में संगीतिक गुण उत्पन्न होते हैं। हिन्दुस्तानी सभ्यता में संगीत रचा बसा है। उसे आगे बढ़ाना चाहिये।³¹¹

5.4.9 पं. कुशल दास

पं. कुशल दास जी मैहर घराने के प्रसिद्ध कलाकार हैं। आपने देश-विदेश में सितार वादन का जौहर दिखाया है। आपके सितार वाद्य के उन्नयन को लेकर विचार है कि संगीत की शिक्षा जैसे कोलकत्ता में हर एक के लिये अनिवार्य होती है वैसे ही यह सब जगह पर होनी चाहिये परन्तु आजकल लोग संगीत के तरफ कम जा रहे हैं इसके लिये स्कूलों में शिक्षण प्रक्रिया शामिल होनी चाहिए।³¹²

5.4.10 पं. नरेन्द्र मिश्र

पं. नरेन्द्र मिश्र बनारस के प्रसिद्ध सितार वादक हैं आपके सितार वाद्य को उन्नयन के कालेजों में अनिवार्य हो पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिये। लोगों को संगीत के प्रति हर तरह का संगीत सीखना और समझना चाहिये। लोग थोड़ी देर के लिये सीखते हैं फिर छोड़ देते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए।³¹³

5.4.11 पं. पूर्वयन चैटर्जी

पं. पूर्वयन चैटर्जी के विचार अनुसार सितार वाद्य को प्रचलित करने में हमारे कलाकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऐसे ही कलाकारों की ज़रूरत है जो हमारे शास्त्रीय संगीत को ओर अधिक ऊँचाइयों तक ले जाये। संगीत शिक्षा का कार्य प्रारम्भिक शिक्षा के साथ ही शुरू हो जाना चाहिए। फिर उसके बाद यह शिष्य पर निर्भर करता है कि वह क्या करना चाहता है।³¹⁴

³¹¹साक्षात्कार पं. नयन घोष, अक्टूबर 2024

³¹²साक्षात्कार पं. कुशल दास, अक्टूबर 2024

³¹³साक्षात्कार पं. नरेन्द्र मिश्र, अक्टूबर 2024

³¹⁴साक्षात्कार पं. पूर्वयन चैटर्जी, अक्टूबर 2024

5.4.12 डॉ. सुप्रिया शाह

डॉ. सुप्रिया शाह बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में सितार वादिका के रूप में एसोसिएट प्रोफेसर के तौर पर कार्यरत हैं। आप मधुबनी घराने से हैं। आपके अनुसार संगीत शिक्षा से विद्यार्थियों में नैतिकता के गुण आते हैं। इसीलिये संगीत की शिक्षा प्रत्येक के लिये होनी चाहिये क्योंकि यह भावों से जुड़ा हुआ है। इंसान भावनाओं से ही तो बना हुआ है। इसीलिये संगीत शिक्षा सबको ग्रहण करनी चाहिये।³¹⁵

5.4.13 श्री राज कुमार राठौर

जयपुर घराने के सितार वादक श्री राज कुमार राठौर जी के अनुसार सितार वादन का प्रचलन पीछे समय के मुकाबले बीच में थोड़ा कम हो गया था। परंतु आजकल फिर से बढ़ गया है। अगर देखा जाये जयपुर और दिल्ली में 20% सितार वाद्य के छात्रों में ईजाफा हुआ है। बीच में सितार वादन के पिछड़ने का एक बड़ा कारण संगीत का पश्चिमीकरण रहा है। बच्चे पाश्चात्य संगीत की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। सितार वाद्य पर कठिन अभ्यास और मेहनत नहीं करते बल्कि गिटार सीखना पसंद करते हैं। सितार वादन के तकनीकी विकास के लिये जैसे- मींड, कृतन, जमजमा आदि क्रियाओं के लिए बहुत अभ्यास करना पड़ता है। इसलिये छात्र मेहनत नहीं करते। विदेशों में जहां - जहां पं रविशंकर जी गये हैं वहां - वहां सितार वादन अधिक प्रचलित हो गया।³¹⁶

5.4.14 श्री अदनान खां

श्री अदनान खां का मानना है कि सितार वाद्य के उन्नयन पर आप के विचार हैं कि युवाओं को चाहिये कि संगीत का सच्चे मन से रियाज करे क्योंकि स्वर ही ईश्वर है। लाइव प्रसारण और रिकॉर्डिंग में बहुत फर्क है। इसलिए खूब रियाज करे, सोशल नेटवर्किंग और मीडिया के पीछे मत भागे। संगीत के छात्र इतना रियाज करें कि 10 मिनट की सोशल मीडिया पर रील नहीं बल्कि 2 घंटों का स्टेज का अनुभव प्राप्त हो।³¹⁷

³¹⁵साक्षात्कार डॉ. सुप्रिया शाह, अक्टूबर 2024

³¹⁶साक्षात्कार श्री राज कुमार राठौर, दिसंबर 2024

³¹⁷साक्षात्कार अदनान खान, अक्टूबर 2024

5.4.15 श्री शुभ्रनील सरकार

कोलकत्ता के प्रसिद्ध सितार वादक और पद्म श्री उ. शाहिद परवेज के शिष्य शुभ्रनील सरकार का मानना है कि सितार वाद्य के प्रचार-प्रसार के लिये सरकार द्वारा स्कॉलरशिप दी जानी चाहिये जैसे विदेशों में दी जाती है जिससे हमारा संगीत और सितार वाद्य दोनों की ही प्रगति है। विदेशों के छात्रवृत्तियां कलाकारों और छात्रों दोनों को दी जाती है अगर वैसा ही यहाँ पर दिया जाये तो बहुत अच्छा होगा।³¹⁸

5.4.16 डॉ. श्रावणी बिस्वास

आपके अनुसार सितार वादिका होने के साथ साथ मैं एक अध्यापिका भी हूँ। आजकल विद्यार्थी सितार पर इतना अभ्यास नहीं करते जिस कारण बहुत कम विद्यार्थी सितार वाद्य अपनाते हैं। संगीत के विद्यार्थी में अनुशासन और नियमता का गुण होना चाहिए। तभी वह संगीत को सीख सकते हैं।³¹⁹

5.4.17 डॉ. हुकम चंद

आप रोहतक विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में कार्यरत हैं। आप के अनुसार सितार वाद्य का प्रचार विदेशों में होने की असली वजह हमारे कलाकारों का विदेश में पलायन करना है। चाहे उसका कारण जो भी रहा हो। भारतीय शास्त्रीय संगीत विदेशी लोग अपना रहे हैं यह अच्छी बात है पर भारतीयों को भी अपनी इस अनमोल विरासत को सम्भलना चाहिये। बॉलीवुड संगीत में सितार वादकों का काम उत्तम श्रेणी का रहा है। यह सिलसिला चलता रहना चाहिए।³²⁰

5.4.18 पं. राम कुमार मिश्र

राम कुमार मिश्र जो कि एक प्रसिद्ध तबला वादक है जो देश विदेश में खूब प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं का मानना है कि सितार वाद्य के उन्नयन के लिये सभी को मिल कर

³¹⁸ साक्षात्कार शुभ्रनील सरकार, अक्टूबर 2024

³¹⁹ साक्षात्कार डॉ. श्रावणी बिस्वास, अक्टूबर 2024

³²⁰ साक्षात्कार डॉ. हुकम चन्द, अक्टूबर 2024

कोशिश करनी चाहिये। यह हमारा भारतीय वाद्य है जिसको विदेशी अपना रहे है उसका प्रचार देश में भी उतना ही होना चाहिए।³²¹

5.4.19 सरदार जगजीत सिंह

सरदार जगजीत सिंह के विचार अनुसार सितार वादन के उन्नयन के लिये सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए। यह हमारा प्राचीन वाद्य है। इसका प्रसार जितना विदेश में हो रहा है उतना देश में भी होना चाहिए। युवाओं को सितार वादन के प्रति प्रेरित करना चाहिए।³²²

5.4.20 पं. चंद्रशेखर

आप जी के अनुसार सितार वादन एक मुश्किल वाद्य है। इसको रियाज के साथ ही सीखा जा सकता है। इसके उन्नयन के लिये स्कूलों और कालेजों से ही शुरूआत होनी चाहिए।³²³

5.4.21 उ. असगर खां

आपके अनुसार कि मैं एक वायलिन वादक हूँ परन्तु मैं तंत्री वाद्यों के प्रचार-प्रसार के लिये सरकार को विशेष कदम उठाने की अपील करता हूँ। तंत्री वाद्यों का विकास होना बहुत ज़रूरी है।³²⁴

इस तरह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य के उन्नयन के लिए प्रतिष्ठित कलाकारों के विचारों को रेखांकित किया है। आज के समय में सितार का उन्नयन तकनीक और वैश्विक स्वीकार्यता के संगम से हो रहा है। सितार के उन्नयन के लिए नई पीढ़ी को सिखाना सबसे महत्वपूर्ण है। गुरु-शिष्य परंपरा को आधुनिक स्कूल/कॉलेज शिक्षा के साथ जोड़ना और ऑनलाइन वर्कशॉप आयोजित करना आजकल बहुत प्रभावी साबित हो रहा है। सितार वाद्य जो हमारे देश में ही नहीं अब विदेशियों का भी पसंदीदा वाद्य यंत्र बन चुका है उसके और अधिक उत्थान के लिये अभी बहुत काम बाकी है।

³²¹ साक्षात्कार राम कुमार मिश्र, अक्टूबर 2024

³²² साक्षात्कार स. जगजीत सिंह, अक्टूबर 2024

³²³ साक्षात्कार पं. चंद्रशेखर, अक्टूबर 2024

³²⁴ साक्षात्कार उ. असगर खां अक्टूबर 2024

निष्कर्ष

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत अपनी सभ्यता और संस्कृति को अपने साथ समाहित किये हुये है। संगीत किसी भी सभ्यता संस्कृति का आईना माना जाता है। संगीत इसी प्राचीन संस्कृति की धरोहर है। आज हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत ने जिस तरह से विश्व के मानचित्र पर अपनी छाप छोड़ी है उसके बारे में तो सब जानते ही हैं। संगीत भावों का प्रबल प्रवाह है। जिसको समय की सीमाओं में कभी बांधा नहीं जा सकता है। संगीत कला एक ऐसी कला है जो मानव के आहत मन एवं आत्मा को क्षणभर के लिए ही शांति और सुकून प्रदान करने में सक्षम है। कला मानव की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। मनुष्य का सुसंस्कृत हृदय उसको केवल वहीं प्रेरणा देता है कि उसे जीवन में जो भी बनना है उसमें उसकी सुरुचि की अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

संगीत प्रकृति द्वारा दिया गया एक अनमोल रत्न है, जो कुदरत ने मानव को दिया है। मानव जीवन के आरंभ से संगीत मनुष्य के साथ जुड़ा हुआ है। संगीत मानव की आत्मा के साथ जुड़ा हुआ है। इतिहास पर नजर डाले तो हमें पता चलता है, कि संगीत मानव के मनोभावों का सुनहरा चित्रण है, मानवीय मन का दर्पण है। जो सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ निरंतर बढ़ता गया।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की सभी विधाओं में तंत्री वाद्ययंत्रों का अपना एक अलग मुकाम है। हमारे पौराणिक ग्रंथ इसके साक्षी हैं। धनुष की तनकार से तार वाले वाद्य बनाने की प्रेरणा मानव को अपने दैनिक जीवन से ही मिली। समय परिवर्तन के साथ वाद्ययंत्रों का स्वरूप भी परिवर्तित होता गया।

हमारे पौराणिक वेदों और ग्रंथों में अनगिनत वीणाओं के नामों का उल्लेख मिलता है। यह माना गया है कि प्राचीन समय में गेय तत्व की प्रधानता थी परंतु संगीतिक अभिव्यक्ति के लिये तंत्र का होना भी अनिवार्य था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उस समय में गायन के साथ वादन प्रचलित था। यंत्र और गात्र का वर्णन विशेष रूप से ग्रंथों में मिलता

है, जिसमें यह स्पष्ट है कि गायन के साथ वादन परंपरा भी प्लावित हो चुकी थी। गायन के साथ सदा ही वादन होता आया है।

वादन के महत्व को हमारे ऋषि मुनियों ने भी स्वीकार किया है और उसे अपनाया है। वाद्यों की ध्वनि से ही शब्दों को संगीतात्मक सजीवता प्रदान होती है। स्वर और लय संगीत की आत्मा होते हैं। लय देने का काम वाद्यों द्वारा किया जाता है। गायन और वादन जब एक साथ मिलकर पारस्परिक एकरूपता स्थापित करते हैं, तो परमानन्द की प्राप्ति होती है। गायन में वाद्यों को संगत करने के लिये प्रयोग किया जाता रहा है। मध्य काल पूर्णता विकास का काल रहा है। वैदिक काल और भरत काल को वीणा का प्रारंभिक काल कहा जा सकता है जो कि छठी शताब्दी तक रहा, सातवीं सदी में वीणा में परिवर्तन के दौर का आरंभ हुआ। मध्य काल के प्रारंभ में वीणा का स्वतंत्र वादन आरंभ नहीं हुआ था। गायन के साथ वादन अभिन्न अंग था। प्राचीन वीणा के आधार पर ही सितार वाद्ययंत्र का निर्माण हुआ। विभिन्न विद्वान संगीतज्ञों ने सितार वाद्य के अविष्कार के संदर्भ में मत दिए भिन्न हैं। तम्बुरा से सितार का शास्त्रीय संगीत में पदार्पण हुआ। जिस में परिवर्तन खुसरो खां ने किये, समय के साथ सितार वादकों ने और भी बहुत सारे परिवर्तन किये जैसे तारों की संख्या को बढ़ाने, जवारी और तुम्बा में समयानुसार परिवर्तन किए। सितार का पूर्ण विस्तृत रूप आज हमारे समक्ष उपस्थित है।

सितार जो कि एक भारतीय वाद्य यंत्र है, आज पुरे विश्व में सुना जा सकता है। विदेशियों के हाथ में सितार देख कर उत्सुकता होती थी कि इस के बारे में जाना जाये, उसी उत्सुकता वश मैंने इस विषय का चयन किया था।

आज तक के शोध में सबसे प्रमुख बात यह है कि अगर पं.रविशंकर जी ने विदेश का रुख ना किया होता, तो आज हमारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत जिस मुकाम पर है शायद वैसा ना होता। अमेरिका के बीटल्स ग्रुप के जॉर्ज हैरिसन और यहूदी मैनहिन के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता क्योंकि उस समय पश्चिमी देशों में बीटल्स ग्रुप का बहुत बोलबाला था। जॉर्ज हैरिसन ने पं.रविशंकर जी से सितार सीखना शुरू कर दिया था, जिस कारण लोग इस ओर आकर्षित हुए और सितार की लोकप्रियता बहुत बढ़ गई।

जो परचम पं.रविशंकर जी ने लहराया था। उसको अन्य कलाकारों द्वारा भी ऊँचा उठाया गया। उ. विलायत खाँ, पं., निखिल बैनर्जी, पं. मणिलाल नाग, पं. देबू चौधरी, उ. अब्दुल हलिम ज़फ़र खाँ, पं. बुद्धादित्य मुखर्जी, सुरबहार वादिका अन्नपूर्णा देवी, उ. रईस खाँ, उ. शुजात खाँ, उ. शाहिद परवेज, पं. हरविंदर शर्मा, पं. नीलाद्रि कुमार, श्रीमति अनुष्का शंकर, पं. पूर्वयन चट्टर्जी, आदि जैसे दिग्गज कलाकारों ने आगे बढ़ाया। सभी कलाकार अलग-अलग घरानों से संबन्ध रखते हैं, पर समानता इस बात की थी कि सभी उच्चकोटि के कलाकार हैं, और सब ने अपने अद्भुत सितार वादन से दुनिया को मंत्रमुग्ध कर दिया। इन्होंने देश में ही नहीं विदेश में भी खूब नाम कमाया। जिसके फलस्वरूप आज विदेशों में सितार वादन सुनने को मिलता है। कुछ YouTube Link का भी ब्यौरा दिया गया है जिससे यह पता चलता है की सितार वाद्य विदेशों में कितना प्रचलित है। विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा देने के लिए कई संस्थाएं व विद्यालय खोलें गये। जहां केवल छात्रों को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ही नहीं दी जा रही है बल्कि हिंदुस्तानी सभ्यता व संस्कृति का भी प्रचार हो रहा है। एक समाचार पत्रिका में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अमेरिका में प्रचार प्रसार पर लिखा है की कैसे अमेरिका की नई पीढ़ी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को अपना रही है इसके विपरीत भारतीय युवा पीढ़ी पाश्चात्य संगीत और फिल्मी संगीत की ओर जा रही है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य के वैश्विक स्तर पर प्रचार व प्रसार एवम लोकप्रियता के मुख्य पहलू:

विदेश में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की छाप :

कलाकारों का विदेशों की ओर रुख करने से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विदेश में पहचान मिलनी आरंभ हो गई थी। प्रतिष्ठित सितार वादकों और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कलाकारों की लगन और आगे बढ़ाने की तीव्र इच्छाशक्ति की बदौलत ही आज सितार वाद्य सम्पूर्ण विश्व में बजाया जा रहा है।

विदेशी सरजमीं पर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वादन का प्रशिक्षण :

आज विदेशों में लगभग हर देश में आप को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विद्यालय , संगीत अकादमी आदि मिल जायेंगे जहां पर सितार वादन की शिक्षा दी जा रही है । कलाकारों द्वारा संगीत अकादमियाँ स्थापित की गई हैं। कई विदेशी कलाकारों ने भी भारत आकर सितार वादन सीख कर अपनी अकादमियाँ खोली हैं। विदेशी विश्वविद्यालयों में भी सितार वादन की शिक्षा दी जाती है।

विदेशों में संगीत कार्यक्रम, समारोह , सम्मेलन और संगीत बैठकों का आयोजन :

शुरुआती दौर में कलाकारों को विदेशों में मंच नहीं मिलता था। पं. रविशंकर के बीटल्स ग्रुप के साथ मिलने पर उनको मंच मिलना आरम्भ हुआ। उनके बाद जितने भी कलाकार गये उनको भी मंच मुश्किल से मिला। शुरु में 10 से 15 लोग ही सितार वादन सुनने आते थे और आजकल 3 से 4 हजार लोग टिकट खर्च करके सितार वादन सुनने आते हैं। जिससे सितार वाद्य का विदेशों में लोकप्रिय होने के बारे में पता चलता है। जितने कार्यक्रम देश में होते हैं उतने ही विदेशों में भी होते हैं। नियमित रूप से संगीत बैठकें भी आयोजित की जाती हैं।

विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव :

कलाकारों ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के साथ नवीन प्रयोग एवम् विभिन्न संस्कृतियों के साथ मिलकर नए फ्यूजन बनाए गये हैं। जैसे, सितार के साथ पश्चिमी वाद्ययंत्रों का उपयोग, या पश्चिमी संगीत शैलियों का भारतीय संगीत में समावेश कर नवीन धुनों का निर्माण किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग :

संगीतकारों ने आजकल ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से दुनिया भर के कलाकारों के साथ बातचीत और सहयोग करना शुरू कर दिया है, जिससे संगीत की विविधता और पहुंच में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

फिल्मों और मीडिया का प्रभाव :

भारतीय सिनेमा ने हमेशा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ऊपर आधारित अनंत गीतों की धुनें बनाई जाती हैं। इस तरह संगीत के वैश्वीकरण के साथ, भारतीय फिल्मों और संगीत ने वैश्विक स्तर पर दर्शकों तक अपनी एक अलग पहचान और जगह बनाई है।

कलाकारों की भूमिका :

भारतीय संगीतकारों ने दुनिया भर में अपनी कला का प्रदर्शन करके और अपनी कला को साँझा करके हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पहले पहल तो कलाकार रोजी रोटी के लिये विदेश जाते थे क्योंकि वहां पर उनको एक – एक कार्यक्रम की अच्छी खासी रकम दी जाती है। पर बाद में कई कलाकार विदेश में ही जा बस गये और वहां पर अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार- प्रसार करने लगे।

स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:

वैश्वीकरण से न केवल कलाकारों को लाभ हुआ है, बल्कि इससे पर्यटन, संगीत उद्योग और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिला है।

संगीत की विविधता:

विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव से भारतीय संगीत में नई शैलियों और तकनीकों का विकास हुआ है। विदेशी कलाकार सितार वाद्य को केवल शास्त्रीय संगीत के वाद्य हेतु ही इस्तेमाल नहीं करते अपितु सितार को अलग- अलग संगीत शैलियों के साथ भी बजाया जाता है।

कलाकारों के लिए अवसर:

वैश्वीकरण ने भारतीय कलाकारों को दुनिया भर में अपनी कला का प्रदर्शन करने और एक बड़ा दर्शक वर्ग बनने के अवसर प्रदान किया है, और तो और उनको आय और धन संचय करने का भी साधन मिल गया।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान:

भारतीय संगीत के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के बीच विचारों और शैलियों का आदान-प्रदान तो हुआ है परन्तु इसके साथ- साथ हमारे त्योहार, रिति रिवाज, धर्म और योगा भी विदेश में काफी लोकप्रिय हो गया।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव:

पारंपरिक शैलियों का नुकसान:

कुछ लोगों का मानना है कि वैश्वीकरण के कारण पारंपरिक भारतीय संगीत शैलियों को नुकसान हो सकता है, क्योंकि आधुनिक शैलियों का अधिक प्रभाव हो सकता है।

बाज़ार की प्रतिस्पर्धा:

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय होने से भारतीय संगीत बाज़ार में प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है, जिससे कुछ कलाकारों के लिए अपनी पहचान बनाना मुश्किल हो सकता है।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और सितार वाद्य ने वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति कि एक मज़बूत पहचान बनाई है जिसका सबसे बड़ा सकारात्मक प्रभाव सांस्कृतिक आदान - प्रदान और वैश्विक संलयन रहा है। इसने हिंदुस्तानी संगीत को एक वैश्विक मंच दिया है और इसे दुनिया भर के दर्शकों और संगीत रसिकों के लिए सुलभ बना दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महेन्द्र, नीलम बाला, आधुनिक अंतराष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. गर्ग, प्रभुलाल, 'वसंत' 'संगीत विशारद', प्रकाशक संगीत कार्यलय हाथरस 1989.
3. कुमार, अशोक 'यमन', 'संगीतरत्नावली', , प्रकाशक अभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़, 2008.
4. भटनागर, रजनी - सितार वादन की शैलियाँ, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
5. डॉ. शिखा भृगुवंशी, संगीत शास्त्र एवं संगीत प्रदर्शन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली
6. बलबीर चन्दर, सितार वादक पं बुधादित्य मुखर्जी और उनकी वादन शैली
7. पं विजय शंकर मिश्र, अंतर्नाद: सुर और साज, कनिष्ठ पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
8. महाडीक, डॉ. प्रकाश - भारतीय संगीत के तंत्री वाद्य, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, (1994)
9. जोशी, उमेश - भारतीय संगीत का इतिहास, मानसरोवर प्रकाशन, फिरोज़बाद (1957)
10. शर्मा डॉ. स्वतंत्र - भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण, टी0एन0 भार्गव एण्ड सन्स, इलाहाबाद (1995)
11. शर्मा, अमल दास - संगीतयन, आर्य प्रकाशन मण्डल, गांधी नगर, दिल्ली, (1984)
12. पराजपे, डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर - संगीत बोध, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपल (1972)
13. मिश्र लालमणि - भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, (1973)

14. सिंह, डॉ. ठाकुर जयदेव- भारतीय संगीत का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, (द्वितीय संस्करण 2010)
15. शर्मा, भगवतशरण- भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत कार्यालय, हाथरस (2010)
16. शर्मा, अनुपमा, आधुनिक तंत्रवाद्यो की जननी वीणा, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2012)
17. राय, डॉ. वी० एस० सुदीप – जहान-ए-सितार, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (प्रथम संस्करण 2004)
18. निगम, डॉ. रेखा, सितार वाद्य की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन एवम सितार के बाज़ का विकास क्रम, मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली
19. गर्ग डॉ. लक्ष्मी नारायण, सितार शिक्षा, संगीत कार्यालय, हाथरस, (1990)
20. शर्मा, पं भगवतशरण – सितार मलिका संगीत कार्यालय, हाथरस (1995)
21. बाबरा, डॉ. जोगिंदर सिंह - भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवम विकास, ABS पब्लिकेशन, (1994)
22. मिश्र, पं विजयशंकर -अंतनाद : सुर और साज़, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2004)
23. भृगुवंशी, डॉ. शिखा- संगीत शास्त्र एवम् संगीत प्रदर्शन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2013)
24. शर्मा, डॉ. स्वाति - भारतीय संगीत का इतिहास, आस्था पब्लिकेशन, जयपुर (2007)
25. भृगुवंशी, डॉ. रचना - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तंत्र वादन शैलियाँ, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2014)

26. शर्मा, बीना – हिंदुस्तानी संगीत में तंत्र वादकों का योगदान, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2006)
27. जैन, डॉ. वीणा - सेनिया घराना और सितार वादन शैली, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2008)
28. भट्टाचार्य, शंकर लाल – कोमल गंधार उस्ताद विलायत खां, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2005)
29. सिंह, डॉ. संगीता- उत्तर भारतीय संगीत में तंत्र वाद्यों का स्थान एवम उपयोगिता, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली
30. शर्मा, शांतनु, प्रतिष्ठित सितार एवम सरोद वादकों की साधना और संघर्ष, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (2005)
31. चौबे, डॉ. सुशील कुमार- संगीत के घरानों की चर्चा, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ (1977)
32. सितार वादन एवम संगति वाद्य, अभिषेक पब्लिकेशन (2007)

अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ

33. Dr. Mrs. Gautmi Bhagat Ramyad -Global Impact of Indian Music, Published by Sanjay Prakashan, Darya Ganj, Delhi, 2007.
34. Prof S Bandopadhyaya- Musical Instruments of India, Chukhamba Orientalia, (1980)
35. Pt. Ravi Shankar- My music my life, Vikas Publication, Bombay (1968)
36. James sadler Hemilton- Sitar Musician Calcutta, Motilal Banarsidas Publishars (1994)
37. Dr. Prateek Choudhari< Plucked instruments of northen India with special reference of Sitar, sanjay Parkashan, Dariyaganj, New Delhi.

38. Stephen, Slawek - Sitar Technique in Nibandh Forms, Motilal Banarsidass Publication, New Delhi
39. Parveen Patnaik 'Music and Society Multicultural Issues' Page No. 99, Published by Ajay Verma for Common Wealth Publishers, New Delhi, 2006.
40. Chetana kumara, A study of gharana- Rawat Publication, Jaipur(2005)
41. "No Compromise in his Art- an interview with Vilayat Khan". The Hindu newspaper. 28 March 2004. Retrieved 7 April 2017.
42. "Ustad Imrat Khan – Light and Shadows".
43. Kasliwal, Suneera, Classical Musical Instruments, Rupa.co
44. Khan, Abdul Halim Jaffer. Jafferkhani Baaj: Innovation in Sitar Music. Kohinoor Printers, 2000.
45. Journal of Sangeet Research Academy, Interaction Between Vocal & Instrumental Music, K. G. Ginde

इण्टरनेट कई माध्यम द्वारा –

- <https://youtu.be/d9i0t1S21Vc> Raag Bharvi, in Landon
- <https://youtu.be/yg1vAkYE2ek> Raag mishra piloo
- <https://youtu.be/4XVjC13IBSU> Raag khamaz
- <https://youtu.be/CDgwWVTGcyA> in San Diego
- <https://youtu.be/QvxzEMjAUeU> raag maand in San Diego

- <https://youtu.be/0hHAJK5XQTY> Sitar fusion in Germany
- <https://youtu.be/HQsB856J4SQ> raag yaman in Scotland
- <https://youtu.be/xf1AB3YaH7o> fusion in Barcelona
- <https://youtu.be/5Kv88gbzMgw>
- <https://youtu.be/8gETGDygUaM> in Istanbul
- <https://youtu.be/WWEuHSPJ8u8> raag yaman in Glasgow
- <https://youtu.be/3plgl0RqJtc> in suchihell
- <https://youtu.be/Ujr2OcoX8Fc> in Birmingham
- <https://youtube.com/shorts/QLAT5TrXpjQ?feature=share> fusion in Bristol
- <https://youtu.be/HNGrVvrWQ1U> fusion in Moscow
- Bola Baja YouTube channel for sitar
- <https://youtu.be/KpCnmLp1cSI> fusion
- <https://youtu.be/Y2yUzaxY7hQ> fusion
- <https://youtu.be/4ZquAlQfNLI> fusion
- <https://youtu.be/xQ4DfUcDv1M> fusion
- <https://youtu.be/EYuySBiBA4k> in UK
- https://youtu.be/hg_vJWr_fyE foreign play sitar in manali
- <https://youtu.be/KJfUn9Md7wM> fusion in Barcelona
- <https://youtu.be/1-yXYyYM6UY> in Perth's

- <https://youtu.be/ia0gtdlIQSCE> fusion in Portland
- <https://youtu.be/syfy9tleZxE>
- <https://youtu.be/SjM8OjVwGQY> sitar in St.barnabas
- <https://youtu.be/4yZ8asCcNp4>
- <https://youtube.com/shorts/tA4OFZO9Zp8?feature=share> fusion in Moscow
- <https://youtu.be/llc9dAHOZ7M> in loys
- <https://youtu.be/0M0Zj3WRtMA> fusion at subway station
- <https://youtu.be/1mQR0yVkfJc> fusion
- <https://youtube.com/shorts/XsgcqhTKfa4?feature=share> in drama shala
- <https://youtu.be/oBjg1Vb8udU> fusion
- <https://youtu.be/gp1T4Npt0BQ> in Georgia
- <https://youtu.be/GVJ1oafOOu0> in Scotland
- <https://youtu.be/v8oArivHDig> in Scotland
- https://youtu.be/GyaWL_H7K-l

You tube Links of Performances of Artists

Pt. Ravi Shankar performance list -

- https://youtu.be/lk60ObnbIOk?si=cutK3MGMGSZOO5q_

- <https://youtu.be/0HRYbPVOMWY?si=QYPDpQhRDwFa0Dfu>
- <https://youtu.be/Rxl6lkH9Mvo?si=qyEORpKs5cwTimoQBeatels> use indian theory
- <https://youtu.be/4ibepiQG434?si=j32NjZ719Gg8MJir> Raag Adi Basant 1986
- <https://youtu.be/4gWCiLexilY?si=Qxt01qLICmqpxPKC> (Ravi shankar on Dick cavett show)
- https://youtu.be/p-ijCe1xRWQ?si=pd7tvJ_oBtkSz92B Raag Kalyan 1974 at London Albert Hall
- https://youtu.be/3LcL0EmTxxE?si=PDhP64fyKA20w_hO 1967 Monterey pop festival RaagTodi
- https://youtu.be/OgawuDVFxfI?si=g_Cf28Exc0NdG8Bv 1974 Taranain USA
- <https://youtu.be/opdRDGwhs38?si=WzzudcqWGFy5KKGa> 10 June 1985 BBC
- https://youtu.be/Joyk_EMtzn0?si=VNmiHNp8CPrveYb7 1972 Seattle
- <https://youtu.be/YEXVVq0h7Ak?si=alpEfpY9PZ2sr3NE> 1969 Woodstock festival, Evening Raag
- <https://youtu.be/HsuFlxxrX8k?si=UepDvtfRIVtt4HuX> Monterey festival
- <https://youtu.be/o70Th80ferg?si=8CMSUFKUhuOUTFDT> 1967 Monterey festival Raag todi
- https://youtu.be/hg6nTQFHf78?si=6JyEXTB7rh7nyB_b practice video

- <https://youtu.be/o768WOGTdMo?si=dqNTxANuwqFiuBJN> 2010
Sydney Opera House
- <https://youtu.be/MWVhVuX7Xlg?si=XeKF0btBdCuKaVam> 1983 Raag
Tilak sham China
- <https://youtu.be/n1jb8eP823k?si=pWI2sDY33ZvdeMKD> 1982 Raag
Raag Tilak kamod & Raag Tilak shaym
- <https://youtu.be/n7hiiseS168?si=XwOmAAE7XpJo0nAW> 1983 China
- <https://youtu.be/lynxupgCOV0?si=HfUzDldxICO19gPa> Monterey Pop
festival Raag Pancham san ge ra
- https://youtu.be/suKfM2poRPw?si=4tdVycy_oq7ivQpT 1980 Western
Indi pop
- <https://youtu.be/zWTa7g32Ql4?si=QKdqQhPBzuaXeyPK> Raag
Khamaj1997 Birmingham
- <https://youtu.be/Ji2AeDgCBik?si=sm73NI-X21-zctM5> 2011 California
- https://youtu.be/lvaY3-E7Tol?si=spWU2ebgs4Kr_8Tp 1971, Soul of
Raaga
- https://youtu.be/ezeWmFLG9kM?si=gYdS4bH7lc2n9_6i Lecture
demonstration 1967 New York
- <https://youtu.be/p-m3mUBWVzl?si=cpTciLMK1S6pOhdG> practice
session
- <https://youtu.be/o768WOGTdMo?si=l31Y58van3x-Xa-T> Sydney
Opera House

- <https://youtu.be/PQvghsz5d9c?si=7lOK4s5l5vqzGH-y> 2012 Long Beach
- <https://youtu.be/s2x4ysNcjRw?si=Uo4u2b-rrSDxg83s> 1989 Tarana and Sandhya raag
- https://youtu.be/gID_eUUkalw?si=ClcAP4EiWewFSSoRPt. Ravi Shankar with George Harrison
- https://youtu.be/Nr3fc_lo7go?si=wmQoKsbcpROvGoiC Indo russian Cultural Event
- <https://youtu.be/fJ5ZBkZGW9U?si=f6D1diyaAcnjjD13> practice session with Yahudi Manhil
- https://youtu.be/il_xPncxSSo?si=xBwzjFa4yE-JEwm4 1971 Raag Vibhass
- <https://youtu.be/d5WzaOq1310?si=FbLyxhPJ05ghO68v> 1973 New york
- <https://youtu.be/GBk6SmDVmg8?si=aEPz44Xs1LOyQrqW> 2010 Australia
- <https://youtu.be/aloCdpp3RCo?si=MxYqS970rcEUxX3k> 1966 Finland Raag mala
- https://youtu.be/ENBkVGE6_zc?si=-YYuJBtb_WP4LQFk 1973 Chilli
- https://youtu.be/YluhkugrmwU?si=4Ec1F7wUZXS_jNxV 1984 San Francisco Raag Jaijaiwanti
- <https://youtu.be/nyp09G1jFO0?si=lt5KBoN0GxLBDVDo> 1989 Orchestra in Moscow

- <https://youtu.be/OoDSg8AJBc0?si=U5cwTcGG7oLbMkqS> 1989 Royal Albert Hall Raag Hemant
- https://youtu.be/7HEvilhvxlA?si=bWPoVx_u8xi8veI5 1981 American TV interview
- <https://youtu.be/E7K-gMAJSi4?si=fmLNh0tfKEuAdA9E> 1969 Woodstock festival Raag Manj Khamaz
- <https://youtu.be/8e1NWkvD1zs?si=MLQXNG-hmaMxiT6w> 1966 Puriyakalyan
- https://youtu.be/TY_CHQhZ4No?si=vw2xs7Oc74AoNT2v Raag piloo
- https://youtu.be/xUoorgJBePE?si=62LW7OeS3j-WV_pc Raag Maru bihag in Paris
- <https://youtu.be/ihdK7eGeKaQ?si=HLbNQlBBzBTj3cnW> Raag Mala at Escondito
- https://youtu.be/EOITMqHcMe4?si=dB_pa8JUlubWHVLI Raag Mala
- <https://youtu.be/UPUquGwJwBU?si=ngwVUWrjTYhwZH-k> 1980 Italy video lesson
- https://youtu.be/_LCrh1oXukw?si=OkddMIKnhWTi2gnz Symphony
- https://youtu.be/GiW_bijW6SA?si=fD_GG3Y9n83AQQMj Sitar VilionDuet
- <https://youtu.be/DVe3OUflwas?si=JQPwLrp0ldnRp5kn> Bangladesh
- https://youtu.be/8YNveaC2ADc?si=v_MqLo3yPPqYHODJ Raag Hansdhwani at London

- https://youtu.be/NTLV4nqll0c?si=9_wnPs4TGxorXpQP1979 Dubrovnik
Raag Jogeshwari
- <https://youtu.be/0HRYbPVOMWY?si=vs98yWf3n8DFiFGp> 1971
Interview USA
- https://youtu.be/c0LqlGSgESM?si=F2oNHxozHnXcg4_I Raag Piloo
1988
- <https://youtu.be/2SQ0Rx4ar0E?si=mGCUhNe0D4DnPOM-> Raag Bihag

Ustad Vilayat khan performances-

- <https://youtu.be/0M93u2AG1sY?si=0NSt2nCjOqkVtHS1> 1987 USA
Bangal Folk dhun
- <https://youtu.be/3PufF9NVd6g?si=3-Ok3GnS4mjTQD6d> 1989
California
- <https://youtu.be/bWUyYDhIB1c?si=oLmYcaFDY8V6QZmL> 1944
- https://youtu.be/hiMSgaHv3mM?si=_HfMxTwhSNQAngP- Raag Desh
Cambridge
- <https://youtu.be/FSuJEf9ZkBA?si=dNuwZBAx9RIka-8o> Raag Gawati
1987 Columbus
- <https://youtu.be/KWKWWjcQBVA?si=1RT1YurTtAXkFjjU> Raag Bharvi
- https://youtu.be/p_QcldXSnz0?si=u6imPGUgCRM_ghJs Carnegie Hall
- <https://youtu.be/wAh9p2UaTEU?si=FuV4ctJkApr0EygY> 1973
Barcelona
- <https://youtu.be/m5Wx-lAcRVI?si=tkcoRZbRdniTtu2W> 1978 Raag
Marwa

- <https://youtu.be/8Awz6-mMJbl?si=6QH0fU94Pqq8egvE> 1987
Shudkhamaz USA
- https://youtu.be/gbLPW51lquA?si=iaw_-HTdtBKK1jhJJugalbandi
- <https://youtu.be/BsLzW-J1bCs?si=8RLGnMqUBFlqGejw> Dhun
- <https://youtu.be/G7TCu3MI0HQ?si=l-5rLb4fikas7mXt> 1966 Raag
Jinjhoti
- <https://youtu.be/TTFSX5ERUXk?si=pGTnQAETAaae-TKV> 1993 Royal
Festival Hall London
- https://youtu.be/r5W3txvZCmM?si=9bwA5_h5jmqTmzJy Raag
Rageshwari New jersey
- <https://youtu.be/3ZPEysHpMHE?si=c0QbrWBrBaOkHnFF> 1993 Asia
TV
- https://youtu.be/mrfZ8TzY294?si=FaCu_TFheGLIsFNW 2002 Royal
Festival Hall
- <https://youtu.be/VD5IZISTlbY?si=ENIC7QuiWqoLrPwT> 1978 Raag
Multani
- <https://youtu.be/Fxfk6z3vzlQ?si=G1v9SwG5soFVLEaf> interview
- <https://youtu.be/yIA2lOy2wb0?si=-YiKc7ncyS5-pgIK> Raag
KhamazEdison, USA2002
- https://youtu.be/1_PZ1RnSvGs?si=GGkayLNyYVCK_iG4 Raag Hamer
1993, Royal Albert Hall
- <https://youtu.be/EAAoOul8u0M?si=p0jiXxv3lB9W5ZRf> Raag Marwa

- <https://youtu.be/mmjapz5GzZ0?si=JzIXSGSGl8kkisEx> 1997 Raag shay Kalyan
- San Frisco
- https://youtu.be/3m_SP9YRWn4?feature=shared 1981 Raag Bharav Bahar London
- https://youtu.be/3pnJCgRNS50?si=LAKlv_3PHV9M0c85 1993 Royal Albert Hall, jugalbandi
- <https://youtu.be/pHBkNOTaACw?si=ZBEdmAGE4duRwxjo> 1978 Raag Tilakkamaod USA
- <https://youtu.be/alzUMLEzQIY?si=3GfHcDWUWDJWMwY1> Raag Puriyakalyanat New York
- <https://youtu.be/eTq85UGWoto?si=x5NgmkN0217U9lcO> BBC Radio
- <https://youtu.be/aS9XldRxzXs?si=DNo25HvnQWpEjmXU> Raag Jog BBC
- <https://youtu.be/Z8wncWmM50w?si=xRW1cQXCchoARrg6> Interview
- https://youtu.be/Pwmr-AZYR9k?si=fiER_VWxQlgYlmzx Interview
- <https://youtu.be/mrfZ8TzY294?si=IAkxIWYAuZnb1zGt2002Raag> DarbariKahnra London

Pandit Nikhil Banerjee

- <https://youtu.be/-AmK0LX1IEI?si=GiObyWHOUlwWPrat> 1968 lecture demonstration

- https://youtu.be/5Ow_4Dg3QEI?si=JH1OohxeYWG55QcY Interview
- <https://youtu.be/G5B42fVjc9U?si=JgaxJpzbZBBJsc7L> 1968 Raag Desh USA
- <https://youtu.be/RgnfYCvJhyg?si=uP0fck24dDgbWMf8> 1984 Raag bharvi USA
- <https://youtu.be/E75SfJgCyoE?si=6huAv0IPLhNs1A09> 1971 Raag Bageshwari Germany
- https://youtu.be/ONZd4NTu1eo?si=EuJt2N_aYKvciBUN 1976, Raag Desh Zurich, Switzerland
- <https://youtu.be/CyLvs4DexX8?si=3EPWs9E2LmlebvQS> 1985, Raag Piloo, USA
- <https://youtu.be/RbjwIkDcpjo?si=-D6DBDc-o9If326Bkalashreel>
- <https://youtu.be/X-OgouxdtGY?si=GEVQObPCq-ITkPbc> 1980, Raag Malguji, Munich
- <https://youtu.be/owFzEmdvIBw?si=oy18QO2XO2KyUPVV> 1986 Eastern eye
- <https://youtu.be/YdHe4dTc4Dw?si=IMgCKacVHq8f1qH9> Raag Bhimplasi 1970
- <https://youtu.be/d3xejzuZPYs?si=EvBwQl0H4fvD6vFI> Raag Kirwani
- <https://youtu.be/ZDKrFcFlm8?si=bDwpcTQ9ZktlVLWn> Raag Bharvi
- https://youtu.be/ssO9fHiDJrg?si=_XVilKDR3YJnQ5Ok Raag Malkauns
- <https://youtu.be/yLMHGjXxjl0?si=FPv2MHh8zIWH8Thx> 1971, Raag Bhimplasi, London

- https://youtu.be/_-agD7oQoeM?si=B0cZXQ2o6feiVTWIDocumentary
- <https://youtu.be/gDzBxkMwHu8?si=i4uxVWXgRP8cA4sr> 1985, Marwa, Puriyakalyan USA
- https://youtu.be/BbfPRc_8J8Q?si=4Y6Gq-5-y56wB1RM workshop by NikhilBanerjee
- <https://youtu.be/1HRYHLH8vvM?si=wk5-Dv6ErSpUrpfa> 1970 Raag Hemant Amsterdam
- https://johnbcosgrave.com/archive/Nikhil_Banerjee/NB_1st_Ireland_visit/p1_Ravi_Shankar_1982.jpg News paper cutting
- <https://youtu.be/CzNb97ds0e4?si=g6lDWJc7aQuDg8YF1980> Raag MalgujiGermany
- https://youtu.be/5Ow_4Dg3QEI?si=eXGyoOpnHqkkEVI
- Radio KPFA Berkeley, live to air, 1967. Chandrakaushalap, Khamajrupak. Tabla: MahapurushMisra
- 202 Raga Monomanjari-1968 (MahapurushMisra, tabla)
- 204: Concert, Berkeley, 1982 (Part 2). MisraKafialap, rupak, medium and fast tintal. Tabla: Swapan Chaudhuri
- 207: Concert, Berkeley, 1982 (Part 1). PurabiKalyanalap, medium and fast tintal. Tabla: Swapan Chaudhuri (2 CDs)
- ShyamKedar. (Zakir Hussain). I believe this to be Mr. Banerjee's only digital live recording. The packaging states "Recorded live from a concert in Canada." Actually Festival from India, San Francisco October 6, 1985

- SNCD 70595: Shree. (Anindo Chatterjee) "Recorded live from a concert in London."
- SNCD 8886: PurabiKalyan, ZilaKafi, Kirwani. Tabla: Anindo Chatterjee (from LPs)
- SNCD 70391: Nat Bhairav, MisraKhamaj, Baul melody. Tabla: Anindo Chatterjee (from LPs)
- SNCD 70296 Rageshree. (Anindo Chatterjee) "Recorded live from a concert in London."
- SNCD 71096: Kalashree, Abhogi. (Anindo Chatterjee) "Recorded live from a concert in Stockholm."
- SNCD 70198: PuriaDhanashree. (Abhijit Banerjee) "Recorded live from a concert in London."
- SNCD 71198: Malkauns. (Samir Chatterjee) "Recorded live from a concert in Bath, Somerset."
- SNCD 70499: live, vol.2 with a 59-minute Hemant.

Audiorec

- ARCD 2005: Concert, Stockholm, 1978. Pilooalap, rupak, ektal and tintal. Tabla: Anindo Chatterjee
- ARCD 0000: new release Concert, Stockholm, 197?. Desh. Tabla: Anindo Chatterjee (from Amigo Musik LPs. Both these pieces also showed up on French Sonodisc LPs)
- 6244 (HMV) Live at San Francisco, recorded '85 released '89, Marwa (alap, jor, jhala)

- 6245 (HMV) Live at San Francisco, recorded '85 released '89, PuriyaKalyan (gat in vilambit and drutteental). Tabla:: Swapan Chaudhuri
- ManjKhamaj: short alap, rupak, dipchandi, tintal (Anindo Chatterjee) St John's Church, Berkeley, August 26, 1978

Abdul halimjaffar khan

- <https://youtu.be/QE21KqrZXCM?si=IHYNwttxwoe2Jb7O> 1970 Bangladesh
- https://youtu.be/Y1r9xKh2jF8?si=j4lqb_qcv8jG-HA31968 Raag AhirBharav

Pt. Debuchuahary

- <https://youtu.be/tkAoP5pllww?si=ipKyQP19dHpmMrwo> Interview
- https://youtu.be/CiW4KEAfteE?si=xV_A-43LT8whV4P 1988 Lecture demonstration
- https://youtu.be/O5Ft_yQZxm4?si=J2HhMi_xQNe1zotBeathak
- <https://youtu.be/-m-kdu90S5A?si=EA-KezsQ7PKUoqRs> 1992, BasantBahar Barkley Music school
- <https://youtu.be/zAp-s6jAuas?si=edasUANU19UNvzn3> UMAK festival 2020
- https://youtu.be/VY9NQasnwrI?si=3Tdf1Fvh_gLP2wY- world music day
- <https://youtu.be/9sH4a9J33UA?si=R7wblHoYueaTjyQa> 1990

- https://youtu.be/ZF8jTdMt_k?si=DpIJPDWq4rqgpwff UMAK festival 2016
- https://youtu.be/P19NJKx8ly8?si=kHnAqL_5a_UT0pZf 1992 Khamaz, USA
- <https://youtu.be/5809nggUoc0?si=Y7erXjRShqxNexwo> 1968 Raag Maru bihag UK
- https://youtu.be/Nwk3cHz2BmY?si=7QWqe7hhll_ObNq- Norway 2017
- https://youtu.be/-St_xzk8wr4?si=PWF19_yKc_3u7URP Hungary
- https://youtu.be/GZ-xBc_r-UQ?si=oZoPgoZ2-iEGCkD4 2010 Washington

Pt. Bhudaditamukherjee

- <https://youtu.be/Ssi3ep7DfpA?si=OGtiL0WFKSFI-XRTDarbariKahnra>
- https://youtu.be/o1nVJvxgW6M?si=085O_cc7UKks4rbt 2016 Raag ChandanikedarToronto
- https://youtu.be/uQR0SzkJINM?si=ukTA_KzbqWxthvZE, 1990, UK, World tour series.
- <https://youtu.be/f8EoFTWOfgw?si=6vmGx8kBr6-RI3CI> Raag Yaman Toronto
- <https://youtu.be/pFenlZgBEns?si=Imrhulf3o7nVF7dS> 2017 darbarfestival

- <https://youtu.be/FMJHfkbgrXo?si=fytYiOHFtMZGnlbh> 2021 Raag NandDarbar festival
- <https://youtu.be/A-GoQJcird4?si=3v-5ztGsKkV6VEe22013> Raag Lalit BBC London
- https://youtu.be/4Urka2_va6U?si=OFwheL9nqiFy1rsl Raag Yaman
- https://youtu.be/9_gvdJ1RHK4?si=x-jVP09H4ITL4w7w 2019
- https://youtu.be/V_ozaJXAwqY?si=Ecy8G6Lj4QgqqWj3 Raag HameerAmsterdam
- <https://youtu.be/DBY0JtiUpnc?si=bMD9YC3mjR4fAHBJ> interview
- <https://youtu.be/ATko7S9JtaU?si=wGRT9z0G-NOBfe4g> Raag Rageshwari, Zurich
- https://youtu.be/1kSk-2QzmTA?si=qggO53v4I_dORfc- 1984 ShudSarang Canada
- <https://youtu.be/QX6okSI91C0?si=tHMjTh87J3qf-h4k> Raag Jhinjhoti
- <https://youtu.be/aYvMVYhucw8?si=njNsBqODXmxKzRXO> AhirBharav
- https://youtu.be/tuz7FXEnPIU?si=tM89-SzEjL2_IDRp Bathak at Canada
- <https://youtu.be/QviRG18Byoc?si=jAURLP2X32rs8ed0> 1996, Raag Piloo, Leicester
- <https://www.aimrec.com/budhahditya-mukherjee>
- <https://academic.oup.com/book/5572/chapter/148544864> Research Paper <https://www.soas.ac.uk/about/richard-widdess> visiting Prof
- <https://www.darbar.org/article/sitar-from-different-angles-pt-2>Artical

- <https://www.facebook.com/share/p/22xxC3w9KNTeLawd/?mibextid=xfxF2i>
- <https://www.facebook.com/share/p/kHHJ2UCEssCHtUpP/?mibextid=xfxF2i>
- https://youtu.be/rrGL18Wm3r8?si=ij8aKIP_6vGBPria 1990 Uk Raag Ramkali
- https://youtu.be/_QirRFhGnbE?si=7_q5AU-TKROCNuH6 1990 Raag Desh UK

Pt. Manilal Nag

- राग जोग, भैरवी (रे स्पीगल, तबला): राग रिकॉर्ड्स 215
- राग ललित (आनंद गोपाल बंदोपाध्याय, तबला): राग रिकॉर्ड्स 213।
- उत्तर भारत का शास्त्रीय संगीत – राग सुहा कणाद (महापुरुष मिश्र, तबला): कोच वर्ल्ड म्यूजिक लाइब्रेरी KICC 5111; किंगरिकॉर्ड्स (जापान) K30Y 5101.
- उत्तर भारत का शास्त्रीय संगीत – राग पूरियाधनाश्री, रागेश्री (महापुरुष मिश्र, तबला): कोच वर्ल्ड म्यूजिक लाइब्रेरी केआईसीसी 5112; किंगरिकॉर्ड्स K30Y 5119।
- राग दरबारी कनाड़ा, मिश्र काफ़ी (संखा चटर्जी, तबला): दुनिया रिकॉर्ड्स वित्तीय वर्ष 8025 (इटली)
- जुगलबंदी, एक शेनार्ई और सितार युगल। अली अहमद हुसैन खां शेनार्ई, सुबेनचटर्जी तबला। राग देश: राइमरिकॉर्ड्स आरसीडी 9805
- सितार और सहनार्ई– मणिलाल नाग और अली अहमद हुसैन शेनार्ई, सुबेनचटर्जी तबला। मारवा, अभोगी, आनंद कल्याण, पूर्वी धुन बिस्वासबीआईएस 115
- हार्मनी ऑफ स्ट्रिंग्सवीजी जोग वायलिन, आनंद गोपाल भंडोपाध्याय तबला: राग श्याम कल्याण, राग बसंत, राग बिहारी। विस्टा इंडिया VIST 114770

- राग चारुकेशी (सोम नाथ उपाध्याय, तबला): रविशंकर संगीत मंडल आरएसएमसी-18।
- राग जोगकौंस, सरस्वती (साबिर खां, तबला): ग्रामोफोन कंपनी ऑफ इंडिया एसटीसीएस 02बी 6189।
- द जापान कॉन्सर्ट्स, 1985 – राग पुरिया कल्याण, मिश्रा पिलू, खमाज (महापुरुष मिश्रा, तबला): राग रिकॉर्ड्स 103
- राग्सऑफ़डॉ.न, 2020 (समर साहा, तबला) – राग बिलाशकानीतोडी, राग भैरवी: ऐमरेक (बाल्टीमोरएमडी, यूएसए)

Pt. Mani lalnaag

- https://youtu.be/AspVusMOy00?si=si4naqPzcmse2_XS san josh USA, 2020
- https://youtu.be/3JTjakC4tEw?si=dM299CljkU0oz_Ob UK, 2021, Raag Madhuvanti
- <https://youtu.be/p-WTayhgmlI?si=pCTbqRqOi8c0rOmm>

U. Rais khan

- <https://youtu.be/ZQXJIS7jrlw?si=2eEwuWvkjZtZ3i2u>, Afghanistan, 1978, Raag Khamaz
- <https://youtu.be/pkWAWZGIW3E?si=Scm9Ilk3V-zND7im>, BBC, Tilakkamod.
- <https://youtu.be/FmE99LZrvww?si=Xjtoegf2ThXnjOaP>, Barkley, California, 1989.
- <https://youtu.be/rDVt3MZZUvU?si=6oalwRIjoetAcNvA>, BBC London, 1973

- https://youtu.be/c5udZHnHA3w?si=_iE8-x-ZjyyoxuaS, 1993, London, Raag Marwa.
- https://youtu.be/9EAOU8V_I4w?si=vMTh1-Q4hZ26YigG, 1989, Raag Jonjhoti, California
- https://youtu.be/G1xCsmeUz7I?si=xj8-2Rea_KVZ85ie 1980, Raag Yaman, Germany
- <https://youtu.be/y0zDPE4URz4?si=LVLyShjXcGpy0g4s> 1989, USA, NandKalyan

परिशिष्ट

Name	Gharana	Month & year	Interviews Pictures
Pt. Dr. Harvinder Sharma	Imdadkhani Gharana	Feb 2021	
Ustad Sahid Parwaj	Imdadkhani Gharana	Nov 2021	
Pt. Purbaiyan Chatterjee	Mehar Gharana	Dec 2022	
Ustad Asgar Khan	Violinist	Dec 2022	
Prof. Dr. Ravi sharma	Imdadkhani Gharana	March 2022	

Name	Gharana	Month & year	Interviews Pictures
Prof. Narinder Narula	Imdadkhani Gharana	March 2022	
Pt. kinner seen	Imdadkhani Gharana	March 2022	
Ustad Kiran pal Singh	Santoor Player	April 2022	
S. Jagjeet singh	Imdadkhani Gharana	April 2022	
Ustad Harvinder Singh	Senia Gharana	Oct 2022	
Pt. Chander Shekhar	Mehar Gharana	Oct 2022	

Name	Gharana	Month & year	Interviews Pictures
Sh. Shubhranil Sarakar	Imdadkhani Gharana	Nov 2022	
Pt. Narayan Goswami	Banaras Ghrana	Nov 2022	
Shri Ashok Nayar	Shri Ashok Nayar	Nov 2022	
Ustad Dharamvir Singh	Imdadkhani Gharana	Nov 2022	
Pt. Ajit Singh	Gwalior Gharana	Nov 2022	
Pt. Manu Seen	Imdadkhani Gharana	Nov 2022	
Dr. Rohini Shajpal	Mahar Gharana	Nov 2022	

Name	Gharana	Month & year	Interviews Pictures
Sh. Rahul Ranade	Classical Singer	April 2023	
Dr. Supriya Shah	Mehar Gharana & Madhubani Gharana	May. 2023	
Mrs. Seema Gulati	Imdadkhani Gharana	May 2023	
Sh. Kiran Seth	Founder of SPIC MACAY	Aug 2023	
Pt. Santosh Nahar	Violinist	Dec 2023	

Name	Gharana	Month & year	Interviews Pictures
Ustad. Nishat Khan	Imdadkhani Gharana	Dec 2023	
Pt. Nayan Ghosh	Bangash Gharana\ Farrukhbad Gharana	Dec 2023	
Pt. Ram Kumar	Banaras Gharana	Dec 2023	
Ustad Sayeed Khan	Delhi Gharana	Dec 2023	
Adnan Khan	Delhi Gharana	Dec 2023	

Name	Gharana	Month & year	Interviews Pictures
Pt. Madan Oak	Santoor Player	Dec 2023	
Pt. Kushal Dass	Sitar Player	Sept., 2024	
Pt. Narender Mishra	Sitar Player	Sept. 2024	
Dr. Sharvni Vishwash	Sitar Player	Sept. 2024	
Dr. Hukam Chand	Classical Singer	April, 2023	

विदेशों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सम्मेलन



Pt Ravi Shankar with his sitar protégé, Beatle George Harrison.

THE ALI AKBAR COLLEGE OF MUSIC PRESENTS

IN CELEBRATION OF
MAESTRO ALI AKBAR KHAN'S BIRTHDAY

Maestro **RAVI SHANKAR** Maestro **ALI AKBAR KHAN**

with Ustad **ALLA RAKHA**

APRIL 14, 2020 | 7 PM - 10:30 PM PST
ONE NIGHT ONLY - ON THE AACM HOME PAGE

In presenting this concert, we would also like to honor Pandit Ravi Shankar's 80th Birthday. These two musical giants are joined by the great Ustad Alla Rakha on Tabla. A golden era of music is sure to enjoy once again, if only for a few hours.

Please join us at www.aacm.org

Handwritten signatures: Nitesh, \$80, Nitesh, Nitesh, Nitesh

INDIA
the ultimate fantasy

clixon/merchant enterprises ltd. in association with blammingdale's presents

ustad vilayat khan
the world's greatest star player

Boston, Jordan Hall on Saturday, April 29th at 8 pm.
New York, Alice Tully Hall, Lincoln Center on Thursday, May 4th at 8 pm.
Washington D.C., Baird Auditorium, National Museum of Natural History on Tuesday, May 9th and Wednesday, May 10th at 8 pm.

Tickets are now available. For further information call (212) 421-2271.

**Indian music at
Carysfort College,
Blackrock**
By Barra Boydell

IT HAPPENS perhaps a handful of times a lifetime, an experience such as this. On Friday evening at Carysfort College, Blackrock, when the outstanding Indian musician, Nikhil Banerjee (sitar), with Anindo Chatterjee (tabla), performed. On European Music Day, when musicians from all over Europe have been playing and enjoyed an experience which showed us that our national great music is a worldwide scale, for though the traditions of Indian and of European music are far removed from each other, these performances brought us into contact with a common truth.

Nikhil Banerjee is distinguished from some of the players before him more widely known. Even in that he does not talk the supposed Occidental preference for shorter works, and also by the sheer brilliance of his technique and musical invention. In his playing, as in Anindo Chatterjee's, the world seemed contained in his fingertips.

Two ragas were played, "Purja Kalyan" and "Zila Kham", both building up to breathtakingly beautiful exchanges between sitar and tabla. Although such ragas are not new, time did not exist while they were played, and in the first while a state of bliss was only to discover higher and more states as the ragas developed.

I am deeply grateful to Joan and Mary Conner, who brought Nikhil Banerjee to this country. Hopefully, a return visit will be possible, a return visit who believes in music would want to miss.

Pandit Ravi Shankar with Beatle George Harrison. (Express Archive Photo)

University of London
Logan Hall
20 Bedford Way, WC1 – Nearest Tube: Russell Square



Return visit and only London concert of India's most distinguished musician.

Nikhil Banerjee
sitar
with
Abhijit Banerjee
tabla

"...the most inspired playing on the sitar I have heard in years." – *The Times*
"...such balance between technical capability, emotional content, raga purity and aesthetic awareness cannot be heard in the world of sitar to-day." – *Statesman, Calcutta*
"Musicians of such genius must on no account be missed." – *Sydney Morning Herald*

Saturday, 24 November 8 pm

Tickets: £8.50, £7.50, £6.50, £5.50, £4.00
Available from: Management
(please apply with stamped addressed envelope)
Also at the door 2 hours before the concert.

**RATAN MUKHERJEE
CONCERT MANAGEMENT**
31 NORWOOD AVENUE, WEMBLEY
MIDDLESEX, HA9 7JX, ENGLAND
TELEPHONE: 01-998 3572

**1983
WORLD TOUR**
India's most distinguished
musician in Concert



Nikhil Banerjee
...SITAR
with Anindo Chatterjee...TABLA

Saturday October 22 – 7:45 p.m.
Queen Elizabeth Hall
Greater London Council

TICKETS:
£2.50, £3.50, £4.50, £5.50, £6.50
Available from:
Royal Festival Hall Box Office,
London SE1 8XX (01-928 3191)

"...an evening of the rarest pleasure. This was sitar playing of the most poetic, technically dazzling, yet magical... his playing has descended to the point of absolute mastery."
"Nikhil played like an angel and I cannot imagine a single member of the audience not wanting many more years of such brilliant music... the most inspired playing on the sitar that I have heard in years."
"A truly acclaimed for his intensely individualistic pursuit of the poetry of raga..."

MANAGEMENT: Ratan Mukherjee Concert Management,
31 Norwood Avenue, Wembley, Middlesex



WEST MEETS EAST: The group with Abdul Halim Jaffer Khan. Photo: From Taj Mahal Foxtrot: The Story Of Bombay's Jazz Age, sourced from the collection of Nakul Mehta

AACM PRESENTS THE 5TH ANNUAL
Birthday Tribute to
MAESTRO ALI AKBAR KHAN



MORNING/AFTERNOON:
£15 General, £10 Members, Seated and Standing
£7 £1000 and
Introduction by Ravi Shankar
Wallace Hursey and Jim Hunt Chown
£12.000
Rafael Vicensini – Veena
Ravi Shankar – Tabla
£12000
William Russell – Sitar
Indira McEneaney and William Russell –
Ravi Shankar and Veena Ensemble
£12000
Arjun Venug – Sitar
Nikhil Chatterjee – Tabla
£12000
Mehar Banerjee – Sitar
Gurpreet Kaur – Sitar
£12000
Rajesh Khosla – Veena
Ravi Shankar – Tabla
£12000
Vishal Datta – Harmonium
£12000
Pandi Swapan Choudhuri – Tabla

EVENING:
£15 General, £10 Members, Seated and Standing
£7 £1000 and
Introduction by Ravi Shankar
Wallace Hursey and Jim Hunt Chown
£12.000
Rafael Vicensini – Veena
Ravi Shankar – Tabla
£12000
William Russell – Sitar
Indira McEneaney and William Russell –
Ravi Shankar and Veena Ensemble
£12000
Arjun Venug – Sitar
Nikhil Chatterjee – Tabla
£12000
Mehar Banerjee – Sitar
Gurpreet Kaur – Sitar
£12000
Rajesh Khosla – Veena
Ravi Shankar – Tabla
£12000
Vishal Datta – Harmonium
£12000
Pandi Swapan Choudhuri – Tabla

SATURDAY, APRIL 19th 2014
7 PM – 10 PM, at the ALI AKBAR COLLEGE OF MUSIC
215 West End Avenue, San Rafael, CA
We have an intimate hall, and seating is open. Tickets are only available at the door.
Lunch will be available. Info: 415.454-6373 or www.aacm.org

MAESTRO ALI AKBAR KHAN'S
ANNUAL BIRTHDAY TRIBUTE
FRIDAY, APRIL 15th, 2011

Join us for a day of music to celebrate the Maestro. In the afternoon we will have great ensembles of North Indian classical vocal and instrumental groups, and in the evening we will have a special performance by the Maestro. There will be instruments on hand for you and your children to try.

The evening concert will feature some of Indian classical music's greatest artists. First will be world renowned sitar Shambhu Khan, followed by a group of four on tabla by Ali Akbar Khan's sons, including Anish Khan and young sensation Alim Khan. The evening concert will also feature the Maestro's son and master of percussion at AACM, Swapan Choudhuri.

**AASHISH KHAN
SHUJAT KHAN
ALIM KHAN
And
SWAPAN CHAUDHURI**

Afternoon
2 PM
Vocal Duet –
Tanzim Free Jones and Wallace Hursey

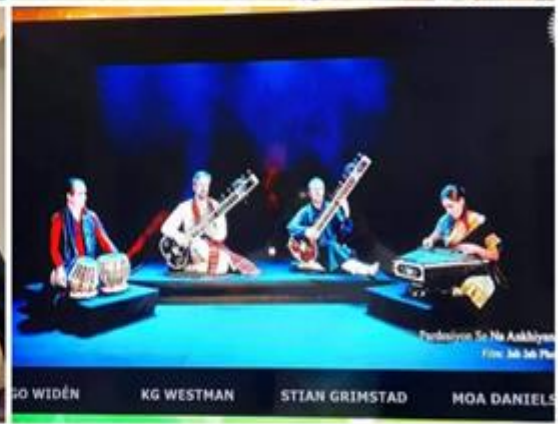
3 PM
Instrumental Ensemble:
Mastar Bhattacharya – sarode
Arjun Venug – sitar
Manik Khan – sarode
Benjamin Krall – sitar
and Shambhu Khan – tabla

4 PM
AACM Tabla Ensemble –
composed by Pandit Swapan Choudhuri

Evening
7 PM
Shambhu Khan – sitar
Swapan Choudhuri – tabla

9 PM
Shambhu Khan and Alim Khan – sarode
Swapan Choudhuri – tabla

Afternoon: FREE. Evening ticket prices: \$22.50 advance - \$24.50 at the door
Freight and Storage: 2070 Ardmore Street, Berkeley CA, 94704
For more information: 510.864-2628 or www.birthday11.org or www.aacm.org





В программе нас ожидает выступление ребят из...
See more

See translation



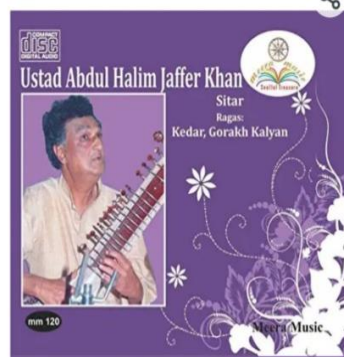
▶ Раги Ганги — Митра

6:18

▶ Дарья Черняева, Олег... — 1. Исцеление голосом (Voice Heal...

21:00

Ustad Abdul Halim Jaffer Khan Vol -1, 2



Concerto di Musica Indiana

Ore 18.00 Sarod Ranjit Sengupta

Ore 19.30 Canto Shirin Sengupta
con Nihar Metha, Tabla



SARASWATI HOUSE, 11 SETTEMBRE 2016

Per informazioni:

info@musicaindiana.it | tel. 075802137



Dharambir Singh
13 Mar at 2:09 pm · 🌐

Remembering Aftab-e-sitar Ustad Vilayat Khan (28 Aug 1928 – 13 Mar 2004)
Remembering Ustad Ji on this day. Great moments to be cherished for being blessed to have been so close to the genius and legend. This image is his trip to London visiting his Peer Saheb and Mariyam the princess of Afghanistan. On their request he played a bandish in Chāyā Nat.



I wish I had a good print of this photo from a concert at Indiana University some years ago. It is the only good shot of me while performing with my good friend and superlative master of the tabla, Pandit Swapan Chaudhuri, who first provided tabla accompaniment for me in 1987!



Chhandayan presents

All-night Indian Music to Heal

Time: September 10th, 10 pm - 6 am (11th Sept.)

Details:

Chhandayan Youth Vocal Ensemble,
Dibyaka Chatterjee - tabla solo,
Hidayat Khan - sitar,
Anirban Dasgupta - sarod,
Sanjoy Banerjee - vocal, and
Tarun Bhattacharya - santoor
Sahid Parvez Khan - sitar

Accompanists: Anindo Chatterjee, Samir Chatterjee, Dibyanka Chatterjee, and others TBD

Venue: Social Hall, Chhandayan Center for Indian Music West
43rd Street, New York, NY, 10036 USA

For Tickets: www.viewcy.com

This is an Instagram event which will also stream live at www.viewcy.com/instagram/indian_music

Sensational Strings
 Raag-Mala Toronto in partnership with
 The Aga Khan Museum is proud to present
 a sitar recital of afternoon raags by AGA KHAN MUSEUM

Ustad Shahid Parvez Khan
Nitin Mitta Tabla

Sunday October 16th, 2022 at 4pm
 Aga Khan Museum Auditorium 77 Wynford Drive, Toronto



Tickets: \$40, \$30 (10% Member Discount)
www.agakhanmuseum.org

Limited number of \$10 tickets for full time students with valid ID
 Information & Student Tickets: raagmalatoronto@gmail.com

    Program Subject to Change

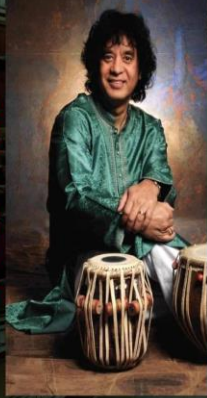
Getting ready for #Portland. Starting
 soundcheck. Hope to see you at the concert
 tonight 🙏.
 @amitkavthekar on tabla.
 With Kalakendra Performing Arts.

... See more



Zakir Hussain Tabla
Niladri Kumar Sitar

23. Okt - 11:00




akzent
 theater
 1040 theresianumgasse 18

Kartenvorverkauf: Mo-Sa 13:00-18:00
 Tel: 01 50165-13306
 Theater Akzent, Algenstrasse 37
www.akzent.at
www.facebook.com/akzent

European Tour
 From 22 Oct to 6 Nov 2022
Ustad Zakir Hussain
 &
Maestro Niladri Kumar



Mujeeb Dadarkar sound engineer

23 Oct Vienna, Theatre Akzent
 25 Oct Lisbon, Teatro da Trindade INATEL
 27 Oct Budapest, RaM Theater-GetCloser Concerts
 30 & 31 Oct Paris, Theatre de la Ville - les Abbesses
 01 Nov London, Union Chapel - Kashi Arts
 03 Nov Lyon, Grand Auditorium, Musée des confluences
 04 Nov Brussels, Hall M - Bozar.
 05 Nov Oslo, Cosmopolite Oslo World Music
 06 Nov Stockholm, Musikaliska Kvarteret, Stockholm Sangeet Festival.

Sun at 5:20 pm • Moscow, Russia • 🌐

A wonderful holiday of yoga, music, light energy 🧘‍♀️ 🎵 🌳 and great mood! Yoga Woman Day at the club @ilfclub 🐱 Thanks to the organizers, teachers @olgabox3, musicians @vgaluzinskii, all participants and of course you, Svetik @swetabonda20 ❤️❤️❤️ for the joy of communication, for the opportunity to combine music, yoga and knowledge into one Russ... See more

⚙️ • Rate this translation



casa
lara
APRESENTA
Recital música clássica Indiana
माँदे इग्रादाइ
com Helder Araújo Sitar

07.05 (sábado) | 19h30
Belo Horizonte-MG

Presenteie sua mãe
com esse lindo recital!

COMPRE JÁ OS
INGRESSOS!
(31) 99929-8410

www.casalara.com.br



Peter Davidian is with Ana Simonian and
Ծիրանի ծառ պարային ստուդիա.

Fri at 10:12 pm • 🌐

Some more pics from **RASAMANJARI** | An
Indo-Armenian Gala Live-in Concert in Yerevan



Getting ready for #Portland. Starting
soundcheck. Hope to see you at the concert
tonight 🙏.
@amitkavthekar on tabla,
With Kalakendra Performing Arts.

... See more



*Sitar and Tabla
at Harvard University*



Guruji
Tribute to Living Legend Sitar Maestro
Pt. Shyamal Chattopadhyay
& Celebrating the auspicious occasion of
Guru Purnima

Supported by


Consulate General of India
Perth

India@75



Susanta Chowdhury (Singapore), Suman Laha (USA – Los Angeles)
Kabita Ghosh (Australia), Alokesh Chandra (Austria – Vienna)
Abhirup Ghosh (India) & Meghna Nandi (Host)

24th July (Saturday) | 8pm (IST)

 **Yatrapath Cultural Society**  **LIVE**
<https://www.facebook.com/yatrapathculturalsociety/>
(Page Link)

स्टॉकहोम संगीत
STOCKHOLM SANGEET
FESTIVAL
Tickets out now!



ASHRAF SHARIF KHAN
SURANJANA GHOSH
MARIANNE SVASEK
VYSHNAVI KORLAKUNTA
....AND MORE

3 OCT 2021

WWW.STOCKHOLMSANGEET.SE

TRIBUTE TO AUSTRIA - 20 YEARS OF PERFORMING
Indian classical concert
Alokesh Chandra (sitar)
Gerhard Rosner (tabla)

Sa. 19.11.2022 19:30h
Su. 20.11.2022 11:00h



ALANKARA CENTRE
Grosse Mohrengasse 27, Top 3
Vienna 1020
Entrance: €20 one concert
€30 both concerts
Reservation: +436505706989
+4369919677243
alankara.office@yahoo.com
Free live stream on www.youtube.com/user/alankesh

 Indian Embassy
Vienna

 **alankara**
Special for Indian Classical Music

NAYA BAAZ
with Rez Abbasi guitar & Josh Feinberg - sitar



A new highly dynamic collaboration from 2021 Guggenheim Fellow, guitarist Rez Abbasi and trail-blazing sitarist, Josh Feinberg. Also featuring Jennifer Vincent on 5-string cello and Ernie Adams on drums/percussion.

CONCERT DATES
Sunday May 15 - SFJAZZ
San Francisco, CA
Wednesday May 18 - The Old Church
Portland, OR
Friday May 20 - Earshot Jazz/Town Hall
Seattle, WA
Saturday May 21 - Alvas Showroom
Los Angeles, CA

"In Abbasi's hands, the globe's music feels relentlessly new and progressive." LA Times
"Josh is one of the best artists today."
Pandit Jasraj

FOR TICKET LINKS
VISIT WWW.REZTONE.COM

Música Clássica Indiana

TURNÊ NORDESTE **Com Ram**

16/10
19h
R\$60
Reservas
83 99672-8563

DHARAMA
Yoga Pipa
Praia da Pipa

O concerto te leva a um passado cheio de arte e tradições milenares da Índia, tanto na época antiga quanto na medieval, com influências das músicas árabe e persa. É um mergulho na cultura ancestral que permanece viva até hoje. Será uma noite com essência, sentimento e atmosfera dos Ragas. Celebraremos com melodias que trazem tranquilidade e paz para despertar nossa consciência para um universo cheio de inspirações

Ragas - Dhun - Sufi

RUA DAS GAIVÓTAS, PRAIA DA PIPA, TIBAU DO SUL-RN

EDMONTON **Raga Mala** MUSIC SOCIETY

FEATURING LIVE CONCERT

OCT 22 - SITAR

JOSH FEINBERG

Festival Place
100 Festival Place, Sherwood Park, AB, Canada
Ticket Box office opens: 6.30 PM
Doors open: 6.45 PM
Concert Starts: 7:00 PM

Yoga Raiz - Escuela de Yoga
c/ pozas 53, local derecho
San Lorenzo de El Escorial

Reserva tu plaza en
hola@yogaraiz.com
666 90 28 76

Viernes 25/11 - a las 19.30h - 10€

RAGAS Y TALAS

Música carnática del sur de la India
Concierto de sitar y mridangam

CONCERT

Indian classical music

Matyas Wolter (sitar) & Yatziv Caspi (tabla)

04.11.2022 19:30

Bitte um Anmeldung / RSVP / info@kunstsaale.de
Eintritt frei / Admission free

Venue
Kunstsaale
c/o Studio Michael Müller
Eresburgstr 24-29
12103 Berlin

KUNSTSALE BERLIN



МУЗЕЙ ТЕАТРАЛЬНОГО
И МУЗЫКАЛЬНОГО
ИСКУССТВА

ММ

XIV Международный фестиваль
Ситар в Петербурге

**Себастьян
Дрейер**
ситар, г. Потсдам

музыкальный проект
Бенарес Гхат
рук. Антон Пигуров

22 октября 19:00 6+

Наб. р. Фонтанки, д.34
Билеты в кассе Шереметевского дворца
справки о фестивале: (812) 327-3500 • администрация дворца: (812) 372-4524
www.rozetich.spb.ru/sitar

2 DECEMBER 2022 / 6:30PM
NEHRU CENTRE, LONDON W1K 1HF
ADMISSION FREE PLEASE ARRIVE BY 6PM

USTAD DHARAMBIR SINGH — SITAR & SURBHAM
UPNEET SINGH — TABLA



StringFEST: FESTIVAL OF BOWED, PLUCKED & HAMMERED INSTRUMENTS

SAMA
www.sama.co.uk / info@sama.co.uk

The Nehru Centre London
www.nahrucentre.org.uk

出羽庄内国際村音楽祭 2024
シタールの響き
～悠久のネパール音楽～

リブ・ジョン

内藤 昌司

原田 康生

友情出演
龍あつ子(ネパールダンス)

8月24日(土) 開 場 18:00 開 演 18:30
会 場 出羽庄内国際村ホール
料 金 大人 3,000 円 当日 3,500 円
小中高校生 2,500 円 当日 3,000 円

チケット予約・お問合せ 出羽庄内国際村 0235-25-3600
info@izai.or.jp / www.densakoku.or.jp

主催 出羽庄内国際村音楽祭 2024 実行委員会 後援 鶴岡市・鶴岡市教育委員会

Phoenix Gharana
DARPAN FESTIVAL 2024

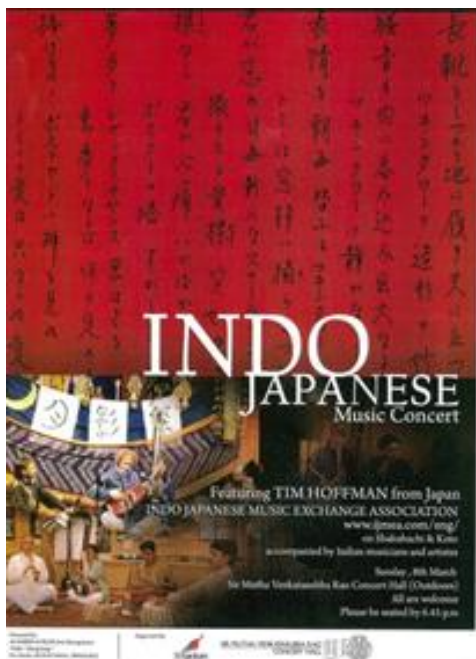
SRI MANU SRIVASTAVA
SRI PRAFULLA ATHALYE
SRI SANATAN GOSWAMI
SMT RIMPA SIVA
SMT SEEMA GULATI
AMYUKTA AMARNATH






Saturday Sept 28th 2024
5:30 PM
ASU KERR CULTURAL CENTER
FREE ENTRY AND OPEN TO ALL
480-577-2171

ASU Kerr



WELTMUSIKSALON
Der fliegende Teppich Nr. 37
präsentiert von Klangwerkstatt Liquid Soul



SITAR

Der mystische Klang Indiens



Sebastian Dreyer (Sitar) &
Yatziv Caspi (Tabla)

27.11.22 | MovingPoets Novilla
17.00 Uhr | Hasselwerderstr. 22, 10639 Berlin
Eintritt: 12,00 € • Vorbestellung: mail@liquid-soul.de

#worldheartbeat



world heart beat
PHILIPPS GARDENS

Jonathan Mayer and Alok Verma

SATURDAY 11 FEBRUARY 2023
worldheartbeat.org/whats-on



WORLD HEART BEAT
MUSIC ACADEMY
PRESENTS

SPECIALIST SITAR COURSE

For ages 12-22

FREE online course taught by
internationally acclaimed sitarist and
composer Jonathan Mayer

SIGN UP TODAY!
email: info@worldheartbeat.org
call: 020 8870 3042

TUESDAYS, 5:00-
5:45PM
ONLINE - ZOOM

In this four-week
course, you will
learn about the
basics of sitar and
ragas, and by the
end of the course
you will play one
piece

SIGN UP TODAY



GURPU SOUND
Indian music instrument course



ARTS COUNCIL
ENGLAND

STRESS FREE
OCTOBER 15

SITAR CONCERT & STRESS FREE CENTER 2ND ANNIVERSARY

FEAT. TONI CURMI

www.StressFreeCenter.com

SATURDAY, 15 OCTOBER 2022 AT 14:30 UTC+05:30

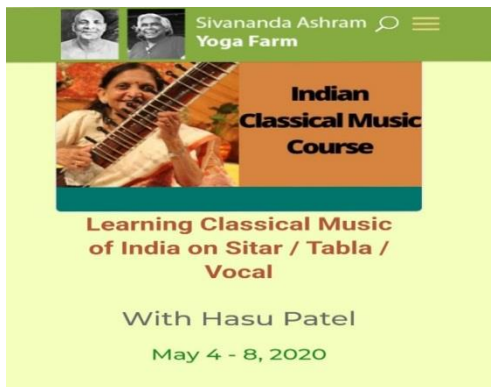
Sitar Concert & Stress Free Center 2nd Anniversary

Stress Free Center, Floating Spa & Yoga St...

Event Ended

Event by Stress Free Center, Floating
Spa & Yoga Studio, Gozo, Mindo M.
Damalis and Lyonne Sundari

Stress Free Center, Floating Spa & Yoga
Studio, Gozo
Triq Santa Marta, VCT10 Victoria, Gozo, Malta



Name of School \ Academy & Societies	Year of Established	Founder	Director	Place	Email Id/ Contact no.
दा जुल्लियद स्कूल	1905	Frank Damrosch	डैमियन वोएल्लेल	न्युयॉर्क	www.julliard.edu admission@juilliard.edu
भारतीय विद्या भवन	1938	डॉ. कन्हाइया लाल मानेकलाल मुंशी	मात्तुर नंदकुमरा	लंदन	info@bhavan.net
बेर्क्ली कॉलेज ऑफ म्यूजिक	1945	Larance Berk	एरिका मुही	बोस्टन	admission@barklee.edu
अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडी	1961	Prof. Norman Brown	डॉ. एलिस औएर्बच	पेन्सिल्वनिया, अमेरिका	aiis@uchicago.edu
किन्नरा स्कूल ऑफ म्यूजिक	1962	पं. रवि शंकर	दास गुप्ता	लॉस एंजिल्स, अमेरिका	
अली अकबर स्कूल ऑफ म्यूजिक	1967	उ. अली अकबर	आलम खां	कलिफोर्निया, अमेरिका	office@aacm.org
कलिफोर्निया इंस्टिट्यूट ऑफ द आर्ट्स	1969	वल्त डिज़्नी \ पं. रवि शंकर	रवि राजन	कलिफोर्निया, अमेरिका	communications@calarts.edu

Name of School \ Academy & Societies	Year of Established	Founder	Director	Place	Email Id/ Contact no.
यले इंस्टिट्यूट ऑफ सफ्रेद हार्ट	1973	रोबर्ट बकेर	मार्टिन जीन	अमेरिका	203-432-4771
नोर्वेयन अकादमी ऑफ म्यूजिक	1973	संगठन	अस्त्रिद क्लबैन	नोर्वे	post@nmh.no
इंडिया स्कूल ऑफ डांस, म्यूजिक एंड थिएटर	1980	पामेला रेबेलो	अन्न पुर्विरजह	कनाडा	indiasch@mymts.net
राग माला	1981	ऑटारियो आर्ट्स कौंसिल	निशांत परेख	टोरंटो, कनाडा	info@raagmala.ca
इंडो यूरोपियन	1994	आशीष पॉल, स्वर्नेदु मंडल		बर्लिन	
ओश्लो नैशनल अकादमी ऑफ आर्ट्स	1996	जोन मोर्तेसेन	मर्कुस देगेमेन	नोर्वे	info@ace-music.eu

Name of School \ Academy & Societies	Year of Established	Founder	Director	Place	Email Id/ Contact no.
इंडियन म्यूजिक अकादमी	1997	उ. धर्मवीर सिंह	ल्यूक रेडिंग विल्लम्स कीर्तन कौर विर्दी	इंग्लैंड	info@saa-uk.org
कलवंत सेंटर फोर म्यूजिक एंड डांस	1997	उ. कादर खां	उ. कादर खां	न्यूयॉर्क और पेंसेल्वनिया	kalavant@aol.com
एसोसिएशन ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स ऑफ इंडिया	1998	डॉ. दीनबन्धु चोस्की, भारती	डॉ. दीनबन्धु चोस्की, भारती	फ्लोरिदा, अमेरिका	apaiart@comcast.net
अलंकरा इंडियन म्यूजिक सोसाइटी	1998	अलोकेश चंद्र	अलोकेश चंद्र	विएना	
इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सेंटर	1998	उ. शराफ़त खाँ	उ. शराफ़त खाँ	सिंगापुर, मलेशिया, कनाडा	icmc@sitar.com.sg
विजय जगतप सितार अकादमी	1998	विजय जगतप	विजय जगतप	लंदन	info@vijayjagtap.com

Name of School \ Academy & Societies	Year of Established	Founder	Director	Place	Email Id/ Contact no.
डांस ऍड म्यूजिक स्कूल ऑफ वीना चन्द्रा	1998	वीना चन्द्रा	वीना चन्द्रा	न्युयॉर्क	vchandra@skidmore.edu
स्टुडी ऑफ इंडियन म्यूजिक इन लंदन	2006	योगिंद्र	योगिंद्र	इंग्लैंड	music@indiainstruments.com
सोसाइटी ऑफ इंडियन म्यूजिक ऍड आर्ट्स	2007	अजीत महलनबिस	अजीत महलनबिस	अमेरिका	Sima.sandesh@gmail.com
स्टॉकहोल्म संगीत सोसाइटी	2007	K G Westmen	K G Westmen	स्वीडन	www.stockhomsangeet.se
परम्परा स्कूल ऑफ म्यूजिक	2007	सर्ब भारतीय संस्कृति परिषद		सिंगपौर	info@paampara-sg.org
परम्परा स्कूल ऑफ म्यूजिक	2007	कस्तूरी सेन भुनिया	कस्तूरी सेन भुनिया	न्युजेर्सी	paramparausa@gmail.com
इंडियन क्लासिकल म्यूजिक सोसाइटी	2009	वंकौवेर, कनाडा	वंकौवेर, कनाडा	वंकौवेर, कनाडा	Info.icmsv@gmail.com

Name of School \ Academy & Societies	Year of Established	Founder	Director	Place	Email Id/ Contact no.
इंडियन क्लासिकल म्यूजिक ऍड आर्ट्स फाउंडेशन	2011	महेश काले	महेश काले	अमेरिका	info@icmafoundation.org
बेक्ली कॉलेज ऑफ म्यूजिक इंडियन एस्सेम्बल	2011	अन्नेत्ते फिलिप	अन्नेत्ते फिलिप	न्यूयॉर्क	indiaexchange@berklee.edu
बेक्ली कॉलेज ऑफ म्यूजिक इंडियन एस्सेम्बल	2012	अन्नेत्ते फिलिप	सिमोन पिलोन	स्पेन	infovalencia@berklee.edu
SPK अकादमी ऑफ म्यूजिक	2012	उ. शाहिद परवेज	उ. शाहिद परवेज	अमेरिका	admin@spkacademy.org
पाकाचोअग म्यूजिक स्कूल	2012	क्रिस्ट्जोन	उषा वर्मा	वोरचस्तेर	info@pakmusic.org
गुरुकुल कनाडा		शरण जीत सिंह मड	शरण जीत सिंह मड	सरी, कनाडा	learnsaaz@gmail.com

Name of School \ Academy & Societies	Year of Established	Founder	Director	Place	Email Id/ Contact no.
इंडियन क्लासिकल म्यूजिक अकादमी				आयरलैंड	
सितार निकेतन	2015	अलिफ लैला	अलिफ लैला	अमेरिका	sitarnikatan@gmail.com
इंडियन म्यूजिक अकादमी	2017	शर्मीला	शर्मीला	एडमोंटन, कनाडा	sharmila@indianmusic.ca
इंडियन म्यूजिक अकादमी	2017	इरशाद खां	इरशाद खान	कनाडा, अमेरिका	uam@rogers.com
गुरुकुल स्कूल ऑफ इंडियन म्यूजिक	2018	मीनू मुखेर्जी	मीनू मुखेर्जी	इंग्लैंड	musicschool.gurukul@gmail.com
साज़ इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन म्यूजिक	2019	शरण जीत सिंह मड	शरण जीत सिंह मड	वंकौवेर, कनाडा	
इंडियन म्यूजिक एंड डांस		चंद्रा एंड डेविड		हॉस्टन, अमेरिका	
इंडियन म्यूजिक लेसोन		सुभाष गिरि	सुभाष गिरि	कनाडा	1587-936-3809

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
टोकियो युनिवर्सिटी ऑफ फाइन आर्ट्स	1887	टोकियो म्यूजिक स्कूल	जापान	सरकारी
द ओकलैंड युनिवर्सिटी स्कूल ऑफ म्यूजिक	1957	NASM	ओकलैंड	सरकारी
मोनश युनिवर्सिटी	1970	ICCR	सिडनी	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर, सुवा	1972	ICCR	फिजी	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1972	ICCR	जॉर्ज टाउन, गुयाना	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	1972	ICCR	जॉर्ज टाउन, गुयाना	सरकारी
नोर्वेयन अकादमी ऑफ म्यूजिक	1973	Olav selvaag	नोर्वे	सरकारी
महात्मा गाँधी इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स	1976	Indian & Mauritius Government	मॉरिशस	सरकारी
इंडो इतालियन कल्चरल रिलेशन	1976	ICCR	रोम	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1976	ICCR	पेरामरिबो, सूरीनाम	सरकारी
सेंटर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स ऑफ इंडिया	1985	University of Pittsburgh	अमेरिका	सरकारी
इंदिरा गाँधी इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडियन म्यूजिक	1987	ICCR	मॉरिशस	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
रसिया- इंडिया कल्चरल कॉर्पोरेशन	1987	एम्बेस्स ऑफ इंडिया	मॉस्को	सरकारी
जवाहर लाल नेहरू कल्चरल सेंटर	1989	ICCR	मॉस्को	सरकारी
जवाहर लाल नेहरू इंडियन कल्चरल सेंटर	1989	ICCR	जकार्ता, इंडोनेशिया	सरकारी
मौलाना आज़ाद सेंटर फोर इंडियन कल्चर	1992	ICCR	कैरो, यूनान	सरकारी
द नेहरू सेंटर इंडिया एंड बेयोंद	1992	ICCR	इंग्लैंड	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	1994	ICCR	अस्थना, कज़ाकस्तान	सरकारी
लाल बहादुर शास्त्री सेंटर फोर इंडियन कल्चर	1995	ICCR	ताशकंद, उज्बेकिस्तान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1996	ICCR	डरबन, साउथ अफ्रीका	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	1996	ICCR	जोहानसबर्ग, साउथ अफ्रीका	सरकारी
महात्मा गाँधी इंडियन कल्चरल सेंटर	1997	ICCR	पोर्ट ऑफ स्पेन त्रिनिदाद एंड तबगो	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	1998	ICCR	कोलंबो, श्री लंका	सरकारी
द टैगोर सेंटर	2002	ICCR	बर्लिन, जर्मनी	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2003	ICCR	बीजिंग, चीन	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2005	ICCR	बली, इंडोनेशिया	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2007	ICCR	काबुल, अफगानिस्तान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2008	ICCR	काठमांडू, नेपाल	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल एम्बस्से ऑफ म्यूजिक	2009	ICCR	बैकाक	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	दर-एस-सलाम, तंज़ानिया	सरकारी
गुरुदेव टैगोर इंडियन कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	मेक्सिको सिटी, मेक्सिको	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
इंडियन कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	ढाका, बांग्लादेश	सरकारी
नेहरू वंग्चुक कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	थिंपु, भूटान	सरकारी
अमृता शेरगिल कल्चरल सेंटर	2010	ICCR	बुडापेस्ट, जर्मनी	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	प्राग, चेक रिपब्लिक	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	मलें, मालदीव	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	साउ पाउलो, ब्राज़ील	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	सिओल, साउथ कोरिया	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2011	ICCR	सिओल, साउथ कोरिया	सरकारी
द गाँधी सेंटर	2011	ICCR	द हेग, नीदरलैंड	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2013	ICCR	तेहरान, ईरान	सरकारी

Name of centers	Year of Established	Founder	Place	Nature
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2014	ICCR	रगोन, म्यांमार	सरकारी
विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2014	ICCR	टोक्यो, जापान	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2015	ICCR	सिडनी	सरकारी
नेता जी सुभाष चन्दर बोस इंडियन कल्चरल सेंटर	2015	ICCR	कुलललुम्पुर, मलेशिया	सरकारी
सोसाइटी ऑफ इंडियन म्यूजिक एंड आर्ट्स	2016	ICCR	वियन्ना	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2016	ICCR	हनोई, वियतनाम	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2016	ICCR	हनोई, वियतनाम	सरकारी
इंडियन कल्चरल सेंटर	2017	ICCR	तल अविव, इज़राइल	सरकारी
स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर	2018	ICCR	दुशंदे, ताजिकिस्तान	सरकारी